सेठ ब्रादर्स
७० - बी०, धर्मतल्ला स्ट्रीट
(कलकत्ता)

जिनसे सदा सहयोग व साहित्यक्षेत्र
में आगे बढ़ने की प्रेरणा
मिलती रही उन्हीं सौजन्य-
मूर्त्ति, विद्यामहोदधि,
राजस्थानी साहित्य
के महान्
सेवक
श्री नरोत्तमदासजी स्वामी
के
कर कमलों
में
सादर समर्पित

—अगरचंद नाहटा

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एव विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारभ से ही मिलता रहा है ।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षो से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबध में विभिन्न स्रोतो से सस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का सकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशो के ढंग पर, लबे समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं । यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारंभ करना सभव हो सकेगा ।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है । अनुमानत पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी मे उदाहरणो सहित प्रयोग देकर सपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह सस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी ।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कळायरा, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम सस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उन्न्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३ वरस गाठ, मौलिक कहानी सग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन सस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एव अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है । यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड का सचित्र और वृहत् विशेषाक है । अपने ढग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एव विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाए हमे प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत: सग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त सस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एव शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रथो का अनुसधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यो की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अ श 'राजस्थान भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए है।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अ क मे प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबध राजस्थान भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाऐं सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवत उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रथो का सम्पादन एव प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिहजी के सचिव कविवर उदयचद भडारी की ४० रचनाओ का अनुसधान किया गया है और महाराजा मानसिहजी की काव्य-साधना के सबध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४ बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रथो का अनुसधान किया गया और ज्ञानसार ग्रथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएँ और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६. बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके है।

गत दो वर्षो मे महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनो वर्षो के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, विसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूडलोद, थे ।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओ के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश मे आने पर सस्था के गौरव को निश्चय ही बढा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश मे आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नो को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सभव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक सशोध एव सास्कृतिक कार्यक्रम मत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमाजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमाजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रयावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भड्डली—	श्री अगरचन्द नाहटा म: विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीघर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सकें । सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थोडे समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का सपादन करके सस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप सस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्यालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट बडोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान-भडार बीकानेर, मोतीचंद खजान्ची ग्रंथालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी ववई, आत्माराम जैन ज्ञानभडार वडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थो का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छत: स्खलनक्वपि भवत्येव प्रमाहत:, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधव:।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन. मा भारती के चरण कमलों मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुन उपस्थित होने का साहस वटोर सकेंगे।

निवेदक

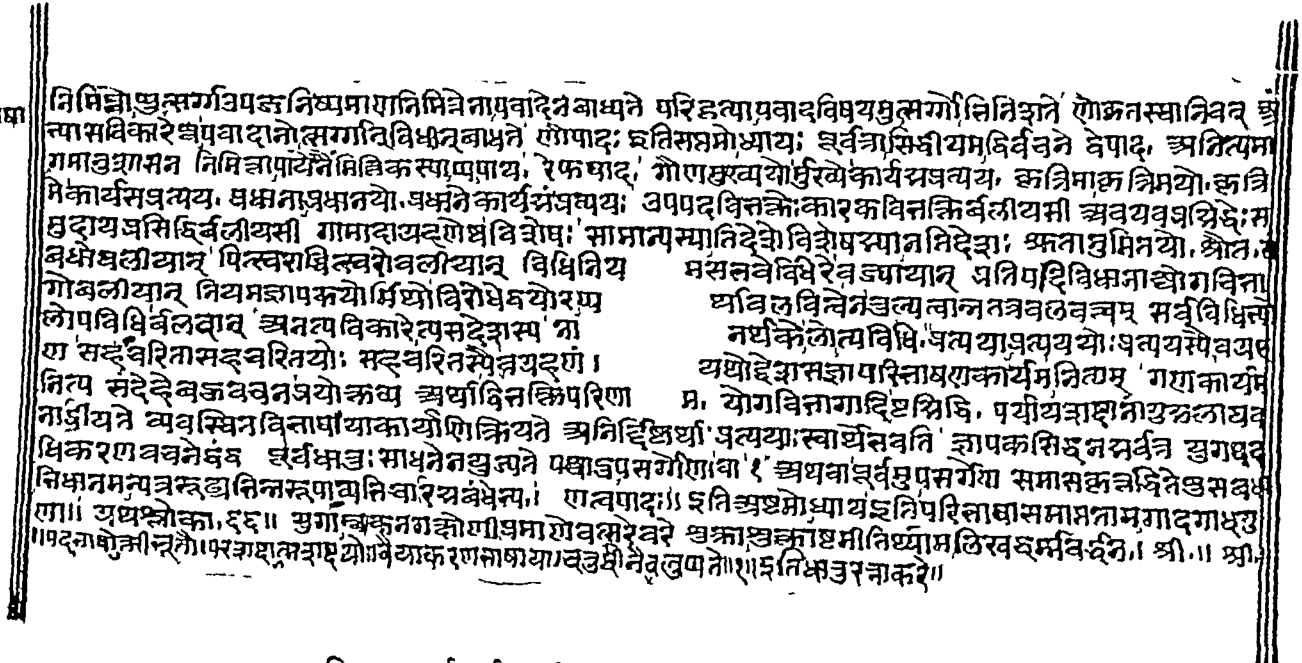
लालचन्द कोठारी

प्रधान-मन्त्री

सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
स० २०१७
दिसम्बर ३,१९६०.



कविवर धर्मवर्द्धन की हस्तलिखित "परिभाषा"।

भूमिका

राजस्थान की साहित्य-सम्पत्ति की अभिवृद्धि एवं सुरक्षा में जैन विद्वानों का योग सदैव स्मरणीय रहेगा। जैन-विद्वानों का उद्देश्य एकमात्र जनसाधारण में सद्धर्म का प्रचार करना एव ज्ञान की ज्योति को प्रकाशमान रखना रहा है। न उनको राजा-महाराजाओ का गुणानुवाद करना था, न हिंसामय युद्ध के लिए योद्धाओ को उत्तेजित करना था और न शृंगार रस से पूर्ण रचनाओं द्वारा जन-समाज में कामोत्तेजना फैलाना था। उनका जीवन सदा से निवृत्ति-प्रधान रहता आया है। अतः सद्धर्म-प्रचार के साथ ही साहित्य का उत्पादन एवं उन्नयन करना उनके जीवन का अग बना हुआ दृष्टिगोचर होता है।

जैन विद्वानो ने प्रचुर साहित्य-सामग्री का निर्माण करने के साथ ही अतिमात्रा में ग्रंथो का संरक्षण भी किया है। इस कार्य मे उन्होने जैन-अजैन का विचार नहीं किया। जैन भंडारो में सभी प्रकार के महत्वपूर्ण ग्रन्थो की प्रतिया सुरक्षित की जाती रहीं है और उनके अपने लिखे हुए ग्रन्थ भी केवल जैन-धर्म विषयक ही नहीं है। उन्होंने सभी विषयो के ग्रन्थो से अपने भंडारों को परिपूर्ण करने के साथ ही स्वयं भी विविध ज्ञान-

शाखाओं अथवा साहित्यिक परम्पराओं की पूर्ति के लिए लिए ग्रन्थ रचना की है। जैन भंडारो मे की गई ज्ञान साधना ने विद्यारसिकों के लिए प्रचुर साहित्य-सामग्री एकत्रित कर दी है। यह जैन विद्वानों की एकान्त तपस्या का ही फल है कि बहुसख्यक अनमोल ग्रन्थ नष्ट होने से बच गए हैं और वे अब भी सर्वसाधारण के लिए सुलभ है।

राजस्थान के लब्धप्रतिष्ट जैन विद्वानो एव कवियो की संख्या भी काफी बड़ी है। इन विद्वानों ने अनेक भाषाओं में ग्रन्थ-रचना की है। जहा इन्होंने संस्कृत मे ग्रन्थ लिखे है, वहा प्राकृत एवं अपभ्रंश को भी अपनी प्रतिभा की भेंट दी है। लोकभाषा की ओर तो जैन विद्वानो का ध्यान सदा से ही रहा है। यही कारण है कि राजस्थानी जैन साहित्य की विशालता आश्चर्यजनक है। प्राचीन राजस्थानी साहित्य को तो जैन विद्वानों की विशेष देन है।

राजस्थान के जैन साहित्य-तपस्वियो मे उपाध्याय धर्मवर्द्धन का विशिष्ट स्थान है। ये एक साथ ही सद्धर्म-प्रचारक, समर्थ विद्वान एवं सरस कवि के रूप मे प्रतिष्ठित है। इनकी अपनी रचनाएँ काफी अधिक है और वे संस्कृत, पिंगल एवं डिंगल आदि अनेक भाषाओ मे है। इतना ही नहीं, इन्होंने अपनी रचनाओं मे अनेक परम्पराओ का सुन्दर निर्वाह कर के अपने साहित्य को समष्टि-रूप से एक विशिष्ट वस्तु बना दिया है, जिसके विषय मे आगे जरा विस्तार से चर्चा की जाएगी।

श्री अगरचंद नाहटा ने अपने 'राजस्थानी साहित्य और जैन कवि धर्मवर्द्धन' शीर्षक लेख (त्रैमासिक राजस्थान, भाद्रपद १९९३) में उपाध्याय धर्मवर्द्धन के जीवनवृत्तान्त पर अच्छा प्रकाश डाला है। तदनुसार इनका जन्म स० १७०० मे हुआ था और इनका जन्म नाम 'धरमसी' (धर्मसिंह) था। इन्होंने तत्कालीन खरतरगच्छाचार्य श्रीजिनरत्नसूरि के पास स० १७१३ मे तेरह वर्ष की अल्पायु में ही दीक्षा ग्रहण की और इनका दीक्षा नाम 'धर्मवर्द्धन' हुआ। पन्द्रहवींशताब्दी के प्रभावक खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनभद्रसूरि की शिष्य-परम्परा के मुनि विजयहर्ष आप के विद्यागुरु थे, जिनके समीप रह कर आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया।

मुनि धर्मवर्द्धन का समस्त जीवन धर्मप्रचार एवं ग्रन्थ-रचना में ही व्यतीत हुआ। आपने अनेक प्रदेशों, नगरों एवं ग्रामो मे विहार करके धर्म-प्रचार किया और प्रचुर साहित्य-रचना की। आपको अपने जीवन मे बडा सम्मान प्राप्त हुआ। आपकी विद्वत्ता की प्रसिद्धि फैली। फलतः गच्छनायक श्रीजिनचन्द्रसूरि ने आपको स० १७४० में उपाध्याय पद से अलकृत किया। आगे चल कर गच्छ के तत्कालीन सभी उपाध्यायो मे वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध होने के कारण आप महोपाध्याय पद से विभूषित हुए।

लगभग ८० वर्ष की आयु में यशस्वी एवं दीर्घजीवन प्राप्त करके मुनि धर्मवर्द्धन ने इहलीला सवरण की। जयसुन्दर,

कीर्तिसुन्दर, ज्ञानवल्लभ आदि अनेक विद्वान आपके शिष्य थे। इनकी शिष्यपरम्परा १६ वीं शताब्दी तक चालू रही [1]। आपके सम्बन्ध मे भोजक अमराजी का कहा हुआ एक डिंगल गीत इस प्रकार है :—

वखतवर श्री विजैहरप वाचक तणौ,
ज्ञान गुण गीत सौभाग वड गात।
वडा वावई तिके गुणा रा धरमसी,
पतगरङ तु नैं सहि वडा कवि पात ॥१॥
ज्ञानवत सूत्र सिधतरी लहइ गम,
अगम रा अरथ जिके तिके आणइ।
महु वहोतर कला तो कना धरमसी,
जैन सिव धरम रा मरम जाणइ ॥ २ ॥
व्याकरण वेद पुराण कुराण विधि
आप मति सार अधिकार आखइ।
ताहरी धरमसी समझि इसड़ी तरह,
भरह पिंगल तणा भेद भाखइ ॥ ३ ॥
राजि है श्री कमल साईज चढ़ती रती,
जिन सासन जोइतां जती गुण जाण।
नग अमूल धरमसी सारिखा नीपजइ,
खरतरइ गच्छ हीरां तणी खाण ॥ ४ ॥

---

१ महोपाध्याय धर्मवर्द्धनजी की विस्तृत जीवनी श्री नाहाटाजी के लेख मे द्रष्टव्य है।

तत्कालीन बीकानेर नरेश सुजाणसिंहजी ने गच्छनायक श्रीजिनसुखसूरि को दिए गए सं० १७७६ के अपने पत्र में महोपाध्यायजी की इस प्रकार प्रशंसा की है :—

सब गुण ज्ञान विशेष विराजै ।
कविगण ऊपरि घन ज्यु गाजै ॥
धर्मसिंह धरणीतल माहि ।
पण्डित योग्य प्रणति दल ताहि ॥

महोपाध्याय धर्मवर्द्धन अनेक विषयों के ज्ञाता एवं बहुभाषाविद् उच्चकोटि के विद्वान थे। आपकी अनेक रचनाएं संस्कृत मे है। साथ ही प्राकृत-अपभ्रंश आदि प्राचीन भाषाओ मे भी रचना करने में आप समर्थ थे। इस सम्बंध में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है :—

सरस्वती-वंदना (संस्कृत)

मंद्रैर्मध्यैश्च तारैः क्रमततिभिरुरः कण्ठमूर्द्धप्रचारैः,
सप्तस्वर्य्या प्रयुक्तैः सरगमपधनेत्याख्यया ऽन्योन्यमुक्तैः ।
स्कन्धे न्यस्य प्रवालं कल ललितकल कच्छपीं वादयती,
रम्यास्या सुप्रसन्ना वितरतु विततं भारती भारती मे ॥६॥

(सरस्वत्यष्टकम)

प्राकृत

विविह सुविहि लच्छीवल्लिसंताणमेह,
सुगुणरयणगेह पत्तसप्पुण्णरेहं ।

दलियदुरियदाह लद्धससिद्धिलाह,
जलहिमिव अगाह वंदिमो पासनाहं ॥ ३ ॥

अपभ्रंसिका

तुहु राउल राउलह सामि हुं राउल रंकह,
हिणसु दुहाइ सुहाइ कुण खुमइ मा अवहीरह ।
पिक्खइ जुगू अजुग्गु ठाणु वरसतउ कि घणु,
पत्तउ पइ जइ होसु दुहियसा तुह अवहीरणु ॥८॥

(श्रीगौडीपार्श्वनाथस्तवनम्)

राजस्थान का डिंगल साहित्य अत्यंत गौरवमय है। इसके गीत भारतीय साहित्य की विशिष्ट वस्तु हैं। गीतों की वर्णन-शैली एवं उनकी छन्द रचना अपने आप मे स्वतंत्र है। डिंगल की गीत सम्पत्ति है भी अति विशाल और इसकी अभिवृद्धि मे केवल चारणो ही नहीं, अन्य वर्गों एवं कवियों का भी पूरा योगदान रहा है। महोपाध्याय धर्मवर्द्धन के डिंगलगीत उनकी समस्त साहित्यसामग्री मे अपना विशिष्ट स्थान रखते है। उन्होने काफी डिंगल गीत लिखे है और और उनका अर्थ-गाभीर्य विशेष रूप से ध्यान मे रखने की चीज है। यहा उनके कुछ डिंगलगीत उदाहरण-स्वरूप प्रस्तुत किए जाते है :—

१. सूर्य स्तुति

हुवे लोक जिण रे उदै, मुदै सहु काम हुवै,
पूजनीका सिरे देव पूजौ ।

साच री बात सहु साभलौ सेवका,
देव को सूर सम नही दूजौ ॥ १ ॥
सहस किरणा धरै हरै अधकार सही,
नमैं ग्रहसमै तियां कष्ट नावै ।
प्रगट परताप परता घणा पूरतौ,
अवर कुण अमर रवि गमर आवै ॥ २ ॥
पडि रहै रात रा पखिया पथिया,
हुवै दरसण सकौ राह हींढे ।
सोभ चढे सुरां सुरा असुरा सिहर,
मिहर री मिहर सुर कवण मींढे ॥ ३ ॥
तपे जग ऊपरा जपै सहु को तरणि,
सुभा असुभां करम धरम साखी ।
रूड़ा ग्रह हुवइ सहु रूड़ै ग्रह राजवी,
रूड़ा रजवट प्रगट रीति राखी ॥ ४ ॥

२. वर्षा वर्णन

सबल मेंगल वादल तणा मज करि,
गुहिर असमाण नीसाण गाजै ।
जंग जोरैं करण काल रिपु जीपवा,
आज कटकी करी इंद राजै ॥ १ ॥
तीख करवाल विकराल वीजली तणी
घोर माती घटा घर र घालै ।
छोडि वासा घणी सोक छाटा तणी,

चटक माहे मिल्यौ कटक चालै ॥ २ ॥
तड़ा तड़ि तोब करि गयण तड़कै तड़ित,
महाभड़ झड़ि करि झूझ मंड्यौ ।
कड़ा किड़ि कोध करि काल कटका कीयौ,
खिणकरै वल खल सवल खंड्यौ ॥ ३ ॥
सरस वाना सगल कीध सजल थल,
प्रगट पुहवी निपट प्रेम प्रवला ।
लहकती लाछि वलि लील लोको लही,
सुध मन करै धर्मशील सगला ॥ ४ ॥

३. श्री महावीर जन्म

सफल थाल वागा थिया धवल मंगल सयल
तुरत त्रिभुवन हुआ हरप त्यारां ।
धनद कोठार भंडार भरिया धनै,
जनमियो देव व्रधमान ज्यारा ॥ १ ॥
वार तिण मेरगिरि सिहर न्ववरावियौ
भला सुर असुरपति हुआ मेला ।
सुद्रव वरपा हुई लोक हरप्या सहु,
वाह जिनवीर री जनम वेला ॥ २ ॥
मिहर जगि ऊगते पूगतें मनोरथ
जुगति जाचक लहै दान जाचा ।
मडिया महोछव सिधारथ मौहले,
सुपन त्रिसला सुतन किया साचा ॥ ३ ॥

करण उपगार ससार तारण कल्ू,
आप अवतार जगदीस आयौ ।
धनो धन जैन धर्म सीम धारणधणी,
जगतगुर भले महावीर जायौ ॥ ४ ॥

४. शत्रुञ्जय महिमा

सरव पूरब सुकृत तीये किया सफल,
लाभ सहु लाभ में अधिक लीया ।
सफल सहु तीरथा सिरे सेंत्रुज री,
यात्रा कीधी तिया धन्न जीया ॥ १ ॥
सुजस परकासता मिले सघ सासता,
शास्त्रे सासता विरुद सुणिजे ।
ऋषभ जिणराज पुडरीक गिरि राजीयो,
भेटिया सार अवतार भणिजे ॥ २ ॥
काकरै काकरै कोडि कोडी किता,
साधु शुभ ध्यान इण थान सीधा ।
साच सिद्धक्षेत्र शुद्ध चेत सु सेवता,
कीध दरसण नयनसफल कीधा ॥ ३ ॥
तासु दुरगति न ह्वै नरक त्रियंच री,
सुगति सुर नर लहै सुगति सारी ।
विमल आतम तिको विमलगिरि निरखसी
धनो धन श्री धर्मसील धारी ॥ ४ ॥

५. धरती की ममता

भोगवी किते भू किता भोगवसी
माहरी माहरी करइ मरे ।
एंठी तजी पातला ऊपरि,
कूकर मिलि मिलि कलह करै ॥ १ ॥
धपटि धरणि कितेइ धुरसी,
धरि अपणाइत केइ ध्रुवै ।
धोवा तणी सिला परि धोवी,
हूं पति हूं पति करै हुवै ॥ २ ॥
इण इल किया किता पति आगै,
परतिख किता किता परपूठ ।
वसुधा प्रगट दीसती वेश्या,
भूभै भूप भुजंग सुभूठ ॥ ३ ॥
पातल सिला वेश्या पृथ्वी,
इण न्यारा री रीत इसी ।
ममता करै मरै सो मूरख,
कहै ध्रमसी धणियाप किसी ॥ ४ ॥

६. राष्ट्रवीर शिवाजी

सकति काइ साधना किना निज भुज सकति..
चढ़ा गढ धूणिया वीर वाकै ।
अवर उमराव कुण आइ साम्हौ अड़ै,
सिवा री धाक पातिसाह साकै ॥ १ ॥

खसर करता तिके असुर सहु खूदिया,
जीविया तिके त्रिणौ लेहि जीहे ।
सबद आवाज सिवराज री साभलैं,
बिली जिम दिली रो धणी बीहै ॥ २ ॥
सहर देखे दिली मिले पतिसाह सू,
खलक देखत सिवौ नाम खारै ।
आवियौ वले कुसले दले आप रे ।
हाथ घसि रह्यौ हजरत्ति हारैं ॥ ३ ॥
कहर म्लेच्छा शहर डहर कंद काटिवा,
लहर दरियाव निज धरम लोचै ।
हिंदुओ राव आइ दिली लेसी हिवैं,
सबल मन माहि सुलताण सोचै ॥ ४ ॥

ऊपर कविवर धर्मवर्द्धन के ६ डिंगल गीत इसलिए प्रस्तुत किए गए हैं कि इनके द्वारा विपयगत विविधता प्रकट हो सके। कविवर ने विविध विपयो मे डिंगलगीत रच कर इस शैली का महत्त्व प्रकाशित किया है। डिंगलगीतो का विपय केवल युद्धवर्णन अथवा विरुदगान तक ही सीमित नहीं है। इस मे देवस्तुति, प्रकृति वर्णन, निर्वेद एव राष्ट्रीयता आदि तत्त्वो का भी सम्यक् सन्निवेश दृष्टिगोचर होता है। कविवर धर्मवर्द्धन के गीतो की डिंगल भी प्रसादगुण धारण किए हुए है। यह इनकी अपनी विशेषता है।

कविवर धर्मवर्द्धन ने अनेक गेय पदो की भी रचना की है। ये पद अधिकाश मे औपदेशिक अथवा स्तवन रूप है

और पदों की भाषा पिंगल है। कविवर के कुछ पदो को उदाहरण-स्वरूप यहां दिया जाता है :—

१. राग तोड़ी

तु करे गर्व सो सर्व वृथा री।
स्थिर न रहे सुर नर विद्याधर
ता पर तेरी कौन कथा री॥ १॥
कोरिक जोरि दाम किये इक ते,
जाकै पास वि दाम न था री।
उठि चल्यो जब आप अचानक,
परिय रही सब धरिय पथा री॥ २॥
सपद आपद दुहु सोकनि के,
फिकरी होइ फद मे फथा री।
सुधर्मशील धरे सोइ सुखिया,
सुखिया राचत मुक्ति मथारी॥ ३॥

२. राग सामेरी

मन मृग तु तन वन में मातौ।
केलि करे चरे इच्छाचारी जाणे नहीं दिन जातो॥ १॥
माया रूप महा मृग त्रिसना, तिण मे धावे तातो।
आखर पूरी होत न इच्छा, तो भी नहीं पछतातो॥ २॥
कामणी कपट महा कुडि मंडी, खबरि करे फाल खातो।
कहे धर्मसीह उलगीसि वाको, तेरी सफल कला तो॥ ३॥

जैन विद्वानो द्वारा लोक साहित्य का वड़ा उपकार हुआ है। जहा उन्होंने अपनी रचनाओ के लिए लोककथाओ का आधार लेकर वड़ी ही रोचक एव शिक्षाप्रद सामग्री प्रस्तुत की है, वहा उन्होने लोकगीतो के क्षेत्र मे भी विशेष कार्य किया है। उन्होंने लोकगीतो की धुनो के आधार पर बहुत अधिक गीतो की रचना की है और साथ ही उनकी आधार-भूत धुनों के गीतो की आद्य पंक्तिया भी अपनी रचनाओ के साथ लिख दी है। इस प्रकार हजारो प्राचीन लोकगीतों की आद्य पक्तिया इन धर्म प्रचारक कवियो की कृपा से सुरक्षित हो गई[२]। मुनि धर्मवर्द्धन विरचित अनेक गीत भी इसी रूप मे है। उनके कुछ गीतो की धुनें इस प्रकार है :—

१. मुरली बजावै जी आवो प्यारो कान्ह।
२ आज निहेंजो दीसै नाहलो।
३ केसरियो हाली हल खड़ हो।
४. धण रा ढोला।
५. ढाल, सुंबरदेरा गीत री।
६ ढाल, नणदल री।
७ उड रे आबा कोइल मोरी।
८. हेम घड्यो रतने जड्यो खुंपो।
९ कपूर हुवै अति ऊजलो रे।

---

२ 'जैन गुर्जर कवियो' भा० ३ ख० २ मे ऐसी प्राचीन 'देशिया' की अति विस्तृत सूची दी गई है, जो द्रष्टव्य है।

१० सुगुण सनेही मेरे लाला।

११. दीवाली दिन आवीयउ।

मुनि धर्मवर्द्धन का जीवन त्यागमय था एवं जनता में सद्धर्म का प्रचार करना ही उनका मुख्य कार्य था। अतः उनकी रचनाओं में औपदेशिक एवं धार्मिक सामग्री का पाया जाना सर्वथा स्वाभाविक है। वे जैन शासन में थे। उनके हृदय में जैन तीर्थङ्करों एवं आचार्यों के प्रति अगाध भक्ति थी, जो उनकी अधिकांश रचनाओं का प्रधान विषय है। इन रचनाओं से मुनिवर के हृदय की भक्ति टपकी है। यहां कुछ उदाहरण दिए जाते हैं :—

१. संघ (छप्पय)

वंदो जिन चौवीस चवदसे बावन गणधर।
साधु अट्ठावीस लाख सहस अड़तीस सुखंकर॥
साध्वी लाख चम्माल सहस छयालिस चउसय।
श्रावक पचपन लाख सहस अडताल समुच्चय॥
श्राविका कोडि पंच लाख सहु, अधिक अठावीस सहस अख।
परिवार इतो संघ ने प्रगट, श्री धर्मसी कहै करहु सुख॥

२. श्री जिनदत्तसूरि (सवैया)

बावन वीर किए अपने वश, चौसट्टि योगिनीं पाय लगाई।
डाइण साइणि, व्यंतर खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाई।
बीज तटक भटक्क कट्टक, अटक्क रहै पै खटक्क न काई।
कहै धर्मसीह लंघे कुण लीह, दीयै जिनदत्त की एक दुहाई।

३. श्री जिनचंद्रसूरि (कवित्त)

जैसे राजहंसनि सौं राजै मानसर राज,
जैसे विंध भूधर विराजै गजराज सौं ।
जैसे सुर राजि सुं जु सोभ सुरराज साजै,
जैसे सिंधुराज राजै सिंधुनि के साज सौं ।
जसे तार हरनि के वृन्द सौं विराजै चद,
जैसे गिरराज राजै नद वन राज सौ ।
जैसे धर्मशील सौं विराजै गच्छराज तैसे
राजै जिनचदसूरि सघ के समाज सौं ।

जनता में सद्धर्म का प्रचार करने का मुख्य अग आचरण एव व्यवहार की शुद्धि है। मुनिवर ने इन विषयों पर भी बहुत कुछ लिखा है। इसी श्रेणि मे उनकी नीति-प्रधान रचनाएँ है। इनमे कवि के दीर्घजीवन का सार समाया हुआ है। यहां कुछ उदाहरण इस सम्बंध मे प्रस्तुत किए जाते हैं :—

१. भाव

भाव ससार समुद्र की नाव है,
भाव विना करणी सव फीकी
भाव क्रिया ही कौ राव कहावत,
भाव ही तैं सव वात है नीकी ।

दान करौ बहु ध्यान धरौ,
तप जप्प की खप्प करौ दिन ही की ।
बात को सार यहै धर्मसी इक,
भाव बिना नहीं सिद्धि कहीं की ॥४५॥
(धर्म बावनी)

२. मधुर वचन

बहु आदर सूं बोलियै, बारु मीठा वैण ।
धन बिण लागा धर्मसी, सगला ही ह्वै सैण ॥
सगला ही ह्वै सैण, वैण अमृत वदीजै ।
आदर दीजै अधिक, कदे मनि गर्व न कीज ॥
इणा बातै आपणा, सैंण हुइ सोभ वधै सहु ।
मानै निसचै मीत, बोल मीठो गुण छै बहु ॥४४॥
(कुण्डलिया बावनी)

३. मोर और पंख

कहै पाखा सुणि केकि, कत तुझ लागि केहै ।
करि कु मया तुं कांड, फूस ज्युं अम्ह पा फेडै ॥
सुन्दर माहरे संग, कहै सहु तोने कलाधर ।
नहीं तर खुथड़ो निरखी, नेट निन्दा करसी नर ॥
अम्ह घणी ठाम बीजी अवर, धरमी आदर करि धरै ।
माहरै सुगुण सोभा मुगट, श्रीपति पिण करसी सिरै ॥२२॥
(छप्पय बावनी)

४. दृष्टान्त

मोटा रे पिण कष्ट में, जतन नेह सहु जाय ।
रातैं रमणी रांन मे, नाखि गयौ नलराय ।।२२।।
राज लैण माहे रहै, वडा तणी मति वक्र ।
भरतै मारण भ्रात नै, चपल चलायौ चक्र ।।२३।।
दान अदान दुहूं दिसी, अधिक भाव री ओर ।
नवल सेठ नै फल निबल, जीरण नै फल जोर ।।२४।।

(दृष्टान्त छतीसी)

५. काया

काया काचे कुंभ समान कहै ककौ ।
धाखै घेखी काल सही देसी धकौ ।।
करवत वहता काठ ज्युं आउखो कटै ।
परिहा, न धरै तोइ धर्मसीख जीव नट ज्युं नटै ।।११।।

(परिहा बत्तीसी)

६. सीख

राजा मित्र म जाणे रंग, सुमाणस रो करिजे संग ।
काया रखत तपस्या कीजै, दान वले धन सारु दीजै ।।१०।।
जोरावर सुं मत रमे जुऔ, करिजे मत घर माहे कुऔ ।
वैदा सुं मत करजे वैर, गालि बोले तो ही न कहै गैर ।।११।।

(सवासौ सीख)

७. शिक्षाकथन

सुगुरु कहे सुण प्राणिया, धरिजै धर्म वट्टा ।
पूरव पुण्य प्रमाण तैं, मानव भव खट्टा ।
हिव अहिलौ हारे मता, भाजे भव भट्टा ।
लालच मे लागे रखै, करि कूड़ कपट्टा ॥२॥

उलझै नौं तु आप सु, ज्यु जोगी जट्टा ।
पाचिस पाप संताप में, ज्यु भोभरि भट्टा ।
भमसी तु भव नवा नवा, नाचै ज्यु नट्टा ।
ऐ मंदिर ऐ मालिया, ऐ ऊचा अट्टा ॥३॥

हयवर गयवर हींसता, गौ महिषी थट्टा ।
लाछ दु लीपी झूवका, पहिंग सु घट्टा ।
मांनिक मोति मूदड़ा, परवाल प्रगट्टा ।
आइ मिल्या है एकठ्ठा, जैसा चलवट्टा ॥४॥

(गुरु शिक्षा कथन निसाणी)

ऊपर के उदाहरणों से प्रकट होता है कि समर्थ-कवि धर्मवर्द्धन ने राजस्थान मे प्रचलित प्रायः सभी काव्य शैलियों को अपनाया है और इस प्रकार की अपनी रचनाओं में वे पूरे सफल हुए हैं। राजस्थानी साहित्य मे काव्यगत नामों के अनेक प्रकार हैं और उन सब में रचना,शैली की दृष्टि से अपनी अपनी विशेपताएं हैं। मुनि धर्मवर्द्धन ने उन सव को अपनी वाणी का सुफल भेंट किया है। ऊपर के उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य काव्यशलियों से सम्वधित कवि की 'नेमि

राजमती वारहमासा', 'श्री गौड़ी पार्श्वनाथ छन्द', 'शील रास' 'श्रीमती चौढालिया' एव 'श्री दशार्णभद्र राजर्षि चौपई' आदि रचनाओ के नाम लिए जा सकते है। इतनी अधिक काव्यशैलियों में सफल रचनाएं प्रस्तुत करना कवि की सामर्थ्यका द्योतक है। राजस्थान के कवियो में मुनि धर्मवर्द्धन की यह विशेषता वस्तुतः ही अत्यंत गौरव का विषय है।

पुराने कवियों मे चित्रकाव्य की रचना करने का चाव रहा है। कविवर धर्मवर्द्धन ने भी इस प्रकार की रचनाएँ की है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है :—

साधु स्तुति (सर्व लघु अक्षर)

धरत धरम मग, हरत दुरित रग,
करत सुकृत मति हरत भरम सी।
गहत अमल गुन, दहत मदन वन,
रहत नगन तन सहत गरम सी।
कहत कथन सत, वहत्त अमल मन,
तहत करन गण महति परम सी।
रमत अमित हित सुमति जुगत जति,
चरन कमल नित नमत धरमसी।

देव गुरु वंदना (इकतीसा, तेवीसा सवैया)[1]

शोभ(त) घणी(जु) अति देह(की) वणी(है) दुति,
सूरि(ज) समा(न) जसु तेज(मा) वडा(य) जू।

---

१ इस पद्य के कोष्ठक वाले अक्षरो का छोड कर पढने से यह 'तेवीसा' सवैया बन जाता है।

भूप)ति) नमें(हैं) नित नाम(कौ) प्रता(प) पहु;
देख(त) ताही(ही) दुख नाहि(हे) कदा(य) जू।
पूर(ण) वडे(ई) गुण सेव(के) करैं(थें) सुख,
वंद(त) तही(ही) वहु लोक (स)मुदा(य) जू।
देत(हैं) बहू(त) सुख देव (सु)गुरु(हि) नित,
दोऊं(कौं) नमै(है) ध्रमसीह(यौ) सदा(य) जू।

साथ ही एक हीयाली भी उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जाती है :—

हीयाली

चतुर कहो तुम्हे चुंप सुं, अरथ हीयाली एहो रे।
नारी एक प्रसिद्ध छै, सगला पास सनेहो रे ॥१॥
ओलै वैठा एकली, करै सगला ई कामो रे।
राती रस भीनी रहे, छोडै नहीं निज ठामो रे ॥२॥
चाकर चौकीदार ज्युं, वहुला राखै पासो रे।
काम करावै ते कन्हा, विलसै आप विलासो रे ॥३॥
जोड़े प्रीति जणैं जणैं, त्रोड़े पिण तिण वारो रे।
करिज्यो वस धर्मसी कहै, सुख वाछो जो सारो रे ॥४॥
(जीभ)

इसी प्रकार कवि समाज मे 'समस्यापूर्त्ति का भी विशेष प्रचलन रहा है। काव्यविनोद करने का यह एक सुन्दर तरीका है। समस्या की पूर्त्ति के लिए प्रसंगोद्भावना करनी पड़ती है। इसमे प्रखर कल्पना—शक्ति की आवश्यकता है।

कविवर धर्मवर्द्धन ने अनेक समस्याओ की सुन्दर एवं रोचक रूप में पूर्ति की है। उनमे से कई तो संस्कृत मे है। आगे कुछ उदाहरण इस दिशा मे प्रस्तुत किए जाते हैं, जो अतीव सरस एवं रोचक है :—

१. समस्या, भावी न टरे रे भैया, भावे कछु कर रे †।

श्रवण भरै तो नीर, मार्यो दशरथ तीर,
ऐसी होनहार कौण मेटि सकै पर रे।
पांडव गये राज हार, कौरव भयौ सहार,
द्रौपदी कुदृष्टि मार्यो कीचक किचर रे।
केती धर्मसीख दइ, सीत विष वेलि वइ,
रावन न मानि लइ जावन कुं घर रे।
भावी को करनहार, सो भी भम्यौ दश वार,
भावी न टरत भैया, भावै कछु कर रे।

२ समस्या, नीली हरी विचि लाल ममोला।

एक समै वृषभान कुमारि,
सिंगार सजै मनि आनिइ लोला।
रंग हर्यें सब वेस बणाइ कै,
अंग लुकाइ लए तिहि ओला।
आए अचाण तहा घनश्याम,
लगाइ भरी करै केलि कलोला।
घुंघट में ए कर्यो अधरामनु,
नील हरी विचि लाल ममोला।

---

†. यह आणंदरामजी नाजर द्वारा दी हुई समस्या की पूर्ति है। ये उस समय बीकानेर के राज्यमत्री थे।

३. समस्या, टेरण के मिस हेरण लागी ।

चुंप सु च्यार सखी मिलि चौक मे,
गीत विवाह के गावन लागी ।
गौख ते कान्ह कौ साद सुणै तें,
भइ वृषभान सुता चित रागी ।
जाइ नहीं चितयो उत ओर,
सखीनि कै वीचि मे वैठि सभागी ।
उतै कर कौ सुकराज उड़ाइ कै,
टेरण के मिसि हेरण लागी ॥

४. समस्या, हरिसिद्धि हसै हरि यों न हसे ।

हनुमान हरौल कियैं चढै राम
तयों निधि संनिधि लंक ध्वसे ।
करि रौद्र संग्राम लकेश कु मारि,
कियौ सुखवास की नास नसे ।
शिव चित्यो त्रिलोक कौ कटक सोऊ,
नमावतौ मो पद सीस दसे ।
उत दैत्य हसे उत देव हसे,
हरिसिद्धि हसे हर यौं न हसे ।

इसी प्रसग में 'कहावत' के साथ समाप्त होने वाले कविवर के अनेक पद्यो मे से उदाहरण स्वरूप यहा एक पद्य प्रस्तुत किया जाता है :—

फूल अमूल दुराइ चुराइ,
लीए तौ सुगध लुके न रहैगे।
जो कछु आथि कै साथ सु हाथ है,
ता तिन कु सब ही सलहैगे।
जो कछु आपन में गुन है,
जन चातुर आतुर होइ चहैगे।
काहे कहो धर्मसी अपने गुण,
बूठे की बात बटाऊ कहैंगे।

महोपाध्याय धर्मवर्द्धन संस्कृत के विद्वान थे। उन्होने सस्कृत के सुभाषित श्लोकों को अनूदित करके भी अपनी रचनाओंमें यत्रतत्र स्थान दिया है। इस विषयमे उदाहरण देखिए :—

रीस भयो कौइ राक, वस्त्र विण चलीयौ बाटै।
तपियो अति तावड़ौ, टालता मुसकल टाटै।
वील रुख तलि वेसि, टालणो माड्यो तड़कौ।
तरु हुंती फल त्रूटि, पड़यो सिर माहे पड़कौ।

आपदा साथि आगै लगी, जायै निरभागी जठे।
कर्मगति देख धर्मसी कहै, कहौ नाठो छुटै कठे ॥१३॥

(छप्पय बावनी)

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापिते मस्तके,
गच्छन् देशमनातपं द्रुतगतिस्तालस्य मूलं गतः।
तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः,
प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यान्त्यापदः॥

(नीतिशतकम्-६९)

पंकज माझि दुरेफ रहै, जु गहै मकरंद चितै चित ऐसौ।
जाइ राति जु ह्वै है परभात, भयैं रवि दोत हसै कंज जैसो।
जाउंगो मैं तब ही गज नैं जु, मृनाल मरोरि लयौ मुहि तैसो।
युं धर्मसीह रहै जोउ लोभित, ह्वै तिन की परि ताहिं अंदेसो।

(धर्म बावनी—४२)

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा मूलतः कमलिनीं गज उज्जहार॥

इस प्रकार महोपाध्याय धर्मवर्द्धन के काव्य की विविधता पर विचार करने से वे एक समर्थ एवं सरस कवि के रूप मे मूर्तिमान होते हैं। उनकी रचनाए उनके जीवन के अनुरूप है और साथ ही रोचक तथा शिक्षाप्रद भी कम नहीं

है। उनके काव्य के सम्बंध में उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार यथार्थ ही कहा जा सकता है :—

एक एक तै विसेष पंडित वसैं असेष,
रात दिन ज्ञान की ही वात कुं धरतु है।
वैदक गणक ग्रन्थ जानैं ग्रह गणन पंथ,
और ठौर के प्रवीण पाडनि परतु है।
करत कवित सार काव्य की कला अपार,
श्लोक सब लोकनि के मन कुं हरतु है।
कहै ध्रमसीह भैया पंडिताई कहु कैसी,
दोहरा हमारे देस छोहरा करतु है।

हिंदी विभाग,
आर. एन रुइया कालेज,
रामगढ़, शेखावाटी
दि० २६-१०-६१

मनोहर शर्मा

महोपाध्याय धर्मवर्द्धन

राजस्थानी-साहित्य की जैन विद्वानो ने बहुत बड़ी सेवा की है। १३वीं शताब्दी से अब तक सैंकड़ों जैन कवि हो गये है जिनकी रचनाओ का प्रमाण कई लाख श्लोकों का है। गद्य और पद्य दोनों प्रकार का विविध विषयक राजस्थानी साहित्य जैन विद्वानो के रचित है। जैन विद्वानों मे प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी, सभी भाषाओ के विद्वान हो गये है। इनमे से कुछ विद्वानों ने इन सभी भाषाओ मे रचनाएं की है कुछने केवल राजस्थानी मे ही और कुछ ने राजस्थानी, हिन्दी, गुजराती भाषा में ही अपनी सारी रचनाएं की है। यहा उनमे से एक ऐसे कवि और उनकी रचनाओ का परिचय दिया जा रहा है जिन्होंने विशेषतः संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी इन भाषाओं में रचनाएं की है। वैसे उनके रचित षट-भाषामय स्तोत्र और सिन्धी भाषा के दो स्तवन भी प्राप्त है। अपने समय के वे महान् विद्वानो मे से थे। अपने गच्छ मे ही नहीं राज-दरबारों में भी इन्हें अच्छा सन्मान प्राप्त था। उन कविश्री का नाम है 'धर्मवर्द्धन'।

जन्म

कविवर धर्मवर्द्धन का मूल नाम धर्मसी था जो उनकी कई रचनाओं मे भी प्रयुक्त है। जैनमुनि-दीक्षा के

अनंतर उनका नाम धर्मवर्द्धन रखा गया था। कवि के जन्मस्थान, तिथि, वश, माता-पिता, आदि के सबंध में विशेप जानकारी तो प्राप्त नहीं होती पर हमारे संग्रह के एक पत्र मे प० धर्मसी के परिवार की विगत लिखा है उसमें उनका गोत्र ओसवाल-वशीय—आचलिया लिखा है। यद्यपि पं० धर्मसी नामक और भी कई यति-मुनि हो गये है, इसलिए उस पत्र में उल्लिखित धर्मसी आप ही है या अन्य कोई, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। आपकी भापा राजस्थानी प्रधान है और दीक्षा भी मारवाड़ राज्यान्तर्गत साचोर में हुई थी, इसलिए आपका जन्मस्थान राजस्थान और विशेपतः मारवाड़ का ही कोई ग्राम होना चाहिये। धर्मसी या धर्मसिंह नामकरण उनके उच्चकुल का द्योतक है। उस समय ओसवाल जाति आदि मे ऐसे और भी कई व्यक्तियों के नाम पाये जाते है। आपके जन्म की निश्चित तिथि तो ज्ञात नहीं हो सकी पर आपकी सर्व प्रथम रचना 'श्रेणिक चौपाई' संवत १७१९ चदरीपुर [1] मे रची गई थी और उसकी प्रशस्ति में आपने अपने को १९ वर्ष का वतलाया है। इससे आपका जन्म सवन् १७०० मे हुआ प्रतीत होता है। यथा—

लघुवय मे उगणीसवे वर्षे, कीधी जोड़ कहावे
आयो सरस वचन को इण मे, सो सतगुरु सुपसाय रे ॥७॥

---

[1] सतरसें उगणी से वरसे 'चदेरीपुर चावें।'

जैन मुनि-दीक्षा

आपकी रचनाओं में संवतोल्लेख वाली 'श्रेणिक चौपाई' संवत् १७१६ में रचित होने से आपकी शिक्षा दीक्षा लघुवय में ही हो चुकी थी। निश्चित होता है। खरतर गच्छ के आचार्य जिनरत्नसूरिजी के पट्टधर जिनचन्द्रसूरिजी ने जिन जिन मुनियों को दीक्षा दी थी, उस दीक्षा नंदी की नामावली के अनुसार आपकी दीक्षा संवत् १७१३ चैत्र वदी ६ साचोर में जिनचन्द्रसूरिजी के हाथ से हुई थी। उस समय आपका नाम परिवर्तन करके धर्मवर्द्धन रखा गया था और विजयहर्ष जी का शिष्य बनाया गया था।

गुरु-परम्परा

आपने अपनी रचनाओं की प्रशस्ति में जो गुरु-परम्परा के नाम दिये हैं, उसके अनुसार आप जिनभद्रसूरि शाखा के उपाध्याय साधुकीर्ति के शिष्य साधुसुन्दर शिष्य वाचक विमलकीर्ति के शिष्य विमलचन्द्र के शिष्य विजयहर्ष के शिष्य थे। यथा—

गरवो श्री खरतर गच्छ गाजे, श्री जिनचन्द्रसूरि राजे जी।
साखा जिनभद्रसूरि सहाजे, दौलति चढ़ी दिवाजे जी।
पाठक प्रवर प्रगट पुन्याई, साधुकीरति सवाई जी।
साधुसुन्दर उवझाय सदाई, विद्या जस वसाई जी।
वाचक विमलकीरति मतिमंता, विमलचन्द्र दुतिवंता जी।

विजयहर्ष जसु नाम बधंता, विजयहर्ष गुण-व्यापी जी।
सद्गुर वचन तणे अनुसारी, धर्म सीख मुनि धारी जी।
कहे धर्मवर्द्धन सुखकारी, चउपइ ए सुविचारी जी।

(अमरसेन वयरसेन चौपाई, संवत् १७२४, सरसा)

इस प्रशस्ति मे उल्लिखित जिनचन्द्रसूरि तो आपके दीक्षा-गुरू थे और उस समय के गच्छनायक थे। जिनभद्रसूरि सुप्रसिद्ध जैसलमेर ज्ञानभंडार आदि के स्थापक है जिन्हे संवत् १४७५ में आचार्य पद प्राप्त हुआ था और १५१४ मे जिनका स्वर्गवास हुआ। उनकी परम्परा के उपाध्याय साधुकीर्ति से धर्मवर्द्धनजी ने अपनी परम्परा जोडी है। साधुकीर्ति का समय संवत् १६११से १६४२ तक का है। ये बहुत अच्छे विद्वान थे। हमारे सम्पादित "ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह" में आपके जीवन से संबधित ६ रचनाए प्रकाशित हुई है। उनके अनुसार "ओशवाल वंशीय सचिंती गोत्र के शाह वस्तिग की पत्नी खेमलदे के आप पुत्र और दयाकलशजी के शिष्य अमरमाणिक्यजी के सुशिष्य थे। आप प्रकाण्ड विद्वान थे। सवत् १६२५ मि० व० १२ आगरे मे अकवरकी सभा मे तपागच्छीय बुद्धिसागरजी को पोपह की चर्चा मे निरुत्तर किया था और विद्वानों ने आपकी बड़ी प्रशसा की थी, सस्कृत मे आपका भापण बड़ा मनोहर होता था।

सवत १६३२ माधव (वैशाख) शुक्ला १५ को जिनचद्रसूरिजी ने आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था और अनेक स्थानो मे विहार कर अनेक भव्यात्माओं को आपने सन्मार्ग-गामी बनाया था।

सवन् १६४६ में आपका शुभागमन जालोर हुआ, वहा साह कृष्ण-पक्ष मे आयुष्य की अल्पता को ज्ञात कर अनशन उच्चारणपूर्वक आराधनाकी और चतुर्दशी को स्वर्ग सिधारे। आपके पुनीत गुणों की स्मृति मे वहा स्तूप निर्माण कराया गया, उसे अनेकानेक जन समुदाय वन्दन करता है। साधुकीर्तिजी अमरमाणिक्य के शिष्य थे, जिनका समय सवत् १६०० के करीब का है अतः जिनभद्रसूरि और अमरमाणिक्यजी के बीच की परम्परा में तीन-चार नाम और होने चाहिये। साधुकीर्ति के आपाढभूति प्रबंध के अनुसार वा० मतिवर्द्धन शिष्य मेरुतिलक शिष्य दयाकलश के शिष्य अमरमाणिक्य थे। पर साधुकीर्तिजी बहुत प्रसिद्ध विद्वान हुए इसलिए धर्मवर्द्धनजी ने अपनी गुरु परम्परा के वे बीच के नाम नहीं देकर साधुकीर्तिजी से ही अपनी परम्परा मिला दी है। साधुकीर्तिजी की सस्कृत और राजस्थानी की कई रचनाए मिलती हैं, उनमें से प्रधान रचनाओं की नामावली नीचे दी जा रही है।

(१) सप्तस्मरण बालावबोध-संवन् १६११ दीवाली, बीकानेर के मंत्री सग्रामसिंह के आग्रह से रचित।

(२) सतरेभेदी पूजा—स० १६१८ श्रावणसुदि ५ पाटण ।

(३) सघपट्टकवृत्ति—स० १६१६ ।

(४) कायस्थिति वालाववोध स० १६२३ महिम ।

(५) आपाढ़भूति प्रबध—सवन् १६२४ विजयादशमी, दिल्ली, श्रीमाल वश पापड गोत्र साह तेजपाल कारित ।

(६) मौन एकादशी स्तवन—सवन् १६३५ जेठसुदी ३, अलवर ।

(७) नमि-राजर्षि चौपाई—सवत् १६३६ माघ सुदी ५, नागौर ।

(८) शीतल जिन स्तवन—संवन् १६३८, अमरसर ।

(९) भक्तामर स्तोत्रावचूरि ।

(१०) दोपावहार वालाववोध ।

(११) विशेप नाममाला ।

(१२) सव्वत्थ वेलि ।

(१३) षट् कर्मग्रन्थ टव्वा ।

(१४) गुणस्थान विचार चौपई ।

(१५) स्थूलिभद्र रास ।

(१६) अल्पावहुत्त्व स्तवन आदि ।

साधुकीर्तिजीके गुरुभ्राता वाचक कनकसोम भी अच्छे विद्वान थे, जिनकी सवत १६५५ तक की २१ रचनाए प्राप्त हुई हैं। राजस्थानी भाषा के आप सुकवि थे ।

साधुकीर्तिजी के शिष्य साधुसुन्दर भी बहुत अच्छे व्याकरणी थे। उनके रचित धातुरत्नाकर, क्रियाकल्पलता टीका (स० १६८०, दीवाली) उक्तिरत्नाकर, और पार्श्व स्तुति (स १६८३), शतिनाथ स्तुति वृत्ति प्राप्त है। साधु-सुन्दर के शिष्य उदयकीर्ति रचित पदव्यवस्था टीका (स १६८१) और पचमी स्तोत्र उपलब्ध हैं।

साधुकीर्तिजी के अन्य शिष्य विमलतिलक के शिष्य विमलकीर्ति भी अच्छे विद्वान् थे। उनके रचित चन्द्रदूत काव्य (स० १६८१), आवश्यक बालावबोध, जीवविचार बा०, जयतिहुअण बा०, पक्खीसूत्र बा०, दशवैकालिक बा०, प्रतिक्रमण समाचारी टब्बा, गणधर सार्द्धशतक टब्बा, षष्टि-शतक बा०, उपदेशमाला बा०, ईकीसठाणा टब्बा, एव यशोधर रास, कल्पसूत्र समाचारी वृत्ति, और कई स्तवन, सज्झाय आदि प्राप्त है। इनके सतीर्थ्य विजयकीर्ति के शिष्य विमलरत्न रचित वीरचरित्र बालावबोध (सवत् १७०२ पोष सुदी १० साचोर) प्राप्त है। इन्हीं विमलकीर्ति के शिष्य विजयहर्ष हुए और उनके शिष्य धर्मवर्द्धन। विमलरत्न रचित विमलकीर्ति गुरु गीत के अनुसार विमलकीर्ति हुंबड़ गोत्रिय श्रीचन्द शाह की धर्मपत्नी गवरा की कुक्षि से जन्मे थे। सवत् १६५४ माघ सुदी ७ को उपाध्याय साधुसुन्दरजी ने आपको दीक्षित किया। गच्छनायक श्रीजिनराजसूरि ने इन्हें वाचक-पद प्रदान किया। सवत् १६६२ मे आपने

मुलतान मे चौमासा किया और सिन्धु देशके किरहोर नगर मे अनसन आराधनापूर्वक स्वर्ग सिधारे।

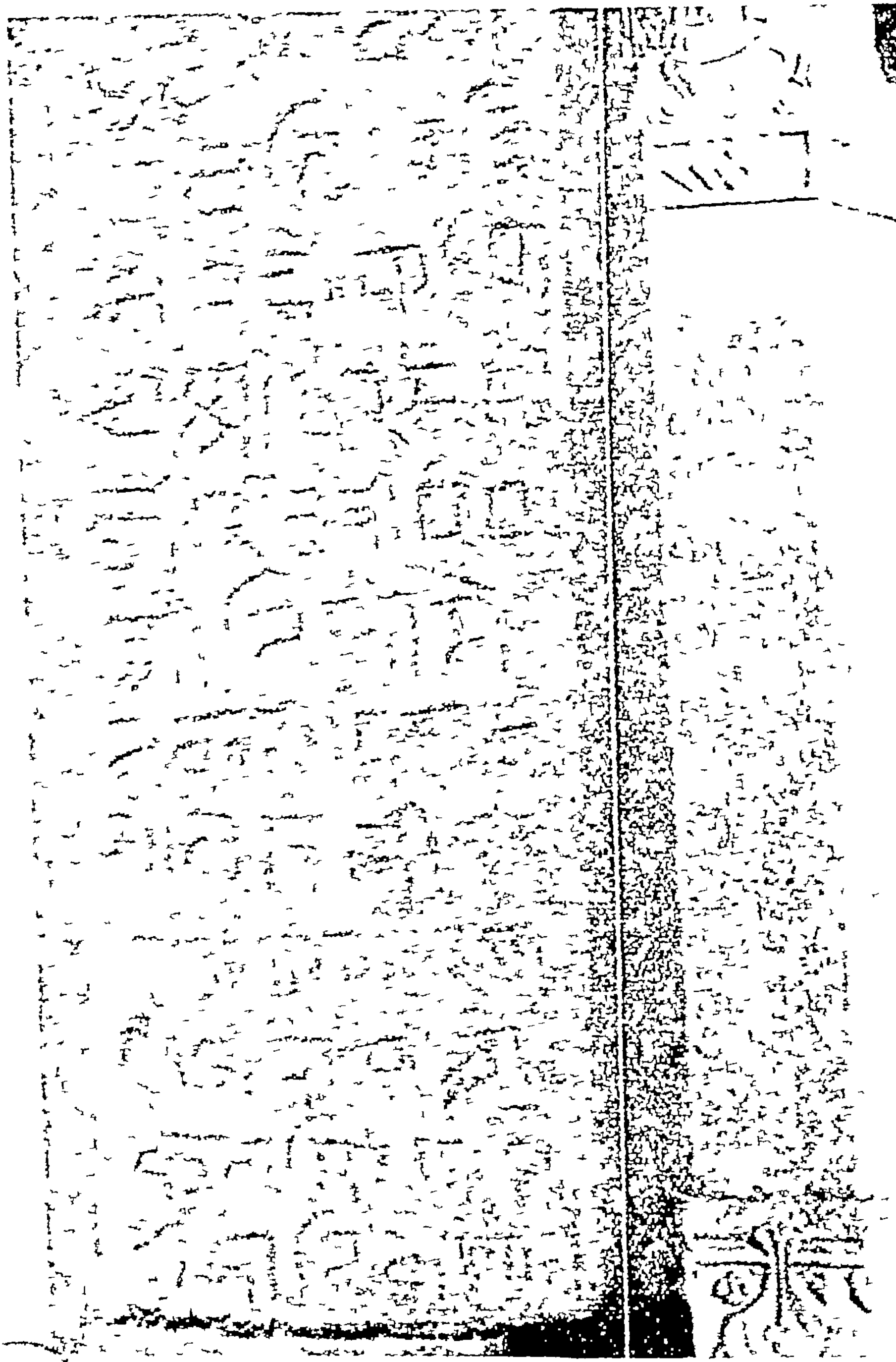
इस प्रकार हम देखते है कि कविवर धर्मवर्द्धनजी की गुरुपरम्परा में कई विद्वान् हो गये हैं और उस विद्वत् परम्परा में आपकी शिक्षा-दीक्षा होने से आपकी प्रतिभा भी चमक उठी और १६ वर्ष जैसी छोटी आयु में श्रेणिक रास की रचना करके आपने अपनी काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया।

धर्मवर्द्धनजी ने १३ वर्ष की अल्पायु में ही जैन-दीक्षा ले ली थी इसलिए घर में रहते हुए तो साधारण अध्ययन ही हुआ होगा। दीक्षान्तर अपने गुरू श्रीविजयहर्षजी के पास थोड़े ही वर्षों में आपने व्याकरण, काव्य, न्याय, जैनागम, आदि मे प्रवीणता प्राप्त करली। फिर अनेक ग्राम नगरों मे विहार करके धर्म-प्रचार के साथ साथ अनुभव को बढ़ाया। आपका विहार बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, चन्देरी, सरसा, देरावर, रिणी, लौद्रवा, बाड़मेर, सूरत, पाटण, खम्भात, अंजार, बेनातट, नवहर, फलौदी, मेड़ता, पाली, सोजत, उदयपुर, रतलाम, साचोर, राड़द्रह, पाटोदी, गारवदेसर, देशनोक, अहमदाबाद, पालीताणा, आदि अनेक ग्राम-नगरों मे हुआ। शत्रुंजय, आबू, केसरियाजी, लोद्रवा, जैसलमेर, सखेश्वर, गोड़ी-पार्श्वनाथ आदि अनेक जैन तीर्थों की आपने यात्रा की।

आपकी विद्वता की धवलकीर्ति कर्पूर के सुवास की भांति शीघ्र ही चारों ओर फैल गई। फलतः गच्छनायक जिनचन्द्र-सूरिजी ने सं० १७४० में इन्हें उपाध्याय पद से अलंकृत किया और अपने पास में ही इन्हें रखा। जिनचन्द्रसूरिजी के स्वर्गवास के बाद जिनसुखसूरि गच्छनायक हुए उन्हे आपने विद्याध्ययन भी करवाया था और उनके साथ ही जब तक वे विद्यमान रहे, आप विहार करते रहे। सं० १७७९ में जिनसुखसूरिजी का स्वर्गवास रिणी में हुआ, उनके पट्टधर जिनभक्तिसूरि हुए। उन्हें भी विद्याध्ययन आपने करवाया था। उस समय जिनभक्तिसूरिजी केवल १० वर्ष के ही थे इसलिए गच्छ व्यवस्था भी विशेषतः आपकी देख रेख मे, होती रही।

राज्य सम्मान

जैन आचार्यों और विद्वान् मुनियों का तत्कालीन राजाओं, मंत्रियों आदि पर विशेष प्रभाव रहा है। बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह, सुजानसिंह, जैसलमेर के रावल अमरसिंह, जोधपुरनरेश जसवतसिंह, सुप्रसिद्ध दुर्गादास राठोड़ और वीर शिवाजी संबंधी आपके पद्य भी मिले हैं। बीकानेर के महाराजा सुजानसिंहजी ने संवत् १७७५ के माघ सुदी मे खरतर गच्छ के आचार्य जिनसुखसूरिजी को पत्र दिया था जो हमारे संग्रह में है. उसमे धर्मसिंहजी की प्रशंसा करते हुए इस प्रकार लिखा है :—



सब गुण ज्ञान विशेष विराजै, कविगण उपरि घन ज्यू गाजै।
धर्मसिंह धरणीतल माहि, पंडित योग्य प्रणती दल ताहि॥

बीकानेर के तत्कालीन मत्री नाजर आणदराम जो कि स्वयं अच्छे कवि और विद्वान थे, आपके प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे। कविवर ने उनकी प्रशंसा में एक सवैया भी रचा है और उनकी दी हुई कि समस्या की पूर्ति भी की है। वह सवैया और समस्यापूर्ति भी इसी ग्रन्थ मे आगे छपी है। नाजर आणंदराम रचित 'भगवन् गीता भाषा', गीता महात्म्य' 'अज्ञानबोधिनी भाषा-टीका' आदि ग्रन्थ उपलब्ध है।

स्वर्गवास :—

सम्वन् १७७६ मे जिनसुखसुरिजी का स्वर्गवास और जिनभक्तिसूरिजी की पदस्थापना रिणी मे हुई उस समय तो महोपाध्याय धर्मवर्द्धनजी वहीं थे। उसके बाद सम्भवत. बीकानेर पधारे और सम्वन् १७८३–८४ मे आपका स्वर्गवास बीकानेर मे हुआ। बीकानेर के रेलदादाजी (गुरु-मन्दिर) में एक छतड़ी बनी हुई है, जिसके अनुसार सं० १७८४ के वैशाख वदि १३ महोपाध्याय धर्म-वर्द्धन (धर्मसीजी) की इस छत्री का निर्माण उनके प्रशिष्य शातिसोम ने करवाया था। छतड़ी के स्तम्भो पर निम्नोक्त दो लेख उत्कीर्णित है।

[१] १७८४ वर्षे वैशाख बदि १३ दिने महोपाध्याय श्री धरमसीजी री छतड़ी प०शान्तिसोमेन कारापिता छत्री छ'थमी

सदा २७ लाग। पाखाण इलाख श्री कु सिरपाव दीना वि जणाने।

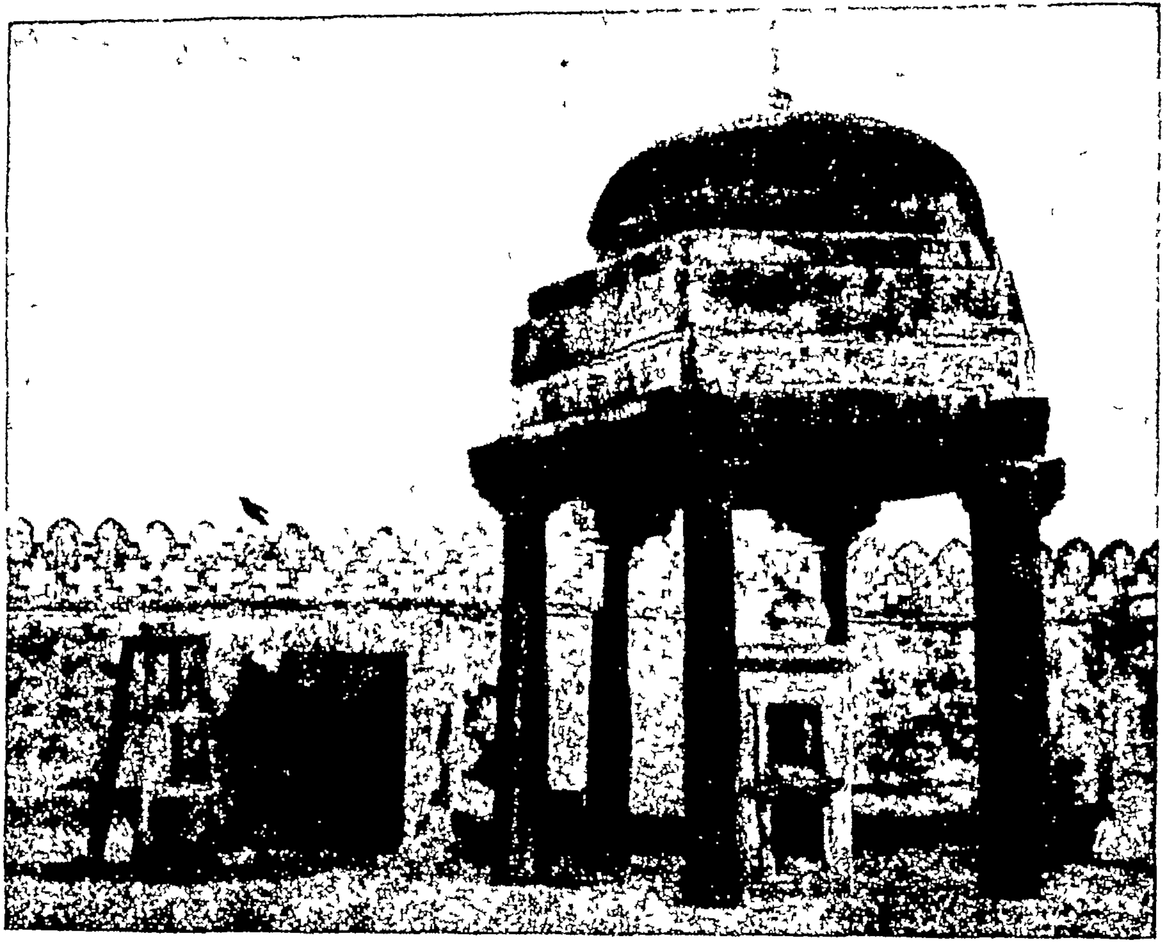
[२] सं० १७८४ वर्षे मि० वैशाख वदि १३ दिने महोपाध्याय श्री धर्मवर्द्धनजी री छतड़ी कारापिता शिष्य पं० सास ··

शिष्य-परम्परा

कविवर धर्मवर्द्धन के गुरुभ्राता विजयवर्द्धन थे, जिनके रचित कई स्तवन उपलब्ध है। आप अधिकाश अपने गुरु विजयहर्षजी के साथ रहा करते थे। इनके शिष्य ज्ञानतिलक व्याकरण और काव्य शास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। इनके रचित 'सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति' 'संस्कृत विज्ञप्ति लेखद्वय" और कई अष्टक आदि प्राप्त हैं। इनमें १०८ श्लोक का एक 'विज्ञप्ति लेख' मुनि जिनविजयजी सम्पादित 'विज्ञप्ति लेख संग्रह' मे हमने प्रकाशित करवाया है। इसमे धर्मवर्द्धनजी सम्बन्धी निम्नोक्त श्लोक उल्लेखनीय है।

पठिता सद्विद्याना सन्निधिरिव सन्निधौ मुनीशानाम्।
श्री धर्मवर्द्धनगणिः सत्कविरिव भासते स्वभापा च ॥३४

अलालाटिका धाटिका पण्डिताना,
निराकारव श्रारवो ऽसीरवश्च।
धियो गर्द्धना धर्मतो वर्द्धनाद्या,
विभान्तूपकण्ठे सतां पाठका हि ॥१०१॥



धर्मवर्द्धनजी का स्मारक स्तूप, रेलदादाजी, बीकानेर

भवत्पूर्वजैर्गन्धहस्तित्व मुक्तं,
तदेव क्रमादागतं पूर्वजेषु ।
सदा भावयन्तोऽधुनाविःसभावं,
भवत्सन्निधिं प्राप्त शोभाविशेषान् ॥१०२॥

पाठकाः सकलशास्त्र पाठकाः शब्दशास्त्रमुरूमध्य जीगपन् ।
ज्ञानतस्तिलकनामक यकं पाणिनीय मत दर्पणार्पणम् ॥१०३॥

धर्मवर्द्धन के शिष्य कान्हजी जिनका दीक्षानाम कीर्त्तिसुन्दर था। वह भी अच्छे कवि थे। इनके रचित निम्नोक्त ६ ग्रन्थ प्राप्त हैं।

[१] अवन्तिसुकमाल चौढालिया—सं० १७५७, मेड़ता।

[२] मांकण रास सं० १७५७, मेड़ता।

[३] अभयकुमारादि पांच साधु रास—स० १७५९, जयतारण।

[४] ज्ञान छत्तीसी—सं० १७५९ श्रावण २, जयतारण।

[५] कौतुक बत्तीसी—सं० १७६१ आषाढ।

[६] कल्पसूत्र-कल्पसुबोधिका वृत्ति—सं० १७६१ अक्षय-तृतीया (पत्र १६४ यति बालचन्दजी संग्रह-चित्तोड़।

[७] चौबोली चौपाई—स० १७६२, थानलेनगर।

---

१ इनका मूल नाम नाथा था, जैन दीक्षा स० १७२६ वैशाख वदी ११ को हुई।

[८] वाग्विलास कथा संग्रह।

[९] फलौदी पार्श्वनाथ छंद— गाथा १२१।

इनमे से माकण रास 'मरू भारती' मे और वाग्विलास कथा संग्रह 'वरदो' मे प्रकाशित किया जा चुका है।

कीर्तिसुन्दर के अतिरिक्त धर्मवर्द्धनजी के जयसुन्दर ज्ञानवल्लभ (गङ्गाराम) आदि और भी कई शिष्य थे। कीर्तिसुन्दर के शिष्य शान्तिसोम और सभारत्न की लिखी हुई कई प्रतिया बीकानेर वृहद्ज्ञानभडार मे है। १९ वीं शताब्दी तक धर्मवर्द्धनजी की शिष्य-परम्परा विद्यमान थी।

कविवर के प्रकाशित ग्रन्थ

प्रस्तुत ग्रन्थ मे आपकी जितनी भी लघु रचनाए संस्कृत, राजस्थानी हिन्दी मे प्राप्त हुईं, उन्हे प्रकाशित किया जा रहा है। उनकी नामावली अनुक्रमणिका में दी हुईं है इसलिए यहा उसका उल्लेख नहीं किया जा रहा है। यहा केवल उन्हीं रचनाओं का परिचय दिया जा रहा है, जो इस ग्रन्थ के बड़े हो जाने के कारण इसमे सम्मिलित नहीं की जा सकी।

(१) श्रेणिक चौपई

राजगृह के महाराजा श्रेणिक जो भगवान् महावीर के भक्त थे, उनका चरित्र इस ग्रन्थ मे दिया गया है। कथा प्रसंग बड़ा रोचक है साथ ही बुद्धिवर्द्धक भी। कवि ने ३२ ढाल

और ७३१ गाथाओं में इसे सं० १७१६ चंदेरीपुर में बनाया। जैसा कि पहले कहा जा चुका है यह कवि की सर्व प्रथम रचना है, जो केवल १६ वर्ष की आयु में बनाई गई थी। इसकी प्रतियाँ बीकानेर के जिनचारित्रसूरि एव उपाध्याय जयचदजी आदि के सग्रह में है।

(२) अमरसेन वयरसेन चौपई

स० १७२४, सरसा में इस राजस्थानी चरित्र काव्य की रचना हुई है। इसकी कई प्रतिया बीकानेर के ज्ञानभण्डारों मे है।

(३) सुरसुन्दरी रास

कवि ने इस रास में नवकार मंत्र और शील के महात्म्य संबन्धी अमरकुमार सुरसुन्दरी की कथा चार-खण्डो मे गु फित की है। प्रथम खण्ड मे आठ, द्वितीय मे ग्यारह तृतीय मे आठ, चतुर्थ में बारह ढ़ालें हैं। कुल ६३२ गाथाए है। श्लोक संख्या ६०० है। अन्य प्रति में गाथाओं की सख्या ६१६ भी बतलाई गई है। इस कथा का मूल आधार 'शीलतरगिणी' नामक ग्रन्थ का कवि ने उल्लेख किया है। स० १७३६ श्रावण सुदी १५ वेनातटपुर (बिलाड़ा) में इसकी रचना हुई है।

[४] परमात्म-प्रकाश हिन्दी टीका

खण्डेलवाल रेखजी के पुत्र जीवराज के पुत्रके लिये दिगम्बर

'परमात्म-प्रकाश' की हिन्दी भाषा टीका सं० १७६२ में कवि ने बनाई है। इसकी ३५ पत्रों की प्रति अजमेर के दिगम्बर भट्टारक भण्डार में है।

[५] वीरभक्तामर स्वोपज्ञ वृत्ति

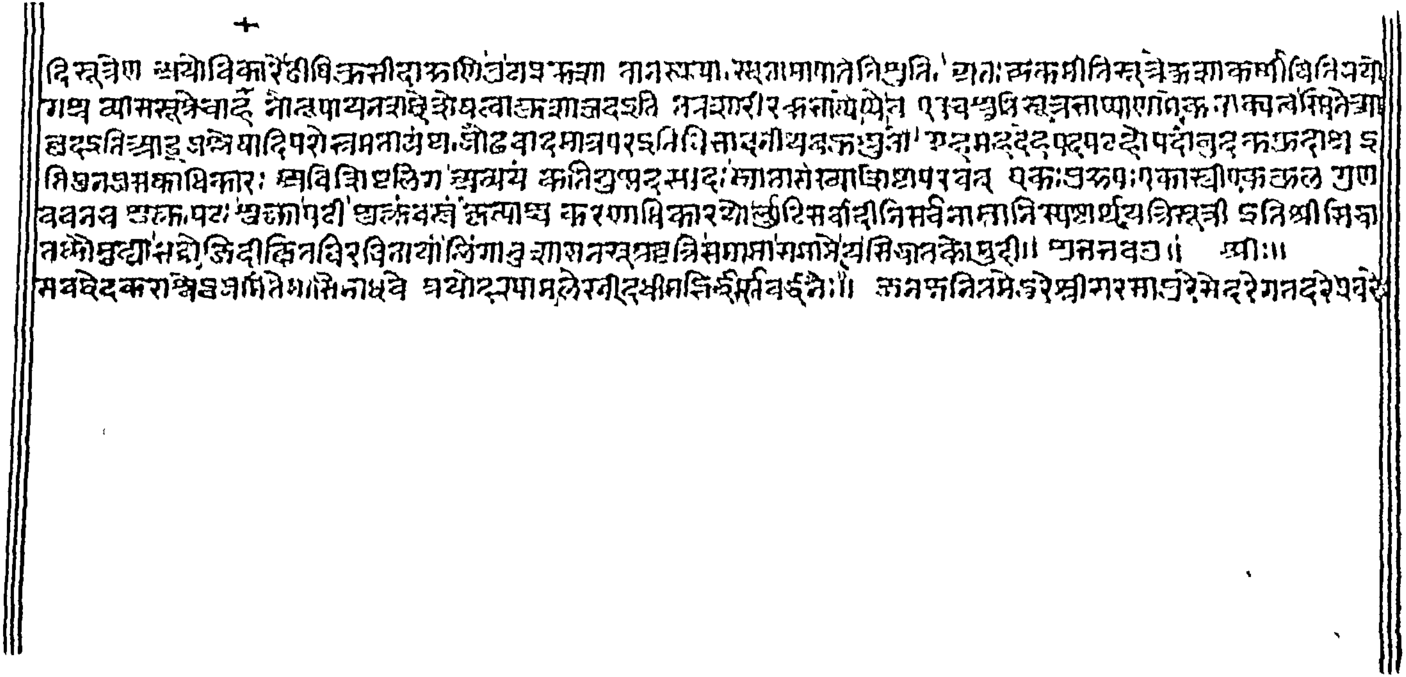
प्रस्तुत ग्रन्थ मे वीर—भक्तामर मूल छपा है। इससे पहले भी यह संस्कृत भक्तामर का पादपूर्ति काव्य आगमोदय समिति प्रकाशित काव्य संग्रह प्रथम भागमें छप चुका है। पर इसकी स्वोपग्यवृत्ति अभी अप्रकाशित है जिसे भीनासर के यति सुमेरमलजी के संग्रह में हमने कई वर्ष पूर्व देखी थी।

कवि धर्मवर्द्धन की रचनाओं से मेरा परिचय बाल्यकाल से है। उनके रचित "जिनकुशलसूरि का सवैया" में जब ८—१० वर्ष का था तभी सुनने को मिला था फिर इनके रचित कई स्तवन और सझाय मेरे ज्येष्ट भ्राता स्वर्गीय अभयराजजी की स्मृति मे मेरे पिताजी के प्रकाशित 'अभयरत्नसार' में सन्-१९२७ मे प्रकाशित हुए तबसे कवि का परिचय और भी बढा और सं० १९८६ मे जब कविवर समयसुन्दर की रचनाओ की खोज करने के लिये बीकानेर के बड़े ज्ञानभण्डार आदि की हस्तलिखित प्रतिया देखनी प्रारम्भ की तो 'महिमाभक्ति भण्डार' में ९६ पत्रो की एक ऐसी प्रति मिली, जिसमें कवि की समस्त छोटी छोटी रचनाओं का संग्रह था। इसकी प्रति की मैंने राजस्थानी रचनाओ की प्रेसकापी तो स्वयं उसी समय तैयार करली और सस्कृत स्तोत्रादि की प्रेस कापी

पण्डित शोभाचन्द्जी भारिल्ल से करवा ली जो उस समय बीकानेर के सेठिया विद्यालय में काम करते थे। कविवर की जीवनी और अन्य रचनाओं की यथासम्भव खोज करके 'राजस्थानी साहित्य और कविवर धर्मवर्द्धन' नामक एक विस्तृत लेख तैयार किया जो कलकत्ते की राजस्थानरिसर्च सोसाइटी के त्रैमासिक शोधपत्र में 'राजस्थान के वर्ष २ अङ्क संख्या २ के २२ पृष्ठों में सं० १९९३ के भाद्रपद के अङ्क में प्रकाशित हुआ। उस लेख में मैंने लिखा था "आपके जीवनचरित्र और कृतियों की खोज लगभग ७-८ वर्षों से चालू है। जिसके फल-स्वरूप बहुत सी सामग्री संगृहीत की गई है। और उसको आधार पर विस्तृत जीवनचरित्र, आपकी लघुकृतियों के साथ प्रकाशित करने का विचार है।" अपने ३०—३२ वर्ष पहले के किये हुए प्रयास को आज सफल हुआ देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। इस ग्रन्थ में कविवर की समस्त लघु रचनाओं को प्रकाशित किया जा रहा है। पाच बडी रच-नाएं जो इस ग्रन्थ के बडे हो जाने के कारण इसमें सम्मिलित नहीं की जा सकी, उनका विवरण ऊपर दिया जा चुका है। कवि का चित्र तो नहीं प्राप्त हो सका अतः उनके हस्ताक्षरो की एव स्मारक स्तूप छत्री प्रतिकृति देकर सन्तोप करना पड़ता है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में मुझे मेरे भ्रातृपुत्र श्री भंवरलाल नाहटा का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है, 'वरदा' के यशस्वी सम्पादक श्री मनोहर शर्मा ने इसकी भूमिका लिखने की कृपा की है,इसलिये मैं इनका अभारी हूं। ग्रन्थ में कठिन शब्दों का कोष देने का विचार था, पर ग्रन्थ काफी बड़ा हो चुका है और उसको तैयार करने में कुछ समय लगता जिससे ग्रन्थ प्रकाशन में और भी विलम्ब होता, इसलिये वह नहीं दिया जा सका है।

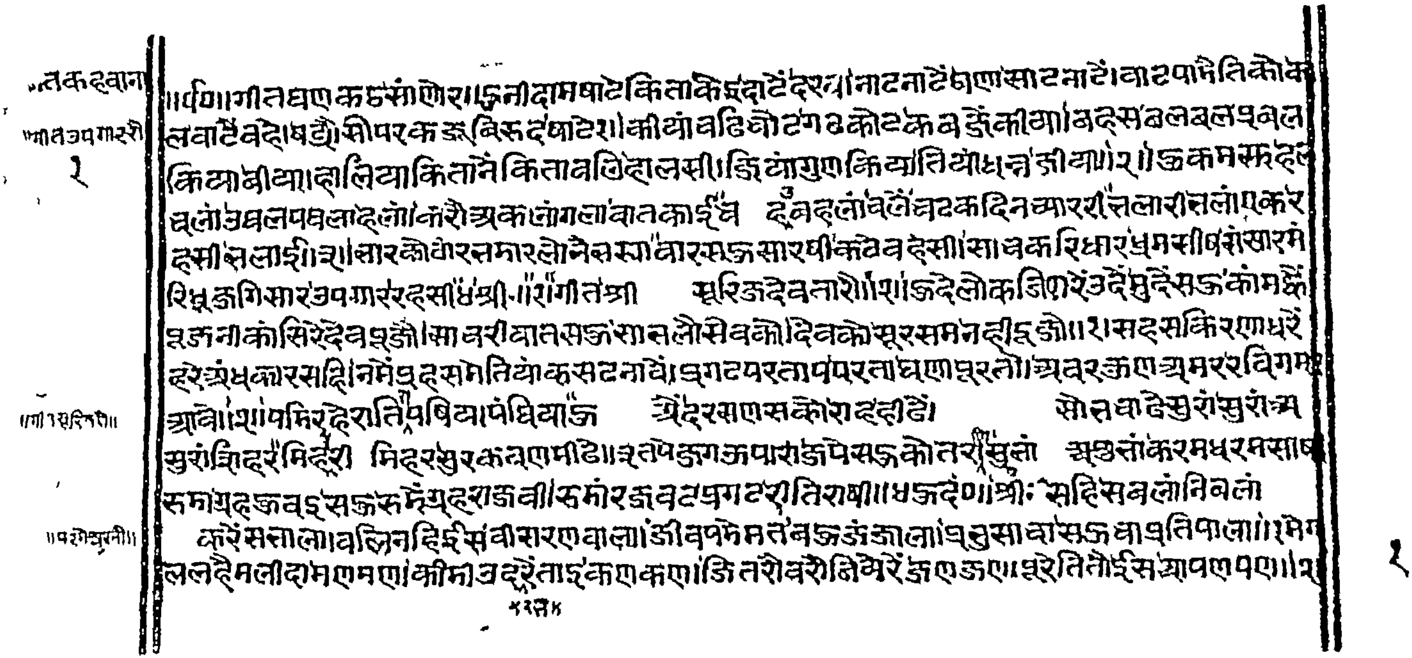
विनीत :—
अगरचंद्र नाहटा



कविवर धर्मवर्द्धन लिखित "सिद्धान्तकौमुदी"

अनुक्रमणिका

समस्या पदानि



कविवर धर्मवर्द्धन की स्वहस्त लिखित संग्रह प्रति का आदिपत्र ।

कविवर धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली

धर्म बावनी

ॐकार महिमा

सवैया तेवोसा

ॐकार उदार अगम्म अपार, संसार में सार पदारथ नामी।
सिद्ध समृद्ध सरूप अनूप, भयो सबही सिरि भूप सुधामी ॥
मंत्र में यंत्र में ग्रन्थ के पंथ में, जाकुं कियो धुरि अंतरयामी।
पंच ही इष्ट वसैं परमिष्ट, सदा धर्मसी करै ताही सलामी ॥१॥
नमो निसदीस नमाइ कै सीस, जपौ जगदीस सही सुख दाता।
जाकी जगत में कीरति जागत, भागति है सब ईति असाता ॥
इन्द नरिंद दिणिन्द फुणिन्द, नमाए हैं वृन्द आणद विधाता।
धोरी धरम को धीर धरा धर, ध्यान धरे धर्मसी गुण ध्याता॥२॥

गुरु महिमा

महिमा तिनकी महिमें महिमे, जिन दीनो महा इक ज्ञान नगीनो।
दूर भग्यो भ्रम सौ तम देखत, पूर जग्यो परकास नवीनो।
देत ही देत ही दूनो वधै, अरु खायो ही खूटत नाहि खजीनों।
एसो पसाउ कीयो गुरुराउ, तिन्है धर्मसी पद पंकज लीनो ॥३॥

सर्व गुरु अक्षर सरस्वतीकी स्तुति

सवैया इकतीसा

सिद्धा रूपी साची देवा, सारै जीकी नीकी सेवा,
रागैं आए लागैं पाए, जागे मोटी माई है।
चंगी रंगी वीणा वावै, रागैं सारैं रागैं गावैं,
हाव भाव सोभा पावें, ज्ञाता जाकुं गाई हैं।
हंसी कैंसी चाली चालै, पूजी वंदी पीड़ा टालैं,
लीला सेती लालैं पालै, शुद्ध बुद्धिदाई है।
सो है वानी नीकी वानी, जाकुं ज्ञानी प्राणी जानी,
ऐसी माता सातादानी, धर्मसीह ध्याई है ॥४॥

सर्व लघु अक्षर साधुकी स्तुति

भमरा की चालि

धरत धरम मग, हरत दुरित रग
करत सुकृत मति हरत भरमसी।
गहत अमल गुन, दहत मदन वन
रहत नगन तन सहत गरम सी।
कहत कथन सन वहत अमल मन
तहत करन गण महति परमसी।
रमत अमित हित सुमति जुगते जति
चरन कमल नित नमत धरमसी ॥५॥

मैत्रीया प्रीति

सवैया तेवीसा

अपने गुण दूध दीये जल कुं, तिनकी जल नैं फुनि प्रीतिफलाई ।
दूध के दाह कुं दूर कराइ, तहा जल आपनी देह जलाई ।
नीर विछोह भी खीर सहै नहीं, ऊफणि आवत है अकुलाई ।
सैंन मिल्यैं फुनि चैंन लह्यो तिण, ऐसी धर्म्मसी प्रीति भलाई ।।६।।
आपही जो गुन की गति जानत, सोई गुनीनि कौ संग गहै है ।
जो धर्मसि गुण भेद अवेद, गुमार कहा सु गुनी कुं चहै है ।
दूर सुं दौर्यो ही आवें दुरेफ, जहा कछु वारिज वास वहै है ।
एक निवास पैं पास न आवत, मैंडकु कीच कैं वीचि रहै है ।।७।।
इणे भव आइ, जिणै धन पाइ, रख्यो है लुकाइ, भख्यो नहीदीनों।
ह्राइ धंधै ही मैं धाइ रह्यो नित, काइ नही कृति लोभ सुं लीनौ ।
कोल्हु के वैल ज्युं कोइ नहीं सुख, भूरि भर्यो दुख चित सुचीनो।
जेण धर्मसी धर्म धर्यो न, कहा तिण मानस होइ कैं कीनो ।।८।।
ईड़ति हैं जिण कु सवही जन, आस धरैं सब पास रहैया ।
पडित आइ प्रणाम करै, फुनि सेवत है सबनै समभैया ।
आइ गरज्ज अरज करै, जु धरै सिरि आण भलै भले भैया ।
साच की वाच यहैं धर्मसी जग, सोइ वड़ौ जाकी गाठ रुपैया ।।९।।
उमगि उमगि कर्यो धर्म कारिज, आरिज खेत में वित्त ही वायौ ।
देव की सेव सजी नितमेव, धर्यो गुरु को उपदेस सवायौ ।
आचरतैं उपगार अपार, जिणै जश सों दिगमंडल छायो ।
ऐसी क्रतूत करी धर्मसीह, भलैं तिण मानव को भव पायो।।१०।।

सवैया इकतीसा

ऊपर सुं मीठे मुख अंतर सुं राखत रोष,
देखन के सोभादार भादु कैसी चीभ है।
गुनियनि के गुन ठारि, औगुन अधिक धारि,
जौलुं न कहत कहुं तौलु मन डीभ हैं।
तजि के भी प्राण आप और सुं करै संताप,
ऐसो खलको सुभाउ मच्छिका सनीभ है।
धर्मसी कहत यार मंडै जिण वासुं प्यार,
मानस के रूप मानु दूसरो दुजीभ हैं॥११॥

सवैया तेवीसा

ऋद्धि समृद्धि रहै इक राजी सुं, एक करै है ह हांजी हाजी।
एक सदा पकवान अरोगत, एक न पावत भूको (खो) भी भाजी।
एक कूं दावतवाजी सदा, अरु एक फिरैं हैं पईसै के प्याजी।
युं धर्मसीह प्रगट्ट प्रगट्ट ही देखो, वे देखो वखत की वाजी।१२।
रीस सुं वीस उदेग वधै, अरु रीस सुं सीस फटै नितही को।
रीस सुं मित भी दात कुं पीसत, आवत मानु खईस कही को।
रीस सुं दीखत दुर्गति के दुख, चीस करंत तहां दिन ही को।
युं धर्मसीह कहै निसदीह, करै नहीं रीस सोइ नर नीको॥१३॥

सवैया इकतीसा

लीयौ नहीं कछु लाज, संचे पाप ही कौ साज,
नरक नगर काज, गैल रूप गणिका।
अंतर की वात ओर, ठगिवैं की ठकैं ठौर,

नित की करै निहोर, जाहि ताहि जनका।
जूअनि को जालौ अग कोढ़ी महाकालौ रंग,
ताही सु वनावै संग, धारैं लोभ धनका।
ऐसो कहे धर्मसीह, रहैं वासु राति दीह;
सो तौ भैया चाक हुं, वड़ा रोभ वन का ॥ १४ ॥

सवैया तेवीसा

लीजत ही जल कूप को निर्मल, सैंथि धर्यों दुर्गंध ही ह्वैं है।
फूलिनि को परै भोग भलो, पुनि राति रहै कोई हाथि न लैहै।
दूर तजो चित की तृष्णा नर, जौ लु कोऊ दिन पुन्य उदै है।
यु धर्मसीह कहे कछु देहु,
दिलाउरे गाडि धर्यों धन धूरि हू जै है ॥ १५ ॥

एक कै पाइ अनेक परै फुनि एक अनेक के पाइ परै है।
एक अनेक की चिंत हरैं, अरु एक न आपनो पेट भरै है।
एक खुस्याल सुवै सुख साल में, एकक्तु खंथ न खाट जुरै है।
देखो वे यार कहै धर्मसी जग,
पुन्यरु पाप परतिक्ष फुरै है ॥ १६ ॥

ऐ ऐ देखो दइ गतिया, वतिया कछु ही न कही सी परै है।
रंक कु राज (उ) रु राउ को रक, पलक्क में ऐसी हलक्क करै है।
एक विचित्र ही चित्र वनावत, एक कु भाजत एक घरै हैं।
वात धरम्मसी वाही कै हाथ,
है टार्यो न काहु कौ ईस टरै है ॥ १७ ॥

ओ जगि मूढपति जिनकी दृग,आद्र सकै उपमान कही है।
दर्पण मे प्रगटे सब रूप त्यु, मूढ मै द्रव्य दशा उमही है।
सम्यगवंत मुदा दि सिला सम, और की छाह सु काज नहीं है।
दीसत एक मयूर ही नृत्यत,
त्युं चितवतके आत्तम ही है ॥ १८ ॥

ऊत को गेह, कुपात को नेह, रू झंखर मेह जूआर को नाणो।
ठार कौ तेहरू छारकौ लिपन, जार को सुख अनीति को राणो।
काटि कडंबर जीरण अंबर, मूढ सुं गूढ टक्यो न पिछाणो।
यु धर्मसीह कहै सुणि सज्जन,
आथि इ नाहीं' की साथि न जानो ॥ १९ ॥

अंग मरोरत तोरत है तृण, मोरत है करका अविच्छन।
राति रहै डरतौ घर भीतरि, भी फिरतो फिरतो करै भच्छन।
भूमि लिखै भिसलै पग सुं, जु अटट्ट हसै मसलै पुनि अच्छन।
सोइ रहै न गहै धर्मसीख कुं,
लच्छि कहां जहा ऐते कुलच्छन ॥ २० ॥

अनूप ही रुप कलाविद कोविद, है सिरदार सबै सुमति कौ।
साहसगीर महा वडवीर, सुधीर कसूर करारी छती कौ।
सार उदार अपार विचार, सबै गुण धारि अचार सती को।
एती सयान है धर्मसी पुनि,
एक रती विनु एक रती कौ ॥२१॥

काकसी कोकिल श्याम सरीर है, क्रोध गभीर धरै मन माहिं।
और कै वालक सुं धरै दोप, पै पोखत आपहीके सुत नाहि।

एसो सुभाऊ बुरौ उनको पुनि, एक भलौ गुन है तिन पाहीं ।
बोले धर्मसी वैन सुधारस,
तातें सुहात जहां ही तहां ही ॥ २२ ॥

खोदि कुदाल सुं आनी है रासभ, भू पटकी छटकी जल धारै ।
लातन मारे कैं चाक चढ़ोरी है, डोरी सुं फासी सी देइ उतारै ।
कूट टिपइ जलाइ है आगि मैं, तो भी लोगाइया टाकर मारै ।
यूं धर्मसी सगरी गगरी भैया,
कोउ न काहू की पीर विचारैं ॥ २३ ॥

गुण रीति गहै हठ मै न रहै, कोऊ काज कहै तसु लाज वहै ।
कछु रीस न है सब बोल सहै, अपनैं सवही कु लियै निवहै ।
चित्त हेत चहे पर पीर लहैं, न चलैं कबहु पथ में अव है ।
धर्मसीह कहैं जगि सोऊ वहडौ,
जिनके घट में गुण ए सब है ॥ २४ ॥

घुरराटि करै घर द्वारहि तैं, घुरकै घर के पति सू घर रानी ।
सासु को सास ही सोखि लयो, पुनि जोर कहा धु करैंगी जिठानी ।
धूजत है घर को जु धनी, फुनि पाथर मारत मागत पानी ।
देखो धरमसी दूठी है भूठी है,
नारि किधु घर नाहरि व्यानी ॥ २५ ॥

डान मैं काहु कुं आनत नाहि, गुमान सु गात चलावत गोबू ।
सोभैं घरी घरी पाघरी पेच कुं, पेखत आरसी में प्रतिबिंबू ।
भूठो सरब्ब गरब्ब धरावत, जौलुं न काल कहुं अजगीवू ।

आज धरौ नहीं हो धर्मशील पै,

ल्यौगे घणे जु तिसै दिन लीवू ॥ २६ ॥

सवैया इकतीसा

चाहत अनेक चित्त (चीत), पाले नहीं पूरी प्रीत ,

केते ही करैं है मीत, सोदौं जैसे हाट को ।

छोरि जगदीस देव, सारैं ओर ही की सेवु ;

एक ठोर ना रहै, ज्यूं भोगल-कपाट को ।

जाणे नहीं भेद मूढ़, ताणे आप ही की रूढ़ ;

ह्वै रह्यो मदोन्मत, जैसे भैसों ठाट कौ ।

धर्मसी कहै रै सैन, ताकौं कवहुं न चैन ,

धोवी कैसौ कूकरा है, घर को न घाट कौ ॥ २७ ॥

सवैया तेवीसा

छोरि गरव्व जु आवत देखि कै, आदर देइ कै आसन दीजै ।

प्रीति ही कै रुख की मुख की, सुखकी दुखकी मिलि बात वहीजैं ।

दूर रहैं नित मीठी ही मीठी ही, चीज रु चीठी तहा पठइजै ।

साच यहै धर्मसीउ कहै भैया,

चाह करैं ताकी चाकरी कीजैं ॥ २८ ॥

जो तप रूप सदा अपकै, अपनो वपु पूत पखार करैंगो ।

जो तप की खप पूर करैं, नर पाप कैं कूप मे सो न परेगो ।

मोक्षपुरी तसु पंथ प्रयान कुं, पुन्य पकान की पोटि भरैंगो ।

धर्म कहै सव मर्म यहै,

तप तैं निज कर्म को भर्म हरेगो ॥२९॥

झगरा उलटा ही गहै कुलटा, कबहुं न रहै कुल की वट में।
वहु लोकनि में निकसै करि लाजरू, यार कुं घेरत घुंघट में।
लहिहुं कव घात करू वह वात, यही घटना जु घटै घट में।
उनकी धर्मसीह गहै जोऊ लीह,
मिटैं तसु माम चट्टा पट में ॥ ३० ॥

नैन सुं काहू सुं सैंन दिखावत, वैन की काहु सौ बात वनावै।
पति की चित्त में परवाह नहीं, नित की जन और सु नेह जणावै।
सासूकौ सास जिठानीको जीउ, दिरानीकी देह दुखै ही दहावै।
कहै धर्मसीह तजो वह लीह,
लराइ कौ मूल लुगाइ कहावै ।३१।

टैंटि धरै मन में तन में न नमै, नही मेलत मीटि ही ऐसी।
काहिकुं आपनौ जानियै ताहिकुं,आनीयै चित्त मैं को परदेसी।
ताको न नाम ठाम न लीजियै, कीजियैं आप ही तैंसै तैंसी।
साच यहै धर्मसीउ कहै,
भैया चाह नहीं ताकी चाकरी कैसी ॥ ३२ ॥

ठीककी वात सवै चित्तकी, हितकी नितकी तिन सोज कहीजै।
सो पुनि आपनसों मिलिकै ढिलकैं सुध जो कहै सोउ कीजैं।
कोउ कुपात परैं उलटो, कुलटौ करि चीत कुं मीतसौं खीजैं।
जो धर्मसीह तजैं हित लीह तिन्है,
मुखि छार दे छार ही दीजै ॥ ३३ ॥

सवैया इकतीसा

डोलैं परवार लार वैंन कहै वार वार,
हाल सेती माल ल्याहु ढीलन पलक है।

भोजन कुं नाज साज, लाज काज चीर ल्याह जाहु,
जाहु ल्याहु देहु ऐसी ही गलक है।
व्याहुनिकी पाहुनिकी कहा करूं भैया मोहि,
ऐतें है जंजाल जेते सीस न अलक है।
धर्मसी कहै रे मीत, काहे कुं रहै सचीत,
दैवै कुं है एक देव खैवै कुं खलक है ॥ ३४ ॥

सवैया तेवीसा

ढीठ उलूक न चाहत सूरिज, तैसैं मिथ्याती सिद्धंत न ध्यावै।
कूकर कुंजर देखि भसैं, पुनि त्युं जड़ पंडित सुं घुररावैं।
सूकर जैसै भली गली नावत, पापी त्युं साधु के सग न आवै।
लंपट चाहत ना धर्मसीखकुं,
चोरकु चादणो नाहि सुहावै ॥ ३५ ॥

नहीं कोउ पाहुणो ना कछु लाहणो, नाहि उराणो कहू को होवो।
गरज्ज परैं ही अरज्ज कै कारण, काहुं सुं ना कर जोरि कै जोवो।
घर की जर की पुनि बाहिर की, डर की परवाह न काहू कूं रोवो।
कहै धर्मसीह वड़ो सुख है भैया,
माग कै खाइ मसीत मे सोवो ॥३६॥

तीछण क्रोध सुं होई विरोध रु, क्रोध सुं बोध की सोध न होई।
क्रोध सो पावैं अधोगति जाल कु क्रोध चडाल कहै सब कोई।
क्रोध सुं गालि कढै वढै वेढ, करोध सुं सजन दुज्जण होइ।
युं धर्मसीह कहै निसदीह सुणो,
भैया क्रोध करो मति कोई ॥३७॥

थान प्रधान लहै नर दान तैं, दान तै मान जहा जहा पावै ।
दान तै ह्वै दुख खानि की हानि, जु रान मसान कहुं डर नावै ।
दान सु भानु विमान लु कीरति, दान विद्वान कुं आनि नमावै ।
दान प्रधान कहै धर्मसी सिव-
सुन्दरि सौं पहिचान बनावैं ॥३८॥

सवैया इकतीसा

देखत खुस्याल देह नैन ही मे धरे नेह,
करत वहुत भाति आदर कै देवैं की ।
नीके ही पधारे राज, कहो हम जैसो काज,
पूछै फुनि वात-चीत पानी और पैवै की ।
ऐसी जहा प्रीति रीति चाहे हम सोइ चीत,
और है प्रवाह हम कहा कछु खेवैं की ।
धर्मसी कहत वैन, सवही सुणेज्यो सैन,
मैंलपोहि देखैं तहा सोहि हम जैवै की ॥३९॥

सवैया तेवीसा

धंध ही मे नित धावत धावत, टूटि रह्यो ज्युं सराहि को टट्टू ।
पारकैं काज पचैं नित पापमे, होइ रह्यो जैसे हाडी को चट्टू ।
छारे नहीं कव ही धर्मसीख कुं, मुझि रह्यो है अज्ञान मखट्टू ।
चित ही माझि फिरैं निस वासर,
जैसै सजोर की डोर को लट्टू ॥ ४० ॥

नाचत-वश कैं ऊपर ही नर, अग भुजग ज्युं कल तल पेटा ।
जोंरह प्यार की ठौर परै जहा, सोइ सहै रण माहि रपेटा ।

तैसैं कहै धर्मसीह याही वात राति दीह,
मूरख कुं सीख दे कैं युं ही वैन खोयी है ।४८।

लंक कलंक कुं वंक लगाइ है, रावन की रिधि जावनहारी ।
नीर भर्यो हरिचंद नरिंद हि, कंस को वंश गयो निरधारी ।
मुंज पर्यो दुख पुंज के कुंज, गयो सब राज भयो है भिखारी ।
मीनरू मेख कहै ध्रम देख पैं,
कर्म की रेख टरै नहीं टारी ।४९।

विनय विनु ज्ञानकी प्राप्ति नाहीं रू, ज्ञान बिना नहीं ध्यान कही कौं ।
ध्यान बिना नहीं मोक्ष जगत में, मोक्ष विना नहीं सुख सही कौं ।
तातैं विनय ही धरौ निस दीह, करौ सफली नरदेह लही कौं ।
यार ही वार कहै धर्मसी अब,
मान रे मान तुं मेरी कही कौ ॥५०॥

शील तैं लील लहै नर लोक में, शील तैं जाय सबै दुख दूरै ।
शील तैं आपइ ईलति भाजत, शील सदा सुख सम्पति पूरै ।
कोरि कलंक मिटै कुल कुल के, कलि में बहु कीरति होइ सनूरैं ।
सार यहै धर्मसीउ कहै भैया,
शील ही तैं सुर होत हजूरै ॥ ५१ ॥

ख्याल खलक्क में देखो सनिसर, तात सूरिज सो दुज्जन ताइ ।
बाप निसापति ही सौं टरै नहीं, बुद्ध विरुद्ध धरैं है सदाइ ।
केसव को सुत काम कहावत, तात सुं नाहि टर्यो दुखदाइ ।
मानस की धर्मसीह कहा कहैं,
देवहुं कैं घर माहि लराइ ॥५२॥

सत की सगति नाहि करी, न धरी चित में हित सीख कही कू ।
प्रीति अनीति की रीत भजी न, तजी पुनि मूढ मैं रूढ़ि गही कुं ।
या जमवार में आइ गवार में, मारी इता दिन भार मही कुं ।
रे सुन जीउ कहे धर्मसीउ,
गइसो गइ अब राख रही कुं ॥५३॥

हाथ वसैं अरू आथि नसैं, जु वसैं चित्त में उद्वेग क्रोधू आ ।
सगे सुनि क्रूर कियो घर दूर, दिखाइ न मूह दीयो यह दूआ ।
ढुकै लहणात सुकै मन माहि, तकै मरिवैकुं वावरी कुआ ।
कहै धर्मसीह गहै सुख लीह तौ,
भूलि ही चूक रमो मत जूआ ॥ ५४ ॥

लंछन चद मैं ताप दिणद में, चंदन माझि फणिद कौ वासो ।
पंडित निर्द्धन सद्धन है सठ, नारि महा हठ को घर वासौ ।
हीम हिमाचल खार है वारिधि, केतक कंटक कोटि कौ पासौ ।
देखो धर्मसी है सबकुं दुःख,
कोउ करो मत काहू को हासौ ॥५५॥

क्षमाही को खड्ग धर्यो जिण धीर, करी है तयार सुज्ञानकी गोली ।
सुमति कवाण सुवैण ही वाण, हलक्क ही सु भरि मुठि हिलोली ।
ऐसो सज्यो ही रहै धर्मसीउ, कहा करै ताको दुरजन कोलि ।
सदा जगि जैत निसान घुरैं,
गृदधुं गृदधु करि कोडि कलोली ॥५६॥

ज्ञान के महा निधान, बावन वरन जान,
कीनी ताकी जोरि यह ज्ञान की जगावनी ।

संकट कोटि विकट्ट सहैं नर, पूरण कुं अपनें रह पेटा।
देखो धर्मसीह जोर पखावज,
चूण कै काज सहैज चपेटा ॥४१।

पंकज मांझि दुरेफ रहै जुगहै मकरंद चितैं चित ऐसो।
जाइ राति जु ह्वै है प्रभात, भयैं रवि दोत हसैं कंज जैसो।
जाउंगो मैं तव ही गज नैं जु, मृनाल मरोरि लयौ मुहि तैसो।
युं धर्मसीह रहैं जोउ लोभित,
ह्वै तिनकी परि ताहि अदेशो ॥ ४२ ॥

फूल अमूल दुराइ चुराइ, लीए तौ सुगन्ध लुके न रहैंगे।
जो कछु आथि कैं साथ सुं हाथ हैं, तो तिनकुं सवही सलहैंगे।
जो कछु आपन मे गुन है, जन चातुर आतुर होइ चहैंगे।
काहे कहो धर्मसी अपने गुण,
यूठे की वात वटाऊ कहैंगे ॥४३॥

वोल कैं वोल सुं वोझल वात, भइतौ गइ कछु जानैंन ऐसो।
फोज अनी अनी आइ वनीतौ, लुकावै कहा जव जोर ह्वै जैसो।
प्रीति तुटै पुनि चीत फटै, तौ कहा धर्मसी अव कीजैं अंदेसो।
देखण काज जुरे सवही जन,
नाचत पैंठी तो घुंघट कैसो ॥४४॥

भाव संसार समुद्र की नाव है, भाव विना करणी सव फीकी।
भाव क्रिया ही को राव कहावत, भाव ही तैं सव वात है नीकी।
दान करौ वहुध्यान धरौं, तप जप्प की खप्प करौ दिन ही की।
व्रातको सार यहै धर्मसी इक,
भाव विना नहीं सिद्धि कहीं की ॥४५॥

सवैया इकतीसा

मेरो वैन मान यार, कहत हुं बारबार,
हित की ही बात चेत काहे न गहातु है।
नीकैं दिल दान देहु, लोकनि में सोभ लेहु,
सुख की विसात भैया मोहि ना सुहात है।
खाना सुलतान राउ राना भी कहाना सब,
बातनि की बात जगि कोऊ न रहात है।
ऐसौं कहै धर्मसीह, धर्म की ही गहौ लीह,
काया माया बादर की छाया सी कहात है ॥४६॥

सवैया तेवीसा

यह खेह कैं खंभ सी देह असार, विसार नहीं खिनका-खिनका।
जवही कछु दक्षिण वाउ वग्यौ, तव ही हुइगी कनका कनका।
कवहु तुम यार करौ उपकार, कहै धर्मसी दिन का दिन का।
कर के मणिके तजि कैं कछु ही अव,
फेरहु रे मनका मनका ॥ ४७ ॥

रन्न मे रूदन्न जैसैं, अंधक कुं दरपन्न जैसैं,
थल भूमि में मृनाल काहू वौयौ है।
जैसैं मुरदा की देह, भूपन कीए अछेह,
जैसैं कौआ कौ शरीर, गंगनीर धोयौ है।
जैसैं वहिरा के कान, कोरि कीए गीत गान,
जैसै कूकरा कै काजु खीर घीउ ढोयो है।

पाठत पठत जोइ, संत सुख पावैं सोइ,
विमल कीरति होई सारैं ही सुहावनी।
संवत सतरैं पचीस, काती वदि नौमि दीस,
वार है विमलचन्द, आनंद वधावनी।
नैर विनैं कौं निरख नित्त ही विजैं हरप,
कीनी तहां धर्मसीह नाम धर्म बावनी ॥ ५७ ॥

—:ॐ:०:ॐ:—

कुण्डलिया बावनी

ॐ नमो कहि आद थी, अक्षर रै अधिकार।
पहली थी करता पुरप, कीधौ ॐकार।
कीधो ॐकार सार, तत जाणे साचौ।
मंत्र जंत्रे मूल, वेद वायक धुरि वाचौ।
सहु काम धर्मसीह दीयैं रिद्धि सिद्धि औ दोऊँ।
बावन आखर वीज, आदि प्रणमीजे ओ ऊँ ॥ॐन०।१।

नमीयै मस्तक नामि नें, नमो गुरु कहि नित्त।
वहु हितकारी जिण वगसीयो विद्या रूपी वित्त।
विद्या रूपी वित्त, चित जिण कीधो चोखो।
दावै तिम दीजता जलण जल चोर न जोखौ।
सुगरा रे सहु सिद्धि ज्ञान गुण निगुरै गमियें।
सीख कहै धर्मसीह नामि मस्तक गुरु नमीयै ॥ न म. ।२।

तृष्णा

मन री तिष्णा नहु मिटै, प्रगट जोइ पतवाण।
लाभ थकी वहु लोभ है, हैं तृष्णा हैं राण।
है तृष्णा है राण, जाण नर पिण नवि जाणें।
पास जुड्या पंचास, आस सौ उपरि आणें।
सौ जुड़िया तव सहस, धरै इच्छा लख धन री।
धापै किम धर्मसींह, मिटै नहीं तृष्णा मन री ॥ म.तृ. ॥३॥

कर्म

सिरजित मेट न कौ सकैं, करौ कोडि विधि कोई।
एहवी हिज वुद्धि उपजै, होणहार जिम होई।
होणहार जिम होई, जोइ धर्मसी इण जग्गे।
चल्यौ सुभूम चक्कवैं, उदधि जल वूडि अथग्गे।
सोल सहस सुर साथ, हुंता सेवक करता हित।
ए वालै कीयो अंध, सही ब्रह्मदत्त नैं सिरजित। सि०।४।

धंधे करि करि जोड़ि धन, संचे राखै सुख।
भागवसै केइ भोगवैं, वले न वाहर वु'ख।
वले न वाहर वु'ख, लुंचि रहै माखी लालची।
कण कण ले कीड़ीया, पुज मे ले पोतैं पचे।
मेल्यो नदे माल, कोई न गयौ लक धे।
कलि में कीधो कुजस, धरम विण करि करि धंधै। ध०।५।

अति हितकरि चित्त एकथौ सु विटक्यो किणहिक वार।
मिलिया वले मनावता, पिण ते न मिलैं तिण वार।
ते न मिलैं तिण वार, ठार ओन्हो जल ठामैं।
जीयैतो इ पहिल रौ, पुरुष ते स्वाद न पामैं।
तोडे सांधो तुरत, गाठि रहै डोरे गुप्फित।
धरि लो ते धर्मसीह हे, वैंन हुवै ते अति हित॥ अ०।६।

आरति मीठी अप्पणी, आड नमै सहु आप।
गद्धा ने गांमंतरै, वोलावैं कहि वाप।
वोलवैं कहि वाप, आपणी आरति आवें।

पड़ीइ मादे पूत, बाप कहि वैद बुलावै ।
श्रावण में धर्मसीह, नटै कहै छासा नीठी ।
दूध जेठ में दीयै, मानि निज आरति मीठी । अ० ॥७॥

इतरौ में पिण अटकल्यो, सोचे सारौ दीह ।
निंदा जिहा पर नी नहीं, धरम तठै धर्मसीह ।
धरम तठै धर्मसीह, जीह निज अवगुण जपै ।
त्रेवड़ि इण में तत्त, काइ कसटे तन कपै ।
तप जप निंदा तठै, हुवै नही कोइ हितरौ ।
निंदा हुंती नरक, अम्हे अटकलीयो इतरौ । इतरो०।८।

परउपगार

ईख कनक उत्तम अगर, चावा ए जगि च्यार ।
निज सुभाउ मेटै नहीं, आवै पर उपगार ।
आवै पर उपगार, सार रस ईख समप्पे ।
छोलता छेदतां दुगुण, दुति सोवन दीपे ।
अग्नि प्रजाल्यो अगर, सुरभि द्यै सहु सरीखैं ।
अवगुण ठालि अलग्ग, एक उत्तम गुण ईखै । ईख० । ६ ।

उत्पति साभल आपरी, गरबै पछैं गमार ।
उपजेतैं तें उदर में, अशुचि लीयो अहार ।
अशुचि लीयो अहार, वार तिण हीज ऋतु वीरिज ।
मुख ऊंधे मल मांहि, दुख सहीया दिलगीरज ।
तुं पछताणो तरैं, कीया नहीं पूरब सुकृत ।
साभलि तुं धर्मसीह, एह थारी छै उत्पति ।उत्प०।१०।

कर्म

आदर ऊंचे कुल अधिक, ऋद्धि घणो नीरोग ।
धरम थकी ह्वै धरमसी, सैणा रो संयोग ।
सैणां रो संयोग, सोग री वात न सुणिजैं ।
महिपति द्यै वहुमान, गाम में पहिलो गिणीजैं ।
सहु को वोले सुजस, फलै पुण्य वृक्ष इसा फूल ।
मनवाछित सहु मिलैं, आइ उपजे ऊँचे कुल । आदर ।११।

गर्व

ऋद्धि त्यागौ रन में रहो, रहो परीसा सर्व ।
तत्त सधै नहीं कौ तिणैं, गयो नहीं जा गर्व ।
गयो नहीं जा गर्व, सर्व तप निफल सधीया ।
जोइ वाहुवल जती, वप्पु उपरि खड वधीया ।
गरव तज्यो तब ज्ञान, तुरत हिज उपज्यो तन मैं ।
धर्यं गर्व नहीं धर्म, ऋद्धि त्यागौ रहो रन में । ऋ ।१२।

रीस दमन

रीस दवट्टे राखीजैं, तिण उपजतैं तागि ।
पलै नहीं अगटी पछै, उन्हालै री आगि ।
उन्हालै री आगि, सही जाये नहीं सहणी ।
हुवै घणी जिण हानि, द्रेह पिण दुखैं दहणी ।
सैंण हुवैं सहु सत्तु, फिरै जायैं मन्न फट्टे ।
सुणे सैंण धर्मसीख, राखिजैं रीस दवट्टे । रीस ।१३।

कर्म

लिखिया ब्रह्म लिलाट में, लोक सकै कुण लोप ।
भायै सुख दुख भोगवै, किसु किया ह्वै कोप ।
किसु किया ह्वै कोप, रोप काठलि घण वरसै ।
वाबीहीयौ बापड़ो, तोइ जल काजे तरसै ।
देखे सहु को दिने, अंध ह्वै घूघू अंखीया ।
धोखो तजि धर्मसीह, लाभिजै सुख दुख लिखिया ।लि०।१४।

लीजै च्यारे-तुरत लगि, द्यूत द्रव्य नृपदान ।
गुरू शिक्षा प्रस्ताव गुण, न करो ढील निदान ।
न करो ढील निदान, जाय धन हारे जुआरी ।
चुंगल मिलै चौ तरै, रहे बगसीस राजारी ।
गुरु पिण न दीयै ज्ञान, कह्यो जौ तुरत न कीजै ।
सुभ प्रस्ताव सिलोक, गिनै तुरतज लीजै ।लीं० ।१५।

एको ह्वै जो आप मै, कजीयै काम कुटब ।
तौ को न सकै तेहनै, झगड़ै झाटै झुंब ।
झगडै झाटे झुंब, वुब पिण लागै बहुनी ।
बोली एकण बध, साच माजै मा जैनी ।
सहुनी जिण रै फट जूजूआ, न ह्वै सु धन रहैं नेकौ ।
धुरि हुंती धर्मसीह, आप मे कीजै एकौ । एको ।१६।

ऐ देखौ ब्रहमड इण, इक इक वड़ौ अचभ ।
धरा भार इवड़ौ धरै, सु थभी किण विध थभ ।
थंभी किण विध थंभ, दंभ पिण कौ नवि दीसै ।

मंड्यो किम करि मेह, दड्ड पाड्या निस दीसै ।
अंवर विण आधार, सूर शशि भमै सपेखौ ।
सागी कहै धर्मसीह, ए ए अचरिज देखौ । ए० ।१७।

ओहिज भूतल ओहिज जल, वाया एकण वेर ।
अंव निंव पात्रैं इसौं, फल में पड़ीयो फेर ।
फल मे पड़ीयौ फेर, मेर सरसव जिम मोटौ ।
स्वाति विन्दु सीप में, आइ पड़्यो अण चोटौ ।
मोती ह्वै वहु मोल, सरप मुखि विष ह्वै सोइज ।
पात्रैं अन्तर पड्यो, उदक कहै धर्मसी ओ हिज ।ओ०।१

अन्न

औषध मोटो अन्न इक, भाजै जिण थी भूख ।
सालैं अन विण सामठा, देही माहिला दूख ।
देहि माहिला दूख, ऊख ह्वै सहु नै अन्न री ।
उदर पडै जां अन्न, मौज ता लगि तन मन री ।
आखर अन्न रैं अंश, पलै पूरा व्रत पौषध ।
धीरज ह्वै धर्मसीह, अन्न इक मौटौ औषध । ओ० ।१६।

स्वभाव

अव कौऔ निंव कोइला, लुंव्या किहा इक लागि ।
काग भणी कहे कोइला, कोइल नै कहै काग ।
कोइल नै कहै काग, जाइगा कारण जांणै ।
भूलैं माणस भमर, अंग सरिखे अहिनाणैं ।
विहु जव वोलिया, अगुण गुण लीधा अटकल ।
न रहै छांना नेट, अंव कौऔ निंव कोकिल । अ० ।२०।

पर स्त्री गमन निषेध

अपणी तिय थी अवर नैं, मानै घणु मसंद ।
लखमीजी नै तजि लग्यो, गोपीयां सूं गोविंद ।
गौपिया सूं गौविन्द, इन्द्र पण तजि इन्द्राणी ।
अहिल्या नैं आदरी, जगत सगलै ए जाणी ।
अतिधन ह्वै उन्मान, जाय नहीं वाता जपणी ।
प्राये परत्तिय प्रीति, अधिक ह्वै न हुवै अपणी । अ० ।२१।

आठ अंधे

क्रोधी कामी कृपण नर, मानी अनैं मदंध ।
चोर जुआरी नै चुगल, आठों देखत अंध ।
आठे देखत अंध, धध रस लागा धावै ।
तन धन री हाणि, नेटि तोइ नजरै नावै ।
कुकरम कुजस कुमीचि, सोइ देखै नहीं सोधी ।
धरमसीख नहिं धरै, करै इम कामी क्रोधी । क्रो० ।२२।

कपूत

खाए नै खेरू करै, सगलै घर रौ सूत ।
कूत न काइ कमाइवा, कहियै एम कपूत ।
कहियै एम कपूत, भूत जिम बोले भड़की ।
सखरी देता सीख, तुरत कहै पाछौ तड़की ।
साच कहै धर्मसीह, उणै सुत सदा अंधेरूं ।
म खट्टू मौजी मन्न, करै खाए धन खेरूं । खा० ।२३।

सपूत

गुरु जण सेवे तज गरव, कम्मावैं घरि कूत।
निवला नै ले निरवहै, साचा तिकै सपूत।
साचा तिके सपूत, दूत जिम दौड़ें ढूकै।
खरा द्रव्य खाटि नैं, मात पित आगलि मूकैं।
मुखि मीठा सुभ मना, देखि सारा है दुरजण।
सुपूत्र तिकै धर्मसीह, गरव तजि सेवैं गुरुजण। गु० ।२४।

सात सुख और दुख

घट नीरोग शुभ घरणि, वलि नहीं रिण भय वात।
सुपूत्र सुराज कटुंव सुख, धर्मसीह कहै सात।
धर्मसीह कहे सात, सात दुःख जाय न सहणा।
दीसै घरि मे दलिद्र, लोक वलि मांगै लहणा।
कलहणि नारी कुपुत्र, फिरण परदेस सगे फट।
सबलै दुख सातमौ, घणौ वलि रोग रहैं घट। घट० ।२५।

पाडोस

न रहे पाड़ोसैं निखर, करै मता घरि कूप।
दुड विढता मत देखिजै, भूंडौ न कहै भूंप।
भूंडौ न कहे भूप, जूप मत मोटा जोड़ी।
झगड़ो न करैं झूठ, आल न रमे धन ओडी।
वैरी न करै वैद, गरथ पर नौ मत गर है।
सुणे सैंण धर्मसीख, निखर पाडोसैं न रहे। न रहैं। २६।

बुढापा

च्यार जणा नै सुणि चतुर, सोहै जरा सिंगार।
राजा मुहतौ वैद रिषि, गरढ पणै गुणकार।
गरढ पणै गुणकार, सार बहु बुद्धि रसायण।
विणसैं मह्ल वेसीया, गिणौ तिम चाकर गायन।
करैं घणी जौ कला, मन्न तोइ किणै न माने।
कहै धर्मसी यु करै, जरा आइ च्यार जणा नै।च्यार०।२७।

बाप

छत्र करैं ज्यु छाहड़ी, तुरत हरै सहु ताप।
छोरू नै गुणकार छै, बूढा ही मा-बाप।
बूढा ही मा-बाप, आप जीवै ता अमृत।
सखरी आखै सीख, साचवै घर में सुकृत।
लाज काणि करै लोक, तरुण तिय सोह रहै तिम।
धरैं हित धर्मसीह, जतन बहु छत्र करै जिम। छ० ।२८।

जूआ

जूऔं सो कीधी जिका, कही न जायें काय।
नल पाडव सिरखा नृपति, मूक्या हार मनाय।
मूक्या हार मनाय, हार करि अलगा होवौ।
कलह सोग बहु कुजस, जूए साम्है मत जोओ।
हासो नै घर हाणि, सुख पिण कदे न सूवै।
सुणज्यो कहै धर्मसीह, जिका कीधी छै जऔ। ज० ।२९।

मांस

झाझै मल मूत्र झरै, अङ्ग तणा सहु अंश ।
तौ पिण खावा तरसीया, माणस पापी मंस ।
माणस पापी मस, अंस पिण सूग न आणै ।
परगट्ट जीवा पिंड, जीभ स्वादै नवि जाणैं ।
दुरगति लहिस्यै दुःख, सबल आ करणी सामै ।
अधरम महा असुचि, भरै मल मूत्रे झाझे । झा० ।३०।

मदिरा

न हुवे सुधि बुद्धि नजर मे, जायै लक्षण लाज ।
परगट मदिरा पान थी, एहा होई अकाज ।
एहा होइ अकाज, खाज अखज पिण खावै ।
नावैं कोई नजीक, अन्ध री ओपम आवे ।
इण कीधा अनरत्थ, द्वारिका नगरी दहवै ।
सुणै नहीं धर्मसीख, नजर मे सुद्धि बुद्धि न हवै । न० ।३१।

वैश्यागमन

टिपस करैं लेवा टका, नहीं मन्न माहे नेह ।
राग करे इण सुं रखे, गणिका अवगुण गेह ।
गणिका अवगुण गेह, छेह विन दाखैं छिन में ।
सिल धोवी री सही, ओपमा छाजै इण मे ।
गया बहु लाज गमाइ, विहल हुआ वेश्या वसि ।
जाति कुजाति न जोअैं, टका लेवा करैंटिप्पस । टि० ।३२।

शिकार

ठग वगला जिम पग ठवैं, पाडैं जीवा पास।
कुविसन रौ वाह्यो करै, आहेड़ा अभ्यास।
आहेड़ा अभ्यास, प्यास भूखैं तनु पीडैं।
मार्यो श्रेणिक मृग, नरक गयो न रह्यो नीडैं।
कहे धर्मसी इण कर्म, सुकृति ह्वै निःफल सगला।
रहै तकता दिन राति, वहैं जीवा ठग बगला। ठग० ।३३।

डाका चोरी

डाकै पर घर डारि डर, कूकरम करैं कठोर।
मन में नांहि दया मया, चाहै पर धन चोर।
चाहैं पर धन चोर, जोर कुविसन ए जाणो।
मुसक बंधि मारिजै, घणी वेदन करि घाणो।
फल बीजा सम फलै, अब लागै नाहीं आकै।
धरम किहां धरमसीह, डारि डर पर घर डाकै। डा० ।३४।

पर स्त्री गमन

ढुंढा कीधा ढाहि गढ, लक तणी गइ लाज।
पर त्रीरे कुविसन पड्या, रावण गमीयो राज।
रावण गमियो राज, साज तौ हुंता सवला।
परत्रीय कुविसन पड्या, पाप केइ लागा प्रवला।
अपयश जीव उदेग, मान तौ नहीं छै मूढा।
सुणि भारथ धर्मसीह, ढाहि गढ कीधा ढुंढा। ढु० ।३५।

सप्त व्यसन

नरक रा भाई निरखि, साते कुविसन सोई।
इण हुंती रहिज्यो अलग, करौ रखे संग कोइ।
करै रखे संग कोई, जोइ तिहा पहली जुओं।
मास खाण मद पान, संग दारी मत सूओ।
आहेड़ो धन अदत्त, संग पर त्रीय साता रा।
इण मे महा अधर्म, निरखि भाई नरका रा। न० ।३६।

तुंकारा

तुंकारो काढ़ै तुरत, मुंह मुलाजौ मेट।
कुल उत्तम जन्म्या किसुं, नीच कहीजै नेट।
नीच कहीजै नेट, पेट रो खोटो पापी।
तुरत वैंण तोछड़ो, सैण नैं कहै संतापी।
बाप तणो नहीं बीज, बीज किणहिक बीज़ा रो।
धिग तिण नर धर्मसीह, तुरत काढै तुंकारो। तु० ।३७।
थाका भूखा ही थका, धोरी नर धर्मसीह।
निज भुज भार निवाहि ल्यै, लोपे नहीं शुद्ध लीह।
लोपे नहीं शुद्ध लीह, दीह ल्यै ऊंचा दावै।
सींह होइ संचरैं, जीह नहु भेद जणावैं।
आखर ते आपणा, जस्स खाटैं हुइ जाका।
धुरा भार ले धीग, थेट ताइ आणै थाका। था० ।३८।

सज्जनदर्शन

देखो सैंणा रो दरस, मौटौ छै कोड माल।
दूर थकी पिण देखता, नयणा हुवै निहाल।

नयणा हुवै निहाल, हाल दे हीयो हरखैं ।
वरषैं अमृत वैंण, प्रीति अति ही चित्त परखै ।
वि घड़ी मिलि वेसता, लहै सुख नहीं ते लेखौ ।
धन दिन गिण धरमसीह, दरस सैंणा रो देखौ । दे० ।३६।

धनवान

धनवंता री धर्मसी, आवै सहु धरि आस ।
सरवर भरीयो देख सहु, पंखी वेसैं पास ।
पखी वेसैं पास, आस पिण पुगइ इण थी ।
सूको सरवर सेवता, तृपा काइ भाजे तिण थी ।
दीयै किसु दलदरी, सवल रीझवीयौ संता ।
सगलौ ही ससार, धरै आस धनवंता । ध० ।४०।

कृपणदान

न दीयै काइ कृपण नर, सहु इम कहै संसार ।
सात थोक कहे धर्मसी, द्यै ओहिज दातार ।
द्यै ओहिज दातार, वार[1] द्यै काठा वीडी ।
द्यै उतर द्यै कुमति, पूठ द्यै पात्रा पीडी ।
धरि द्यै लछि नै घोर, कटुक गाल्या दे कदीये ।
आडौ पग द्यै आइ, निपट किम कहो छो न दीयै ।न०।४१।
पर हुंती तप पामिनै, निपट दीये दुःख नीच ।
सूरिज तपता सोहिलौ, पिण वेलू वालैं वीच ।
वेलू वालैं वीच, नीच नर ह्वै वहु वोलो ।
उत्तम नर रहै अटक, गालि द्यै तुरत ज गोलो ।

१ पाठान्तर-द्वार

अक्ख दीयौ पद ऊंच, पीड द्यै तोइ पनु ती ।
धरै उत्तम नर धर्म, पापिनैं तप पर हुंती । प० ।४२।

यमराज

फोजा मैं मौजा फिरै, गाहण गढ़ा गड़ंद ।
फुंकै काल फणिंद री, उडि गया नर इन्द ।
उडि गया नर इन्द, चंद दिणद चक्रीसर ।
साथ न को धर्मसींह, कित वाल्हा गया वीसर ।
सगला तालगि सूर, जम्म आवैं नहीं औ जा ।
है चोटी पर हाथ, मान मत खोटी मौजां । फौजा० ।४३।

मिष्ट वचन

वहु आदर सूं वोलियैं, चारु मीठा वैण ।
धन विण लागा धर्मसी, सगला ही ह्वै सैण ।
सगला ही ह्वै सैण, वैण अमृत वदीजै ।
आदर दीजे अधिक, कदे मनि गर्व न कीजैं ।
इणा वातै आपणा, सैंण हुइ सोभ वदै सहु ।
मानैं निसचैं मीत, वोल मीठो गुण छै वहु । वहु० ।४४।

भारी कर्मा

भारी करमा दुरभवी, जग मे जे छै जीव ।
सीख न मानैं सर्वथा, सहज मिटै न सदीव ।
सहज मिटै न सदीव, टेव थी जाइ न टलीयै ।
स्वान पुंछि न ह्वै समी, नित भरि राखौ नलीयै ।
कासुं ह्वै वहु कह्या, वदै नहीं कदे विसरमा ।
-सुगुरू तणी धर्म सीख, करै नहीं भारी करमा । भा० ।४५।

मन वश की दुष्करता

मयगल मंगल महा, कामिसरि केहरि सह।
सगला दमता सोहिला, मन दमणो मुसकल्ल।
मन दमणो मुसकल्ल, चल्ल जिणरी अति चंचल।
रहै नहीं थिर दिन राति, अधिक वायै ध्वज अंचल।
खिण दिलगीर खुस्याल, दुख कै लीला तत्ता।
कहै धर्मसी मुसकल्ल, मन्न दमणा मयमत्ता। म०॥४६॥

दान

योजन बारै जाणियै, आवै गाज अवाज।
दुनिया मैं दात्तार रौ, सगलै जस सिरताज।
सगलै जस सिरताज, आज लगि वलीयौ आवै।
अरक[1] सदा उगता, करण रौ पहुर कहावै।
साधु सुपात्रे सैंण, भगति करि दीजै भोजन।
धरम अनै धर्मसीह, जस है फेइ जोयन।

शील

राखीजैं जतने रतन, खड्यां है बहु खोड।
सील तणा तिम धर्मसी, कीजै जतन करोड।
कीजै जतन करोड, होड इणरी किण होवैं।
सीलै सुर सेवक्क, जगत जस कहि मुख जोवै।
नित सतीया रा नाम, उठि परभात अखीजै[2]।
सीलै लहीजैं लील, रतन जतन राखीजे। रा०॥४८॥

---

१ सूर्य २ कहने मे आता है।

तप

लहियैं शोभा लोक मैं, तप करि कसता तन्न ।
परतखि वीर प्रशंसियौ, धन्नौ मुनिवर धन्न ।
धन्नो मुनिवर धन्न, मन शुद्ध जास भली मति ।
पहिलौ फल ए प्रगट, कन्न सुणीयै निज कीरति ।
रहीयै तप सुं राचि, दूठ आठे कर्म दहीयै ।
धरता इम धर्मसीख, लच्छि सिवपुर नी लहियैं । ल०॥४६॥

भाव

वपु शोभै नहीं जीवविण, जल विन सरवर जेम ।
विन पति त्रिय गृह दीप विण, तरवर फल विण तेम ।
तरवर फल विण जेम, प्रेम विण जेम सखापण ।
प्रतिमा विन प्रासाद, कहौ तुस जेम विना कण ।
भण इण परि विणभाव, खोट सगली तप जप खपु ।
सोभै नहीं धर्मसीह, भाव विण जीव विना वपु । व०॥५०॥

सीखो दाखौ शास्त्र सहु, आगम ज्ञान अछेह ।
साइ रे हाथे सही, मीच रिजक नै मेह ।
मीच रिजक नै मेह, एह छै वाता ऊंडी ।
कासु झूठैं कह्यां, हाथ परमेसर हुंडी ।
जोइ धर्मसीह जोतिष, सोचि करि करौ सघीखो ।
आखर जाणै ईस, शास्त्र सहु दाखौ सीखौ । सी०॥५१॥

कर्म

खटचानैं सहु को खपै, उद्यम करै अनेक ।
लिख्यौ ह्वै सो लाभिजै, अधिकौ रंच न एक ।

अधिको रंच न एक, देखि मथीयौ दधि दोऊ ।
लाधि गोविंद लाछि, शंभु लाधो विष सोऊ ।
बखत तणी सहु बात, लाख करैं केइ लटुवा ।
कोइ माटीपण करे, खपै सहु करिवा खटवा । ख० ।५२।

सूम की सम्पदा

सुंवा केरी सम्पदा, नपुंसक री नारि ।
ना धर्मसील धरे सकै, न भोगवै भरतारि ।
न भोगवे भरतारि, कीया था पातिक केइ ।
इण घरवासै आइ, वोइ नाख्या भव वेइ ।
कर फरसै रस करैं, आस नहु फलैं अनेरी ।
धर्मसी कहे धिग स, संपदा सुंवा केरी । सुंवा०।५३।

घट वढ

हयवर जिण घर हींसता, गज करता गरजार ।
किण हिक दिन तिण घर करैं, पडीया स्याल पुकार ।
पडीया स्याल पुकार, वार नहीं सरखो वरतैं ।
चढत पड़त हिज चलै, चंद जिम विहु पखि चरतैं ।
चौपड़ केरै चाव, घटत बढ़ती ह्वै घर घर ।
सुणि तिण विध धर्मसीह, हिंसता जिण घर हयवर। ह० ।५४।

मर्यादा

लघीजे नहीं लोक मैं, लाज मर्यादा लीक ।
जायै पाणी जू जूओ, न करीजैं जो नीक ।
न करीजैं जो नीक, लीक नहु सायर लघै ।

मरयादा मेटता, सदा टालीजै संधै।
वरतीजैं विवहार, कदे निज रूढि न कीजे।
सदाचार धर्मसींह, लीह कहो केम लघीजै। ल० ।५५।
क्षमा करंता कोइ खरच, लागै नहीं लगार।
मिटै कदा यह मूल थी, सैण हुवै संसार।
सैंण हुवै संसार, सार सहु मैं ए साचो।
किण सारु करै क्रोध, कुह्यो काया घट काचौ।
सफल हुवै धर्मसींह, धरम इण सीख धरंता।
लहै मोह लोक मे, कहै सहु क्षमा करंता। क्षमा० ।५६।
अक्षर बावन आदि दे, कवित्त कुंडलिया किद्ध।
धरम करम सहु मे धुरा, प्रस्ताविक प्रसिद्ध।
प्रस्ताविक प्रसिद्ध, शहर जोधाण सल्हीजैं।
सतरेंसे चोतीस, भलै दिवसैं भा वीजैं।
विजयहर्ष वाचक, शिष्य धर्मवर्द्धन साखर।
कीधा बावन कवित्त, आदि दे बावन आखर। ।। ५७ ।।

इति कुंडलिया बावनी।

—:०:॰:०:—

छप्पय बावनी

गुरु गुरु दिन मणि हस, मेघ मेरहि मुगतागण ।
मति द्रुति गति अति सोभ, वाणि मणि गुण जाकै तण ।
सुरग पुव्वसर राज, गयणधर धुरि वारिधि थिति ।
वासव ग्रह अति चतुर, जगत सुर पारिख सेवित ।
प्रभात पंकति सहित, गरजित निरमल ग्रथित गुण ।
च्रहु ज्ञान तेज केली वरिप, धरि पवित्र धर्मसीह गुण ॥१॥

गुरु वर्णन रूप ३६ विधानीक कवित —

ऊंकार वलि अरक, उदयगिरि उपर ऊगो ।
अलग गयौ अन्धार, पार डणरै कुण पूगौ ।
चाहे सहुजग चक्खु, उदय पूरैं सहु आसा ।
सुर नर मानै सर्व प्रसिद्ध सगलै परकासा ।
स सार सार परतिख समै, सिद्धि रिद्धि दायक सासता ।
धरि ज्ञान ध्यान धर्मसीह धुरैं, अधिक डणरी आसता ॥१॥

नम्रता

नम्या चढे गुण नेट, नम्या विण गुण ह्वै निःफल ।
तरवर नमै तिकोज, माखि फल फूलैं सफल ।
नमता वाधै नेह, नमै सो मोख नजीकी ।
नमै सुजाणैं नीति, नम्यां सहु वाता नीकी ।

तुरत हिज परखि धर्मसी, तुला धडी जणावै सीस धुणि ।
हलको तिकोज ओछो हुवै, गरुओ कहिजै नमण गुण ॥२॥

मन मे न धरै मैल वदै वलि मीठा वायक।
देह आपसु दमै, गरव विण सहु गुण ज्ञायक।
आदर पर उपगार, सत्यवादी सन्तोषी।
न करै निंदा नेट, चलै निज कुलवट चोखी।
न्याय रीति तिण दिसि नजर, देखे नहीं स्वारथ दिसा।
धर्म सील विनय सूधौ धरै इण जुग के विरला इसा ॥३॥

सिला सेज सूवणें, वले वन धगहने वासा।
नगन गगन गुण मगन, अगनि जग ने अभ्यासा।
जटा धरै केई जूटा, मुंड के घुरड मुंडावै।
वहुली केइ बभूत, लेइ अंगे लपटावै।
जिण जिणै रूढि झाली जिका, तपौ तपावौ कष्ट तन।
साच ह्वै मन्न धर्मसी सफल, मन झूठै सहु झूठ मन ॥ ४ ॥

धंध धरे करि द्वेष, वात मे हेत वितौड़ै।
आप कियौ ते अवल, वले पर किया विखौड़ै।
छत्ता गुण छावरै, अगुण अछत्ता ही आखै।
कोइ हितरी कहै, रीस मन माहे राखै।
वलि लहै सुख परकै विघन, काम पगे पग कूड रौ।
धर्मसीय कहै तिण रै धरम, वोल्यो खातौ वूड रौ ॥ ५ ॥

अटकलि कुल आचार, शोभ अटकलि सक जाइ।
विद्या अटकलि वित्त, देह अटकलि दे खाइ।

त्रिय अटकलि सुविशेष, आठ गुण वीदह अटकल ।
परणा पुत्रिका इत्तैं, मावी तउ सिकल ।
वल ती जिकाइ सम्पति विपति, निवलैं सवलैं नखतरी ।
किण ही न दोस धर्मसी कहै, वात पछै सहु वखतरी ॥ ६ ॥

धर्मलाभ

आ खा जौ वहु आऊ काउ, चिरजीव कहिजैं ।
पुत्र वधौं परिवार स्वान शूकर सलिहिजैं ।
दाखां वहुलो द्रव्य हुवैं अधिकौ कुल हीणो ।
चल पामौ अति वहुल प्रवल हुइ सरपे पीणो ।
सुत वित्त जोर जीवित सकल आशा पूगै धरम इण ।
असीस एक सहु मैं अधिक भलौं वैण धर्मलाभ भण ॥ ७ ॥

विद्या बुद्धि

इक नीरोगी अङ्ग वले, गुण बुद्धि वखाणो ।
वलि साचविजै विनय अधिक गुण उद्यम आणो ।
शास्त्र राग सुविशेष पिंड थी ए गुण पाचें ।
पाचे वलि परतख सही वाहिज गुण सन्चे ।
पंडित प्रथम पुस्तक पछैं, सुधिर वास साथी सधैं ।
तिम नहीं चित भोजन तणी, विद्या दस थोके वधै ॥ ८ ॥

ईहै स्वाद अनेक आलसू, जे वलि अगं ।
ढुहरी न करै देह, सुखी विषयारस सगं ।
नित रोगी वहु नींद, रग वाता री रसीयौ ।
रामनि मे मन रहै, ताकिल्यैं सहु रौ तसियौ ।

लालच दाम खाटण लुब्ध, दुसमन शास्त्रारा दसैं ।
कर इता दूर धर्मसी कहै, विद्या भणिवा नै वसैं ॥ ९ ॥

अष्ट मद

उच्च जाति मद एक महा कुल मद सू मातौ ।
लाभ तणैं मद लोल, तेम तप मद सु तातौ ।
रूप मदैं वलि रसिक, बहुल बल मद पिण वाहे ।
विद्या मद वलि विविध, अधिक अधिकार उच्छाहे ।
मद आठ ईयैं मत ह्वै मसत, अस्त उदय रवि अटकली ।
आविया देखि करीवा अमल, प्यादा जमराए पली ॥१०॥

कुपात्रप्रीति

ऊगतें अरकरी मडी तब छाया मोटी ।
दोइ पहुर मैं देखि, छीजती छिण छिण छोटी ।
त्युं कुपात्र की प्रीति, आदि-बहु आगे ओछी ।
सजन प्रीति सुरीति, सही धुरि होइ सकोछी ।
बधता विशेष धर्मसी बधे, वलत छाह जिम विस्तरै ।
दृष्टांत एण सज्जण दुज्जण, परखी देख पटंतरै ॥११॥

कर्मगति

ऋतु ग्रीष्म रान मे, तृषो मृग दव थी त्राठो ।
पड़ियो पासी पाउ नेट साइ तोडै नाठै ।
ओ दौ कुडि उलंघि, आयो जिण दिसि आहेड़ी ।
तेण चलायो तीर, फाल माहि टाल फंफेड़ी ।
नासता कूप आयौ निजर, निस मेटण पड़ियौ तठै ।
कर्म गति देखि धर्मसी कहै, कहौ नाठौ छूटै कठै ॥ १२ ॥

कर्म

रीस भयौं कोइ राक, वस्त्र विण चलीयौ बाटे ।
तपियौ अति तावडौ, टालता मुसकल टाटैं ।
बील रुख तलि बैसि, टालणो माडयो तड़कौ ।
तरु हुती फल त्रूटि, पडयो सिर माहे पड़कौ ।
आपदा साथि आगै लगी, जायै निरभागी जठे ।
कर्मगति देख धर्मसी कहै, कहौ नाठो छुटै कठे ॥ १३ ॥

लक्ष्मी किणहीक लाभि, खरची दीधी वली खाधी ।
कहौं नहीं कारण किणै, बहसि किए के बाधी ।
दातारै धुरि देखि, दान रो लाधो दद्दो ।
सु म ननौ संग्रहै, माहरै इण सु मुद्दो ।
दातार घरै दिन दिन ददौ, नित सु बा घर ननौ ।
त्रिहु जणा जाणि बहसे बहसि, पालैं इण परि पडवनो ।१४।

लीजैं पर गुण लागि, लागि नैं अन्त न दीजै ।
दीजैं ऊंचौ दाव, दोप अणहुत न दीजै ।
कीजै पर उपगार, कार निज लोप न कीजै ।
खरैं हित खीज जै, खोट वाते मत खीजै ।
भीजै सुसाम (?) धीजै भला, पीजै जल छाण्या पछै ।
धर्मसीख सुबुद्धि मनमें धरें, इतरा थोके अवगुण अछै ॥१५॥

एक एक थी अधिक सबल सूरा संग्रामे ।
एक एक थी अधिक नकल ने ठाहे नामे ।

एक एक थी अधिक चुंप सगली चतुराइ ।
एक एक थी अधिक कला विद्या कविताइ ।
व्याकरण वेद वैदक विविध, भला उदर सहुको भरौ ।
धर्मसीह रतन बहुला धरणी, कोई गरब रखे करौ ॥ १६ ॥

ऐ वेलि एकरा, उपना तुंबा आवैं ।
साधु तणी संगते, पात्र री ओपम पावैं ।
विलगा जिके सुवंश, गुणी संगि मीठो गावैं ।
गुण सुं जे गुंथिया, तरैं निज अवर तरावैं ।
एक एक माहि बलती अगनि, चेढंता लोही चुसैं ।
उपजै बुद्धि धर्मसी इसी, वास आइ जेहवैं वसैं ॥ ७ ॥

ओछो नर ओहिज, नजरि तलि बीजां नाणैं ।
" " " ओछौ बलै आप बखाणैं ।
" " " रूडा दाक्षिण्य न राखैं ।
" " " आप म्हे परन्तु आखैं ।
दूहवैं कवण मुख कहि दुरस, आचरणैं सहु अटकलैं ।
पारखा देखि जल घट प्रगट, ओछो ते हिज अलैं ॥ १८ ॥

अवगुण ह्वैं आलस्, अवल थिरता गुन आणैं ।
चपल होई चल चित्त, बडौ उद्यमी बखाणैं ।
महा मुंक ह्वैं मुखे तौ मनैं नहीं बोल म बोला ।
क्युं कहता क्युं म्हे, भला छैं मन रा भोला ।
पात्रे कुपात्र धन वैं प्रगट, वड दाता धन ज्युं वरं ।
धर्मसीह देखि परसाद धन, अवगुण ही गुण आचरं ॥ १६ ॥

आज के मित्र

आखि लाज करि आज, रीति रस री रुख राखैं।
हसते लातैं सहीयै, भेद सुख दुख रा भाखै।
अलगा हुवा अंस, नेह तिल मात न आणै।
जुदा न गिणता जीव, जीव परदेशी जाणै।
आज रा मीत बहुला इसा, कोइ गिणैं नहीं हित कीयौ।
कहौ इसै मित्र धर्मसीह कहै, हेजैं किम विकसैहियौ ॥२०॥

स्वार्थ

अफल रुख अटकले, परा उड जाये पंखी।
सर सूको स पेख, कोइ न हुवै तसु कंखी।
वले पुहप विणवास, भमर मन माहि न भावै।
दव दाधो वन देखि, जीव सहु छोडि जावै।
निरधना वेस नाणे नजरि, किणरौ वलभ कवण कहि।
स्वारथै आवी सेवे सहु, स्वारथ रौ संसार सही ॥ २१ ॥

कहै पाखा सुणि केकि, कत तुझ लागि केडे।
करि कुमया तु काइ, फूस ज्यु अम्ह पा फैडै।
सुन्दर माहरे सङ्ग, कहै सहु तोने कलाधर।
नहीं तर खुथड़ो निरखी, नेट निन्दा करसी नर।
अम्ह घणी ठाम बीजी अवर, धरमी आदर करि धरै।
माहरै सुगुण सोभा मुगट, श्रीपति पिण करसी सिरैं ॥२२॥

खिसता निज खाण थी, रयण कहै सामलि रोहण ।
अठै अम्हे उपना, महिर थारी मन मोहण ।
करिजे तु कल्याण, इसौ मन मैं मत आणै ।
ठाम चूकवे ठिक्क, ठहरसी किसे ठिकाणै ।
वास मे जाइ जिण रे वसा, घर री पुण्य दशा धिरै ।
माह रै सुगुण शोभा मुगट, श्रीपति पिण करसी सिरै ॥२३॥

धन गर्व निषेध

गरथ तणैं गारवे, हुऔ गहिलौ विण होली ।
नेट करै निवलरी ठेक हासी ठकठोली ।
मन ही मन जाणे मूढ, मूल ए किण री माया ।
साच कहै धर्मसीह, छती छवि वादल छाया ।
उलटी सुलट्ट सुलटी उलट, ए थिति आदि अनादिरी ।
घडी माहि देखि अरहट्ट घड़ी भरि ठाली ठाली भरी ॥ २४ ॥

परोपकार

घडी घडी घड़ियाल, प्रगट सद एम पुकारैं ।
अवर भवं ऊंघता, जगिज्यो मनुष्य जमारैं ।
दुखिया रैं सिर दड, घड़ि घड़ि आयु घटंता ।
काठ सिर करवती, किती इक वार कटंता ।
तिण हेत चेत चेतन्न चतुर, धर्म सीख सविशेष घर ।
सहु वात सार संसार मे, कोइक पर उपगार कर । २५ ।
इड़िया जिम गुछलौ, खाइ वैठो मन खोटे ।
गिल ढी हीया गोढ, छेहडै आदर छोटै ।

मुहडै सु पिण मिलै, नाक सु अधिकैं नाते ।
विहु मुहड़ौ बोलतौ, खत्त पत्त गिणैं न खाते ।
व्यवहार शुद्ध व्यापार थी, तजियो सहु लोके तिणै ।
बोलैं न कोइ इण सु बहुत, इड़ियो फल सरिखा गिणैं ॥ २६ ॥

चातक नु छै चतुर, सीख सुणि वयणे साचे ।
पिउ पिउ करे पोकार, जलद सगला मत याचे ।
के जल थल इक करैं, उणा थी पूगै आसा ।
मरड फरड केइ गरजि, नेटि उडिजाइ निरासा ।
लहणीये जोग आफे लहिसि, पुरालब्धे पुन्य पापरी ।
धर्मसीउ कहै धीरज धरे, ओ ही मत द्यै आपरी ॥ २७ ॥

छात्र तिकौ छावरै, दोष गुरु निजरा देखे ।
पाचा माहे प्रसिद्ध, सुजस बोले सुविशेषै ।
छाप धरै सिर छती, ग्राहकी होइ गुणारो ।
विद्या तसु वरदायी, उदय वलि होइ उणारो ।
छल छिद्र ता किल्यें छीटका, छानो कहै अछती छती ।
पाचमै तास ऊंधी पडै, गुर लोपी सो दुरगति ॥ २८ ॥

जो हालाहल जर्यो, जोइ मन्मथ रिपु तै ।
भाल नैत्र महि भर्यो, वले वन अनल वदीतै ।
शकर ऐही शकति, होइ तोइ रजवट हालण ।
ससि गिरजा सुर सरित, पासै राखै तिहुं पालण ।
तिण रीति सु बुद्धि धर्मसी तिकौ, धुरा दृष्टि ऊडी धरैं ।
जल वालि पालि बाधै जरु, काज रजनीति हि करै ॥ २९ ॥

झडी पडी झुंपडी, किया दूर उदूर कोले ।
गंधीला गूदड़ा, खाटपिण बंधण खोले ।
कामणि सोइ कुहाड़, कलहणी काली काणी ।
करती जीमण करै, धान सगलौ धूड धाणी ।
रोगियो आप माथै रिणो, रोज दुख सुख नहीं रती ।
मोहनी देखि धर्मसी महा, जाणै तोइ न हुवै जती ॥ ३० ॥

अजीयौ कहै हुं निबल, नाम किण ही में न पड़ु ।
छिप्पो वरग रै छेह, देखि तोइ कहै मुझ दुपड़ु ।
झगड़ा झाटा झाझ झझौ सहु वाते झूठौ ।
पहिली ते हुं पछे, एह किम न्याय अपूठौ ।
दीसै न न्याय भोगवि दसा पड़छो सुदि वदि पख रौ ।
देखे नै साच दाखै दुनी, खाड़ो चादौ ए खरौ ।

गर्व

टीटोडी निज टाग, सही ऊंची करि सौवै ।
औ पड़तो आकास, दुनी नै रखै दु खौवै ।
थाभसि हुं विण थंभि, इसो मन गारव आण ।
क्रूअति मो मैं किसी, जीउ मे इतो न जाणै ।
मोहनी छाक परवसि मगन, ससारी ऐ जीव सहु ।
ओछो न कोइ मन आपरैं,
किण किण नै नहीं गरव कहु ॥ ३२ ।

टिक्क वचन ताहरौ भलौ हितकारी भाखै ।
प्रसिद्ध वधै परतीत जास सहु कोइ राखै ।

मर कह्यैं कोइन मरैं, जीव कहै कोइ न जीवै ।
तोइ खारो जल तजै, प्यार करि अमृत पीवै ।
गाठि रो कोइन लगै गरथ, सिगला हुइ जिण थी सयण ।
धर्म नै कर्म सहु मे धुरा, वडी वस्तु मीठौ वयण ।। ३३ ।

डाहो हुइ सो डरैं कोइ मत भूडौ कहसी ।
घर डर कुल डर घणो, सुगुरु डर डाकर कहसी ।
माण तणै डर मुदै लाज डर करणो लेखें ।
मावी ता डर मानि, सामि डरकर सुविशेषे ।
दुरगतैं दुख परभव डरै, जाण करैं डर नव जिको ।
धर्मसींह कहै सहु धर्म को, तत्व सार जाणे जिको ।। ३४ ।

ढीली वात मढाहि पुण्य रो कारिज पडता ।
" " " न्याय सुधो नीवडता ।
ढीली वात मढाहि वहस सु पडियै बोले ।
" " " ढमकीए वाहर ढोले ।
सहु करैं पूछि आगे सुजस, ढीली तठै न ढाहिजै ।
आवियै दाव औठभता, कुल धर्मसीह कहाइजै ।। ३५ ।।

अपनी अपनी

नर मादौ निरखि नें, वैद कफ वात वतावे ।
जो पूछैं जोतसी, लार ग्रह केइ लगावैं ।
भोपो कहै भूत छै, लोभ वीभासणि लीधौ ।
जंत्र मन्त्र रा जाण, कहै कोइ कामण कीधौ ।

मंदवाड़ एक नव नव मता, मूल न जाणे को मरम ।
कहै साधु अशुभ पूर्व करम, धरि सुखकारी इक धरम ।३६।

तीन कोडि तरु जाति, आणि वलि लाख इक्यासी ।
सहस वार एकसौ, भार इक संख्या भासी ।
आठ भार ते इसा, फल्या लाभै फल फूलै ।
भार च्यार विण फले, भार पट लता म भुल्लै ।
करि शास्त्र साखि धर्मसी कहै, भार अढार [1]वनस्पती ।
विणलीया सु स खाधा विगर, छहु ऋतु मे हिसा छती ।३७।

थिर दीसैं थि ग्गति, अलग आकाशैं उड्डि ।
पिण पल पल पवन सुं, गुडथला खायें गुड्डि ।
जिण रो न चलैं जोर, डोर परहत्थ दवाणी ।
पर सिद्ध कीध पुकार, नेट किण ही मन नाणी ।
तूटैं न डोर छुटैं न तिम, ऊची तलफैं आफलैं ।
प्राणीयैं इम परवस पड्या, गमियौ नर भव गाफिलैं ।।३८।।

उद्यम

दूहिजैं उद्यम दूध, जतन करि दही जमावैं ।
वलि परभात विलोइ, उदिम सेती घृत आवैं ।
करि उद्यम सहु कोइ, भला नित जिमैं भोजन ।
खवरि आणैं खेपीयौ, जाइ नै केइ भोजन ।

[1] अडसट्ठि कोडि सट्ठि लख सतरैं वलि सहस्स ।
उपरि मेलौ आठ सौ भार अठार वणस्स ।१।

व्यापारि विणज विद्या विभव,
ज्ञान ध्यान धर्मसीख गिण ।
सहु काज करण उद्यम सिरै,
विणसैं सहु इक उद्यम विण ॥ ३६ ॥

धरिजें मन धीरज्ज हाणि ह्वै म करे हा हा ।
लागा वहै ज लार, हांणि दुख त्रोटा लाहा ।
भाति अनैं ऊभत्ति प्रगट दिन राति पटतर ।
ऊगैं वलि आथमै निरखि रवि चंद निरन्तर ।
ग्रह राह परव आयो ग्रसै, परगट देखि पारिखा ।
किण हीक देइ धर्मसी कहै, सहु दिन न हुवै सारिखा ।४०।

नारी विरहणी निरखि ताम कोकिल कुहकी वन ।
चद त्रिविध पुनि पौन, मदन अति व्यापि लयौ मन ।
वायस राहु भुयग रुद्र च्यारु अरि लखै ।
तिन कौ करि है नास बहुरि इक बात विशेपैं ।
कोकिला कठ शशधर बदन पौन स्वास पुनि मदन मन ।
मेरेहु एहुं जिन ज्यान हुइ, लिखि-२ मेटण इण जतन ॥ ४१ ॥

पुण्य पाप पातिसाह चाउ सहु दिसि पग चल्ले ।
साच झूठ हुइ सचिव, हुस आछु दिसि हल्ले ।
ज्ञान ध्यान भ्रम गरब, पील चल्ले चिहु पट्टे ।
शम दम छल बल अश्व, अढी पग फिरै उवट्टे ।
चखु चलण ऊठ कोणे चलैं,
प्यादा गुण मद पग्ग पगि ।

सतरज सज्जण दुज्जण सजें,
जोड़ ख्याल धर्मसीह जगि ॥ ४२ ॥

फल किहा थी विण फूल, गाम विना सीम न गिणजें ।
गुरु विण न हुवै ज्ञान, विगर पूजी किम विणजें ।
पिया विना नहीं पुत्र, वुद्धि विण शास्त्र न सूझै ।
भींत विना नहीं चित्र, सुद्दष्टि विन वस्त न सूझै ।
विण भाव सिद्धि न हुवै, रस विण न करै कोई रुख ।
शोभा न काइ धर्मशील विण, सतोपह विण नहीं सुख ॥ ४३ ॥

२० वर्ण

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शुद्र, चिहुं वरण संभाली ।
कदोई कुम्भार कठी मरदनीया माली ।
तंबोली सुथार ठीक भैसात ठंठारू ।
नव नारु इण नाम कहै हिव पाचे कारु ।
गाछा सुनार छीपा गिणौं, मोची घाची इण महि ।
धर्मसीह कहै निज निज धरम, समझौ वरण अढार सहि ॥४४॥

धन को सार्थकता

माया भीड भाजता, पोखता उत्तम पात्रे ।
प्रिया हुंस पूरता जावता तीरथ यात्रे ।
वीवाहे विलसता दुजण जड़ काढण दावै ।
संतोष तां सैंण कविय मुख सुजस कहावै ।
इण आठ ठाम खरच्यो उत्तम, मत चीहा पैं आप मन ।
साधिजै काज सु क्रियारथा, धन धन धर्मसीह सोइज धन ॥४५॥

मित्र

मिलता मुहा मुंह, हेज हियै मिले हीसै ।
पल एक फेर्‌या पूठ, नेह तिल मात न दीसै ।
आरीसा जिम आज, मीत बहुला जग माहे ।
कलि चातक जिम कोइ, नेह राखै निरवाहे ।
मेह नै देखि पिउ पिउ मगन पिउ पिउ कहै पर पूठ पिण ।
कीजीये मीत धर्मसी कहै, गुणवतौ कोइक गिण ॥ ४६ ॥

याचना

यश रस सिद्धि बुद्धि सिरी, सदा ए पाच सनूरैं ।
देह वसै देवता, दे कह्या नासै दूरैं ।
शोक अने सन्ताप, पिंड आवैं परसेवो ।
भय कपणि गति भंग, निसत निज लाज न सेवो ।
ताणतौ माण ताकै तिको, ऊंधै मुख सु आगणो ।
लेखवौ दुरस सगले लखण, मरण सरीखो मागणो ॥ ४७ ॥

दान

राजा राखैं रजा वागिया प्रसिद्ध वधारैं ।
वैरी न करैं बुरो, सेवक सहु काम सुधारैं ।
भाइ सहु ह्वैं भीर, गुणी जन कीरति गावैं ।
स्वासणि द्यै आसीस, सासरै रह्यौ सुहावै ।
सहु भूत प्रेत ग्रह ह्वै समा, सुपात्रे ह्वै धर्मसी सही ।
देखिज्यो दान दीधौ थकौ, नेट कठे निष्फल नहीं ॥ ४८ ॥

बुढापा

ल्यें हाथ लक्कड़ी, लाल मुखि पड़ अलेखे ।
लिच पिचती कडि लाक, लाज मन माहि न लेखै ।
साभलता धर्मसीख, धीर्य विण माथो धुणें ।
को न गिणैं कायदो, खाटले पड़ियो खुणें ।
लघुनीति लोभ लिग लिग लहरि, लाल लीख वलि लाल्हरा ।
ले आइ साथि साते लला, जिका काइ कीधी जरा ॥ ४९ ॥

बढना बुरा

वैर वध्यो हिज वुरौ, अधिक उपद्रो ह्वै आगे ।
वध्यो वुरौ वासदे, लाय जिण सेती लागे ।
व्याधि वधी हिज वुरी, छिजै देही जिण छिण छिण ।
वाद वध्यो हिज वुरौ, खसा खेधौ ह्वै खिण खिण ।
वधियो वुरो ज सगलौ विसन, धर्मसीख धरिजो धुरा ।
करिज्यो विवेक ज्युं ह्वै कुशल, वधा पाच वधिया वुरा ॥ ५० ॥

नीति

सैं मुख गुरु रै सुजस, प्रसिद्ध कीजै परसंसा ।
सगा सणेजा सैंण, वरणवो पूठा वासा ।
सेवक री परसस, काम सिर चढया केडे ।
सहु भाइ परसस, छिद्र कहावण केइ छेडे ।
पूत री परसंस न करे प्रगट, प्रशंस त्रिय थकिया पछै ।
धर्मसीह राजनीति हि धरे, न्याय विना वाता न छे ॥ ५१ ॥

खल

खल न तजे मन खार, जरा हुई बूढौ जोइ ।
पीलो हुवो पाकि, तूस खारौ फल तोइ ।
बूढो हुओ विलाड़, मूपका तौ पिण मारे ।
सखरी द्यां धर्मशीख, धेख जे अधिको धारे ।
विष में मिठास न हुवै वली, दूधा ही सूं पुट दीया ।
हठ ताणि आप न गिणे हितू कामूं तिण सूं हित किया ॥ ५२ ॥

बहू

मावटि सीरख सेज, पुंजि घर आणैं पाणी ।
धोइ सहु वासण धरै, रुडा चूल्हैं रंधानी ।
पीसण खांडण प्रसिद्ध वले गो दूहि विलोवे ।
जीमण राधि जिमाव लाज सु जिमैं लुकोवै ।
सिर गुथि विनय संतोपणी, सासू जिठाणी सहू ।
कुल धर्मशील शोभा करण, बड़े कष्ट जीवैं बहू ॥ ५३ ॥

जल

हुवै पिंड जल हुता, वेल जल ही ज वधारै ।
जल सहु रो जीवन्न, सहु ब्रह्मंड सुधारै ।
नीर तहा ही ज नूर, आब तिहा आवादानी ।
सरस सुभिक्ष सुकाल, प्रघल वरसे जिहा पाणी ।
धर्मसीह सरब कारण धुरा, अम्बर पृथ्वी पवन अगि ।
पचभूत माहि अधिको प्रगट, जल उपरात न कोइ जगि ॥ ५४ ॥

गृह प्रवेश निषेध

लपट तजि मौलीयौ निगुण प्रभु नीलज नारी ।
चौकीदार ज चोर, जोर वर जोध जुआरी ।
ठिक विण वाभण ठोठ भ्रमी मित्र कायथ भोलौ ।
वलि रीसट वाणीयो, दूत बोले डमडोलौ ।
विन सिद्धि वैद जोसी जडौ, धर्मसीख विण धारणैं ।
मानि जो वैंण आणौं मता, बारै ही घर बारणैं ॥ ५५ ॥

क्षमावत सौ खरो, सकज हुइ गाल्या सासैं ।
नेही तेहिज नेट, बिछड्या भूरै वासैं ।
पडित तेहिज परखि, शास्त्र अरथ समझावै ।
ज्ञानी तेहिज गिणौं, वस्तु पहिली ज बतावै ।
सांकड़ आइ पडिया सही, सैंण सोइ राखै सरम ।
दातार छतें ऊतर न द्यै, धीर सोइ न तजें धरम ॥ ५६ ॥

सतरैं से सवत, वरस तेपनौ वखाणौं ।
श्रावण सुदि तेरसैं, जोग तिथि शुभ दिन जाणा ।
राजैं बीकानेर, सूरि जिणचन्द सवाइ ।
भट्टारक वडभाग, गच्छ खरतर गरवाइ ।
श्री विजयहर्ष वाचक सुगुरु पाठक श्री धर्मसी पवर ।
बावनी एह प्रस्ताव बहु, कीधी छप्पय कवित्त कर ॥ ५७ ॥

—:※:०:※:—

दृष्टान्त छतीसी

श्रीगुरु को शिक्षा वचन, दिल सुध धरि निरदंभ।
हितकारण सबकुं हुवैं, अड़वडताँ औठंभ॥ १॥

हितूआ हितकारी हुवै, वाकौ ही कोइ वैण।
पारिख रतन परीखता, निरखैं वाकी नैण॥ २॥

दूपण दीधैं दुरजणे, ओपे कवित असह्य।
लूअ झलक्के लागतै, आवै स्वाद अवह्य॥ ३॥

दूजा नै सुख देखिनै, निपट दुखी ह्वै नीच।
सूकैं जव्वासो सही, वरिपा जलरइ वीचि॥ ४॥

ध्रमसी कहै वधतैं धनै, त्रिसना वधै अथाग।
धुरथी अधिकी धग-धगइ, इंधन मिलिया आगि॥ ५॥

स्वारथ अपणौ ना सधैं, मित्र धरेता मेलि।
माली फल पाम्या पछै, काटे पर ही केलि॥ ६॥

मोटा री पिण पाति मैं, नान्है काज कराय।
काम पड्यें क्यु कोडिया, नाणा में न गिणाय॥ ७॥

वल इकवीस विश्वा-वधइ, एका वीयै आइ।
पातैं वैसै पाधरा, तौइ वारा वल वोलाय॥ ८॥

मुखी सलामत पातिमै, तौ सकजा बोलै सर्व।
तिण ठामै ह्वै सून्यथा, तौ गयौ सहूनौ गर्व॥ ९॥

पग मेल्हीजैं पाधरा, वधीयौ जौ वहु वित्त ।
निज निंदा थी कीध नृप, चीतारी दृढ चित्त ॥ १० ॥

गुरू निंदा करणी नहीं, माठौ देखे मग्ग ।
सेलग गुरू मद्‌वसि सूअैं, पथग चापै पग्ग ॥ ११ ॥

पाप किया जायै परा, जौ पछतावै जोइ ।
गौसालौ स्वर्ग गयौ, अंत समै आलोय ॥ १२ ॥

दूजा दिपावै दीप ज्यूं, आप धरैं अंधार ।
पहुचाया शिवपाचसैं, खदक पोतै ख्वार ॥ १३ ॥

वल सगलौ वैठौ रहै, देव हुवै दुख देण ।
बारवती नगरी वलैं, निरखैं केसव नैंण ॥ १४ ॥

करि हितनैं पीडा करै, ते तौ पुण्य तरक्क ।
स्वर्ग गयौ श्री वीररा, खीला काढि खरक्क ॥ १५ ॥

अवसर सभा अटकले, वायक वंद्या संवाद ।
दूहा दे जीतउ जती, वृद्धोवादी वाद ॥ १६ ॥

सवला री ह्वै पूठि सिरि, निवला रौ रहै नीर ।
चमर शक्र साम्हौ चढयौ, वासौ राखण वीर ॥ १७ ॥

कोप वसैं कारिज करै, वलि सोचैं मतिवंत ।
इन्द्र दौड़ि लीधौ उरसौ, वज्र भगति भगवंत ॥ १८ ॥

धरम्यानैं पिण तजि धरैं, सहु वखतावर सीर ।
इन्द्र चेडा नै अवगिणी, भयौ कोणिक री भीर ॥ १९ ॥

जतन करैं जो देवता, क्रूर मिटैं नहि कर्म ।
वीर श्रवण मैं कील कै, महापीड हुइ मर्म ॥ २० ॥

मोटा ही ध्रम काम मैं, अधिकौ करैं अदेख ।
दसारण री रिधि देख नैं, शक्र सज्यो सुविसेष ॥ २१ ॥

मोटा रें पिण कष्ट मे, जतन नेह सहु जाय ।
राते रमणी रान मैं, नाखि गयौ नलराय ॥ २२ ॥

राज लेंण माहे रहै, वडा तणी मति वक्र ।
भरत मारण भ्रात ने, चपल चलायौ चक्र ॥ २३ ॥

दान अदान दुहूं दिसी, अधिक भाव री ओर ।
नवल-सेठ नैं फल निबल, जीरण नै फल जोर ॥ २४ ॥

धरमी जे धरमैं धरे, निसचौ न तजै नेट ।
चद्रवतसक ना चल्यौ, थिर दिवालगि थेट ॥ २५ ॥

ढिढता धरमे देखिनैं, भलौ करै सुर भाव ।
हित जयू देवी हण्यौ, प्रभवा तणौ प्रभाव ॥ २६ ॥

प्रापति होवैं पुण्यरी, वखत खुलै तिण वेल ।
सगम पायस सग मे, मुनिवर संगम मेल ॥ २७ ॥

दान सराहै देवता, चेला दीध विशेष ।
मूलदेव नै राजपद, देवै दीधो देखि ॥ २८ ॥

पापी नै दुख पाडिजै, तो इ पाप न तजत ।
कालकसूरे कूप मैं, मन सौ मारे जंत ॥ २९ ॥

आप कष्ट अंग आगमै, पडित टालै पाप ।
सुलस दया पाली सही, पग पोता रो काप ॥ ३० ॥

मुनीसरा सिरि मोहरा, ताजा वाजैं तूर ।
अगज मृति आख्या भरी, श्री शय्यभवसूरि ॥ ३१ ॥

पण अपणौ नहि पालटै, धरमी धीरिज धार ।
लाडू हरि लवधइ लह्या, तजिया ढंढण त्यार ॥ ३२ ॥

वृत लीधौ ही ह्वै वृथा, करम उदय अधिकार ।
वरस चौवीस गृहे वस्यो, मुनिवर आद्रकुमार ॥ ३३ ॥

पतित थका ही परभणी, गुणी करै उपगार ।
नर दश दश नंदषेण नित, बोधै वेश्या वार ॥ ३४ ॥

काम विपम न सधै किम्ही, सो ल्यैं शील सुधार ।
चालणीयै करि सीचीयौ, नीर सुभद्रा नारि ॥ ३५ ॥

रे कलियुग गज मत गरज, हुं हिज आज अवीह ।
तुझ मद उत्तारण तपै, सकजौ जिन ध्रमसीह ॥ ३६ ॥

इति श्रीसदगुरु शिक्षा दृष्टात पट्त्रिंशिका ।

—:o:—

परिहां (अक्षर बतीसी) बतीसी

काया काचे कुंभ समान कहैं क कौ ।
थाखे थेखी काल सही देसी धको ।
करवट वहतां काठ ज्युं आउखो कटै ।
परिहा न धरै तोइ धर्मसीख जीव नट- ज्युं नटै ॥ १ ॥
खमिजैं गालि हितूनी इम कहै ख खौ ।
रीस करी कहै तेह कहीजे हित रखो ।
आणा सैंणा वैण सुं आख्या उपरैं ।
परिहा धर्म कहै सुख होइ धूअें ही धूप रैं ॥ २ ॥
गरथ पामी गुण कीजे इम कहे गगो ।
साहमी साधु सुपात्र संतोषीजे सगौ ।
लाधि छै जो लाछि कहै धर्म लाहल्यौ ।
परिहा सची राख्या सैंण अपानै स्वाद सौ ॥ ३ ॥
घड़ि माहे घड़िजाहे, आयु कहै घ घो ।
अमर न दीठौ कोई जीव अठा अघौ ।
पहिली को दिन च्यार दिन को पछै ।
परिहा आखर कहै धर्मसीह सही चालणो अछै ॥ ४ ॥
नेह वधै नहीं नेट, हुए अंगुल ढीहीयै ।
लुलि नमीयौ तो का मु लोक लजा लीयै ।

गाठि हीयै धर्मसी कहै सुख मतां गिणौ ।
परिहा औ गुण इणहिज ड डि यो आसण दूमणौ ॥ ५ ॥

चकवा ज्युं चल चित्त, न दूजे कहे चचो ।
पर वसि प्रीति लगाइ तलफि कैं क्युं पचो ।
सिरज्यो है सम्बंध किसु हा हा कियै ।
परिहा धीरज धर धर्मसीह रखे हारे हीयै ॥ ६ ॥

छक देखि खेलीजैं एम कहो छ छै ।
पछतावो जिण काज सही न हुवे पछैं ।
आखर जे धर्मसीह हुवै उतावला ।
परिहा विणसाडे निज काज सही ते वाउला ॥ ७ ॥

जोवन जोर गिणै नहीं केहनैं कहै ज जो ।
गरव चलैं ता सीम हुवे देही गजो ।
धीरो रहे धर्मसी कहै हासी होइसी ।
परिहां जोवन वीते कोइ न साम्हो जोवसी ॥ ८ ॥

झगड़ म करै झूठ, कहै छै युं झ झै ।
ग्रै नहीं कोइ साखि दुखे देही दझै ।
कूडै की परतीत न, साचो ही कहै ।
परिहा रागा विना धर्मसी कहै चेजो क्युं रहे ॥ ९ ॥

न धरो तिण सुं नेह, मिले नहीं जे मुखै ।
दुपडौं दीसैं दूर, अनै बोले दुखै ।
आखर एह अछै जो इणहिज वेतरो ।
परिहा चीतारै नहीं कोइ ञञयो भाट चुलेतरो ॥ १० ॥

टलिये नहीं विवहार, ग्रही निज टेक रे।
वात सहु नौ दीसे एह विवेक रे।
निखरौ ही धर्मसी कहै ल्यो निरवाह रे।
परिहा महादेव विप राख्यो ज्यु गल माहि रे॥ ११ ॥

ठाम देखि उपगार करो कहियौ ठठै।
तत्त तणी तू बात म नाखि जठे तठै।
कीजै नहीं धर्मसी उपगार कुजायगा।
परिहा सींह नी आखि उघाड़्या सीह ज खायगा ॥ १२ ॥

डेरा आइ दीया दिन च्यार कहे डडौ।
गयो हंस तब काय बलो भावै गडौ।
वाय बाय मिल जायें, मट्टी मट्टीया।
परिहा खूब किया धर्मसीह, जिणें जस खट्टीया ॥ १३ ॥

ढुँढो ढाढस लागि, दोस मिस कहै ढ ढो।
पारद गोली पाक करौ पोथा पढ़ो।
जंत्र मत्र वहु तत्र जोवो जोतिष जडी।
परिहा घाट बाध धर्मसीह न होइ तिका घड़ी ॥ १४ ॥

नहु लघीजै लीह, एक मावीत री।
राखीजै वलि लीह सदा रज रीति री।
ईस तणी इक लीह धरो धर्मसीह अखी।
परिहा राणें आखर न्याय त्रिणे रेखा रखी ॥ १५ ॥

तत्त जाणी इक बात तिका कहै छै त तो।
माया संचै सुंब तिको खोटौ मतो।

खाडि गाडि राखी ते कोइ खायसी।
परिहा थेट नेट धरती में धूड़ ज थायसी ॥ १६ ॥

थिर न रहीं जगि कोइ इसो बोले थ थो।
फोगट फिरि फिरि काइ माया जालें फथो।
टलै केम धर्मसीह कहै आयौ टांकड़ौ।
परिहा माडी आप जंजाल उलूधौ माकडौ ॥ १७ ॥

देइ आदर दीजैं दान कहै द दौ।
माणस रैं धर्मसी कहै आदर सुं मुदौ।
पाणी ते पिण दूध गिणो हित पारखी।
परिहां आदर विण साकर ही काकर सारिखी ॥ १८ ॥

धरौ सीख मोटानी एम कह्यो ध धै।
बालक जीव्या हंस पड्या बाजै वधै।
झुकै दीधी सीख कढ़ी काना तलै।
परिहा राज गमाड् गयो बलिराइ रसातलै ॥ १६ ॥

न करो मन मे रीस कह छै यु न नौ।
मानी छै जो रीस तोइ वड्गा मनो।
ताण्या अति धर्मसीह कहै तूटै तणी।
परिहा राइ पड्यां मन मोती जाइ न रेहणी ॥ २० ॥

परदेसी सुं प्रीति स करि कहीयो प पे।
जोरै उठी जाय तठा सुं तन तपै।
वार वार चीतारैं धर्मसी वत्तियां।
परिहा छूटै नयणा तीर भरायै छत्तियां ॥ २१ ॥

फल दीर्घ फल होइ कहै छै यु फ फौ ।
निफल पहिली हाथ किसुं आणै नफो ।
सेवा कीधा ही ज सही कारिज सरै ।
परिहा दाखै धर्मसीह दिल्ल ठरैं तो ह्राफुरै ॥ २२ ॥

बोल्या मोटा बोल किसुं कहियो बवे ।
दीसैं आयौ दाव तठै नचो दबै ।
साच नहीं जिणरें मन तिणसुं सरम सी ।
परिहा धैंठे माणस सुं हित केहो धर्मसी ॥ २३ ॥

भलपण कीजैं काइक एम कहो भ भौ ।
लोका माहे जेम भली शोभा लभौ ।
जीव्या रौ पिण सार इतौ हिज जाणीयै ।
परिहा उपगारें धर्मसी कहै काया आणीयै ॥ २४ ॥

मित्राइ रो मूल कहै धर्मसी म मौ ।
नयणे देखौ मित्र तरै पहिली नमौ ।
दीजे लीजे कहीजे सुणीजे दिल्ल री ।
परिहा खावै तेम खवावै प्रीति तिका खरी ॥ २५ ॥

या यौ कहै यारी करि तिण हीज यार सु ।
पडीया आपद मॉहि बुलावै प्यार सु ।
पूरौ प्रीतो ते जे तलफै तिण पगा ।
परिहा सुख मे तो धर्मसी हुवे सहु को सगा ॥ २६ ॥

रक राउ इक राह चलै बोले र रौ ।
द्वेष राग धर्मसी कहै एता क्युं धरौ ।

एता नव नव रंग वणावै अंग सुं ।
परिहा राख सहुनी होस्यै एकण रंग सुं ॥ २७ ॥

लोभ गमावै शोभ कहै छै युं ललौ ।
भाखै लोक सहु को लोभी नहीं भलौ ।
लालच वसि धर्मसी कहै थोडो लग्गीयै ।
परिहा मान महातम मोह रहै नहीं मग्गीयै ॥ २८ ॥

वात घणी वणसाड हुवै कहै छै व वो ।
निखरी नीकलि जाइ उदेग हुवै भवो ।
वहु गुण छै धर्मसी कहै थोड़ो वोलीयै ।
परिहा थोडी वस्तु सदाइ मुंहगी तोलीयै ॥ २९ ॥

शीख न माने सुंआलारी को सही ।
कलियुग माहे खैंहै री पृथ्वी कही ।
आंकत्रीयो ते लाठी ले ने उरडियौ ।
परिहा मान्यो अखरा मे पिण शशियो कोठा मुरडियौ ॥३०॥

क्षेत्र सहे खण धार खरं रिण नाखिसै ।
खेले खीले वास खले खेत्रे ख्रसै ।
पेट काज धर्मसीह इता दुख पाडीयै ।
परिहा फाड्यो पेट खुन्यायै ख खे फाडीयै ॥ ३१ ॥

सत्त म छाडौ सैंण कह्यो छे यु समै ।
कष्ट पडे ते ईस कसोटी मे कसै ।
जोवो सत्तो सिद्धि हुइ विक्रम जिसी ।
परिहा साकौ राखै सोइ सही कहै धर्मसी ॥ ३२ ॥

हरखै हियो जिण नै देखि कहै ह हौ ।
पूरब भव री प्रीति कइ तिणसें कहौ ।
हेत कहै धर्मसीह छिपायौ ना छिपै ।
परिहा चुंबक मिलिया लोह तुरत आवी चिपै ॥ ३३ ॥

संवत सतरैसार वरस पैंत्रीस (१७३५) में ।
जोड़ी अखर बतीसी श्री जोर में ।
विजयहरष जसवास सुं लोका मे लहै ।
परिहा करि कंठ प्रस्तावी, धर्मसी जे कहै ॥ ३४ ॥

—:०:—

सवासो सीख

श्री सदगुरु उपदेश सभारो, धर्मसीख ए सुबुद्धि धारो ।
विधि सहु माहि विवेक विचारो, सगला कारिज जेम सुधारो ।१।

प्रथम प्रभाते शुभ परिणाम, नित लीजे श्री भगवंत ना नाम ।
धणी रा स्वामिधरम मे रहिजैं, कथन न मुख थी झूठ कहिजै ।२।

धरम दया मन माहे धार, अधिको सहु मै पर उपगार ।
वात म करि जिहा वसिवौ वास, वैरी नौ म करे विश्वास ।।३।।

वरजे सन स ठामि व्यापार, चालें अपणें कुल आचार ।
माइतारी आण म खंडै, मोटा सेती हठ म मंडै ।।४।।

झगडे साख म देजे झूठी, आप वडाइ न करि अपूठी ।
म लडे पाडोसीसु मूल, अपणा सु होजे अनुकूल ।।५।।

सजि व्यापार तु पुजी सारू, अटकलि ठाम देइ उधारू ।
रखे वधारे ऋण नै रोग, लखण लीजैं ज्यु हसै न लोग ।।६।।

वसती छेह म करिजे वास, पापी रै मत रहिजै पास ।
ऊचौ मत सूए आकाश, चित्त छतैं म करै देखास ।।७।।

ढिल रौ स्त्री नैं भेद न दीजैं, कदे ही साझै पंथ न कीजे ।
सुत भणावे डर डाकर साधे, म चाढे लाड म मारै माथै ।।८।।

नान्हा ते मत जाणे नान्हा, छिद्र पराया राखे छांना ।
अविकारी म करे अदिखाइ, भंभेरे मत भूप भखाइ ।।९।।

राजा मित्र म जाणे रंग, सुमाणस रो करिजे संग ।
काया रखत तपस्या कीजै, दान वलै धन सारु दीजै ॥१०॥

जोरावर सु मत रमे जुऔ, करिजे मत घर माहे कुऔ ।
वंदा सु मत करजे वेर, गालि बोले तो ही न कहे गैर ॥११॥

नारि कुलक्षण नैं धन नास, हलकौ पडीयो पाम्यो हास ।
अति पछतावे चित्त उदास, पच मे पाचे मत परकास ॥१२॥

अमल न कीजै होडैं अधिका, दरा करीजै घर मे विधिका ।
गरथ परायौ तु मत गरहे, निखरै पाडोसै पिण न रहे ॥१३॥

दोड विढ़ता एकलौ मत देखे, धणीनै वुरो म कहिजे धेखे ।
जूपे मत मोटा नी जोड़े, छोकरवाद री रामत छोड़ ॥१४॥

गाम चलता सुकन गिणीजे, हणतौ विण किणही न हणीजें ।
विण ग्रहणैं दीजे मत व्याज, निश्चै वरस नो राखे नाज ॥१५॥

दुसमण ने दुसमण मत दाखैं, रीस हुवै तोही मन राखैं
खत्त लिखावै मत विण साखे, माण पोता नौ गालि म नाखे ।१६।

लाज न कीजै नामै लेखे, वद्धारै परतीत विशेषें ।
धरिजे मेल ज गाम धणी सु, इकतारी कर अपणी स्त्री सु ॥१७॥

चलता वसता सहु ची चीतारे, वाल्हा सैण मता वीसारे ।
जवाव करतौ रातै जागै, न हु सुइजैं अगे नागे ॥१८॥

जे करतो हुवै चोरी जारी, उण सु अति नहीं कीजै यारी ।
वसत न लीजें चोरी वाली, लूवै मत तु निबली डाली ॥१९॥

दे फु का म वुझावै दीवौ, पाणी अणछाण्या मत पीवौ ।
छीक कीया कहिजे चिरजीवो, रूस्यौ मनावे फाटो सीवौ ॥२०॥

म करे रवि साम्हो मल मूत्र, लखण म करिजे लावा लूत्र ।
पाप तजे तु सकजै पूत्र, सांभलिजे शुभ शास्त्र सूत्र ॥२१॥
मुंडा सुं पिण करे भलाइ, परिहरि पाचे जेह पलाइ ।
बैठा बात करैं बेइ जौ, तेड्या विण तिहा म हुवे तीजौ ॥२२॥
कारिज सोच विचारी कीजें, खता पड्या ही अति मन खीजें ।
सुधर्य काम कहे साबास, न करे याचक निंघट निरास ॥२३॥
न करे मूल किण हि री निंदा, छावीजैं वलि गुरु रा छंदा ।
नाम लोपी नैं न हुजे निगरा, नवि थापीजै कीड़ी नगरौ ॥२४॥
आदर दीजै माणस आये, जिहा नहीं आदर तिहां मत जाये ।
हसजै मत विण कारण हेत, कपड़ौ पिण म करे कुवेत ॥२५॥
बहु विषमे आसण मत बेसें, परघल अणजाण्या मत पेसे ।
पाणी अति ताणीय न पीजै, सारौं ही दिन सोइ न रहीजें ॥२६॥
बाधे मत मल मूत्र अबाधा, खाजे मत फल जीवा खाधा ।
वसत पराइ मतिय विछोडे, छानी पर नी गांठ म छोड़े ॥२७॥
जिमिजें अगले भोजन जरीयैं, शत्रु न हुजै कारज सरीयैं ।
पेन्हे मत अण कलीयै पाणी, तोडे प्रीति अता मति ताणी ॥२८॥
घर मे मत खा फिरतो घिरतो, न कहे मरम बोलीजे निरतौ ।
तारुं सु मत तोड़ तिरतौं, वडा रै काम म थाए विरतौ ॥२९॥
पंथ टलै तब लीजें पूछ, मोटा साम्ही म मौडे मुंछ ।
तुच्छ वचन म कहै तुंकार, मत बेसै वलि ठासणी मार ॥३०॥
भोजन उपमा म कहे मुंडी, अपणी जाति विचारे ऊंडी ।
जिण सांभलतां उपजे लाज, एहो म कहे वैण अकाज ॥३१॥

कीजे नहीं पग पग कचाट, अणहुंतौ उपजे ऊचाट।
माहिला सु न हुजे मन मठ्ठइ, हाणि न कीजे अपणे हट्ठे ॥३२॥
टेढ़ा न हुजे जंगी टट्टू, ललचाये मत थाए लट्टू।
पडित मूरख कीजैं परिखा, सगला नै मत कहिजे सरखा ॥३३॥
न कहें फिर फिर अपणो नाम, ठिक सु वेसे देखी ठांम।
सुंव नो नाम न लेइ सवारौ, कोई हुसी अणहुंतौ कारौ ॥३४॥
वरजे पर ही वेट वेगार, आप वसे जिहा ह्वै अधिकार।
दुटपी वात कहै दरबार, सहु नौ समझीजैं तत सार ॥३५॥
सीख सवासो (१२५) कही समझाय, साचवता सहुनै सुखदाय।
थिर नित विजयहर्ष जस थाय, इम कहै श्री धर्मसी उवझाय ॥३६॥

गुरू शिक्षा कथन निसाणी

इण संसार समुद्र कौ ताकैं पेलौ तट्ट।
सुगुरू कहे सुण प्राणीयां तु धरिजै धर्म वट्ट ॥ १ ॥
सुगुरू कहे सुणप्राणिया, धरिजै धर्म वट्टा।
पूरव पुण्य प्रमाण तैं मानव भव खट्टा ॥
हिव अहिलौ हारे मता, भाजे भव भट्टा।
लालच मे लागौ रखै, करि कूड कपट्टा ॥ २ ॥

उलझै नौं तु आप सु ज्युं जोगी जट्टा ।
पाचिस पाप संताप में ज्युं भोसरि भट्टा ।
भमसी तुं भव नवा नवा नाचै ज्युं नट्टा ।
ऐ मंदिर ऐ मालिया ऐ ऊचा अट्टा ॥ ३ ॥

हयवर गयवर हींसता, गौ महिषी थट्टा ।
लाछ दु लीपी झूंबका पहिग सु वट्टा ।
मानिक मोति मूदड़ा परवाल प्रगट्टा ।
आइ मिल्या है एकठ्ठा जैसा थलवट्टा ॥ ४ ॥

लोभे ललचाणा थकौ, मत लागि लपट्टा ।
काल तकै सिर उपरैं करसी चटपट्टा ।
ले जासी इक पल में ज्युं वाउ छलट्टा ।
राहगीर सध्या समै सोवै इक हट्टा ॥ ५ ॥

दिन उगो निज कारिजे जाये दहवट्टा ।
त्युं ही कुटंब सवै मिल्यौ मत जाणि उलट्टा ।
एहिज तो कुं काढिसी करि वेस पलट्टा ।
साथि जलैगे बपड़े दुइ चार लकुट्टा ॥ ६ ॥

स्वारथ का संसार है विण स्वारथ खट्टा ।
रोग ही सोग वियोग का सवला संकट्टा ।
दान दया दिल मे धरो दुख जाइ दहट्टा ।
धरम करौ कहै धरमसी सुख होइ सुलट्टा ॥ ७ ॥

—:०:०:—

वैराग्य निसाणी

काया माया कारिमी, चिहुं दिन तणी चट्टकि,
इण माहे तु आत्मा, उलझै रखे अटकि ॥ १ ॥

इण माहे तु आतमा उलझै न अटक्कि,
पहिली तो पोता तणी, करि शोध घटक्की।
कूड़ धूड़ री कोथली मद मैल मटक्की,
झाली मूढे पंडिते, झंझेडि झटक्की ॥ २ ॥

जोध विरोध वृथा करै, कन्है काल कटक्की,
मान मछर मन जाणि मत, मृति नैण मटक्की।
ठग माया झूठी ठटै खल रूप खटक्की,
फोगट जाइस फु कि तुस जाइ फटक्की ॥ ३ ॥

एकणि लोभै आवता छुए जाय छटक्की,
धरम सरम हित धीरता गुण ज्ञान गटक्की।
मन मातै मृग ज्यु भमै, त्रग साथि वटक्की,
पर निंदा क्षेत्रे पडैं हिव राखि हटक्की ॥ ४ ॥

नाच्यो वेसे नव नवे धरि रीति नटक्की,
पुण्यैं नर भव पामियौ भवे भव भटक्की।
सुगुरू वचन सहकार री लुलि लुबि लटक्की,
इण विलग्या सुख फल अवल त्रुटे न टक्की ॥ ५ ॥

नंदे माया मेलवी पिण नेट न टिक्की,
वाविसु क्षेत्रैं ज्युं चले वधै रीत्ति वटक्की।
श्रीधर्मसी कहै ज्ञान री अमृत गुटक्कि,
पीयां दुख जाये परा, सुख होई सटक्की ॥ ६ ॥

—:❀:०:❀:—

उपदेश निसाणी

मोह वसैं केइ मानवी, माड्या घोलमघोल,
गमियो नर भव गाफिलै, वयविन धरम विटोल ॥१॥
विण धरमें ते जीवड़ा, वय सर्व विटोली,
दस मासां थिति उदर री, बहु दुख में वोली।
कोडि अठावीस कष्ट तें खमिया इण खोली,
जनम्या दुख हुंता जिके, भूल्या भ्रम भोली ॥ २ ॥
मातां धोतां ग्रमल, झुलरायौ झोली,
हालरि हुलरावियौ, हीडोल हिचोली।
वलि रमीयौ अठ दस वरस तुं वालक टोली,
परणावौ तुं नइ पछैं वयिता हुइ दोली ॥ ३ ॥
मनर पचीसी मांणतौ, करै काम कल्लोली,
गाहड मे वुमे घणु गिलि मफरा गोली।

धन खाटन धपटै धरा, धंधै धमरोली,
लेता देता लालचे लुब्धो लपचोली ॥ ४ ॥
मावीता ही ना मनै दुख द्यै ढंदोली,
गरढै न सरै का गरज नाणें विण नौली।
परहा सडिया पान ज्यु तजीया तंबोली,
पूता नवा नव पान ज्यु पाले पपोली ॥ ५ ॥
छहु रितु मद मातौ छिलै, छवि छाका छोली,
अफल गमावै आउखो, ठाली ठग ठौली।
उडिसी सास अचाणरौ डिगसी डमडोली,
आभ्रण सगला ले उरा करै काया अडोली ॥ ६ ॥
फूक्यौ लकड़ फूस मे, होइ जाणे होली,
विण ज्ञानें इण जीव री, वय सगली बोली।
आदर पर उपगार हिव मन आणि इलोली,
सुखदाइ धर्म सीख सुणि तत लीजै तोली ॥ ७ ॥

वैराग्य सज्झाय

ढाल—मुरली वजावै जी आवो प्यारो कान्ह—

जोवनीयो जायै छै जी लेज्यो काइक लाह।
परवत थी उतरतो पाणी, कहो फिर चढ़ै न काह जो० ॥ १ ॥

चित्त धरज्यो धर्म चाह, यौवनीयौ ॥आकणी॥
च्यार दिना री एह चटक छै नेट नहीं निरवाह ॥जो०॥
यौवन रूप अथिर ए जाणौ, ज्युं वीजली जल वाह ॥जो०॥२॥
भव इण जो तुं करिस कमाइ, (भलाइ) तौ सहु करिस्यै सराह।
वल चलिस्यै नहीं आये वूढापा, रोकै चंद ज्युं राह ॥जो०॥३॥
पाको पीलो पान पीपल नो, थिर न रहै इक थाह ॥जो०॥
ज्युं आया त्यौ सगला जास्यैं, सिरखा रंक पतिसाह ॥जो०॥४॥
रग पतंग तणै मत राचौ, काचौ घट कलि माहि ॥जो०॥
कहै धर्मसी भलपण करिवा, आदर करज्यो उमाह ॥जो०॥५॥

वैराग्य सज्झाय

करिज्यो मत अहंकार ए तन धन कारिमा,
हिव लही नर अवतार तु आलै हारि मा।
वावरीयउ नहीं हाथ जिणउ इण वार मा,
माणस हुइ दस मासे मारी भार मां ॥ १ ॥
आचरिज्यो उपगार तरुण वय आज री,
दिन दिन जास्ये देह जरा ये जाजरी।
उठणन हुस्यै आय काय किण काजरी,
सत्त नही नही स्वाद ज्युं वोदी वाजरी ॥२॥

ठगै काल आउ धन किम करि ठाहरै,
सिंहा री जिम छानो माखण साहरै।
कोइ जाणे नहीं ले जास्यै काहरै,
वैगा होइ चढो हिव किण हिक वाहरै ॥ ३ ॥

दोइ दोड तरवार कटारि दावता,
जोरावर जोधा करै जे जावता।
करता मौजा फौजा माहि फावता,
सुभट तिकौ पिण काल न राख्या सावता ॥४॥

जड़ीयउ कुविसन जीवज्यु तणीए ताकड़ी,
फैलैं लोका माहि कुजसनी फाकडी।
पापै तो पिण राचि रह्यौ हठ पाकड़ी,
पीतौ दूध विलाड़ मिणै नहीं लाकड़ी ॥ ५ ॥

जीव जंजाले उलझ्यो ज्यु जोगी जटा,
पाचैं पाम मझार ज्यु भोभर मे भटा।
नाणैं मन में धरम करै साटा नटा,
वेरी जास्यै काल जेम वादलि घटा ॥ ६ ॥

भव भव भमते परवसि प्राणी वापडें,
कोडि सह्या जो कष्ट सूजी वसि कापडै।
विलवै जीव यणुं ही तलफैं तापडै,
आखर अपणी कीध कमाइ आपडै ॥ ७ ॥

परनै वचै सचै पोते पापरो,
ए तु पोखे पिंड नहीं ते आपरौ।

खोटो चोर वसै जिण मैं मन खापरौ,
तप हथियारे तोडि तुं तिण रो टापरौ ॥ ८ ॥

सुहिणा माहे राक हुऔ राजा सही,
मन माहे खुसीयाल हरष मावै नहीं।
मोजैं पहिरया माणिक मोती मुंदड़ा,
जागी जोवै गोढ़ै घर रा गूदड़ा ॥ ६ ॥

जुड़ियौ तिम संवध सहु सुहिणा जिसौ,
वीखरता नहीं वार गरथ गारव किसौ।
देइस जोतुं कान सुगुरू वचना दिसौ,
तौ दुख नहीं जिण ठाम लहिस थानक तिसो १०

क्रोध मान माया वलि लोभ मता करौ,
दान शील तप भाव अमल मन में धरौ।
विजयहरष जसवास सु लोकां मे वरो,
धरमसीह कहे एक धर्म मन से धरो ॥ ११ ॥

—❀—

हितोपदेश स्वाध्याय

राग सामेरी

चेतन चेत रे चलि मा चपलाइ, सुगुरु कहै छै साचौ।
संवल काइक लेजो साथे, काया घट छै काचौ। चेतन। १।

पूर्व पुन्यइ नर भव पायौ, उत्तम कुल पिण आयौ।
सगली बात विशेषे समझ्यौ, सुकृत सच सवायो। चे०। २।
वहै जीव वलि झूठौ बोलै, राखै पर धन राचैं।
मैथुन सेवे परिग्रह मेले, परिहरि आश्रव पाचे। चे० ३।
च्यार कषाय तिके चकचूरौ, बंधन त्रोडो बेही।
कलह कलंक न करि तु निंदा, करै अरति रति केही। चे०। ४।
परिहरि तुं परही पिसुनाइ, माया मोस म धारै।
मन माहे मिथ्यात न आणै, ए छै पाप अढारै। चे०। ५।
म रमे जूअै आमिष मदिरा, वलि वेश्या नी वाते।
आहौडौ चोरी पर स्त्री, सवला कुविसन साते। चे०। ६।
बाइ माइ आई वावड, सहु संसार सगाई।
स्वारथ काज सिल्या छै सगला, साथै धरम सखाइ। चे०। ७।
साझइ भेला आइ सराहइ, हेकण हाटइ हूया।
परभाते पौताने पथे, जाय सहु को जूआ। चे०। ७।
जोरै रीस रहै छै जलतौ, तल तौ छाती ताती।
जोता जोता में जलि जासी, वीतइ तेलइ वाती। चे०। ९।
सींग माडइ छइ सहु सु साम्हा, ऊंचौ रहै छै ऊडी।
तूटी भोरि किहा ही पडसी, गुडथल खाती गूडी। चे०। १०।
मोसै लोक घणा करि माया, वगलौ होइ अबोलो।
दोलै ताकि रह्यौ छै दुस्मण, सीधे हाथ गिलौलो। चे०। ११।
लोभै लागौ खाय नै खरचै, राक मनै लछि राखी।
घाटौ मिलीयां हाथ घसेलौ, मह्रु त्रुटै जिम माखी। चे०। १२।

जतने राखीजै जीवाणी, पाणी छाणे पीजै ।
सहु ठामै परिणाम दयारा, रूडी विधि राखीजै । चे० । १३ ।
दया धरै ते न हुवै दुखीया, विनय किया जस वारू ।
सद्गुरु सीख कहै छै सखरी, साचवणी तुम्ह सारू । चे० । १४ ।
सहु ससार अथिर समझी नै, कोई प्रमाद म करिजो ।
विजयहरप सुख साता वंछो, धरम सीख चित्त धरिज्यौ ।चे०।१५।

:—:—:

सप्त व्यसन त्याग सझाय

ढाल-चतुर विहारी रे आतमा

सात विसन नौ संग रखे करौ,
सुणि तेहनो सु विचार । विवेकी ।
सात नरक ना भाइ सातए,
आपइ दुख अपार । विवेकी सा० ॥ १ ॥
प्रथम जूआ नै विसन पड्यां थका,
पाडव पाच प्रसिद्ध । विवेकी ।
नल राजा पिण इण विसनै पड्यां,
खोइ सहु राज ऋद्धि । विवेकी सा० ॥ २ ॥
बीजैं मास भखण अवगुण घणा,
करि पर जीव संहार । विवेकी ।

महाशतकनी नारि रेवती,
नरक गइ निरधार। विवेकी सा० ॥ ३ ॥

तीजो मदिरापान व्यसन तजि,
चित्त धरी वलि चाहि। विवेकी सा०।
दीपायन ऋषि दूहव्यौ जादवै,
द्वारिका नो थयो दाह। विवेकी सा० ॥ ४ ॥

चौथे विसने वैश्या नै वसै,
लोक में न रहे लाज विवेकी।
कयवन्नादिक नौ गयौ कायदौ,
कुविसन विणशै काज। विवेकी सा० ॥ ५ ॥

पाप आहेडे कुविसन पाचमै,
प्राणी हणिय प्रहार। विवेकी।
मारी मृगली श्रेणिक नृप गयौ,
पहिली नरक मंझार वि० सा० ॥ ६ ॥

छठै चौरी नै कुविसन करी,
जीव लहै दुख जोर। वि०।
मूलदेव राजाये मारीयौ,
चावौ मंडक चौर। वि०। श० ॥ ७ ॥

परत्रिय सगत कुविसन सातमै,
हाणि कुजस वहु होइ। वि०।
राणै रावण सीता अपहरी,
नास लंका नो रे जोय। वि०। सा०। ८।

इम जाणी भव्य प्राणी आदरो,
सीख सुगुरु नी रे सार । वि० ।
इण भव पावइ आणद अति घणा,
कहै धर्मसी सुखकार । वि० । सा० ॥६॥

—:०:—

तम्बाकु त्याग सज्झाय

ढाल-आज निहेजो दीसै

तुरत चतुर नर तम्बाकू तजौ, इण मे दोष अनेक ।
विरती करौ पाछौ मन वालिनै, वारू धरिय विवेक ।१। तुरत०
स्वाद नहीं इण माहे सर्वथा, माहे नहीय मिठास ।
दूषण देखे तो पिण नवि तजै, पडियौ विसन नै पास ।२। तुरत०
कुटइ ग्रह अछौ छकायनौ, सुंस करौ मन शुद्ध ।
पोतै पुण्य हुवै तो तुम पियौ, दही घृत साकर दूध ।३। तुरत०
होठ विन्हेइ दात काला हुवै, वलि मुखि भुंडी वास ।
वलै तम्बाकू तिम छाती वलै, सोषायै तिम स्वास ।४। तुरत०
नइ एठी मुख घालै नविगिणै, काइ जात कुजात ।
पर नौ थूक तिकौ मुंह मे पडै, विसन तणी ए वात ।५। तुरत०

ढाल (२) कम परिक्षा करण कुंवर चल्यौ । एहनी ।

सूक्ष्म पाचै काय संसार मैं रे, ठावा सगली ठाम ।
धुऔं करि नै तेह धुखाइयै रे, अधिकी हिंसा छै आम ।६। तुरत०

वनस्पति फुलणि वरसात मे, उत्पति जीव अपार।
पाणी तम्बाकू नौ जिहा पडैरे, सहुनो होइ संहार ।७। तुरत०
चिलम भरै हाथा सु चोली नै रे, अंधारा में आइ।
केइ कीड़ा माखी कथूआ रे, माहि घणा मसलाइ ।८। तुरत०
जाणै नहीं छै तु हिव जीवड़ा रे, प्रकट करै छै पाप।
वैर पौतानौ ए सहु वालिस्यै रे, ए दुख सहिस तु आप ।६। तु०
तोवाकू छै नामें तेहनै रे, तंवाखू वलि तेम।
नाम तणौ पिण अरथ भलौ नहीं रे, कहौ पीवे गुण केम ।१०। तु०
वजर पीयै ते वजर हीयौ हुवै रे, वज्र करमी कहिवाय।
वज्रलेप लेपायै ते वली रे, नाम दियौ वज्र न्याय ।११। तु०
पर नं आदर करि नै पावता रे, पापै भरियै रे पिंड।
आरंभ ते पिण लागै आपनै रे, पछइ अनरथ दड ।१२। तु०
पुन्य सयोगे नर भव पामियौ रे, श्रावक नौ कुलसार।
विसन तम्बाकू नो तुम्है वारज्यौ रे, इण मे पाप अपार ।१३।तु०
एसाभलि नै कांइक ओसरै रे, जेह हुवै भव्य जीव।
धर्मनी सीख धरौं कहै धर्मसी रे, ज्यु सुख लहौ रे सदीव ।१४।तु०

—:०:ॐ:०:—

रात्रिभोजन सज्झाय

ढाल-केसरीयों हालो हल खड़े हो

कर जौडि कामण कहे हो, कंत भणो सुखकार।
भोजन रात्रि नहीं भलो, इण माहे हो इण में दोप अपार।
पि० रात्रिभोजन परिहरौ हो,
सहु मांहे हो सहु मे ए धर्म सार।पि०।
वलि मन सु हो मन सु जोइ विचार। पि० ॥ १ ।

आहार मांहे आवता हो, जीव इता दिन ज्यान।
कीड़ी तो निरबुद्धि करै,
वलि माखी हो माखी वमन विधान। पि० ॥२।

कोढ करै कुलियातड़ो हो, जुंअ जलोदर जेह।
कांटौ फाटौ काकरौ, तिम वींधै वींधै हो तालुओ तेह।पि०॥३।
आवी वाल गलै अडै हो, साद रहै ग्रहै सोप।
जोवौ थे निस जीमता, ए तो दीसे हो दीसे
परतिख दोप । पि० ॥ ४ ।

पंच महाव्रत पालती हो, ए छठ्ठो व्रत अंन।
पालै जेह भली परै, जगि जाणो हो जांणो ते शुद्ध जैन।पि०॥५।
शिव पिण ते चौमास मे हो, जीमैं नहीं निशि जाण।
इण व्रत लाभ घणो अछै, इम अधिकै हो अधिकौ हिज
फल आण। पि० ॥ ६ ।

साभलियै शिव शासनै हो, सहु मान्या नहीं सुस।
वनमाला लखमण भणी,
इण सुसै हो दीध विदा भली हूस। पि०। ७।
सूरज आथमियै ही हो, अभख समो अनपान।
व्रत पालै मन वालि नै सुख पामै मोक्ष प्रधान। पि०। ८।
हितकारी सहु मे हुवे हो, एह भलो उपदेस।
श्रीधर्मसी कहै साभलो,
ग्रहि लेज्यो हो लेज्यो ज्युं गुरू सेस। पि०। ९।

:—:—:

औपदेशिक पद

(१)

राग—भैरवी

ज्ञान गुण चाहै तो सेवा कर गुर की,
घृत नाली जैसी जाकी गाली घुरकी।
कोउ पढो हिन्दुगी को कोऊपढो तुरकी,
इक गुरू संगकुलफ खुलै उर की। १। ज्ञा०।
जानतौ न अच्छर सो जानै वानी सुर की,
प्रगट वचनसिद्धि सिद्धि शिवपुर की। २। ज्ञा०

दिन सुध भजि तजि सुर का दुर की ।
धर हित धारि धरमसीख धुर की । ३ । ज्ञा० ।

(२)

राग—वेलाउल

सुण ग्यानी सभाल तुं अब अप्पा अप्पणा ;
निसनेही सुं नेह सों विनु त्रेंहै वपणा ।
स्वारथ को संसार है सुख जैसा सपना ,
च्यार घड़ी की चटक है ज्युं तिलका तपना । २ । सु० ।
धीरज आऊ छिन छिनै ज्युं करवत कपना ;
धरि सुबुद्धि श्रीधरमसी थिर शिव पद थपना ।३। सु० ।

(३)

राग—वलाउल

गुणग्राहक सो अधिको ज्ञानी, अवगुण ग्रहिवो सोइ अग्यानी
अवगुण गुण रहइ एकहि आश्रय,
पिण विष तजि करि अमृपान । १ । गु० ।
परनिंदा करिकैं तुं प्राणी, मल सुं मुख क्यों करे मलान ,
अपनी करणी पार उतरणी,
तुं क्युं फोगट करैय तोफान । २ । गु० ।
दूर सु डूगर वलती देखै, पग तल जलती क्यु न पिछान ,
धर्मसीख जौ इतनी धारै, तौ हुइ तेरै कोडि कल्याण । ३ । गु० ।

(४)

राग वेलाउल, अलहीयउ

मूढ मन करत है ममता केती ।
जासु तु अपणी करि जाणत, साइ चलै नहीं सेती । १ । मू० ।
माया करि करि मेलत माया, काणी करत कुवेती ।
देखत देखत आए परदल, खाइ गए सब खेती । २ । मू० ।
पल पल पवन सु उलट पलटसी, रहत न थिर ज्यु रेती ।
धर तु रिद्धि धरमवरधन की, या सुखकारक जेती । ३ । मू० ।

(५)

राग—रामकला

मेरे मन मानी साहिब सेवा ।
मीठी और न कोइ मिठाइ, मीठा और न मेवा । मे० । १ ।
आत(म) राम कली ज्यु उलसे, देखण दिनपति देवा ।
लगन हमारी यों सों लागी, रागी ज्यु गज रेवा । मे० । २ ।
दूर न करिहुं पल भर दिल तें, थिरयु सु हरी थेवा ।
श्रीधर्मसी कहै पारस परसैं, लोह कनक करि लेवा । मे० ।३ ।

(६)

राग—ललित

करहुं वश सजन मन वच काया ।
और मसकीन हो, वश की न होवत कहा,
ए महा मत गज कवज नाया । १ । क० ।

तुरग ज्युं चपल अति उरग ज्युं वक्रगति,
ठगत जिन जगत आया ठगाया ।
वचन बहु वंचन सत्य जहाँ रंच न,
कंचन कामिनी लोभ लाया । २ । क० ।
खह की गेह इण देह सुं नेह खिण,
छिन ही बदलात ज्युं बदल छाया ।
आप प्रभात प्रभात प्रगट्यो प्रगट,
उदय धर्म-शील उपदेश आया । ३ । क० ।

(७)

राग—वसंत

वह सजन मेरे मन वसंत,
उनके गुण सुनि अंग उलसंत । व० ।
तजि क्रोध विरोध हितै त्रसंत,
पर निंदाने परहा नसंत । १ । व० ।
खलता करि कोऊ कैसे खसंत,
हठता शठता तजि कहै संत । व० ।
प्रभुता अपणी नही प्रशंसत फंतु,
आफि सीयाद मेना फसंत ।२।व०।
शुभ ध्यान, विज्ञान माहे धसंत,
वाणी अमृत रस वरसत । व० ।
करि विनय विवेक काया कसत,
साचा श्रीधर्मसी उहिज संत ।३।व०।

(८)

राग—प्रभाति जाति

प्रणमीजे गुरु देव प्रभाते,
बोलें मत दिन विकथा वाते । १ । प्र० ।
मूके मत त्युं पच पच मिथ्याते,
समकित धर गुण पंच संघाते । २ । प्र० ।
दिल शुद्ध धरि धर्म-शील दयाते,
सहु विध थाय सदा सुख साते । ३ । प्र० ।

(६)

राग जैतश्री

सब मे अधिकी रे याकी जैतसिरि,
काहू और न होड करि । १ । स० ।
आठौ अंग योग की ओटैं
उद्धते मार्यो मोह अरी । स० ।
अंतर वहि तपतेज आरोवे,
जोर मदन की फौज जरी । २ । स० ।
ज्ञानी हनी ज्ञान गुरजा सुं,
ममता पुरजा होइ परी । स० ।
अनुभौ बलसुं भव दल भागे,
फाल फते करि फौज फिरी । ३ । स० ।
श्री धर्मसी आतम नृप दाता,
देत सदाना मुक्तिपुरी । ४ । स० ।

(१०)

राग—आशा

आतम तेरा अजब तमासा ।
खलक सुं खेल बणावै खोटा,
खिण तोला पुनि खिण में मासा ।१।आ०।
परणी अपनी तजि प्यारी,
और सुं अधिकी आसा ।
पद्मनी छोर संखनी परचैं,
एक तो दुःख अरु दूजा हासा ।२।आ०।
दीपक वुझाइ अंधेरे दौडैं,
फंद विचे पग फासा । आ० ।
परख्या धर्म-शील सुं पावै,
अविचल सुख लील विलासा ।३।आ०।

(११)

राग—आसा

कबहु मे धर्म को ध्यान न कीनो ।
आर्त रौद्र विचार अहोनिश,
दुर्गति वर करिवे थर दीनो । क० । १ ।
दीप ज्युं और न पथ वतायो,
आप ही लागि रह्यो तमसीनो ।
मेरे तन धन कहि सुख मान्यो,
मणि परखे पिण अतर मीनो । क० । २ ।

परमारथ पथ नाहि पिछान्यो,
स्वार्थ अपनो मानी सगीनो।
सुगरु कहे धर्मसीख न धारी,
निष्फल गयो नर जन्म नगीनो। क०। ३।

(१२)

राग—तोडी

तु करे गर्व सो सर्व व्यथारी।
स्थिर न रहे सुर-नर विद्याधर,
ता पर तेरी कौन कथारी। तु०। १।
कोरिक जोरि दाम किये इक ते,
जाकैं पास विदाम न थारी।
उठि चल्यो जब आप अचानक,
परिय रही सब धरिय पथारी। तु०। २
संपद आपद दुहु सोकनि के,
फिकरी होइ फंद मे फथारी।
सुधर्म शील धरें सोउ सुखिया,
सुखिया राचत सुक्ति मथारी। तु०। १३।

(१३)

राग—मारू

वारू वारू हो करणी वारू हो।
पामै सुख दुख प्राणीयो, सहु करणी सारू हो। क०। १।

एका रै धन मिलै, मोटा थल मारू हो।
एक एकही टंक नै, अन्न आणे उधारू हो। क०। २।
मोटा माणस इक मुदै, एक काजर कारू हो।
के नीरोगी काय के, नित रीवै नारू हो। क०। ३।
दौलति लहीये दान, सील सद्गति सारू हो।
जागे तख की जाम की, उड जायै दारू हो। क०। ४।
भावना मन शुद्ध भावियै, सहु वात सुधारू हो।
धन धर्म-सील जिके धरै, ते भव जल तारू हो। क०। ५।

(१४)

राग—नट्ट

नट बाजी री नट बाजी, संसार सबही नट बाजी।
अपने स्वार्थ कितने उजरत, रस लुब्धो देखन राजी। स०। १।
छिकरी ककरी के करत रुपयैं, वह कूदत काठ को बाजी।
पख ते तुरत ही करत परेवा, सबही कहत हाजी हाजी। स०।२।
ज्ञानी कहै क्या देखे गमारा, सबही भगल विद्या साजी।
मगन भयो धर्मसीख न मानत,
जो मन राजी तो क्या करे काजी। स०। ३।

(१५)

राग—वेडागडो

ठग ज्यु इहु घरियाल ठगे।
घरि घरि जातु है रहट घरी ज्यु, लेखे न कोइ लगैं।१। ठग ज्यु०।

इण खिण पिण न मिले आउखो, मोल दये मुंह मगे।
खैरु होत है औसौं खजीनो, जीवन तौहि जगे। २। ठग०।
ठग काल सुं जोर नहीं काहुको, देत ही सबहिं दगै।
धर्मसीख कहै इक ध्यान धर्म को, भय सब दूर भगे। ३। ठग०।

(१६)

राग केदारौ

कलि मे काहु को नहीं कोइ।
तामे मूरख अधिक तृसना, तजै नाही तोइ। १। कलि०।
काहू सो उपगार करिवो, सार जग मे सोइ।
जीव रे तुं चेत जोलुं, दैखवै की दोइ। २। कलि०।
काल दुस्मन लग्यो केरै, जागि के तुं जोइ।
धर्मसी इक धर्म सबकु, हित हित को होइ। ३। कलि०।

(१७)

राग—गौडो

जीव तुं करि रे कछु शुभ करणी।
और जजाल आल तजि जो तुं,मुक्ति गौरी चाहे परणी।१।जी०।
मात तात सुत भ्रात सकल तजि, तज दूरे घरणी।
जास सग पापाग्नि प्रकटत, आक अनै ज्यु अरणी। २। जी०।
जौ लु स्वार्थ तौलुं सगपण, नहीं तर आवत लरणि।
ऐसो जाणी पाप गज भजण, धर्म सिंह धरौ सरणी। ३। जी०।

(१८)

राग—गौडी

कछु कही जात नहीं गति मन की ।
पल पल होत नई नइ परणति, घटना सध्या घनकी । क० । १ ।
अगम अथग मग तु अवगाहत, पवन के धज प्रवहण की ।
विधि विधि वध कितेही वाधत, ज्यु खलता खल जनकी ।क०।२।
कबहु विकसत फुनि कमलावत, उपमा है उपवन की ।
कहे धर्मसीह इन्हे वश कीन्हे, तिसना नहीं तन धन की ।क०।३।

(१९)

राग—सामेरी

दुनियां मा कलयुग की गति देखो ।
किह पाई काई अधिकाई, उणको करेय अदेखो । १ । दु० ।
अनुचित ठौरें खरच अलेखैं, लेत सुकृत में लेखो ।
माननि कह्यो साच करि मान्हो, घर पित मात सु धेखो ।२।दु।
करि वहु प्यार पढाइ कियो है, सुविज्ञानी सुविसेषो ।
कहे धर्मसीह करे ताही सु, पीछी फेरि परेखो । ३ । दु ।

(२०)

राग—सामेरो

मन मृग तु तन वन से मातो ।
केलि करे चरै इच्छाचारी, जाणें नही दिन जातो । मन । १ ।
माया रूप महा मृग त्रिसना, तिण में धावे तातो ।
आखर पूरी होत न इच्छा, तो भी नहीं पछतातो । मन । २ ।

कामणी कपट महा कुडि मंडी, खबरि करे फाल खातो ।
कहे धर्मसीह उलंगीसि वाको, तेरी सफल कला तो । मन । ३ ।

(२१)

राग—कल्याण

हु तेरी चेरी भई, तु न धरे हेत रे ।
एक पखी प्रीति कौसौ, आइ वण्यो चेतरे । १ । हु. ।
दूर छोड जाइ कै, सदेसहु न देत रे ।
लोक लाज काजहुं न, मेरी सुधि लेत रे । हुं । २ ।
तु ठौर ठौर करै और सु सकेत रे ।
रंग बिना सग करै, तामे परो रेत रे । हुं । ३ ।
तोही सु सचेत मे तौं, तो विन अचेत रे ।
मेरो धर्मसील रहै, तोही सु समेत रे । हु० । ४ ।

(२२)

राग—जयवती

काया माया वादल की छाया सी कहातु है ।
मेरो वैन मान यार, कहत हुं वार वार ।
हित ही की वात चेत, कहा न गहात है । का० । १ ।
नीकै दिल दान देहु, लोकनि मे सोभ लेहु ।
सुंव की विसात भैया, मोहे न सुहात है । का० । २ ।
खाना सुलताना, राउ राना ही कहाना सब ।
वातनका वात जग कोऊ न रहात है ।

ऐसो कहै धर्मसिंह, धर्म की गहो लीह।
काया माया वादर की छाया सी कहात है। का० । ३ ।

(२३)

राग—सौरठा

रे सुणि प्राणिया, लही गरथ अरथ अनेक, म करे गर्व रे।
वहि जाइ, एकैंजहि प्रवाहै, सवल निवला सर्व रे । सु० । १ ।
चंद सूर ही राहु चिगल्या, प्रगट जोइ तु पर्व रे ।
नर असुर सुर सहु काल नाख्या, चवीणा ज्यु चर्व रे । सु० ।२।
मूढ धी पुदगल पिंड मेलें, अरथ अर्व ने खरवरे ।
सुज्ञान सु धर्मशील सुखियो, देखि आत्तम दर्व रे । सु० । ३ ।

(२४)

राग—काफी

मानोवैंण मेरा, यारो मानो वयणा मेरा ।
सैंन तु मोह निद्रा मत सोवे, है तेरे दुस्मन हेरा । यारो ।।१।।
मोह वशे तु इण भव माहे, फोगट देत है फेरा ।
यार विचार करो दिल अंतर, तु कुण कौन है तेरा । यारो।।२।।
कीजैं पर उपगार कछु इक, लीजैं लाह भलेरा ।
धर्म हितु इक कहै धर्मसी और न कछु अनेरा । या० ।।३।।

(२५)

राग—धन्याश्री (कवहु मैं नीके नाथ न ध्यायो)

किण विध थिर कीजे इण मनकु ।
वचन करू वशि मौन ग्रहैते, त्योथिर आसन तनकु । किन ।१।।

मन उद्धत इन्द्रिय सु मिलकै, धूरि करै तप धनकुं।
यह चचल शुभ क्रिया उड़ावै, ज्युं वायु मिली घनकु ।कि०॥२॥
मन जीते विन सवही निःफल तुस वोए तजि कनकु ।
मन थिर कुं धर्म सीख वतावइ,
सुगरु कहै शिष्यजनकु । कि० ॥३॥

(२६)

राग—धन्याश्री (आयो २ री समरता दादो आयो)

कीजइ कीजै री, मन की शुद्धि इण विध कीजै ।
आलस तजि भजि समतारसकु, विपयारस विरमीजैरी ।म०॥१॥
राग नै द्वेप दुहुं खल कैं वल, मन कसमल मल भीजे
दे उपदेश दुहुं दुस्मन को, ताथइ संग तजीजैरी । म० ॥ २ ॥
शुद्धातम कइ ध्यान समाधि हि, परम सुधारस पीजे ।
श्रीधर्मसी कहै थिर चित कारण,
कारिज अलख लखीजै री । म० ॥३॥

(२७)

धन्याश्री

धर मन धर्म को ध्यान सदाइ ।
नरम हृदय करि नरम विषय मे, करम करम दुखदाइ ।ध० ॥१॥
धरम थी गरम क्रोध के घर मे, पर मत परम ते लाइ ।
परमातम सुधि परमपुरप भजि, हर म तुं हरम पराइ । ध०॥२॥
चरम की दृष्टि विचर मत जीउरा, भरम रे मत भाइ ।
सरम वधारण सरम को कारण, धरमज धरमसी ध्याइ ।ध०॥३॥

प्रस्ताविक विविध संग्रह

सरस्वती स्तुति

अगम आगम अरथ उतारै उर सती,
वयण अमृत तिके रयण ज्यु वरसती।
हुअइ हाजर सदा हेतु आ हरसती,
सेविजै देवि जैं सरसती सरसती ॥ १ ॥
विद्या दे सेवका विनौ वाधारती,
अडवड्या साकडी वार आधारती।
इंद नरिंद जसु उतारे आरती
भणा तुझ नै नमो भारती भारती॥ २ ॥
वेलि विद्या तणी वधारण वारदा,
हुआ प्रसन्न सहु पामिजे शारदा।
प्रसिद्ध सकल कला नीरनिधि पारदा,
शुद्ध चित्त सेव नित सारदा सारदा ॥ ३ ॥
अधिक धर ध्यान नर अगर उखेवता,
व्यास वाल्मीक कालीदास गुण वेवता।
सुबुद्धि श्री धर्मसी महाकवि सेवता,
दीयह सहु सिद्धि श्रुतदेवता देवता ॥ ४ ॥

परमेश्वर

महि सबला निबलां करें संभाला, बलि नहि ईस विसरण वाला।
जीव पडें मत बहु जंजाला, प्रभु साचा सहुचा प्रतिपाला ॥१॥

मेगल लहै मलीदा मण मण, कीडी उदर भरैं ताइ कण कण।
जितरौ वरौ जियेरैं जण जण, पूरैं तितो ईस आपण पण ॥२॥
चूण दियें सहु नें विधि चंगी, हसती गज रंज हीनंगी।
अति अदोह धरें मत अंगी, साहिब आस पूरै सरवगी ॥ ३ ॥
ध्रविजै सदा चूरमे धिधंगर, चीटी चख इक चूंण लहै चर।
धर्मसींह मन चित मता धर, पूरण आस सहु परमेसर ॥ ४ ॥

सूर्य स्तुति

हुदें लोक जिण रें उदै,
मुदै सहु काम ह्वै पूजनीका सिरे देव पूजौ।
साचरी वात सहु साभलौ सेवका,
देव को सूर सम नहीं दूजौ ॥ १ ॥
सहस किरणा धरै हरै अंधकार सही,
नमैं ग्रहसमै तिया कष्ट नावै।
प्रगट परताप परता घणा पूरतौ,
अवर कुण अमर रवि गमर आवै ॥ २ ॥
पडि रहै रात रा पखिया पथिया,
हुवै दरसण स कौ राह हींडें।
सोभ चढे सुरा सुरा असुरा शिहर,
मिहर री मिहर सुर कवण मीढ़ें ॥ ३ ॥
तपे जग ऊपरा जपै सहु को तरणि,
सुभा अशुभा करम धरस साखी।
रूड़ा ग्रह हुवइ सहु रूडैं ग्रह राजवी,
रूडा रजवट प्रगट रीति राखी ॥ ४ ॥

धमाल (वसत वर्णन)

ढाल-फागनी

सकल सजन सैली मिली हो, खेलण समकित ख्याल ।
ज्ञान सुगुन गावै गुनी हो, खिमारस सरस खुस्याल ॥१॥
खेलो सत हसत वसंत मे हो,
अहो मेरे सजना राग सु फागरमत । खे० ॥२॥
जिनशासन वन माहे मौरी विविध क्रिया वनराय ।
कुशल कुसम विकसित भये हो, सुजस सुगंध सुहाय । खे० ॥३॥
कुहकी शुभमति कोकिला हो, सुगुरु वचन सहकार ।
भइ मालति शुभ भावना हो, मुनिवर मधुकर सार । खे० ॥४॥
प्रवचन वचन पिचरका वाहै, यार सु प्यार लगाइ ।
शुभ सुण लाल गुलाल की हो, झोरी भरी अतिहि झुकाइ ॥५॥
वर महिमा मादल वजे हो, चतुराइ मुख चग ।
दया वाणी डफ वाजती हो शोभा तत्व ताल संग । खे० ॥६॥
राग सहित जिनराज आलापै, दौलति सु निसदीह ।
सव दिन विजयहर्ष सुख साता, धमाल कहै धर्मसीह ॥७॥

उपदेश

अव तौ सव सौ वरसा लगि आउसु,
तामे तो आध गयौ निसि सूता ।
चौस गयाँ रस रामति रौंस,
खट गृह धध कै धुंस मे खूता ॥

केस भए सब सेत तु चेत रे,
देख दिखाउ दियो जमदूता।
जातैं सधैं अपनौ कछु स्वारथ,
सो ध्रमसील धरौ रे सपूता ॥१॥

दीपक—छप्पय

अलग टलै अंधार, सार मारग वलि सूझै ।
जीव जंतु जोइ नें, सरव विवहार समूझइ ॥
मन संशा सहु मिटै, वलि पुस्तक वाचीजै ।
दिल सुद्ध गुरुदेव नैं, रूप दरसण राचीजै ॥
वलि लाछि आइ वासौ वसइ, सुख पावै सहु सेवता ।
सहु लोक माहि दीसै सही, दीवौ परतिख देवता ॥ १ ॥

पर उपकार—घरा कटु सारगोर

दुनी दाम खाटै केता केइ दाटे दरब,
नाट नाटे घणा साट माटै ।
बाट पाडै तिकौ काल वाटै वहै,
खट्यो सो पर कजू विरुद खाटै ॥ १ ॥
कीया चढि चोट गढ कोट कबजै किया,
वहस छल बल प्रबल किया बीया ।
हालिया किता ने किता वलि हालसी,
जिया गुण किया तियां धन जीया ॥ २ ॥
हुकम सुं हल चला उथल पथला हला,
करौ अकला गलां वात काइ ।
चहल वहला चलें चट्टक-दिन च्यार री,
भला री भला एक रहसी भलाइ ॥ ३ ॥
भार कोठार भडार लोभै भर्या,
वार सहु सारखी कठैं वहसी ।

साच कर धार 'धर्मसी' संसार में,
रिधू जग सार उपगार रहसी ॥ ४ ॥

मेह (वर्षा)

सबल मेंगल वादल तणा सज करि,
गुहिर असमाण नीसाण गाजैं ।
जंग जोरैं करण काल रिपु जीपवा,
आज कटकी करी इंद राजैं ॥ १ ॥
तीख करवाल विकराल वीजलि तणी,
घोर माती घटा घर र घालै ।
छोडि वासा घणी सोक छाटा तणी,
चटक माहे मिल्यौ कटक चालै ।
तडा तड़ि तोव करि गयण तडकै तड़ित,
महाझड़ झड़ि करि झूझ मंड्यौ ।
कडा किडि कोध करि काल कटका कीयौ,
खिणकरैं बल खल सबल खंड्यौ ॥ ३ ॥
सरस वांना सगल कीध सजल थल,
प्रगट पुहवी निपट प्रेम प्रघला ।
लहकती लाछि वलि लील लोको लही,
सुध मन करैं धर्म-शील सगला ॥ ४ ॥

मेह (वर्षा) गीत

मंहि झड़ घमड कर ईस ब्रह्मण्डरा तुझ घर मांहि किण बात त्रोटा।

सार इतरी गरज परज री अरज सुणि,
मेह करि मेह करि धणी मोटा।
खेत कुम्हाइजै रेत उडै खरी, हेति हिन्दूआ गया चेत हारे।
वैंत एहै धरो नितरी वीनती, ध्रवौ करतार जलधार धारे ॥२॥

घणैं धन होइ धन धान धीणा घणा,
पाल्हवै भार अड्ढार प्राझा।
दरद मन रा मिटै मिटै जगरा दलिद,
जलद वरसाड जगदीस झाझा ॥३॥

सफल करि आस अरदास धर्मदास री,
तुरत तिण दीस जगदीस तूठा।
हुआ उमाह उछाह सगला हुसी,
वाह हो वाह जलवाह वूठा ॥४॥

मेह (वर्षा) अमृतध्वनि

जल थल महियल करि जलद, सहु जग होइ सुभक्ख।
इक घण तो अण आवतैं, दिखै खलक सु दुख ॥ १ ॥
दिखै खलक सु दुख खिजि खिजि,
सुख खिण नहीं दुख खिण खिण भुख।
खल हल करव खड्डिय, चख खड विण पख खय पशु।
कु ख खु ह वसि तुख खुटि खुटि, लुख खजि कजि।
लख खिजमति अखै खलक अरज्ज ॥१॥ जल थल महियल०

दोहा

जग सगलैं जगदीसरी, पूरण कृपा प्रसिद्ध।
घण वरख्या हरख्या घणू, सिद्ध धरि सहु रिद्ध ॥ १ ॥

चालि

सिद्धे ध्वरि सहु सिद्धि, धन धन किद्ध, ध्वरणिय वृद्धि ध्वन्नह।
खुद्ध ध्वम, गय लद्ध धीरज, ध्वद्धु वि पुणि दद्धि ध्विप्पिय।
रिद्धि ध्वण भर वद्ध ध्वामह दिद्ध ध्वन रिण,
वुद्धि धर्मसी शुद्ध ध्वरि हित सज्ज ॥ २ ॥ जग सगलैं जग०

—:०—:

सीत उष्ण वर्षा काल वर्णन

ठड सवली पडैं हाथ पग ठाठरैं,
वायरौ उपरा सवल वाजै।
माल साहिव तिकै मौज माणे मही,
भूखियइ लोक रा हाड भाजै ॥ १ ॥
किड-किडैं दात री पात सीसी करै,
धूम मुख ऊखमा तणा धखिया।
दुख सुं गरब सौ जाणि गुजें दरक,
दरब हीणा सवै लौक दुखिया ॥ २ ॥
सौडि विचि सूइजे तापिजें सिगडिए,
सवल सी माहि पिण सद्रव सोरा।
एतिण वार में पाण ती ओजगी,
दोजगी भरै निसदिस दोरा ॥ ३ ॥
झाड उन्हाल री झाड ह्वै झाखरा,
जल तजे पालि पाताल जावैं।
साधन वैठा पियै मालिए सरवता,
निधन नइ पिण नीर हाथ नावैं ॥ ४ ॥

किनौ सीतकाळ उन्हाल सगनौं गर्मा,
क्रुदो सुख दुख तणां देव ग्रार्थ।
आवियै जेण संसार रो इ इणौं,
मुदौ नाथ बात रो भेद मार्थ ॥ ५ ॥
धुरा जलधर ध्रूवै धान धीणै धना,
सरस मान नरग नवो सरिखा।
फसल फल फूल री हुंस सगले फलै,
वडी ऋतु सह रित माहि वरिषा ॥ ६ ॥

दु: काल वर्णन

मन में धरता मरट घरट जिम भूगे भूमै,
मेले घर गया मरू भटकि मूआ पर भूमैं।
वेटा नै मा बाप वेचि द्यै जीमण वेड,
रूलतां रिगता रांक करै वेललाटा केड ॥ १ ॥
कोइ काल महा दुस्मण कहा, आख्या देस उजाड़ीया।
ए देव वरस इकावनैं, पडतै वहु नर पाडिया ॥ १ ॥
पण धरि घण पोखता निहोरे कण पिण नापै,
कवल एक कारणैं वहस हुवै वेटा वापै।
हीओ माइ हारि नै छोरूआ ऊभा छोडै,
ऊचैं कुला आदसी आइ नीचा घर जोडै।
गति मत्ति उगति भूलै गइ, गिणै न को आभौ गिनो,
कोई आप पाप प्रगट्यो प्रबल एवो वरस इकावनो ॥२॥
दुनियां दीधौ दुख वरस इण इकावनै,
पहुती जाय पुकार इन्द्र सांभलि विण अन्ने।

आप कहायौ इन्द धीरज मन माहे धरिजो,
वहु वरषा वावनो करिस सखरौ धर्म करिज्यो ।
धन धान घमंड धीणा घणा, परजा वहु सुख पावसी ।
सहु थोक भला होसी सरस, उमगि वावनो आवसी ॥ ३ ॥
इकावन्ने आइ दुनी दुरभख डुलाइ,
काल्यौ सौ कूटि नै भीर वावनै भाइ ।
वावना वाहिरौ त्रिपट पड़ीयौ तेपन्नो,
दातारे तजि ददौ, निपट करि भाल्यो नन्नो ।
काढिस्याँ सोइ जिम तिम करै, मत चिंता आणइ मनइ
सत भालि काल्हि सखरइ सुभिख, चहचंद होसी चोपनैं ॥४॥

कुस्त्री-सुस्त्री वर्णन

सुकलीणी सुन्दरी मीठ बोली मतिवती,
चित चोखे अति चतुर जीह जीकार जपती ।
दातारणि दीपती पुन्य करती परूकासू,
हस्तमुखी चित्त हरणी, सेवि संतोपे सासू ॥१॥
सुकलीण शील राखै सुजस, गहै लाज निज गेहनी ।
धरमसी जेण कीधो धरम, तिण गुणवत पामी गेहिनी ॥ २ ॥
गुण हीणी गोमरी वडक बोली वहु रंगी,
चचल गति चोरती अधिक कुलटा ऊधंगी ।
सत विहुणी सुंवनी दूत जिती दुरभासू,
करणी घर से कलह, मूकती जायै सासू ।
नाहरी नारी गूंजें निपट, धूजे नित घर रो धणी ।
धरमसी जेण न कियौ धरम, पामी इण परि पापणी ॥२॥

पुण्य पाप फल कथन

गीत सप्सरी ।

सफै साली चित्रसाली ढाली पौढ़ें के सुहाली सेज,
खंटाली कूटी में एक उखराली खाट ।
दिखाली विना ही भाली सुखाली दुखाली दसा,
नेह पाप पुण्य वाली विचाली निराट ॥१॥
सोना थाली माहे के आरोगैं साली दाली,
सुखी वीया के हथाली, जिमैं पीयैं वूक ।
एकां लील लाली लाली पाली, धंधाली जंजाली एक,
सड़ाली अढालीवार कमाइ सलूक ॥२॥
एका उन्न वाली छाली दूझाली न दीखें एकां,
थूंभाली झमाली हेकां दूझैं काली थाट ।
सदारा सुगाली एक दुकाली किताक दीसैं,
वंसाली कमाइ चाली वाली जायैं वाट ॥३॥
सम्भाली ल्यैं वडां सोह, सुचाली कलत्त सुत्त,
क्या करै ककाली नाली अनाली कपूत ।
वाणी फे रसाली वदैं गिरसाली एकां वात,
कली कालि उजवालि आपरी करतूत ॥४॥
दाड़ाली वाडाली वंधै रंढ़ाली करतां दौड़,
मानैं नहीं सच्छराली, सम्झाली सरम्म ।
उड़ाली उलाली जगि, ताली दियैं जायैं आउ.
धारौ हितवाली वात, संभाली धरम्म ॥५॥

—:o:—

प्रभात आसीस—छप्पय ।

आलस ऊंघ अज्ञान, तमस तस्कर पिण त्रसीया ।
श्रावक साधु सुपात्र, वले धर्म करणी वसीया ॥
पडिकमणा पचखाण, गुणे गुरुदेवा गावै ।
सुणीजै झालर संख, सुकवि आसीस सुणावै ॥
भलैं भाव कमल विकसै भविक, महिमा जिन धर्म री मुदै ।
सु प्रताप सयल मंगल सदा, अरक ज्योति धर्मसी उदै ॥१॥

जव ऊगे जग चक्ख तिमिर जिण वेला त्रासै ।
प्रगट हसै जव पद्म, इला जव होइ उजासैं ॥
चिडीया जव चहचहै, वहै मारग जिण वेला ।
धरम सील सहु धरै, मिलै जव चकवी मेला ॥
घुम घुमै माट गोरस घणा, पूरण वंछित पाईयै ।
जिनदत्तसूरि जिनकुशल रा, गुण उण वेला गाईयै ॥२॥

सध्या आसीस—छप्पय

सध्या वदन साध, सज्ज सावधान स कोइ ।
विवेकी श्रावग सजै, पडिकमणा सोई ॥
चौवीहार दुविहार ग्रहै, व्रत करि निज गरहा ।
सारै दिन संचीया, पाप नासै सहु परहा ॥
धर्म ध्यान साधु श्रावक धरै, धोरी धर्मरथ ना धुरी ।
सुखकरण सघ धर्मसी सदा, सकतिरूप संध्या सुरी ॥१॥

धुरि देवल धर्मसालि, पंच सद सुणिजै प्राझा ।
झालर रा झणकार, देवगृह दीपक झाझा ॥

पशु पथी पंखिया, आपणी ठामै आवै ।
आरंभ किया अलग्ग, सको थिर चित्त सुख पावै ॥
आकास चंद तारा उदै, दिन चिंता अलगी दुरी ।
सुखकरण संघ धर्मसी सदा, सकति रूप संध्या सुरी ॥२॥

—:※:०:※:—

सर्व सघ आशीर्वाद

परव अवसर सदा दरब खरचैं प्रबल,
गरब न करैं करइ सरब उपगार ।
धरवि जलधार जिम दान वरसै धरा,
जगतपति संघ रौ करौ जयकार ॥ १ ॥
सूध मन सेव गुरू देव री साचवैं,
सखर समझै अरथ सूत्र सिद्धंत ।
दियैं वहु दान मन शुद्ध पालइ दया,
भलौ नित संघ रौ करौ भगवंत ॥ २ ॥
राय - साधार वदिछोडि मोटा विरुद,
साह पतिसाह सम मौज महिराण ।
संघ सुप्रसन्न हुआ सवे निध संपजै,
करौ प्रभु संघ रौ सदा कलियाण ॥ ३ ॥
वरण अढार ने जिके दिये वरा,
खरा द्रव्य खरचि नै करैं धर्म काज ।
कहै धर्मसीह सुकवि लोक सहि को कहैं,
महाजन तणौ उदो करै महाराज ॥ ४ ॥

—※—

ढुंढिया रो कवित—छप्पय

आया नै उपदेस, प्रथम प्रतिमा मत पूजौ ।
वादौ मत अम्ह विना, दरसणी यति को दूजो ।
दीजै नहीं वलि दान, भवे बीजे भोगवणा ।
आगम केइ उथपै, लोह सुं जड़ीया लवणा ।
सीख द्यौ लाख न हुवैं समा, खोटी जड रा खुढीया ।
पारकी निंद करता प्रगट, धरमी किहा थी ढुंढिया ॥ १ ॥

(२)

अधिक आदि अनादि री मातवटि उथपै,
देवपूजा तणा सुस दीधा ।
देखि अन्याय आचार अंदेस मैं,
काल नैं चाल जगदीस कीधा ॥ १ ॥
प्यास मरता पसू पखिया पथिया,
पाप ह्वै पावज्यो मता पाणी ।
भरमिया भल भला लोक एहे भरम,
धरम कियौ तिणैं धूल धाणी ॥ २ ॥
गिणइ नहीं शास्त्र वलि मूलगा देवगुरू,
लाज विण लोक इण कुमति लागै ।
ऊधली रीति ऊधा तिके ऊठीया,
ऊठिसी ई ए उतपात आगैं ॥ ३ ॥
मेलि परवान मान महाराज कीधा मन्है,
लोपीयो हुकम करतूत लहसी ।
हुइ सहुको कहै हाकमैं हाकमी,
रैत वर वैत दुष्ट दूर रहसी ॥ ४ ॥

—॥—

माकण (जवा) छप्पय

आवैं केइ अथग्गरा, हलवें हलवे हेर।
माकण माडें मामला, मेवासें रा मेर।
मेवासें रा मेर, भरे कोचर मे, भाभा।
रतिवाहा चै राज, प्राछ करि जायइ प्राभा।
छलबल करि छेतरैं, चूसैं लोही चटकावैं।
चावा चिहु दिसि चोर, नींद कहो किहाथी आवै ॥१॥आवैं०

सवैयो

खाट में पाट मे हाट मे त्राट में आसन वासन थिर थानें।
आवत जावत भी चटकावत, नावत हाथ छिपै कहुं छानै।
रैंन मे नैंन मे नींद परै नही, द्यौंस ही रूंस भरैं दुख दानें।
गउ न राक न को गिनै हाकन, माकण काहु की साक न मानै।

—o—

धरती री धणियाप किसी

भोगवि किते भू किता भोगवसी, माहरी माहरी करइ मरैं।
ऐंठी तजि पातला उपरि, कुवर मिलि मिलि कलह करैं ॥१॥
धपटी धरणी केतेइ धुंसी, धरि अपणाइत केइ ध्रूवै।
धोवा तणी शिला परि धोबी, हुं पति हुं पति करै हुवै ॥२॥
इण इल किया किता पति आगैं, परतिख किता किता परपूठ।
वसूधा प्रगट दीसती वेश्या, झूझै भूप भुजग सु झूठ ॥३॥
पातल सिला, वेश्या, पृथ्वी, इण च्यारा री रीति इसी।
ममता करै मरै सो मूरख, कहै धर्मसी धणियाप किसी ॥४॥

—:※:—

छप्पय

रावण करता राज, लीक लका तै लागी ।
जीवतें किसन जी, द्वारिका नगरी दागी ॥
चावा रवि चंद नइ, राह आवी नै रोके ।
पाडव कौरव प्रसिद्ध, सहु पडिया दुख शोकै ॥
सकजो न कोइ मो सारिखौ, वहु मुरख गर्वे वके।
धर्मसीख धारि धोखो म धर, जीती कुण जाइ सकै ॥१॥

छप्पय

गुर थी लहियै ज्ञान, शास्त्र सहु तत्त सिखावइ ।
वलि सगली ही वस्तु दोष निरदोप दिखावैं ।
चूल्हा रौ जे चंद कर, तिण काज कला धर ।
गुरू सेवा कर गिण्या, नहीं उसरावण को नर ।
वलि अलग टालि छठ्ठउ वर्ग, अधर होठ अलगा रहै ।
त्यु रहै अलग निंदा तठै, कवित सीख साची कहै ॥ २ ॥

"शोभनीय वस्तु"—छप्पय

नरपति शोभा नीति, विनय गुणिजन त्रिय लज्जा ।
दपति दिल संतोष, शोभ गृह पुत्र सकज्जा ।
वचने शोभा साच, वुद्धि शोभा कविताइ ।
वपु शोभा विज्ञान, शान्ति द्विज शोभ वताइ ।
सकज की शोभ अधिकी क्ष्मा, शोभ मित्र राखैं शरम ।
गृहवास शोभ संपति सुधन,
सवहि शोभ निज निज धरम ॥ २ ॥

राजनीति—छप्पय कवित्त

सकले गुणे सकज्ज, पाच दस परिखा पुहतौ।
आण्यौ म्हे इतवार, मन शुद्ध थाप्यौ मुहतौ।
सहु आगै कहै मांन, वान इम अधिक वधारे।
तिणरौ वाधैं तोल, सही सहु काम सुधारे।
प्रभु काज साधि पोतैं पछै, काज प्रजा रा पिण करैं।
परसिद्ध भली परधानरी, राज काज सगला सरैं॥ १ ॥
पुखतौ गुणे प्रधान, कदे नहीं मन में कावल।
पिण काइ पर कृति, साम नहीं मन में सावल।
कहै म्हेइज सहु करा, मंत्रि रो कह्यौ न माना।
म्हा थी बीजी ठाम, छेतरावौ मत छाना।
सहु नै इकात इम सीखवैं, अदेखाइ आणै इसी।
अधिकार तणो जिहा नहीं अमल,
कहौ तिणमें बरकत किसी॥ १ ॥

—:❀:—

वरसी दान

त्रणसै कोडि अठ्यासी कोडि,
असी लाख उपर वलि जोडि।
इतरा सौनइया नौ मान. दे सहु अरिहत वरसीदान॥ १ ॥

छप्पय छत्तीस विधान रो

गुरु गुरु[1] दिनमणि[2] हंस,[3] मेघ[4] मंदर[5] मुगता गण[6]।
मति[1] दुति[2] गति[3] अति सोह, वाणि[4] मणि[5] गुण[6] जाके तण॥

सुरेग[1] पुव्व[2] सर राज[3], गयण[4] धर[5] धुरि वारिध[6] थिति ।
वासव[1] ग्रह[2] अति चतुर,[3] जगत[4] सुर[5] पारिख[6] सेवित ॥
उच्चह[1] प्रभात[2] पंकति[3] सहित, गरजित[4] निरमल[5] ग्रथित[6] गुण ।
वहु[1] ज्ञान तेज[2] केली[3] वरिस,[4] धीर[5] पवित्र[6] ध्रमसीह भण ॥१॥

एक्कक्खर उत्तरा

वंदे नहीं क्यु देव गुरु, विकै न वस्तु विवेक ।
छोडैं अैठों अन्न क्यु, उत्तर त्रिहुं रो एक ॥१॥ भाव नहीं ।
दूधै केम स्वाद नहीं, दीधै किम फिर दिद्ध ।
दाडिम कण ज्यो पोस्तकण, जुदा नहीं किण विद्ध ॥२॥ थर नहीं
हाथी जनमि किसौं न ह्वै, वैद दियै किम पत्थ ।
नर आदर किम ना लहै, उत्तर त्रिहुं इक अत्थ ॥३॥ जर नहीं
देशै नीपति क्यु नहीं, क्यु न घडै लोहार ।
किम वसता मुहंगी विकै, उत्तर एक प्रकार ॥४॥ वण नहीं

होयालिये

(१)

कुण नारी रे कुण नारी रे, पंडित कहौ अरथ विचारी रे ।
चतुराइ बुद्धि तुम्हारी रे, सहु कोइ वखाणै सारी रे ।कुण०॥१॥
मन मोहन सुन्दरि माती रे, रहै पच भरतारे राती रे ।
सखरी पहिरै ते साड़ी रे, तौ पिण सहु अंगै उघाड़ी रे ।कु०॥२॥
आइ वैसे मुजरैं ऊंची रे, तिण घरि नहीं ताला कुंची रे ।
दिन उगै घाहडी उठी रे, पल मैं जइ वैसे पूठी रे ॥कुण० ॥३॥

चूढी पिण वाली भोली रे, तनु केसर चंदन खोली रे।
कहै धर्मसी एह हियाली रे, मति करज्यो वात विचाली रे।
॥कु० ॥४॥
(थापना)

(२)

ढाल—गाठलदे सेत्रुजे हालो

कहौ पंडित ए हीयाली, मत करिज्यो वात विचाली रे ।कहो०।१
निरखी नैं सुन्दर नारी, धरमी आदर करि धारी रे ।कहो०।२॥
नव नव विधि कूदैं नाचै, पिण सहु वखाणै साचै रे ।कहो०।३।
करैं घुघट पिण तिण च्यारैं,
सकुचैं पिण नहीं किणहीक वारैं रे ।कहो॥४॥
फिरती रहै सहु अंग माथै, हिरदै ने बैसे हाथै रे ।कहो० ॥५॥
बोलता आड़ी आवै, पिण तेहनो भेद न पावै रे ।कहो० ॥६॥
निंदै ते भारी करमी, धर्मसी कहै धरस्यै धरमी रे ।कहो०।७॥
(मुहपत्ती)

(३)

ढाल-चतुर बिहारी रे आतम एहनी।

अरथ कहो तुम वहिलौ एहनौ, सखर हीयाली रे सार।
चतुर नर एक पुरष जग माहे परगड़ो, सहु जाणै संसार चतु०।१
पग विहुणो पिण परदेसे भमै, आवै तुरतउ जाय।
वैठो रहै अपणे घरि वापड़ो, तौ पिण चपल कहाय। च०अ०॥२
कोइक तो तेहनै राजा कहै, कोई तो कहै रंक ।च०

साचौ सरल सुजाण कहै सहु, वलि तिण गाहे रे वक ।च०अ०३।
पोते स्वारथ सु पाचा मिलै, आप मुरादौ रे एह । च०
धन तिकै नर कहै श्री धर्मसी, जीपै तेहने रे जेह ।च० अरथ ।४।

(मन)

(४)

ढाल—नायक मोह नचावियो

चतुर कहौ तुम्हे चुंप सु, अरथ हीयाली ऐहो रे ।
नारी एक प्रसिद्ध छै, सगला पास सनेहो रे । चतुर ॥ १ ॥
ओलै वैठी एकली, करै सगलाई कामो रे ।
राती रस भीनी रहै, छोडै नहीं निज ठामो रे । चतुर ॥ २ ॥
चाकर चौकीदार ज्युं, वहुला राखै पासो रे ।
काम करावै ते कन्हा, विलसै आप विलासो रे । चतुर ॥ ३ ॥
जोड़ प्रीति जणे जणे, त्रोडे पिण तिण वारो रे ।
करिज्यो वस धर्मसी कहै, सुख वाछौ जो सारो रे । चतुर ॥४॥

(—जीभ)

—:o—:

आदे अक्षर, मभखरौ, अतखरौ नैं वलौ
मभखरौ सर्व एक कवित्त माहे सांगठा ही ज आण्या छै ।

कवित

रक्षक वहु हित साधु, राति सूरज दिन नक्खत ।
सहु भोजन कटु जीह, नहींय सुचि पीड़ा दुक्खित ॥
वृद्ध अछेह धन वयण पहिल हिव सुसतैं तूनै ।
रिसि छोरू पति तेज, याम रिधि दुखित धुनैं ॥

लखमी सुबुद्धि तारण सरव रयण पुन्य निरजर सुधर ।
धुरि मझ अंत मझ अक्खरैं, पारसनाथ प्रतापकर ॥१॥

पा ल क	अ पा र	कि र पा	सु पा त्र
र ज नो	अ र क	वा स र	ता र क
स र व	अ स न	वि र स	र स ना
ना का र	स ना न	वे द ना	अ ना थ
थ वि र	अ थ ग	ग र थ	क थ न
प्र थ म	सा प्र त	अ क्षि प्र	तो प्र ती
ता प स	सं ता न	भ र ता	प्र ता प
प हु र	स प ति	सं ता प	क प न
क म ला	अ क ल	ता र क	स क ल
र त न	ध र म	अ म र	ध र णी

च्यार वार अक्षर दसे, एक कवित्त में ऑणि ।
कवि माहे धर्मसी कहै, तौ कहुं तौकुं जांण ॥१॥

—:०:—

सवैया—सर्वगुरू अक्षर देवाधिदेवस्तुतिः

साई तेरी सेवा सच्ची, दूजी काया मायकच्ची,
साता दाता माता भ्राता, तू ही दूजा दंभा है।
मोटा ही तै तुं ही मोटा, मैं तो छोटा ही में छोटा,
तेरी ओटा धोटा ज्युं मै लेख्या ही का लंभा है।
तेरैं पासा खासा दासा, पासा वासाहि का प्यासा,
मेरी आसा वेलि फैली तुं ही इच्छ्या अंभा है।
दूजा को है तेरै दावै, ज्ञानी लोका तोकु गावैं,
रातै प्रातैं धर्म ध्यावै तेरा ही ओठंभा है॥ १ ॥

—:o:—

सवैया—तेवीसा

गंग तरंग के संग उरग सु, मतु विना बहु जंतु मारै।
ताहि समै विनता सुत ताहि जु, जाति विरोध संभारि संहारैं।
सौ मरि कै अहि होइ चतुर्भुज, ताहू कैं ही सिर आसन धारै।
अहो अहो यों सुखी सरिता सु तो, पानी के संग ही पार उतारैं।१।

—:o:—

यति वर्णन—सवैया

केइ तौ समस्त वस्तु चातुरी विचार सार,
चैंन भी दुरस्त वदै अैंन सरस्वती है।
केइ तौ प्रशस्त काव्य भाषा गुण चुस्त करैं,
और कवि अस्त होत एतौ दिव्य दुती है।

केइ राग रंग माझि रस्त गुस्त होत जात,
केइ तर्क विद्या मे विहस्त शुद्ध मती है।
हस्त सिद्धि धर्मसींह वादि हस्ति गस्त होहि,
जैन मे जवरदस्त ऐसे मस्त जती है ॥१॥

—:०:—

समस्या—मान कर्यो के पतिव्रत पार्यो

ठौर संकेत की आगै ते आइ कैं, नायक सेज को साज सुधार्यो।
आइ तिया तब आई गइ रितु, ह्वै के उदास विलास विसार्यो।
बैठि सकोचि सलज्ज न बोलत, नायक केतौ निहार कै हार्यो।
साच कहौ अब क्यो न मिलौ तुम,
मान कर्यो कै पतिव्रत पार्यो ॥ १ ॥

:—❀—:

भोजन विच्छती—सवैया इकतीसा

आछी फूल खड के, अखंड से जौ लड्डू होइ।
ताकै संग ताजै ताजै खाजै फुनि खाईयै ॥
पैडनि सु प्रीति पूरी, लापसी तौ थोरी थोरी।
सीरैं के स्वाद काज चूढा कुं बुलाईयै ॥
हेसमी की भइ हुंस, साबूनी कौ नहीं सूस।
घी के भरे घेवर जलेबी यु अघाइयै ॥
फूल हु ते भीणी फीणी, सब ही में खाड चीणी।
धर्मसी कहत कीनी पुण्य जोग पाईयै ॥१॥
चोखे नान्हे कैर चूणैं, चोखे छमकारे चणें।

आछे से अथाने घने और भी कुं बोल है।
चीरडी पटीरडी सीरावडी वड़ी पुड़ी।
हरद सौं जरद आछे भुजिया कौ भोल है॥
सागरी निरोग फोग राइ खेलरा के जोग।
भाजी भली भाति की मे, नीवू को निचोल है॥
एकली मिठाइ तो धिठाइ कहै धर्मसीह।
सालणा के साथ सु बोलावै कैसी बोल है॥२॥

सवैया तेवीसा

दाख वदाम अखोडै सिंघोडे, गिंदोडै सौं जोडै सबे ही सुहावै।
खारक खोपरे याही के भेट, छुहारी गिरी है पै न्यारी कहावै॥
पूछहुधौं गुजरातिय लोक, निवात भिलैं निमजे भलै भावै॥
मेवे इते नितमेव लहै, सु कहै धर्मसीह भैया पुण्य प्रभावै॥३॥

चटपट में पकवान चलावत, खावत है खीर खाड भी खातै।
तो से चाउल दाल तजै नहीं; पालि करै फुनि घीउ की घातै॥
सुधारी धुंगारी पीयैं फुनि छाछहि, पाछै कै जाइ चलू किये पातै।
वचै सु लुकाइ कै दैण की देरहि, तालीयु देत दिखावत दातै॥४॥

—:०:—

अध्यात्ममतीया रो —सवैया इकतीसा

आगम अनादि के उथापी डारे आपै रुढ़ि,
अवके वणाए वाल-वोध मानै संमती।
जोगी जिंदे भक्तनि पैं, दूरहुं ते दोरे जात,
देखे न सुहात ताहि एक जैन के यती।

ऐसो उदै क्रोध मान, दूर कीए क्रिया दान,
ऐसे पछिपाती गुण काहू कौ न ल्यैं रती।
बावन ही अच्छर कुं, पूरे से पिछानैं नाहि,
कैसे कै पिछानैं कहां आतमा अध्यातमी ॥ १ ॥

शरीर अस्थिरता—सवैया इकतीसा

ज्ञान के अभ्यासा मिसि, आवत उसासा सासा,
छिन न विसासा तहा कहां दिन मासा है।
पर्यौ प्रेम पासा, तामैं मानत विलासा खासा,
देखै जो विमासा घरि हानि लोक हासा है।
आसा तो अकासा जेती, खेलत्त दुवासा सेती,
केती है उजासा घन बीजुरी का वासा है।
अतर प्रकासा कर धर्मसी सुवासा धर,
पानी मैं पतासा जैसा तन का तमासा है॥ १ ॥

रूपैया—सवैया तेवीसा

आपणी देह सुं नेह नहीं पुनि, जानत खेह के गेह छिपैया।
मोह नहीं मन में धन मे, वन मे तन में तप ताप तपैया॥
लोक वडे वडे पाय लगे, जु सवै गुण सोभत लोभ लुपैया।
वाटन कौ नउ उभाटन को डर, सौइ वड़ौ जाकैं भाठ रूपैया।१।
कोइ तो पाइ छिपाइवा धन, धारे नहीं धर्मसीख कहैया।
सुंत्र कहाइ खवाइ न खाइ, भखाइ लगाइ लरावत भैया॥
कौन कहै तिनकुं जु वडौ है, मडौ सब ही सुं करै है लडैया।
वाट वंटाइ उडाइद्यै फाट तें, सोइ वडौ जाकै भाँठ रूपैया।२।

—०—

२४ शोभा—सवैया इकतीसा

नृपति[1] की शोभा नीति, गुनिन[2] की विनैं रीति,
दंपति[3] के प्रीति जो निवाहे धुरि छेह की।
ललना[4] की शोभा लाज, वचन[5] की शोभा साच,
बुद्धि[6] शोभा कविताइ, पुत्र[7] शोभा गेह की।
गृह[8] की हैं शोभा वित्त, मित्र[9] की चितारैं चित्त,
सकज[10] की क्षमा त्युं, कला[11] विचित्र देह की।
द्विजन[12] की शोभा शांति, रवन[13] की शोभा कांति,
साधुन[14] की शोभा धर्म, शील कै सनेह की ॥ १ ॥

वस्त्र शोभा—सवैया इकतीसा

दूर तै पोसाकदार, देखियत सिरदार,
देखिकै कुचील चीर ह्वै है कोऊ वपरा ॥
सुन्दर सुवेश जांणै, ता को सहु वैन मानें,
बोलै जो दरिद्री तो लवार कहै लपरा ॥ १ ॥
पीताबर देख के, समुद्र आप दिनी सुता,
दीनौ विष रूद्र कुं विलोकी हाथ खपरा
धर्मसी कहै रे मीत, ऐसी है संसार रीति,
एक नूर आदमी हजार नूर कपरा ॥ २ ॥

आशिकबाजी—सवैया इकतीसा

देखिवैकुं दौरि दौर, ठाढौ रहै ठौर ठौर,
बाध्यो प्रीति रीति डौर किधौं नाथ्यौ बर्द है।

आस पास वास चहै, भूख दुख प्यास सहैं,
दास सौं उदास कूक[१] लासकी सी नई है॥ १॥
नैंन वान लगै मई, दर्द सौं जरद भयौ,
मोह मद छर्दि किधुं सीतांग की सर्द है।
हैं कोइ न कौ हकीम, धारैं धर्मसीम नीम,
आसिकी कें दर्द आगें और दर्द गई हैं ॥ २ ॥

—:०:—

छ जनो को दुख न देना

सवैया इकतीसा

ऐसी नर देह दाता, पूजनीक पिता माता,
इनकु असाता दे असाता बीज वावैगो।
देत गुरुदेव ज्ञान, या कुं मन्न शुद्ध मान,
इनकैं बुरैं ब्यौ का न निगुरौ कहावेगो॥
साचा सगा वाल्हा सैंन इणो सेती दगा दैंन,
वात बुरी करैं सो कुपात खाक खावैंगो।
आपकुं जो चाहै सुख, मानौ धर्मसीख मुख,
छ जना कु दुख दै सौ विशेष दुख पावैगौ ॥१॥

—:०:—

१ कि र का टोया री रामति

आणदरामजी नाजर की दी हुई समस्याओ की पूर्ति

समस्या—भावी न टरे रे भैया भावे कछु कर रे

सवैया इकतीसा

अटक कटक विचि झटक निझाट मांझि,
एक टूक होत जात एक कुं न डर रे।
आधन में मुंग ऊरे करडू रहै हैं कोरे
कीनो है, जतन किनि देखि भावी भर रे।
करै एक करतार कहन कौ विवहार,
होत सब भावी लार, धर्मसीख धर रे।
भावी को करणहार सो भी भम्यो दश वार,
भावी न टरत भैया भावै कछु कर रे ॥ १ ॥
श्रवण भरैं तो नीर, मार्यो दशरथ तीर,
ऐसी होनहार कौण मेटि सकैं पर रे।
पांडव गये राज हार, कौरव भयौ सहार,
द्रौपदी कुदृष्टि मार्यो कीचक किचर रे।
केती धर्मसीख दइ, सीत विष वेलि वइ,
रावन न मानि लइ जावन कुं घर रे।
भावी कौ करनहार, सो भी भम्यौं दश वार,
भावी न टरत भैया, भावै कछु कर रे ॥ २ ॥
मच्छ कच्छ होइ पीवैं, वनकौ वराह भयौ,
नरसिंह एक पिंड दोइ रूप डर रे।
वामन परशुराम राम कृष्ण बौद्ध रूप,
केते ही चरित्र कीने एते रूप धर रे।

दसमौ कलंकी नाम, ह्वै हैं कहुं ही न ठाम,
अजहुं अधुरौ कांम देखि भावी पर रे।
भावी कौ करणहार, सो भी भम्यौ दस वार,
भावी न टरत भैया भावै कछु कर रे॥ ३॥

यंत्र मंत्र तंत्र जाल, झंपि धुं हुताश झाल,
पैठ धौ पताल वीचि, वैठ भावै घर रे।
देसते विदेश जाहु, देखि मेख मीन राहु,
भटकी सवेर सांझि, सिंधु मांझ तर रे।
जैसे ही संयोग योग, भोग रोग सोग भावी,
धर्मसी सुबुद्धि धार, भावी लार नर रे।
भावी कौ करणहार, सो भी भम्यौ दश वार,
भावी न टरत भैया, भावै कछु कररे॥४॥

फासी तैं निकास ग्रीव, देत फाल पर्यो जाल,
जाल कौ जंजाल तोरि, पड्यौ आगि झर रे।
जीवन जरी के जोर, जर्यो नाहि मर्यो रान,
वागुरीनि डार्यो वान टार्यो सोऊ सर रे।
कहै धर्मसींह मृग, केते ही मिटाइ कष्ट,
भावी आगे पर्यो कूप मांझि रह्यो मर रे।
भावी कौ करणहार, सो भी भम्यो दस वार,
भावी न टरत भैया, भावै कछु कर रे॥५॥

—:※:—

समस्या

सवैया इकतीसा

द्वार कौं न गहें मौन कहै मैं हु नीलकंठ,
करहु भिगौर कला देखि जलधार कु ।
सूली न वढ़ाउ रीस चोर कुं चढ़ाउ सीस,
ईस हुं बढ़ैया दैहै खाट कैं अधार कुं ॥
मैं तो हु इशान सोहैं प्राची उदीची कैं वीचि,
रुद्र हुं कपाली जाहु प्रेत वन छार कुं ।
लीनौ महाव्रती लील धारै क्युं न धर्म शील,
गोरी ठग ठोरी करै अैसे भरतार कुं ॥ १ ॥

—※—

सवैया इकतीसा

वाकैं तुम्ह जीवन हो, जीवन तुम्हारैं वह,
दुहुं एक जीउ देह देखवे कु द्वै धरी ।
देव प्रतिकूल होत, होत प्रतिकूल सब,
ऐसी अनुकूल ही सौं कैसी तुम्ह या करी ॥
आप रहै कहुं भूलि भामिनी वकत भूलि,
अजहुं न आए सो तौ मोही सुं मन धरी ।
तजि कै अमूल तूल सूलज्यु विडारी फूल,
पीपर कैं पात पर च्यारो पात पापरी ॥ १ ॥

—:०:—

समस्या—चरण देख चतुरा हसी

इक दिन ख्याल हि अटकि, अरध निशी प्रीतम आयौ ।
नींद माझि तिय निरखी, लेइ महावर पगि लायौ ॥
वहुरि गयौ वाजार, वहुत विधि देखी वाजी ।
पुनि आयौ परभात, रसिक कोतक चित्त राजी ॥
निसनेह नाह तुम मोहि तजी, डुसक डुसक रोवइ डसी ।
अध दृष्टि इतइ अलतै अरूण, चरण देखि चतुरा हसी ॥१॥

—:※:—

समस्या-वामन के पगतै जु वची
धरि जानत है विरलो जग कोऊ ।

धरि जानत है विरलो जग कोऊ ।
सूखत ना कवही सव ही रस,
जागत है वरपा विनु जोऊ ।
जोर करै तै लाइ नहिं जातु,
है है पुनि नाहि गहै विधि दोऊ ॥
पावत पार न को धर्मसी कहै,
शेप उपारि सकै नहीं सोऊ ।
वामन के पगतै जु वची धरि,
जानत है विरलो जगि कोऊ ॥ १ ॥

—०—

समस्या-हरि शृ गनि ते असूआ ढरि आइ ।

एक समै शिव शैल सुता रति रीति रसै विपरीत वणाई ।
संभु डस्यौं अधरा अध तैं तिण पीर पीया दृग नीर बहाइ ।
भाल कै चंद परी वहुं बिंद धरी है कुरंग के शृंग सखाइ ॥
ऊठत ईस ही सीस धुण्यों
हरि शृंगनि तै अंसूआ ढरि आइ ॥ १ ॥

वनमें मृग एक मृगीकै वियोगहि,
बैठि रह्यो निज ठौर निसाइ ।
तव ही दोइ पथक वात करै,
अधरात भइ हरिणी सिरि छाई ।
आनन ऊरध कैं चितयौ,
मृग देखत व्योम प्रिया नहीं पाई ।
दुख तै मुख ऊरध रोवतही,
हरि शृ गनितैं असूआ ढरि आई ॥२॥

—:o:—

समस्या-'आरसी मे मुख देखौ मुख ही मे आरसी'

सुन्दर पलंग पर बैठौ है चतुरवर,
आगै आइ वैठी प्रिया देव की कुआरसी ।
ताहि समै प्यारी प्रिया देखि आपु दर्पणकू,
पीउ कु दिखावैं भावैं कीनै मनुहारसी ।
देखत हौं तेरौ मुख मैं तो अति पाउं सुख,
वीचि धरी आरसी तौ लागत है आर सी ।

मेरौ रूप तेरि नैन कहा तु कहत वैंन,
आरसी में मुख देखौ मुख ही में आरसी ।१।

—:※:—

समस्या-चंप कैसे च्यार फूल फूले ही रहतु है ।

अति ही अनूप नाभि रूप कूप उपरितैं,
मोतिनि की माला घटमालासी वहतु है ।
नूर नीर ऊर पूर रंभ थंभ बाहुलता,
आनन कमल स्वास सौरभु गहतु है ।
नाक कीर भौंहि भौंर आली कौ सुहाग बाग,
साचौकरि देख्यो है पैं धर्मसी कहतु है ।
आंखनि उरोजनिकी एती अधिकाइ पाइ,
चंप के से च्यार फूल फूले ही रहतु है ॥१॥

—o—

समस्या—ठाढे कुच देख गाढे प्राण अकुलात है ।

गोरी तेरी देखि गति दूर हु विसारि मति,
देखत न कैसे मन ठौर ठहराति है ।
घुंघट की ओट माझि नैननि सो चोट करै,
जाकैं लागैं सो तो लोट पोट होइ जाति है ।
सोनैं सु सुधारे सारे आधे से उघारे भारे,
काठ तौ चोगान के निसान से कहातु है ।
कहै धर्मसीह कसे ऊभै पौरीयै से ऐसे,
ठाढे कुच देखै गाढै प्राण अकुलात है ॥ १ ॥

—※—

समस्या-नीली हरी विचि लाल ममोला

थोरी सी वेस में भोरी सी गोरीसी,
गोरी चलावति नैन गिलोला।
जाकै लागै ते डिगै मुन ही, मनहि महि मारत मार झलोला।
मोहै सबै मन मौहैं अचंभजु, कौहै कहौ यह रैंन अमोला।
हसै घट घुंघट ओट में आनन
नीली हरी विचि, लाल ममोला ॥ १ ॥

एक समे वृषभान कुमारि, सिंगार सजै मनि आनिइ लोला।
रंग हर्ये सब वेस वणाइ कै, अंगुल काइ लए तिहि ओला।
आए अचाण तहा घनश्याम, लगाइ झरी करैं केलि कलोला।
घु घट मे एक्यों अधरा मनु, नीलहरी विचि लाल ममोला ॥२॥

—❀—

समस्या पूर्ति—टेरण के मिस हेरण लागी

चुंप सुं च्यार सखी मिलि चौक में, गीत विवाह के गावन लागी।
गौख तें कान्ह कौ साद सुणैं तैं, भइ वृषभान सुता चित रागी।
जाइ नही चितयौ उत ओर, सखीनि कै बीचि में बैठी सभागी।
उतैं कर कौ सुकराज उडाइ कै, टेरण के मिसि हेरण लागी ॥१॥
भानि मै वद ज्यु गोए के वृ द में, बैठे है नद के नंद सोभागी।
एते मैं आइ घटा घुरराइ, घनाघन की बरसै झर लागी।
आधि कै राधिकै कान कै अंग, आलिंगनु काजु भइ अनुरागी।
आइ कै गाइ बताइ द्यौ कान्ह यौ, टेरण के मिसि हेरण लागी ॥२॥

—❀—

सवैया—समस्या, हरिसिद्धि हसैं हरि यो न हसैं

हनुमान हरौल कियैं चढै राम,
तयों निधि सन्निधि लक ध्वसे ।
करि रौद्र संग्राम लकेश कुं मारि,
कियौ सुखवास की नास नसे ॥
शिव चिंत्यो त्रिलोक कौ कंटक सोउ,
नमावतो मो पद सीस दसे ।
उत दैत्य हसे उत देव हसे,
हरि सिद्धि हसे हर यौं न हसे ॥ १ ॥

अपणै भुज भार पहार उपारि,
गोवर्द्धन धार जो धार जसे ।
तिण माखण ले मटकी पटकी,
अपराध ते कौल के नाल कसे ॥
अब खोल दे गात जसोदह मात,
न माखन खाऊं न जाऊं नसे ।
उत दैत्य हसे उत देव हसे,
हर सिद्धि हसे हरि युं न हसे ॥ २ ॥

—::०—

समस्या—योग, भोग पर

रिण-देंणौ घणौ लहणौ न कछु,
गहणौ घर मे कर एक छलौ है।
इत भूतसौ पूत कुपात है तीय,
कहा[1] कहि वात में जात ललौ है॥
नित गेह के नेह में देह दहै,
न गहै ध्रमसीख न तत्त तलौ है।
नहि जानत है चित मे इतनौ,
इण भोग हुते जति जोग भलौ है॥ १॥

कहै नाम अत्तीत अनीति धरावत,
पावत लोक अलोक गिलो है।
विह साव सौ वेप धरै बहु घेख,
अलेख कहै पें, अलेख ललौ है॥
न सरैं जब काज गरैं जु परैं,
झगरैं बहु सु पकरै जु पलौ है।
कहौ साध्यौ कहा इण जोग गहे,
इण जोगहु तैं ग्रह भोग भलौ है॥ २॥

समस्या—चतुराई पर

एक एक चातुरी सौ अकल नकल आनैं,
सकल सयाने लोक सुनि के थगतु है।

१—कलहा, कलहि, वालत, जालत

सवैया (समस्या)

अरे विधि तुं विधि जाणत थौ पुनि,
एक विचार कहा यह कीनौं।
गोरी करी पतरी करि की कुच,
कै उच कौ पुनि बोझ ही दीनौं।
जो कबहु वहु पौन बसै करि,
टूटि जैहैं करि के जु करीनौं।
ता तब ऐसे ही कैसे बणाव्वेगो,
धर्म कौ वैण तै मानि न लीनौं॥ १ ॥

समस्या—कर्म की रेख टरै नही टारी

नीर भर्यों हरिचंद नरिंद ही, कंस कौ वंस गयौ गिरधारी।
मुंज पर्यो दुख पुंज के कुंज, गयौ सब राज भयौ है भिखारी।
लंक कुवंक कलंक लगाइ है, रावण की रिधि जावण हारी।
मीन रु मेख कहै धर्म देख पै, कर्म की रेख टरै नहीं टारी ॥१॥

समस्या—टारी टरै नही कर्म की रेखा

छप्पय

एक कौं एक रु दोइ न आवत, एक करै केई लाख के लेखा।
एक कै रासभ ही नहीं एक कै, द्वार हजार करै हय हेखा।
कोऊ सुखी जगि कोऊ दुखी जन,
काहे कौं काहू को कीजै अदेखा।
कोडि उपाय करौ धर्मसी कहै,
टारी टरै नहीं कर्म की रेखा॥ १ ॥

समस्या—सवैया तेईसा

तत्त की या धर्मसीख धरौजु, कहा बहु गल्ल कथा विस्तारौ ।
मोल न ह्वै मणि की मणिहारीयै, अमृत बिंदु न कूपक खारौ ॥
चद उद्यौत करै सबहुं दिशि, तारक कोरि छतें ही अधारो ।
सारकी होडि कहा करै टार, सपूत घरी न कपूत जमारौ ॥१॥

—::—

समस्या—निसाणी घर जानकी सवैया इकतोसा

आयौ जाकौ दूत जमदूत को सौं पौंनपूत,
या तौ देखौ वावि की प्रसिद्धि लोक वानि की ।
कीनौं उतपात पात, पात सौ आराम कारि,
बैठो है आराम करि, कैसें लंक थान की ॥
मन्दोदरी कहै राज, मदौ दरीखानौ आज,
धारौ धर्म सीख पैं न, धारौ सीख आनि की ।
कानि कानि फैली वात, कानि तैं न कही जात,
आनी घरि जानकी, निसाणी घरि जान की ॥ १ ॥

:—:—:

एक तौ विचित्र चित्र शत्रु मित्र जंत्र मत्र,
राग रंग रस माझि जावता जगतु है ॥
कर्म कला करणं मे धर्मसीख धरणं मे,
चातुरी तें भूषण ह्वै दुख न भगतु है ।
पूरे वेद पाठी तेऊ चातुरी कुं चित्त चाहै,
चारू वेद चातुरी के चेरे से लगतु है ॥ १ ॥

समस्या—मान पर

मित्र उदै मेरा जीव राजी ह्वै राजीव सम,
जासु मन मेल सो तौ दूर ही नजीक है ।
प्यार धरि सीख सो मे मानु कुल लीकजैसी,
प्यार बिन सीखसो मो लागति अलीक है ॥
हित सुं दे तिनको सो मोतिनि को हारमानु,
हेत बिनु हार सोऊ तिनिके की सीक है ।
मान कौ तौ बीरा मेरे हीरा कैं समान मानु,
विना मान हीरा मेरे बीरा कै सी पीक है ॥१॥

:—❀—:

समस्या—साहिबी न भावें ताकु साहिबी फकीरी है ।

देश की विदेश की निसे की न चिंता कछु,
हीनता न दीनता न काई तकसीरी है ।
सग्गकी न जग्गकी न ठग्ग की न चाहि काहि
काहू की प्रवाहि ना न कोई दिलगीरी है ॥
सोच कौ सकोच कौ न पौच कौ आलोच मत्र,
आप है स्वतंत्र काहू जोर न जंजीरी है ।

साहिब के नाम धर्मसील गह्यो एक टेक,
साहिबी न भावैं ताकुं साहिबी फकीरी है ॥१॥
मन के महल मांझि समता प्रिया के संग,
अनुभौ के अंग रंग सुखनि कौ सीरी है।
ममता न मोह द्रोह रमता है आपा राम,
ज्ञान गुन कला धारी ध्यान दशा धीरी है॥
काहू की न सक वंक तैसो राउ राना रंक,
सबही कुं मानैं सम कुंजर सुकीरी है।
मंदिर रुचै न जाहि कंदर कौ वास ताहि,
साहिबी न भावै ताकुं साहिबी फकीरी है ॥२॥

—:o:—

समस्या—थारी मे यु ठहरात न पारौ।

दूर सौं दौरि मिलै छिन मे, छिन मैं गहि लेत है एक किनारौ।
भौंर से खात फैंलात चहुं दिसि, नैकु अटै नहीं होतनि न्यारौ।
एक न ठौर कहौ ठहरात, ग्रह्यो नहीं आवत हाथ अतारौ।
यु तृष्णामैं भमै चित्त चंचल, थाली मे ज्युं ठहरात न पारौ॥१॥
मैं हर वीरज धीरज कारण, गौरी को प्राणनि होतै पियारौ।
मैं कियौ कारितिकेय कुमार, करुं उपगार स धातु सुधारौ।
कासी में होइगी हासी हमारि, निकारि वतातलि पीसही डारौ।
त्रिधातु त्रिकूट त्रिजाती मै ना रहु, थारी मैं यु ठहरत पारौ॥२॥

:—❀—:

समस्या—काकै के दीठैं कुटब ही दीठौ।

मोहनभोग जलेबीय लड्डूअ, घेवर तामैं कहौ कहा मीठौ।
वाद भयौ धर्मसी कहै नागर, न्याउ कु जंगल जट्ट प्रतीठौ।
सौ कहै बूरै कैं पूर भये सब, ताकौ भाइ गुड लाल मजीठौ।
सो गुड दीठौ है मैं अति मीठौ तौ,
काकै के दीठैं कुटुम्ब ही दीठौ॥ १॥

:—❀—:

समस्या—युं कुच के मुख स्याम कीये है।

तीय कौ रूप अनूप विलोकत, लोकनि के लख मोहि लियें हैं।
कोऊ कहै कुच कंचन कुंभ धुं, श्रीफल मंगल रूप ही ए है।
लगै जिनु दृष्टि विचारि विरंचहि कज्जल के दुइ बिंदु दीयै है।
बात कौ मर्म कहै कवि धर्म जुं, युं कुच के मुख
स्याम कियै हैं॥ १॥

:—❀—:

समस्या—छानोरे छानो रे छानो रे छैंया।

काम कलोल मे लोल भयौ, पिऊ तीय करै ओहि ओहि रे दैया।
नैंकु हरै हरै मानि बुलाइ ल्यो, कोउ सुणैं जिनु लोक पछैया।
सेज के उपर नुपर के सुर, बाल जग्यो लग्यो रोवन मैया।
दे तेरैं बाप कै थाप डरैं जिनु,
छानु रे छानु रे छानों रे छैया॥ १॥

:—❀—:

सवैयो बात करामात

शास्त्र घोष कंठ शोष पंडिताई करै पोष,
पूछ्यौ होत राग दोष रोष न समात है।
एक ही वचन कला दूझै कामधेनु तुला,
याही कला आगैं और सवे कला मात है॥
माने सुलतान खान रीझै सब राउ रान,
पावै दान मान थान हित की हिमात है।
सब कु सुणै सुहात मुख की ह्वै मुलाखात,
धर्मसी कहै रे भ्रात वात करामात है॥ १॥

चोरनि की करामात, चाहत अधारी रात,
साहिनि की करामात घर में विसात है।
वालनि की करामात, पास अपणी है मात,
पछनि की करामात जागत प्रभात है॥
जोगिनि की जाति मे जमात करामात कहीं,
गणिका की करामात सुन्दर सुगात है।
सबहु कु सुण्यै सुहात मुख की ह्वै मुलाखात,
सब ही कु धर्मसीह बात करामात है॥ २॥

दोहा

ओरंग पतिसाहि ग्रही, दहवटि करि दाराह।
रज्ज पियारा रज्जिया, भाइ दुपियाराह॥ १॥

स्वारथ मिट्ठा सब ही कुं, विण स्वारथ खाराह।
रज्ज पियारा रज्जिया, भाइ दुपियाराह॥ २॥

मुलतान रे अध्यातमीये प्रश्न पूछाया रो उत्तर, सवैया १ काव्य २ दूहो १ नवा करिने मुक्या, दुरस्त बात जाणी ने खुशी थया ॥

सवैया इकतीसा

तुम्ह जे लिखे है प्रश्न, ताके भेद भाव बूझै,
तुम ही सौं नाहि गुझै सुझै है सुदच्छ सौं।
मानो "परमात्मा—प्रकाश" 'द्रव्यसंग्रहादि'
और न प्रमाणौ ग्रन्थ ताणौ आप पच्छि सौं।
ता तें और आगम के उत्तर न आवै चित्त,
लिखि कै बतावैं केते हेतु युक्ति लच्छ सौं।
दुर हुंते तैं भ्रम होइ, सैली नाहि कहै कोइ,
बात तौ वणै जो ज्ञान (द)ष्टि ह्वै प्रतिच्छ सौं ॥१॥

श्लोक

युष्माभिर्लिखिता विचित्र रचना प्रश्नाः परीक्षार्थिभिः।
केचिच्छास्त्रभवाः सुबोध विभवा केचित्प्रहेलीमया।
ते वो नो मिलनादृते नहि कृते भ्रांतेर्हतेवः क्षमा।
स्तत्प्रत्युत्तर जाल संगत मनो मीनौ धुनानीयते ॥ १ ॥

दोहा

तजै नाहि व्यवहार कुं, भजै नांहि पछपात।
तत्व धर्म दूषण हरै, सोइ सुज्ञ कहात ॥१॥

—:०:—

सवैया

उपजी कुल शुद्ध पिता हनि के, फुनि शुद्ध भई करि दोप विलैं ।
करि सग पितामह सु प्रसयौ, पित आप कुवारि कैं खेल खिलैं ।।
जग मित्र जिवाइ चरित्र वणाइ पवित्र भलै धर्मसील मिलै ।
कहि कौन सखी पित कैं पित सु, विछुरे दुरिकैं फुनि जाइ मिलै।१।

—:ꕥ:—

सवैया—तौवीसा

चम्पक माझि चतुर्भुज राजत, कुंद मे आप मुकुंद विराजैं ।
केतकी माझि कल्याण वसैं नित, कूजके कूच में केसव छाजै ।।
मालती माधौ मुरारी जु मोगरैं, गुलाव गुपाल सुवास सुसाजै ।
कान्ह वसैं कल्पतरु माझि, नरायण फुलनि हुं कु निवाजैं ।।१।।
केतकी में केसव, कल्याण राइ केवरा मै,
कुज में जसोद सुत कुंद में विहारी है ।
मालती में मुकुन्द मुरारि वास मोगरैं,
गुलाव मे गुपाल लाल सौरभ सुधारी है ।
जूही में जगतपति कृपाल पारजात हु मे,
पाडल मे राजै प्रभु पर उपगारी है ।
चप मे चतुर्भुज चाहि चित्त चुभि रह्यौ,
सेवत्री मे सीताराम स्याम सुखकारी है ।।२।।

वैद्यक विद्या

(डम क्रिया)

शंकर गणपति सरस्वती, प्रणमु सब सुखकार ।
वैद्यनिके उपकार कुं, अग्नि कर्म कहुं सार ॥ १ ॥
जो चरकादिक ग्रन्थ में, विविध कह्यौ विस्तार ।
वागभट्ट तैं मे कहु, भाषाबंध प्रकार ॥ २ ॥

रोग सख्या सग्रह

ताप सन्निपात जाणी अतीसार सग्रहाणि,
फीहौ विष राल पाडु गोला सूल खैन है ।
हीया रोग सास खास रुधिर प्रवाह रूप,
सीस पीड रोग अरू जेतें रोग नैन है ॥
और उन्मादवात कटीवात सीत अंग,
मृगीवात कंपवात सोफोदर अैन है ।
जलोदर अंडवृद्धि धनुप चोवीस रोग,
ताकि कहै दभक्रिया वैद्य ग्रन्थ वैन है ॥ ३ ॥

दोहा

संनिपात ज्वर नाश कु, डभ बतावै च्यार ।
प्रथम तालवै दीजिये, ढंभ गोल परकार ॥ ४ ॥
दूजौ लंबो ग्रीव परि, जहा धरिजै जोत ।
दो लवणै द्यौ वर्त्तुला, च्यारे इहि विधि होत ॥ ५ ॥

अतीसार ग्रहणी विषें, दभ बतावे पच।
नाभि चिहुं दिसि च्यार द्यौ, कूरम पद कै सच ॥ ६ ॥

त्रय अंगुल फुनि नाभि तजि, अधो भाग शुभ ठाण।
लंबो अगुल च्यार कौ, पचम डंभ प्रमाण ॥ ७ ॥

परिहा

पूठि दशा सुं आणि उदर कर सु ग्रहै,
फीहा की जहा पीर आगुली अग्र है।
दीजै तिहा दोइ डंभ एक एक उपरै,
परिहा, एहि विधि वैद सुजाण तुरत वेदन हरै ॥ ८ ॥

डभ तीन विध राल तहा विधि सु करै,
लावो आगुल च्यार एक तिहि उपरै।
दूजौ हिरदै मूल दंभ वर्त्तुल धरौ,
परिहा, पूछै जहा वहु पीर, तहा धरि तीसरौ ॥ ६ ॥

चौपाई

पाडु रोग सोफोदर सही, तीजो रोग जलोदर लहि।
च्यारे डभ चिकित्सा जाणि, ज्युं कीजै त्युं कहु बखाणि ॥१०॥
हृदे मूल वर्त्तुल इक होइ, दुहु कुखे लाबा द्यौ दोइ।
इक अगुल तजि नाभि प्रकार, चउथौ डंभ चूड़ी आकार ॥११॥
फीहै जो विधि कहु बखाणि, गुलम रोग पिण सो विधि जाण।
पेट सूल जो होइ अगाध, सूल डंभ तै नासे व्याध ॥१२॥
प्रबल होइ जब खैन प्रकार, बोली दभ क्रिया तहा बार।
एक तालवै दीजै गोल, दूजौ ग्रीवा जोत्रें ओल ॥१३॥

ऐतिहासिक व्यक्ति वर्णन

बीकानेर नरेश

अनूपसिंह सवैया

केई तौ विकट घाट लंघत अलघ घाट,
वीते है मुहीम में वरस त्रीस त्रीस जू ।
केइ उमराउ राउ चाकरी चपल कीनें,
भीनैं वरसाति गाति दौरें निस दीस जू ।
तेऊ सिरपा कु उपा करै कोरि भाति,
तो भी ताकू नानति है दिल मे दिलीस जू ।
धन्य महाराज श्रीअनूपसिंह तेरौ तेज,
वैठे ही कुंपातिसाह भेजे वगसीस जू ॥ १ ॥

—:&:—

संस्कृत

भुज्यत इष्ट जनैः सह मृष्ट मऽवे हि तदेव हि भोजन मिष्टं ॥
स्मर्यत एव परोक्षतया किल वर्य्यम ऽजर्य्य मथेह विशिष्टं ॥
ज्ञान गुणत्व मिदं भुवि वर्णय यत्र हि कर्म्म वचश्च न दुष्टं ॥
छद्म विना द्रियते रूचिरं शुभ धर्म विधान महोऽपदिष्टं

कवित—(स० १७२६ मध्ये माघ मासे कह्यौ)

बीकपुर तखत महाराज मोटै वखत,
वजै सुजसा तणा जास बाजा ।

वड़ो उमराव दिल्लेस वखाणियो,
रूप भूपा अनूपसिंह राजा ॥१॥
कहर अरि कटकी काटि काने किया,
विरूद मोटा लिया आप वाहे।
करण तण आपणौ सुजस सगले कियौ,
सही परसंसियो पातिसाहे ॥ २ ॥
पाट वैठा प्रथम हरप हुयौ प्रजा,
दसो दिस भूपते भेंट दीधी।
सूरहर आप सुलतान साराहि नै,
कुंजरा धना वगसीस कीधी ॥३॥
हिन्दुआ मौड राठौड़ मौटे हसम,
पुहवि पत्ति माहि परताप प्राझौ।
अनूपसिंह राजवी अटक कटके अडिग,
आप श्रीजी करै जास आझो ॥ ४ ॥

अमरसिंह जी सवैया

तेरे तो प्रताप के प्रकाश त्रास पाइ अरि
नास सरणैं की आस डोलत घराघरी।
तेरे ही ति देस देस नेस न प्रवेस कहुं
वन मैं निवेस काज धर की धराधरी।
सिंह न कौ डर डारि कन्दर कैं अन्दर ही
वैरि हीये तेरौ भय भयौ हैं खराखरी।

ग्रहणी रोग वताये पंच, तिण विधि सु देणा तिण संच।
पंच उदर हिरदै प्रकार, इहि विधि द्वादश डंभ विचार ॥१४॥
हिरदै रोग स्वास अरू खास, डंभ क्रिया तिहा पंच प्रकास।
हुदै लीक अरू वर्त्तुल च्यार, दंभ अस्थि के मध्य विचार ॥१५॥
रुधिर वहै नासा मुखि जवै, सीस डंभ वर्त्तुल इक तवै।
डंभ कह्या सन्निपाते जोइ, सीस रोग सीतागै सोइ ॥१६॥

परिहा

मृगी धनुप वात जव जाणियै,
दीजै खट खट डंभ क्रिया पिहिचाणियैं।
दो लवणे दोइ पाय एक पुनि तालवैं,
परिहा गुदड़ी उपरि एक इणै विध चालवैं ॥१७॥
कटी वात जव जाइ न ओपध गोलीयैं,
कटि नीचै दोइ डंभ वणावौ चूलीयैं।
अंड वृद्धि जव होइ दंभ इक दीजियै,
परिहा, पाय अंगुली पास समझि विधि लीजियैं ॥१८॥
वामी दिसि जो होइ कुरंड विथा घणों,
दक्षिण दिसि द्यौ दभ तुरत पीड़ा हणै।
पद अंगुल दश जाण तहा दश दंभ है,
परिहा, पंच पच दोइ जानु सधि विचि थभ है ॥१९॥

नेंन पीड अति ही जन औषध औसरै,
दो लवणे द्यौ दंभ, तुरत पीड़ा हरै ।
अग्नि क्रिया के श्लोक वागभट ग्रन्थ में,
परिहा, कही भाषा सु सरल वचन के पंथ मै ॥२०॥
सतरै चालीस विजयदशमी दिनै,
गच्छ खरतर जगि जीत सर्व विद्या जिनै ।
विजयहर्ष विद्यमान शिष्य तिनके सही,
परिहा, कवि धर्मसी उपगारै दंभक्रिया कही ॥२१॥

—:०:ꕥ:०:—

राज श्री अमरसिंह नामे सिंह सम है पै
सूरापन कैसे सिंह करिहै बराबरी ॥ १

दोहा

खड लाराखेसि, अमरेसे लीधी उरा ।
राख्यो नही बहु रोस, दोइ आखर वगसे दीया । १ ।
अमरेसैं वाह्यौ सु असि अटक्यौ अरि उर आइ ।
तिण अरि धार बाधी तुरत, जोयौ मन्त्र जगाय ॥२॥

काव्य

श्री मच्छ्री अमरादिसिंह भवता नूनं रणे वैरिणा ।
वाक्त्तारित मित्थमत्रमयकावाकर्कि वदंत्या श्रुता ।
मन्ये नाह मिति त्वया त्वति तरां तत् स्रीपु सिक्तं दकं ।
नोचेन्निर्ज्जरवन् साद प्रवहति स्त्री दगंभः कथं ॥ ६ ॥

अमृतध्वनि

सबल सकल विधि सबल सुत, गढ़ जेसाण गरिंद ।
अमरसिंघ इल में अखी, सोभत जाणि सूरिंद ॥ १ ॥
चालि—तौ सोभ सुरिन्द दूदुतिहि दिणंद ह्रंविण धनदहानसमंद।
दूदुथिय दरह दलित दरिद्द दसहि दिशिंद ।
दर्वितां हद दूदेव विरुद्द दल वलरूद दूदूठ द्धिरद्द द्विदढ़
असि वृन्द ।
दू दुदभि नद्द दूदुसह सवदूद दूदुयण दहद दहवट दद ।
दूर सिस ह्रह दिल विहसद दूदुनिय कुमुदद्
दूदीपति चन्द दूदेखि नरिंद दिन कविंद
द्यै जयसद्द दूदीरघ आउख तास ॥२॥ स० ॥

गीत—राउल अमरसिहजी रौ

बलोचारा माडला रौ सवत १७२६ जेठ माहे श्री जैसलमेर मे कह्यौ ।

कवित्त

जेठ तपते तपत जीव जगरा जिके,
आपणी ठाम सहु रहै अटकी ।
छोडि सहु काम ताके सहु छाह्डी,
कीध तिणवार अमरेस कटकी ॥१॥

साभली वात बडलोच सीमा हुता,
धपटिया घेगुआ करे धाड़ौ ।
खलकती लूअ मैं खण्ड करिवा खला,
आवियो अमरसिंह तेथि आड़ौ ॥२॥

काटि खग झाटि अरि धाटि दह्वाटि करि,
अधिक जस आपरे तखत आयौ ।
भलभली भेट भूपा तणी भोगवै,
सबल तण आज प्रतपै सवायौ ॥३॥

दौलति परजि सहु एम आसीस द्यै,
जीपिया जग तिम वले जीपौ ।
दूथिया पाल सु दयाल दायाल हर,
दीपते सूर जिम सदा दीपौ ॥४॥

कवित्त जसवन्तसिंहजी (जोधपुर महाराज) का स० १७३६ रे पोस माह मध्ये कह्यौ महाराजा जसवन्तसिंहजी देवलोक हुआ पछलौ। देहरा पड्या तिण समीयै रो।

हुतौ जसवंत ता थोक सगला हुंता,
हुती हिन्दुआं तणै वात हाथै।
देखसी असुर कवण तजि देहरा,
सलकिया देव जसवन्त साथै ॥१॥

पड्यै जिण जोध पौकार सगलैं पड़ी,
धरैं नहीं अरज पातिसाह धीठौ।
राह वंधी हुइ रखे कोइ रोकसी,
देवें जसवंत रौ साथ दीठौ ॥२॥

हुतौ हिंदुआ तणौ धरम सूरा हरौ,
सबल चिंता पड़ी देस सारैं।
दुख मरूधर तणा रखे हिव देखस्या,
ललकिया देव जसवंत लारैं ॥३॥

सुणी सुर लोक में वात गजसीह रैं,
हुसी हिंदुवा तणी रखै हासी।
आपणैं वीज निज अंश अवतारिया,
आवियौ आप हिव देव आसी ।४।

कवित्त न० २ (जसवन्तसिंहजी रा समईया पछलो)

मरुधर देस महाराज मोटौ मरुद,
कदें नहीं परज ने चित काइ।

असुर सु वीहतै इन्द्र आलोचि नै,
भीर नैं तेडियौ जसू भाइ ॥ १ ॥
जाइ सुरलोक मैं अमल कीयौ जसु,
असुर सहु नासि मृतलोक आया।
कसर सहु आपणी मूलगी काढ़िवा,
लागतै जोर जजाल लाया ॥ २ ॥
लोक सगला कन्है जीजीया लीजियै,
देहरा ठाम महिजीद दीसै।
थरहरै गाय इण राव इन्द्रसी थका,
हियौ इण राज सु केम हीसै ॥३॥
खुंदिजै परज चिहु पाखती खोसिजैं,
सहु कहै लोक इम केम सरसी।
धरौ मन धीर सुख हुसी हिंदू धरम,
कुअर जसराज रा राज करसी ॥४॥

कवित दुर्गादासजी का

(महा) मौड मुरधर तणा खला दल मौडता,
दौड पतिसाह सु करै दावा।
रौड़ रमता थका चौड रिम्म चूरता,
ठौड ही ठौड राठौड ठावा ॥१॥
छात ढलतैं जसू हुइ नाका छिली,
साक तजि साह सु करै साका।
दाव पाका कीया सुजस डाका दिया,
जोध वाका करै नाम जाका ॥२॥

आगला भूप श्री अजीतसिंह आगला,
डागला दौड़ज्यू दिली कति दूर ।
भागलैं भुजा बल खला करि खागलैं,
सागलैं कीध जस सूर हर सूर ॥३॥
खीजीया यवन ल्यैं जीजीया खूटिवै,
खेचला वीजीया रैंत खाखी ।
प्राण जोधाण रैं पाजीया पी जीया,
रेख दूर्गदास राठौड़ राखी ॥४॥

गीत श्री शिवाजी रो

श्री सूरत मध्यै कह्यौ स० १७३२ आसाढ माहे ।

सकति काइ साधना, किना निज भुज सकति,
वड़ा गढ़ धूणिया वीर वाकै ।
अवर उमराउ कुण आइ साम्हौ अडै,
सिवारी धाक पातिसाह साके ॥ १ ॥
खसर करतां तिके असुर सहु खुंदिया,
जीविया तिके त्रिणौ लेहि जीहैं ।
शब्द आवाज सिवराज री साभले,
बिली जिम दिल्ली रो धणी बीहे ।२।
सहर देखे दिली मिले पतिसाह सुं,
खलक देखत सिवौ नाम खारै ।
आवियौ वले कुसले दले आपरे,
हाथ घसि रह्यौ हजरत्ति हारैं ॥३॥

कहर म्लेच्छा शहर डहर कन्द काटिवा,
लहर दरियाउ निज धरम लौचै।
हिन्दुओ राउ आइ दिली लेसी हिवै,
सबल मन माहि सुलताण सोचै।४।

नाजर आनन्दराम जी रो सवैयो

ज्ञायक गुणै अगाह, न्याय कौ करै निवाह,
आलोची वडौ अथाह धीरज को धाम जू।
सज्जन फल्यो उमाह, दुज्जना के हिये दाह,
पुण्य को सदा प्रवाह जाको शुभ नाम जू।
चित्त मे धरंते चाह नित्त ही उडीके राह,
पूज्यौ इष्ट देवताह कीनौ इष्ट काम जू।
सब ही करै सराह वाह वाह वाह वाह,
आयौ तो भयौ उच्छाह श्री आनन्दराम जू।१।

:—※—:

वर्त्तमान जिन चौवीसी

१ आदि जिन स्तवन

राग भैरव

आज सुदिन मेरी आस फली री ॥ आज० ॥
आदि जिणंद दिणंद सो देख्यो,
हरख्यो हृदय ज्युं कमल कली री ॥आज सु०॥१॥
चरण युगल जिनके चिंतामणि,
मूरति सोइ सुरधेनु मिली री ।
नाभि नरिंद को नंदन नमता,
दूरित दशा सव दूर दली री ॥ २ ॥
प्रभु गुण गान पान अमृत को,
भगति सु साकर माहि मिली री ।
श्री जिन सेवा साइ धर्म सीमा,
ऋद्धि पाइ साइ रंग रली री ॥ ३ ॥

२ अजितनाथ स्तवन

राग—भैरव

प्रभु तूं अजित किन्हीं नहिं जीतो,
सोभत रवि ज्युं तेज सदीतो ।
अधिको को नहीं तोहि अगीतो,
तेरी महिमा जगत जगीतो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥

सुर नर सब मे अनग अजीतो,
काम कठिन सो ते वश कीतो ।
जल सब अनल बुझाइ वदीतो,
पानी सोइ वडवानल पीतो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
विन प्रभु दरसण काल वितीतो,
भवभय भमीयो बहु भयभीतो ।
गुणवत तेरी सेव ग्रहीतो,
श्री धर्मशील सुशील लही तो ॥प्रभु०॥३॥

३ श्री सभव स्तवन

राग—सोरठ

सेवा बाहिरो कइयै कोइ सेवक (ए देशी) ॥

सभवनाथ जी सब कु सुखदाइ, किम ए विरुद कहावै ।
इहा आछी दीसैं अपणायत, सेवै ते सुख पावै ॥ सभव ॥ १ ॥
खिजमत करि कर जोडि खिजमत, आप नरीझैं औजाह ।
मोल दियै पिण मसकित माफक, मोटा री नहीं मौजाह ॥२॥स ॥
भगति करै त्या राखै भेला, कठै न फेरैं कबही ।
श्री धर्मशील कहै सुणजो साचो, स्वारथ राचै सबही ॥स०॥३॥

४ श्री अभिनन्दन स्तवन

राग—वसत

धन धन दिनकर उग्यो उछाह,
अभिनन्दन जिन वदन उमाह ॥१॥

सव तमस मिट्यौ प्रगट्यौ सराह,
वर्त्यौ शुभ ज्ञान प्रकाश वाह ॥२॥
चित कोक विलोकवै करत चाह,
सव सुर नर जिनकी करत सराह ॥३॥
फरस्यौ शुभ यश परिमल प्रवाह,
लुलि नमता समकित रतन लाह ॥४॥
इनके गुण गण महिमा अथाह,
गावइ धर्मशी गुण गीत गाह ॥५॥

५ श्री सुमति जिन स्तवन

राग—वेलाउल

मेरे माई सुमति की सेवा साची।
जिनके नाम प्रसाद जयी है, राधा आप सु राची ॥१॥
वादी कुवुद्धि किए वहु कामण, नटवी ज्यु वहु नाची।
दूर निकार दइ वहु दूती, तृष्णा मारी तमाची ॥२॥
सुज्ञानी कै परप्यारी सु, करनी प्रीति सुकाची।
सुधर्म शीलवती सुखदाइ, युवती याहीज राची ॥मेरे०॥३॥

६ श्रीपद्मप्रभु जिन स्तवन

राग—तोडी

हृदय पद्मप्रभु राचि रह्यो री।
मंगल सकल हर्ष भयौ मेरे, लाभ अनोपम रतन लह्यो री ॥१॥

काम क्रोध प्रवेश न पावत, गेह सुज्ञानी आप गह्यो री।
दुश्मन सकल निकल गये दूरे, सबल प्रताप न जाइ सह्यो री ॥२॥
अब अपने घर साहिब आयौ, चरण न छोडुं चित्त चह्यौ री।
शासन वगस्यौ जिन धर्म सीमा,
करिहौं मैं पिण आप कह्यौ री ॥ ३ ॥ ह० ॥

७ श्री सुपार्श्व जिन स्तवन

राग—सारग-वृन्दावन

सही, न तजुं पार्श्व सुपास कौ ॥न०॥
सकल मनोरथ पूरण सुरमणि, सुरतरु लील विलास कौ ॥न०॥१॥
सुरनर और की करि करि सेवा, हुइ थानक कुण हास कौ।
अधिकौ लही साहिब को आदर, दास हुवै कुण दास कौ ॥२॥
शुद्ध समकित धर जिनवर सेवा, करण पातिक नास कौ।
श्री धर्मसींह कहै मोमन मधुकर, प्रभु पद पद्म सुवास कौ ॥३॥

८ श्री चद्रप्रभु जिन स्तवन

राग—मारु

चद्प्रभु नी कीजइ चाकरी रे, चित चोखे हित चाहि।
सूधी कीधी सेवा स्वामिनी रे, लीधौ तिण भव लाह ॥१॥च०
चाकर होइ रह्यो जसु चंद्रमा रे, लछन मिशि पग लाग।
स्वामी नै सेवक उपमा सारखी रे, जुगति नहीं इण जागि ॥२॥च०
प्रभ नी ठामै प्रभु एहवौ पढ्या रे, योग्य अर्थ ए जाण।
श्री धर्मशी कहै सूधो समझियै रे, पंडित कहै ते प्रमाण ॥३॥चं०

९ श्री सुविधि जिन स्तवन ।

राग—आसा

कबहु मैं सुविधि कौ ध्यान न कीनउ ।
आरत रौद्र विचार अहोनिश,
दुर्गतिवर करिवै घर दीनौ ॥ १॥
दीप ज्यु औरनि पंथ दिखायौ,
आपहि लाग रह्यौ तम लीनौ ।
मेरो तन धन करि सुख मान्यौ,
मणि परखी पिण अन्तर मीनौ ॥२॥
परमारथ पथ नाहि पिछाण्यौ,
स्वारथ अपणौ मानि सगीनौ ।
सुविधि कही धर्म सीख न धारी,
निकल गयौ नर जन्म नगीनौ ॥३॥

१० श्री शीतलनाथ स्तवन ।

राग—कान्हरौ

सुखदाइ शीतल स्वामी रे, शुभ सुमता रस विशरामी रे ।
उपकारी गुण अभिरामी रे, नमीयै एहनै शिर नामी रे ॥ १ ॥
केइ क्रोधी कपटी कामी रे, खल केइ केहि में खामी रे ।
अज्ञानी अगुण अधामी रे, करु तनु सेवा किण कामी रे ॥ २ ॥
जिनवर जग अन्तर्यामी रे, गुण गावै ते शिवगामी रे ।
ध्यावै धर्मशी धर्म धामी रे, पुण्ये प्रभु सेवा पामी रे ॥ ३ ॥

११ श्री श्रेयास जिन स्तवन

राग—सामेरी

केवल वाला रे केवल वाला, कोउ मिलि है केवल वाला।
ताको पूंछु कब तूटेगा, जन्म मरण दुख जाला॥ के० ॥१॥
भव २ ममते पार न पायो, मोह रहट की माला।
पावु ज्ञानी तो अब पूछु, कब यह मिटय कशाला॥ २॥
धन अपनै की शोध न धारी, मद आठू मतवाला।
सो दिन सफल वचन सद्गुरु के, पीवुं अमृत प्याला॥३॥
श्रेय भयौ लह्यौ श्रेयास साहिब, आया समकित आला।
सब सुख कारण अनुभव सानिधि, सु धर्मशील संभाला॥४॥

१२ श्री वासुपुज्य जिन स्तवन

वाह वाह वासुपुज्य नी वाणी, वासव पण आप वखाणी।
आवइ भावइ आफाणी, उवारणा लेइ इन्द्र इन्द्राणी रे॥१॥
मधुर ध्वनि गाज मंडाणी, योजन लगि सर्व सुणाणी रे।
सुर नर तिरि सहु समझाणी, अतिशय पैंत्रीस आणी रे॥२॥
वैर वाता सहु विसराणी, पशु ए पिण प्रीति पिछाणी रे।
धर्मशील सूधा सचाणी, शिवरमणी तणी सहनाणी रे॥३॥

२३ श्री विमल जिन स्तवन

राग—मल्हार

विमल जिन विमल तुम्हारा ज्ञान ।
परखै लोक के सकल पदारथ, षट् द्रव्य नीकी खान ॥१॥ वि०
मिथ्या, अविरती योग कषायै, बंध सत्तावन जान ।
अष्ट कर्म, इक सौ अट्ठावन, प्रकृति तजी पहिचान ॥२॥ वि०
आपहि आप सु' आप पिछाण्यौ, परगुण नाहिं प्रमाण ।
धरि धर्म ध्यान पिछान सुक्क पथ, थिर बैठो शिव थान ॥३॥ वि०

२४ श्री अनतनाथ स्तवन

राग—सोरठ

अनंतनाथ रा गुण अगम अनंता, साभलजो सहु संता ।
रयणायर में गिणत्ती रयणे, मुनि न कहै मतिमंता ॥१॥
मध्य अनंतानंत छयें में, थोवा सिद्ध अनंता ।
एक निगोदी जीव अनंता, वलिय वनस्पति वंता ॥२॥
काल पुग्गल आकार अनुक्रम, अधिक अनंतानंता ।
श्री धर्मशी कहै ए सर्दहिजो, साखी सूत्र सिद्धंता ॥३॥

१५. श्री धर्मनाथ स्तवन

राग—धन्याश्री

धर मन धर्म को ध्यान सदाइ।
नरम हृदय करि नर म विषय में, कर म करम दुखदाई।धर।१॥
धरम थी गर्म क्रोध के घर में, परमति सरमति लाई।
परमातम शुद्ध परमपुरुष भज, हर म तुं हरम पराई॥२॥
चरम की दृष्टि विचर मती जिवड़ा, भर म भरम मत भाई।
शरम वधारण शर्म को कारण, धर्म ज धर्मशी ध्याई॥३॥

१६. श्री शान्ति जिन स्तवन

राग—वेलाउल अलहियौ

श्री शान्ति जिनेश्वर सोलमौजी, शान्तिकरण सुखदाइ।
नाम प्रसिद्ध जस निर्मलो, पूजै सहु सुरनर पाय हो॥श्री०॥१॥
आयउ शरण उवारियौ जी, पारेवो धरि प्यार।
दान दियौ निज देह नौ, इम मोटा ना उपगार हो॥श्री०॥२॥
उदरे आवी अवतर्याजी, अधिकाई करी एह।
मरकौ उपद्रव मेटियौ, हर्ष्यौं सहु देश अछेह हो॥श्री०॥३॥
भव एके हिज भोगवी जी, दीपत पदवी दोय।
चावौ चक्रवर्ती पाचमौ, सोलम जिनवर सोय हो॥४॥
समरथ ए लह्यौ साहिवौ जी, कमणा नहीं हिवै काय।
सेव्या वाछित हुवै सदा, इम कहै धर्मशी उवझाय हो॥श्री०॥५॥

१७. श्री कुंथुनाथ स्तवन

राग—पंचम

शुभ आतम हित साधि रे साधि,
उलझ्यौ परसु म करि उपाधि ॥शु०॥
तु हिज राजा तुं हिज रंक, सुणि दृष्टान्त ज्युं होइ निशंक ॥१॥
करि नव नव भव कीडी कुंथु, क्रमि सर्वारथ सुर जिन कुंथु ।
छठौ चक्रवर्ती साधी छः खंड, पदवी दोइ पाई परचंड ॥२॥
इण हिज वलि दे उपदेश, केई तार्या टालि कलेश ।
आप तुं अंतरदृष्टि सुं देख, साची धर सदा गुरु धर्मशीख ॥३॥

१८ श्री अरनाथ स्तवन

राग—कडखौ

कहै अरनाथ इम. अरति रति क्यौं करौ,
आथि अरहट घडी एम आखी ।
भरिय खाली हुवै नाइ खाली भरी.
सूर्य शशि भमइ इण वात साखी ॥ १ ॥
अरहु मन ठाम नै काम पिण वस करौ,
अरहु मत द्वेष मत मान धारौ ।
काल रंक राव नै केडि फिरतौ रहै.
वहै सरिसौ नहि कोइ वारौ ॥ २ ॥

सुणौ अरनाथ अरदास सेवक तणी,
स्वामी कही एह धर्म शीख साची।
तेह पलिस्यैं नहीं तोड़ तरिसुं तिणै,
राज री भगति में रहिस राची ॥ ३ ॥

१९. श्री मल्लिनाथ स्तवन

राग—सिन्धु

मल्लि जिनेसर तु महामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल।
पिता तणी पिण चिन्ता पल्ल, सगला दूर किया अरि सल्ल ॥१॥
अहो अहो ताहरी अथग अकल्ल, आपणै रूप रचाइ अवल्ल।
करि जीमण इक एक कवल्ल, भरय तिहा भोजन भल भल्ल ॥ २ ॥
आपणा जे अरि मित्र असल्ल, एकान्ते धरि एक एकल्ल।
जुगति देखाई तें भल जल्ल, दुर्गंध नासै भूत दहल्ल ॥ ३ ॥
तिण सु अपणइ केहो तल्ल, चारित्र लीधौ चोखी चल्ल।
अरिहन्त पद धर्म शील अदल्ल, पाली पहुतो मुगति महल्ल॥४॥

२०. श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन

राग—जैतश्री

सब मे अधिकी रे याकी जैतश्री, काहू और न होड करी ॥स०॥
आठों अंग जोग, [illegible], उद्धत मार्यौ मोह अरी ॥ १ ॥

अन्तर वहि तप जप आरा वे, जोर मदन की फौज जरी ।
ज्ञानी हनी ज्ञान गुरजा सु, ममता पुरजा होइ परी ॥ २ ॥
अनुभव वल सु भौदल भागे, फाल फतह करी फौज फिरी ।
कहइ धर्मशी मुनिसुव्रत दाना, देत सदाइ मुगतिपुरी ॥ ३ ॥

२१. श्री नमि जिन स्तवन

राग—श्री राग

नित नित नमिजिन चरण नमुं ।
मनहि मनोरथ उपजत मेरे, भमर होइ प्रभु पास भमु ॥ १ ॥
न नमु और कौ तव सव निंदा, खलक करौ तोइ वचन खमुं ।
लालच लोभ किही नही लागुं, राति दिवस जिन रंग रमूं ॥२॥
गुण गण गान इन्हों के गावुं, दुर्गति के दुख दूर गमूं ।
श्री धर्मशी कहै इण सें राचुं, दूजा इन्द्रिय विषय दमूं ॥ ३ ॥

२२. श्री नेमिनाथ स्तवन

राग—वसत

करणी नेमिकी, काहू और न कीनी जाय । क०
तरुण वय परणी नहीं हो, राजिमती यदुराय ॥ १ ॥
जीव पुकार सुणी जिणें हो, करुणा मन परिणाय ।
गज रथ तजके पुनि गह्यौ हो, शिलाग रथ सुखदाय ॥ २ ॥
ममता वादी-मूकि के हो, सुमता ली समझाय ।
सिद्ध वधु विलसै सदा हो, प्रणमैं धरमसी पाय ॥ ३ ॥

२३ श्री पार्श्वनाथ स्तवन

राग—रामगिरी

मेरे मन मानी साहिब सेवा।
मीठी और न कोइ मिठाइ, मीठा और न मेवा ॥ १ ॥
आतम राम कली ज्यो उलसैं, देखत दिनपति देवा।
लगन हमारी यासु लागी, रागी ज्युं गज रेवा ॥ २ ॥
दूर न करिहुं पल भर दिल ते, स्थिर ज्यु मुदरी थेवा।
श्रीधर्मशी प्रभु पारस परसैं, लोह कनक कर लेवा ॥ ३ ॥

२४ श्री वीर जिन स्तवन

राग—वेलाउल

प्रभु तेरे वयण सुपियारे, सरस सुधा हुं ते सारे।
समवसरण मधि सुणि मधुर ध्वनि, बूझति परषद वारे ॥
सुनत सुनत सब जन्तु जन्म के, वैर विरोध विसारे ॥ १ ॥
अहो पैंतीस वचन के अतिशय, अचरज रूप अपारे।
प्रवचन वचन की रचना पसरत, अब ही पंचम आरे ॥ २ ॥
वीर की वाणी सबहि सुहाणी, आवत बहु उपकारे।
धन धन साची एह धर्मशी, सब के काज सुधारे ॥ ३ ॥

२५ चौवीसी कलस

राग—धन्याश्री

चितधर श्री जिनवर चौवीसी ॥
प्रभु शुभ नाम मंत्र परसादे, कामित कामगवीसी ॥ १ ॥
रागबन्ध द्रुपद रचनापै, माहे ढाल मिली सी।
रोटली गहुं की सब राजी, मागे स्वाद कुं मीसी ॥ २ ॥
सतरैसै इकहुत्तर गढ जेशल, जोरी यह सुजगीसी,
श्री सघ विजयहर्ष सुख साता, श्री धर्मसींह आशीशी ॥ ३ ॥

—:o:—

चौवीस जिन सवैया

आदि ही कौ तीर्थंकर, आदि ही कौ भिक्षाचर,
आदि राय आदि जिन च्यारौं नाम आदि आदि ।
पाचमो रिषभ नाम, पूरै सब इच्छा काम,
कामधेनु कामकुंभ कीने सब मादि मादि ।
मनसौं मिथ्यात मेट, भाव सौं जिणंद भेट,
पावौ ज्युं अनन्त सुख, गावो गुण वादि वादि ।
साची धर्म सीख धारि, आदिहि कुं सेवो यार,
आदि की दुहाई भाई जौ न बोलैं आदि आदि ॥१॥

राजा जितशत्रु संग राणी विजया सुरंग,
खेलै पासा सार पै, तमासा कैसी बात है ।
आप भूप हारि आई, पटराणी जैत पाई,
या तौ अधिकाई गर्भ अर्भ की हिमात है ।
गुण को निपन्न नाम [१]धाम कौ [२]सहस्र धाम,
अैसो है अजित स्वामी, विश्व मे विख्यात है ।
दूसरे जिनंद जैसो, दूसरौ न देव कोउ,
ध्यावौ एक यौही धर्म सीख जो धरातु है ॥२॥

---

१ तेज २ सूर्य

संभव कौ अनुभौ धरि जातैं मिटै ममता समता रस जागै।
पाप सताप मिटैं तब ही जब आपसु आपही की लय लागै।
धर्यो ध्रम सील लह्यो निज लील, जहाँ गुण ग्यान अनंत अथागै।
संभव सभव भाव भलै भज, सभव सौं भव के भय भागैं ॥३॥
पिता कहै नंदन सीख सुनौ, जु चलौ अभिनन्दन वन्दन हेतैं।
नन्दन संवर कौ सुध रावर, [1]स्यंदन धारत है सिवखेतं।
कंद के फंद निकंदन दंदन, जा तनु कुन्दन की छवि देत।
चदन चद सौहै जस उज्जल, चोथो जिनद नमो सुभ चेतैं ॥४॥
सेवकौ अंगज मेघ ज्यु गाजत, वाणि बखाणि सुजांण सुहाता।
चोतीस आपके हैं अतिसै, अधिकैं इक एकही वाणी विख्याता।
जैन के गेन महाजग मंगल, न्याय नु मगल मंगला माता।
पीयूषई टेख धरौ ध्रम सीख, भजौह सुमत्ति सुमत्ति कौ दाता ५
आज फल्यो सुर को तरु अंगण, आज चिंतामणि सो कर आयौ
काम कौ कुभ धर्यो निज धाम, सुधा सनु पांन कराइ धपायौ।
आज लह्यौ रसना रस कौ फल, जा दिन तें जिन कौ जस गायौ।
आज सुदेही दंड ध्रम सील, भयौ पदमप्रभु साहिब पायौ ॥६॥
पारस फास प्रसग कु पाय, भयो है कला यस कंचन जाचौ।
तो भी मिटैं नहि छेदन भेदन, वंधन तातैं सब गुण काचौ।
जैन कु भेट मिथ्यात कु मेटि, ज्यु केवलज्ञान ही कैं रंग राचौ।
न्याय सकार धर्यो सुर नाम कैं, पारस हु तें सुपारस साचौ ७
चंद की सोल कला सबही, वदि पखमे मद दसा मढती है।
याकै तो चौगुणी चौ दुगुणी[2] पुनि, वान विसेप सदा वढती है।

१ सवर को रथ २ वहत्तर कला

ग्यान प्रकास कहै ध्रमदास, सदा जसवास दुनी पढती है।
लछन चन्द करैं नित चाकरी, चद्रप्रभू की कला चढती है ॥८॥

वीते है अनादि काल [1]योनि के जजाल जाल,
चोरासी की फासी सहै तू भी ताकै मधिकौं।
पुण्य के प्रकार अवतार आयौ मानव कै,
पायौ है जिहाज सोइ जन्म जलनिधिकौ।
यारी ममतासौं जोरि ममता सौं ताता तोरि,
आप ही धणी है तू तौ आपणी ही रिधिकौ।
ध्यावौ धर्म सील ध्यान पावौ ज्यु अनंत ग्यान,
सुविधि वतायौ असौं मारग सुविधि कौ ॥९॥

क्रोध विरोध सवे मिटि जात है, धारत है मति राग न धेखैं।
मूलतें [2]सात मिटात है घातक, आवत सम्यक भाव अलेखैं।
ताप सन्ताप मिटैं भवके सव, [3]दंड दसा कवहुं नहि देखैं।
शीतल कौ मुख देखत ही मुझ, [4]हीतल शीतल होत विसेखैं ॥१०॥
पाय श्रेयास जिणिद के पाय, उपाय श्रेयासि [5]अपाय मिटाए।
मातही विष्णु पिता पुनि विष्णु, वडे दुहुं के इक नाम वताए।
इक्ष्वाकु कै वस वृपें अवतंस है, उच्चकै चन्द सवै ही सुहाए।
इग्यारमे साहिव की लही सेव, इग्यारमी रासि सवे ग्रह आए ११

१ चोरासीलाख जीवायोनि २ चार अनतानुबंधिया, तीन मोहिनी एवं सात
३ कलह ४ हियो ५ विघन

केईतौ [1]कैलास कौं रहास करि वैठि रहे,

काहू को तौ वास है वंबूल [2]वोधितरू को।

कोऊ [3]जल-राशि सेप नाग पास सोवत है,

काहू को रहास कामधेनु पूछ खुरकौ।

कौऊ तौ अकास अवकास माहे भटकत,

कोऊ कहे मेरौ मेर मैं हूं धणी धुरकौ।

केवल प्रकासी अविनासी हैं अनैंसी ठौर,

तहाँ कीनौ वास वासपूज सिधपुरकौ ॥१२॥

विमल विसेप ग्यान विमल कला निधान,

विमल विचार सार सुद्ध साधु मगमे।

केते करे उपगार तारे भव्य नर नारि,

बूडते ससार वार अबुधि अथग मे।

एक तेरी करी सेव सव ही मनाए देव,

सबही के पग पैंठे एक गज पग मे।

सुद्ध धर्म सील साथ, अैसो देव कौन आथ,

जैसौ है विमलनाथ तेरो जस जग मैं ॥१३॥

आदि के [4]अनंतानत, सिद्ध सवे जीव सत,

दूसरैं निगोद जीव तीजैं [5]वनरास है।

---

१ महादेव २ कृष्ण वासी बौधतरु, पीपल ३ समुद्र।

४ सिद्धा निगोय जीवा, वणस्सई काल पुग्गला चैव।

सव्वमलोगनह पुण, तिवगाऊ केवल णापि ॥ २ ॥

५ वनस्पती

चौथो काल कौ सरूप, पंचमौ पूगल रूप।
छट्ठो भेद वेद तू अलोक को आकास है।
इण के त्रिवर्ग मान, केवल दरस ग्यान,
ऐसैं धर्म सीख ध्यान अतर प्रकास है।
आप तू अनतनाथ, नाम है अरथ साथ,
पाचु ही अनंत कहे, ते भी तेरे पास है ।१४।
पुद्गल कैं संग सेती, पुद्गल ही आई मिलै,
ज्ञान दृष्टि जगी नाहि लगी दृष्टि चर्म चर्म।
आतम अनंत ज्ञान सोई धर्म थान मान,
और ठौर ठौर ठौर, करं सोइ कर्म कर्म।
विश्व मे रहे है व्याप, प्राणी करै पुन्य पाप,
आपकुं न जानै आप, भूल्यौ फिरै भर्म भर्म।
ध्यावौ प्रभु धर्मनाथ, शुद्ध धर्म शील साथ।
धर्म की दुहाई भाई, जौ न बोलैं धर्म धर्म ।१५।
छोरि पटखड भार, चौसठि हजार नारि,
छन्नू कोरि गाम छोरि तोरि नेह तंत तत।
बाजै बाजैं तीन लाख, लाख लाख अभिलाप,
तजिकै चौरासी लाख, तेजी रथ दति दति।
चित्त मे वैराग धारि, वित्त के भडार छारि,
भीनौ उपशात रस, कीनौ मोह अत अंत।
याके गुण हैं अनन्त, धर्म्मसी कहै रे संत।
संति की दुहाई भाई, जो न बोलैं संति सति ॥ १६ ॥

जल कै उपल जैसें करणैं यथाप्रवृति,
कर्म थिति तुच्छ कै परस देस ग्रंथ ग्रंथ।
कीनो है अपूरवकरण अनुभौ प्रमांन,
ज्ञान कै मथान सु मिथ्यात मोह मथ मथ।
करण अनिवृति आयो, धर्मसील ध्यान ध्यायौ।
पायौ है उदं सरूप समकित कौ पंथ पथ।

कुंथ कुंथ सम लीनों, चक्रि पद हेय कीनो,
कुंथ की दुहाई भाई, जो न वोलै कुंथ कुंथ ॥१७॥

सुदर्शन गात सुदर्शन तात है, देवीय मात माहा जसनामी।
लह्यो अवतार भयौ चक्रधार, तिथंकर ह्वै पदवी दोइ पामी।
जाकै प्रताप मिटै सव ताप, जपौ जप ताप सु अन्तरजामी।
तरौ भव पाथ[1] सदा सुख साथ, नमौ अरनाथ अढारम
सामी ॥१८॥

जिनकैं मुर कुंभसौ कुंभ पिता पुनि, मात प्रभावित पुन्यकी पोपी
सुपने दस च्यार लहे सुविचार, भयौ जिनको अवतार अदोषी
कितने नृप तारि किए उपगार, लह्यौ सिव द्वार भवोदधि सोपी
मति को मतभेद कहौ कोउ कैसें हुं, मल्लिकी चहि असह्लिकी
चोखी ॥१९॥

---

१ जल

मात के कूखि लह्यौ अवतार, भयौ व्रत्त कौ अभिलाख[1] अमंदौ[2]
तात कियौ व्रत्त उच्छव देस में, सेस प्रजाहु यही परिछंदौ[3] ।
मोटी भई तप की महिमा मुनि-सुव्रत नाम कीयौ निज नंदौ ।
तीनहु लोक कौ नाथ तिर्थंकर, वीसमौ वीस विसे करि
वंदौ ॥२०॥

आलस[1] मोह-कथा[2] अवहीलन,[3] गर्व[4] 'प्रमाद निद्रा[6]
भय[7] ध्रांमी ।
तद्धनता[8] पुनि सोग[9] अग्यांन[10], विपय[11] कुतूहल[12] रामति
[13]कांमी ।
त्याग छ सातक घातक काठिए, धारि भली ध्रमसीखसु धामी ।
अनाथकौ नाथ नमौ नमिनाथ, सनाथ किए सबही सिर
नामी ॥२१॥

राजीमती सती सेती नवा भवाहु कौ प्रेम
तोर्‍यौ पुनि जोर्‍यो भाव प्रेम न अप्रेम प्रेम ।
अैसौ महा ब्रह्मज्ञांनी, शुद्ध धर्म्मशील ध्यानी,
यासौ निकलंक कोहैं. सोहै सम हेम हेम ।
धन्य सिवादेवी मात, जाकैं सोलै अंग जात,
महा सत्य दृढ शुभ रिष्ट पांचौ नेमि नेमि ।
छट्ठौ रहनेमि नामी, तारे सब नेमि स्वांमी,
नेमिकी दुहाई भाई, जो न बोलै नेमिनेमि ॥ २२ ॥

देवलोक दसमे तैं आप अवतार आयो,
पायो धुरि दसमी जन्म पोस मास मास ।

---

१ डोहलो २ अधिको ३ परिवार ।

कासी देसवासी पुरी दुरी नाहि वानारसी,
आससेन पिता, माता वामा जसवास वास।
जैन धर्मसींह जागैं, पाप दुख पील भागैं,
जाकैं आगैं देवनिके, देव भए दास दास।
पूरैं सब ही की आस, पद्मा निवास पास,
पास की दुहाई भाई, जो न बोलैं पास पास ॥ २३ ॥

गुण कौ गंभीर खीर, सोनैसो सरीर वीर,
अैसो देव महावीर, धीरनि में धीर धीर।
दान को उदौ उदीर दुनी कीनी दवा गीर,
दीनौ सवा लाखहु कौ, देवदुष चीर चीर।
मारे मोह द्रोह मीर ग्यानी गुने गंगनीर,
तारे तकसीर वारें, पायौ भवतीर तीर।
साचौ जैनधर्म सीर वीर मे वीराधिवीर,
वीर की दुहाई भाई, जो न बोलै वीर वीर ॥ २४ ॥

साधु भला दस च्यार हजार, हजार छतीस सु साधवी वदौ।
गुणसट्ठि सहस्स सिरैं लख श्रावक, श्रावकणी दुगुणी दुति चढौ
चौवीसमे जिनराज कौ राज, विराजत आज सवै सुखकंदौ।
श्रीध्रमसी कहै वीरजिणिंदकौ, शासनधर्म्म सदा चिरनदौ॥२५॥

इति चौवीस तीर्थंकरा रा सवैया संपूर्ण ॥ प० सामजी लिखत बीकानेर मध्ये सवत् १७८१ वर्षे मिती आसाढ सुदि ६ दिने।

—:o:—

नवकार छंद

कामित संपय करण, तम भर हरणं सहस्स कर किरण ।
पणमसि सद्गुरू चरण, वरणिस नवकार गुण वरण ॥ १ ॥
वरणिस नवकारं सहु तत सारं, एहिज आतम आधार ।
अनादि अपार इण ससारं, जिन शाशन में जय वारं ॥
इण पचम आर इण अवतार, श्रावक कुल लहि श्रीकार ।
सहु मंत्रे सारं सव सुखकार, नित चित धारं नवकार ॥ २ ॥
सहु में सिरदार, अगम अपारं, अक्षर मे जिम ॐकारं ।
ध्याने चित धारं विपमी वार, अड़वढ़िया नै आधारं ॥
राखे इकतारं अति हितकारं, परभव पण ए उद्धारं ॥स०॥ ३ ॥

पद पच मझारं पंच प्रकारं, पंच परमेष्ठि अवतारं ।
वरतें इण वारं केवल धारं, बोल्या अरिहत गुण वार ॥
कर्म अप्ट क्षयकारं मुगति मझारं, सिद्धगुण आठे सभार ॥स०॥४॥

गुण दुगुण अढारं धुरि गणधारं, आचारज शुभ आचार ।
उवझाय उदार सुत्र सुधारं, गुण पचवीसे आगार ॥
भल तप भंडारं ए अणगारं, इण गुण दउढा अढारं ॥सहु०॥५॥

शिव नाम कुमारं, कष्ट मझारं, ठग वसि पड़ियो इकतारं ।
तिहागुण नवकारं खड़ग प्रहारं, नाखि कड़ाहे निरधार ॥
नलि कीध तयारं सीधो सार, सोवन पुरिसौ श्रीकार ॥सहु०॥६॥

पति कीध विचार जिन मति नारं, श्रीमति मारवीय धार ।
घटथी पुफभारं आणि अवारं, तिय किय घट कर संचारं ॥
फीटी अहि फार, हुवउ हार, धन ए जिनमत जप धारं ॥स०॥७॥

वलि विणठी वार साभ सवारं, दडाकार कातार ।
शात्रव सिरकारं सिह शिकार, दावोदार दरबार ॥
गिण वैठि वेगार कारागार जय सहु ठामे जयकार ॥सहु०॥८॥

विणजे व्यापारं वलि विवहार, लक्ष्मी आप वहे लारं ।
परिवल परिवार पुण्य प्रकार, वोले वहु जस वाजार ॥
वाहे इम वार कुशल करार, करे सहु उपरि कण वारं ॥सहु०॥९॥
इम वहु अधिकारं गुण विस्तारं, पामें कहता कुण पार ।
धुरि ॐ ह्रीं धारं सौ हजार, जपता हुवै जय जेतार ॥
पूरव दस च्यार सूत्रे सार, दोउ भवसुख दातार ॥सहु०॥१०॥

नित चित धरि नवकार, जप्या दुख दूरे जावे ।
नित चित धरि नवकार, परवल संपति सुख पावै ।
नित चित धरि नवकार, शत्रु भय न गिणै साकौ ।
नित चित धरि नवकार, वाल पिण न हुवे वाकौ ।
तिम रोग शोक चिन्ता टलै, सकट जावै दूर सही ।
हुवै सकल सुख विजयहरख, कवि धर्मशी उवभाय कही ॥११॥

—:o:o:—

ऋषभदेव स्तवन

ढाल—सफल ससारनी

त्रिभुवन नायक ऋषभ जिन ताहरौ,
सुजस साभलि मन ऊमह्यौ माहरौ।
तारण तरण नहीं को तो सारीखो,
पुहवि सहु सोझि नैं ए लह्यौ पारिखौ ॥१॥
वलि सुणौ आदिजी माहरी वीनति,
तुम्ह सेवा तिका लहीय निधि तीन ती।
त्रिकरण सुद्ध इकतार तोसुं कीयौ,
हिव विशेषै करी हरखियौ मुझ हियौ ॥२॥
भगवन माहरै तुंहिज साहिव भलौ,
तुं किम लेखवै नहीय मोसुं तलौ॥
विरुद धारो विया चाल वीजी चलौ।
पूछस्यू हुं पिण जाव पकड़ी पलौ ॥३॥
धरिय सहुनी दया प्रथम महाव्रत धरौ,
अरि हणी नाम अरिहंत किम आदरौ।
व्रत वीयौ धरी मृषावाद तजियौ वली,
तुंहिज कहै वात अणदीठ अणसांभली ॥४॥
दाखवै कांइ लीजै नहीं अणदियै,
लालची तुं हिज जिण तिण तणा गुण लियें।

जाणि नववाड़ि शुद्ध शीलव्रत जोगवै,
पंच अंतराय हणि भोग सहु भोगवै ॥५॥

घरि परिग्रह तजी कीध इच्छा घणी,
सहस चौरासी शिष्य लाख त्रण शिष्यणी।
मुखि कहै कोई सेवक नहीं माहरै,
अणहुतै कोड़ि इक देव सेवा करै ॥६॥

नयण निरखौ नहीं श्रवण ना सांभलौ,
अंश पिण जीभ सुं स्वाद नां अटकलौ।
किणही इन्द्रिय सुं काइ जाणौ नहीं,
तोई सर्वज्ञ रौ विरुद धारौ सही ॥७॥

क्रोध अलघौ करी कीध कोमल हियौ,
किण विधै काम रिपु हणिय दहवट कियौ।
कीजै नहीं मान उपदेश एहवा कही,
नेट तुं किणही नै शीश नामें नहीं ॥८॥

कपट नहीं कोय तौ भगत किम भोलवौ,
अवगुण पारका देखि किम ओलवौ।
किणहि बातें कदे लोभ जो ना करौ,
धरिय त्रण रतन नै केम जतने धरौ ॥९॥

भिक्खु अणगार निज नाम मन शुद्ध भणौ,
तीन गढ छत्र त्रिण राज त्रिभुवन तणौ।
वचन गुप्ते वली नाम वाचंयमा,
योजन वाणि सुं गाजै च्यारुं गमा ॥१०॥

कनक आसण ग्रहै कहै अकिंचणा,
वींजवै चमर नै वलिय निर वींजणा।
समिती तीनज धरौ तौ इ साचा यति,
पास राखौ नहीं ओघौ नै मुहपति ॥११॥
पर भणी कहौ मत थाओ परमादिया,
काइ राइ प्रायश्चित आप न करो क्रिया।
जाव हसावरा जुगति सु जाणस्यौ,
आखर महिर मो ऊपर आणिस्यौ ॥१२॥
विहुं मुखे बोलतो लोक निन्दा लहै,
केवली होइ नै विहु मुखे तु कहै।
भला भला भव्य तोइ साच करि सर्दहै,
जम तणी रात जाया तिके जस लहै ॥१३॥
प्रकृति म्हारी इसी काइ छै पापिणी,
ओछी अधिकी सही ना सकु आपणी।
वडिय ताहरी क्षमा वात तिण सहु वणी,
ध्यान हिव ताहरौ तु हिज माथै धणी ॥१४॥
अवगुण माहरा ते सहु अवगणी,
भगवन देव सेवक करो मो भणी।
स्वामी सेव्या विजयहर्ष शोभा घणी,
वृद्धि वलि थाय जिन धर्मवर्द्धन तणी ॥१५॥

॥ कलश ॥

इम विलसी श्रीअरिहंत पदवी, धन्य जगगुरु जगधणी,
हिव सिद्ध हुवा आपरूपी जाव न दीये पर भणी।
म्हण गुण प्रशंसा माहि निंदा काइ जाणौ आपणी,
आपजो अमनै इरि गहिज अरज श्री धर्मशी तणी १६॥

:—:—:

शत्रुंजय वृहत् स्तवन

(आलोयणा पचीसी)

सैत्रुंजै नायक वीनति साभलौ, श्री रिषहेसरु स्वाम।
दीनदयाल तुम्हाने दाखिवु, अतर बीतग आम ॥ सै० ॥१॥

नटवानी परि भव भव नाचता, विविध वणाया वेश।
कर्म वसे करि भमते मैं किया, केइ पाप किलेश ॥ सै० ॥२॥

केवलज्ञानी तुम्ह आगल किसु, देखावीजै दाख।
पिण आलोयण लीजै आपणी, श्री अरिहतनी साख ॥सै०॥३॥

पाप टलै नही आलोयण पखै, कहे ज्ञानी सहु कोय।
परही मूक्या सिरनी पोटली, हलवी गावड़ी होय ॥ सै० ॥४॥

अरिहत देव सुसाधु गुरू इसा, जैन धरम तत्त जाण।
समकित साचौ एनवि सर्दह्यौ, अधिक मिथ्यामति आण ॥सै०॥५॥

पहिले आश्रव हिंसा प्राण नी, कीधी केइ प्रकार।
जयणा कायनी जीवनी, पामिस किम भव पार ॥ सै० ॥६॥

कूड कपट कलि विकला केलवी, कीजइ छै केइ काम।
मृषावाद पगोपग मोकलौ, सी गति थासी स्वाम ॥ सै० ॥७॥

अधिको लीजै ओछो दीजिये, रीति इसी दिन रात।
अदत्तादान घणा लागै इसा, तरिसु किण परि तात ॥ सै० ॥८॥

तीन विधेइ सुर नर त्रियच ना, मैथुन सुं मन लाय।
काम विटबन केम कही सकुं, जाणै तुं जिनराय ॥ सै० ॥९॥

नयणे करि निरखो जी, हियडै वलि हरखौ ।
सत्रुजय सरीखो जी, पुहवि न को परखौ ॥ ३ ॥

मद मच्छर छोड़ी जी, जिन सु मन जोडी ।
केइ सीधा कोडी जी, ठावा इण ठोड़ी ॥ ४ ॥

सूत्र सिद्धान्ते जी, भाख्यो भगवंते ।
अनादि अनंते जी, भेटउ तजि भ्रंते ॥ ५ ॥

भवसमुद्र तिराजै जी, परवत नी पाजै ।
जाण्यो चढीय जिहाजै जी, सिवपुर ने साजै ॥६॥

सिद्धक्षेत्र समीपै जी, पाप न को छीपै ।
देहरा अति दीपै जी, जग चखने जीपै ॥ ७ ॥

जिण पहिलउ जाणी जी, प्रतिमा पहिचाणी ।
आसति बहु आणी जी, पूजौ भवि प्राणी ॥ ८ ॥

बावन देहरिया जी, परिदखणा परिया ।
वंदउ त्रिण वरिया जी, धर्म ध्यानइ धरियां ॥ ९ ॥

रायणि तलि पगला जी, आदि तणा अगला ।
संघ वादै सगला जी, धरम तणा ढिगला ॥ १० ॥

शिववारी दिस ही जी, वलि खरतरवसही ।
अदबुद ऊलसही जी, सबला बिंब सही ॥ ११ ॥

सूर कुंड सवाइ जी, देख्या सुखदाइ ।
चेलणा[१] तलाइ जी, उलकाभूल आई ॥ १२ ॥

---

१ चंदणा

सिद्धवड़हि सदाई जी, दीपै सुर दाई।
प्रगटी पुण्याई जी, जिण यात्रा पाई ॥ १३ ॥
सहिनाण संभार्या जी, श्री धर्मसी धार्या।
जिण आइ जुहार्या जी, तिण आतम तार्या ॥ १४ ॥

शत्रुंजय गीत

सरव पूरव सुकृत तीये किया सफल,
लाभ सहु लाभ में अधिक लीया।
सफल सहु तीरथा सिरे सैंत्रुज री,
यात्रा कीधी तिया धन्न जीया ॥ १ ॥
सुजस परकासता, मिले सघ सासता,
शास्त्रे सासता विरुद सुणिजे।
ऋषभ जिणराज पु डरीक गिरि राजीयो,
भेटिया सार अवतार भणिजे ॥ २ ॥
काकरैं काकरैं कोडि कोडी किता,
साधु शुभ ध्यान इण थान सीधा।
साच सिद्धक्षेत्र शुद्ध चेत सु सेवता,
कीध दरसण नयन सफल कीधा ॥ ३ ॥

केइ उपाय करी मेलण करूं, परिग्रह विविध प्रकार।
विरति करूं पिण मन न रहै वलि,
तौकिम हुवै भव पार (निस्तार) ॥सै०॥१०॥

इन्द्रिय पाचे आप मुराहिदा, अधिक करे उन्माद।
सवर भाव न आवै सर्वथा, पड़्यो जे प्रमाद ॥ सै० ॥११॥

कोइ स्वभावे रेकारो कहै, चटकी तुरत चढंत।
क्रोध विरोध वधारू केतला, आवै किम भव अंत ॥सै०॥१२॥

आपणा जाणपणा नैं आगलै, गिणुं न केहनैं गान।
विनय वेयावच्च नहींय विवेकना,
अति मोटो अभिमान ॥सै०॥१३॥

मीठी मीठी बात कहुं मुखे, जीजी करे मिलि जाइ।
पाइ पसारूं पेसी पेट मे, माया सगी ज्युं माइ ॥सै०॥१४॥

महारो महारो करि धन मेलवु, लोभ वसे लयलीन।
नरक तणा घर च्युं छु नव नवा, इण मे मेख न मीन॥सै०॥१५॥

मन तौ खिण पिण वस नहीं म्हारौ, झाझो वचन झखाल।
काय चपलता कहियैं केतली, जासी किम भव जाल॥सै०॥१६॥
अछता पण गुण वर्णुं आपणा, परनिन्दा परकाश।
अवर अदेखो आणुं अति घणौ, एहवौ मूल अभ्यास॥सै०॥१७॥
राजकथादिक विकथा राग सु, वारु कहुंअ वणाय।
समता धरि न करी मन शुद्धसुं, सूत्र सिद्धान्त सझाय॥१८॥
काणौं आधौ टूंटौ कूबड़ौ, देखि हंसू निशदीश।
आखिर कर्म उदय ते आविस्यै, जाणे ते जगदीश ॥१६॥सै०॥

पनरै कर्मादान न परिहर्‍या, आदर्‍या पाप अठार ।
निस्तारौ बीजु थासै नहीं, तु हिव मुझ नै तार ॥२०॥सै०॥
जीवायोनि चौरासी लाख जे, दीधा तेहनै दुःख ।
वाद नं वास भेलो कहो क्यु वणै, मुझ नै दे हिव मुक्ख ॥२१॥सै०॥
जाण अजाण किया जिके, सहु भमता ससार ।
देइ मन शुद्ध मिच्छामिदुक्कडं, आलोऊं बार बार ॥२२॥सै०॥
तारण तरण विरुद छैं ताहरौ, अशरण शरण आधार ।
आयौ आश धरी तुझ आगलै, समकित दे मुझ सार ॥२३॥सै०॥
समकित ताहरौ आया साहिबा, परहा जायै पाप ।
राति अधारो किम करि रहि सकै, उगैं सूरज आप ॥२४॥सै०॥
इम सकल सुखकर विमल गिरिवर आदि जिनवर आगलै ।
आलोवता मनशुद्ध इण विधि सफल सहु आशा फलै ॥
शुभ गच्छ खरतर सुगुरु वाचक विजयहर्ष वखाणए ।
उवझाय कहै श्रीधर्मवर्द्धन धर्म ध्यान प्रमाणए ॥२५॥

शत्रुंजय तीर्थ स्तवन

तीर्थ सैत्रुंजे जी रहिवा मन रजे,
(सेवकना) भव भय भंजै मल पातक मंजरे ॥१॥
सिद्धाचल सीमैं जी यात्रा करि जीमे,
निश्चय इन नीमैजी भमय न भव भीमइ ॥२॥

तासु दुरगति न है नरक त्रियच री,
मुगति सुर नर लहै सुगति सारी।
विमल आतम तिको विमलगिरि निरखसी,
धनो धन श्री धर्मसील धारी ॥ ४ ॥

सिद्धाचल महिमा वर्णन

रतन मे जैसे हीर नीरनि में गंगा नीर,
फूलनि की जाति मे अमूल फूल केतकी।
सब ही उद्योत मे उद्योत ज्यु प्रद्योतन को,
ज्योति मे सुज्योति ज्यु मुदै है ज्योति नेतकी ॥५॥
सब ही सुशीख मे सुधर्म सीख हेत की है,
तेजनि तूरिने टेक राखी जेसे रेतकी।
योजन पैंताल लक्ष सिद्धनिके खेत है पैं,
सेत्रुंजे विशेष रेख राखी सिद्धखेत की ॥५॥

विमलगिरि स्तवन

राग—मल्हार

विमलगिरि क्यु न भये हम मोर।
सिद्धवड रायण रुंख की शाखा, झूलत करत झकोर।वि०।१।
आवत सब रचावत अरचा, गावत धुनि घन घोर।
हम भी छत्र कला करि हरखत, कटते कर्म कठोर।वि०।२।
सूरति देख सदा उल्हसै मन, जैसे चंद चकोर।
श्री रिषहेसर सु श्रीधर्मसी, करत अरज कर जोर। वि० । ३ ।

धुलेवा ऋषभदेव छन्द

दोहा

सत्य गुरू कहि सुगुर रा, प्रणमुं मन शुद्ध पाय।
हुता मूढ ते पिण हुआ, पण्डित जासु पसाय ॥ १ ॥

सेवा लहिजै सुगुर री, पुण्य उदै परतख।
ज्योति अधिक दीधी जिणैं, चावी तीजी चख ॥ २ ॥

जिकौ न पूरौ जाणतौ, ठठौ मींडौ ठोठ।
वाचै अविरल वाणी सु, पुस्तक भरिया पोठ ॥ ३ ॥

दीपक जिण हाथै दियै, गुरे बतायौ ज्ञान।
धरम करम माहे धुरैं, धरिजइ तिणरौ ध्यान ॥ ४ ॥

प्रथम नमी गुर जिण प्रथम, गाउ तसु गुण ग्राम।
कविजन कंठ शृंगार कुं, दीपै मोतीदाम ॥ ५ ॥

मोतीदाम छन्द

दिपें गुण निम्मल मुत्तियदाम,
सेवुं मन शुद्ध तिको हिज स्वाम।
सुरासुर सर्व करै जसु सेव,
दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ ६ ॥

केइ जगि देवल देवा कोडि,
हुवै नहीं कोइ इयें री होडि।

नमैं नर नारी सको नितमेव,
दियैं सुख वंछित ऋषभदेव ॥ ७ ॥
पूरैं प्रभु आस सदा परतख,
वडा सुरकुंभ किना सुरवृक्ष।
वहु जिण दान दिपाया वेव,
दियै सुख वछित ऋषभदेव ॥ ८ ॥
छती छती देखि पवन छतीस,
जपै सहु ध्यावैं जेम जतीस।
भजै इक चित्त लह्यो जिण भेव,
दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥ ९ ॥
खलका मालम देश खडग्ग,
जपै ए तीरथ तेम अडिग।
धुनो धन धन्नहि गाम धुलेव,
दियैं सुख वछित ऋषभदेव ॥ १० ॥
उदैपुर हुती कोस अढार, ए ओ वाट विषम अपार,
सल ˙ गात्र सजैव, दियै सुख वछित ऋषभदेव ॥ ११ ॥
पुलै पगवट्ट उजाड पहाड़, दहुं दिशि केइ कराड़ दराड़,
झराड़ झागी रा झाड झुकेव, दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥१२॥
पुढाणा खाला नाला खाड, चिहुं दिसि ताकै चोर चराड़।
निकेवल जात्र्या नाम न लेव, दियै सुख वंछित ऋषभदेव ॥१३॥
किता केइ मारग माहि कलेस, आवै केइ यात्री लोक अशेष।
सरै छै काम तिया सतमेव, दीयै सुख वंछित ऋषभदेव ॥१४॥

दुर हु देवल शोभा देख, वदै वाह वाह प्रकाश विशेष ।
रह्यो रवि भूमि विमान रचेव, दीयैं सुख वछित ऋषभदेव १५
तिलक्का तोरण थोरण तत, भला चित्त चोरण कोरण मंत ।
वहु हुं वखाण किताक अवेव, दीयै सुख वछित ऋषभदेव ।१६।
जिणेसर विंब झिगामिग ज्योति, अहोरति आठु जाम उदोत ।
विजोडी देहरी बावन वेव, दीयै सुख वंछित ऋषभदेव ॥१७॥
घसीजें केसर चदन घोल, रचीजै पूज सदा रग रोल ।
अवल्ले फूले धूप उखेव, दीयैं सुख वंछित ऋषभदेव ॥१८॥
जाणौं तिण वेला जोवों जाय, भला केइ जात्री आइ भराय ।
हजारै गानै लाभे हेव, दीयैं सुख वछित ऋषभदेव ॥ १६
रहे नहीं नामै कोई रोग, वली सहु जायै सोग वियोग ।
सदा हुवै भोग संयोग सवेव, दीयै सुख वछित ऋपभदेव ।२०।
सही सहु तीरथ मैं सिरदार, इणै इहरत्त परत्त उधार ।
टली अन्तराय भली सहु टेव, दीयैं सुख वंछित ऋषभदेव ।२१।

कलश

अलग टली अतराय, प्रगट सफली पुन्याइ ।
गणधर गुरु गच्छराज, सूरि जिणचन्द सवाइ ॥
गच्छ खरत्तर गहगाट संवत सतरै से सट्ठिम, (१७६०)
वसत ऋते वैसाख, अवल उजवाली अट्ठम ॥
जातरा कीध सखरी जुगति, वडा साध साथैं वडिम ।
सुख 'विजयहरष' जिण सानिधै, आखै श्रीधर्मसीह इम ॥ २२ ॥

:—&—:

श्री शांति जिन स्तवन

सेवो भाई सेवो भाई शांति जिन सेव रे।
दूजो नहीं कोइ ऐसो देव रे ॥ १ ॥
क्रोध विरोध भर्या सुर केवि रे।
निकलंक निरदोष यहु नित मेव रे ॥ २ ॥
हाथ रतन आयो छै हेव रे।
काच तजो पाच गहौ परखेव रे ॥ ३ ॥
केशर चंदन पूज करेव रे।
लाहो नरभव इह विध लेव रे ॥ ४ ॥
कहै ध्रमसी जोडि कर वेव रे।
तुझ सेवा मुझ याहीज टेव रे ॥ ५ ॥

चन्द्रपुरी शांति जिन स्तवन

जग नायक जिनवर पुहवी माहे प्रत्यक्ष।
सोलम संतीसर सुखदायक कल्पवृक्ष ॥
जसु यात्र करेवा लोक मिले तिहा लक्ष।
दरसण देखत ही आणद पावै अक्ष ॥१॥
दों दों दों दप मप द्राग्डिदिक दमके मृदंग।
झण रण रण झें झैं झाझरि झमकित झङ्ग ॥

ठम ठम पाय ठमकति घमकति घूघरि सग ।
ताकिटि ताकिट थेइ थेइ नृत्य करत मन रग ॥२॥
केसरि करि पूजत छीजत अशुभ जे कर्म ।
भावन भावता भाजै भव नौ भर्म ॥
नित नाम जपे जे निजमन करि अति नर्म ।
हरखै ते पहुंचे मुगति रमणि ने हर्म ॥३॥

छाक्यो रहे छहुं रितु मस्त महा मतवाल ।
हाथी झरणा जिम झरतौ मद असराल ॥
परवत सम सबलौ घूठ पड्यो सुन्डाल ।
ततखिण जिण नामें अस करै नहीं आल ॥४॥

हुंकारव करतौ, वाघ महा विकराल ।
नहरा अति तीक्ष्ण, जिम करवत दताल ॥
पुछा छोट करतौ फदकल्यै तीजी फाल ।
प्रभु नाम प्रसादै, सींह भगै ज्यु स्याल ॥५॥

दावानल वलतो झलहल नीकले झाल ।
वहु वृक्ष सघन वन वलै पसु पखी वाल ॥
किण हीक कारण नर आयौ अग्नि विचाल ।
जिण नाम जलै अगि ओल्हायै तत्काल ॥६॥

फुं फु फण करतौ धरतौ कोप कराल ।
रहै आख्या-राती काजल सम महाकाल ॥
रहवौ उरंडतौ देखी दो जीहाल ।
तुझ नामे सांप ते जाणे फूल री माल ॥७॥

सबले संग्रामै भिडंता भूप भूपाल।
अति राता ताता वहै गोला हथनाल ॥
खडकै तलवारा खलकै रुधिरा खाल।
तिहां पिण जिण नामै न हुवै वाको वाल ॥८॥

दरीयो जल भरीयो ऊंडो जेह अपार।
उछलता तरंगा सुणि जलचर गरजार ॥
वाहण विचि लिवि पिवि बूडण नैं हुवो त्यार।
ते पिण जिण नामै पहुचै पेले पार ॥ ९ ॥

गड गुंवड फोडी हीया होडी तेह।
खैन खाजनै खासी हरस सहित जन जेह ॥
सोलह कोढादिक उपज्या रोग अछेह।
प्रभु पद फरसत ही दिनकर दुति हुइ देह ॥१०॥
जन सांकल जडीयौ पडीयौ वन्दीखाण।
भय आठै भाजै न रहे पलक प्रमाण ॥
सिर संती जिणेसर सेवत ही सुख खाण।
इणभव लहै लीला परभव पद निरवाण ॥११॥

कलश

संवत्त सतरै वरस वीसैं मास मिगसर जाण ए।
चन्द्रापुरी थी संघ चाल्यौ, चढी जात्र प्रमाण ए ॥
गणि विजयहर्ष पदारविंदे, भ्रमर ओपम आण ए। ।
कहै 'धर्मवर्द्धन' धर्मवद्धन, संघ कुशल कल्याण ए ॥१२॥

—:ॐ:—

॥ नेमि राजिमती बारहमासा ॥

दिल शुद्ध प्रणमूं नेमि जिनेसर परमदयाल,
रोक्या जीव तें मूक्या तोरण थी रथ वाल ।
राजिमति सती नेह वशे किय विविध विलाप,
तो पिण तसु तणु नाड सक्यो विरहानल ताप ॥१॥

श्रावण मास में विरहणि जामनी जाम न जात,
सजि आडंबर जबर दामिणी मिले बरसात ।
मुझ वर गयो हरिणाखी नाखी दीध निरास,
विल विले राजुल आखीय भरि भरि नाखी निरास ॥२॥

भादव मे गयो यादव मुझ हिया दव लाय ।
पावस जल पड़ताल पडे पिण ते न बुझाय ।
माडै मोर झिंगोर करै पपियो पीउ पीउ ।
पीउ विरहै थइ पीड़ ते जाणे माहरौ जीव ॥३॥

आसू मे सासूनो अंगज ते गया अग जलाय ।
चद नी चादणी देखत चौ गुणी पीड़ज थाय ।
निरमल सरवर भरीया नीझरणे झरै नीर ।
नयणा नीर तिये पिण माड्यौ जिण सु सीर ॥४॥

माती खेती पाती नीपनी काती मास ।
कातीय विरहणि छाती मे काती वहै नहीं जास ।
दीप दीवालीय वलिय सुहालिय नैं पकवान ।
खलक रचे पिण मुझ नैं न रूचै खान नै पान ॥५॥

सखी री करसणीयां फलियौ काती, निपजी सब खेती पाती।
हिल मिलि सब करत है वाती,
पीउ विणु मोहि फाटत छाती हो लाल ।४।
सखी री अब मिगसर महिनौ आयौ, सब ही कौ नेह सवायौ।
भोगीजन के मन भायौ,
गयौ छोरि शिवादे को जायौ हो लाल ॥ रा० ५ ॥
सखी री आयौ महिनो अब पोसो, रगै रमै सहु तजि रोसो।
दीनौ मुझ जादव दोषो,
सबलौ तिण कारणि सोसो हो लाल ॥ रा० ६ ॥
सखी री अति शीत परतु है माहे, सब सोवत माहोमाहे।
देही मुझ विरह की दाहै,
न मिटै विनु आये नाहे हो लाल ।रा०७।
सखी री फागुण पकवान नैं पोली, भरि लाल गुलाल की झोली।
खेले नर नारी की टोली,
पिउ विन में न रमें होली हो लाल ।रा०८।
सखी री सब मिलि नर नारी संतो, चैतै धरि हरष हसतौ।
खेलैं अति ही उलसतौ,
वालंभ विनु कैसो वसंतौ हो लाल । रा०६ ।
सखी री कोइल बोले वैशाखैं, भरता करता वै साखैं।
पहिलैं कीनो आसाखैं,
दूजैं आगै अब साखैं हो लाल । रा० १०।
सखी री जल शीतल पीजै जेठो, पीउ नायौ अजहु घेठौ।
जाण्यौ कुण करिहै वेठौ,
नाणी मुझ नजरा हेठौ हो लाल ।रा०११।

सखी री आयो अव मास असाढ़ो,
कालाहणि ऊंची काढो।
वालंम हित वन्धन वाढ़ो,
वैरागै मन कियौ गाढो हो लाल ।रा०१२।
सखी री मिलि अरज करत है आली,
कहा वात करत है काली।
नवलौ कोइ कुमर निहाली,
तुम परणावा ततकाली हो लाल। रा० १३।
सखी री अव राजुल बोली एमौ,
इण भव मुझ प्रीतम नेमो।
दूजौ परणण अव नियमौं,
न तजुं नवभव कौ प्रेमौ हो लाल ॥१४॥
सखी री योगी नहीं नेम सौ कोई,
राजल सम नारि न होइ।
संसारी दुख सव खोई,
सिवपुरी सुख विलसैं दोइ हो लाल ॥रा० १५॥
सखी री मन धारे बारेमासा,
आंणौ वैराग उलासा।
गुरू विजयहरष जस वासा,
वधते धर्मशील विलासा हो लाल ॥१६॥

—❀—

मगसिर मासि गामातरैं मगसिर हुआ लोग।
हु पिण छोडी मग सिरनी हिवैं लेस्यु जोग।
धरैं सहु निज मंदिर मैं खल खेत्र ना धान।
हुं पिण धरिस निश्चल मन मे नेमि ध्यान ॥६॥
पोस मे ओस पड़े निस रूदन करे वनराय।
दोस विना पिउ रोस करैं तै सोस ज थाय।
धूंहरि पडय अथाह ते विरहानल नो धूम।
वैगा जावौ कोइ पिघलावौ प्रिय मन मूम ॥७॥
माह मैं माहट माड्यो मेह ते आहट रूंस।
तौ पिण माहरैं नाह न पूरी माहरी हुंस।
जो कोई आइ वधाइ द्यै आयौ पति जदुनाथ।
नाथ धरूं इक नाक नी आपुं सगली आथि ॥८॥
फागुन फरहरै वात प्रभात नौ सीत अपार।
नाह सु फाग रमैं बहु राग सुहागणि नारि।
चंग अनै मुख चग वजावै उडावै गुलाल।
लालन जे तजी ललना तिण कौ कवण हवाल ॥६॥
जे तरू झाड़िया मोर्या ते तरु चेतर मास।
वास सुवास प्रकासीय मधु करे रे विलास।
बोले रे कागा आगा जागा वेसीरे ऊंच।
पावुं पीउ तौ तुझ भरावुं चुर मैं चूंच ॥१०॥
मौरीय दाख वैसाखै पसरीय वेल प्रलंब।
ऊंचिय साख विलंबिय, कोयल कुहकै अंब।
भौगवैं रवि सक्रांत वसत मे मीन नैं मेख।
तौ पिण मुझ पीउ तजि गयौ इण मे मीन न मेख ॥११॥
जल करैं सीतल हीयतल जेठ मै ए ठहराय।

जो ठिक जोतषी ते कहौ कदि मिलै जेठ कौ भाय।
यादव कुल ना सेठ नै जेठ कहौ समझाय।
नाणी द्रेठ नै हेठते मोमैं कवण अन्याय ॥१२॥
वलीय कौलाहणि काढि आसाढ़ मे वलियौ मेह।
नेमजी नाह विसार्यौ (न सार्यौ) नव भव नेह।
मुझ नैं विलखत छोड़ी वहि गया बारै मास।
पिण हु न तजु एह नैं वसिस्या एकण वास ॥१३॥
धन धन राजल साज ले दीक्षा नौ तजि धाम।
केवल लहिनै पहिली हिज पहुंती शिव ठाम।
जोगीसर नेमीसर सिव सुख विलसै सार।
श्री धर्मसींह कहै ध्यान धस्या सुख है श्रीकार ॥१४॥

॥ नेमि राजिमती बारहमासा ॥

सखी री ऋतु आइ सावण की, घुररंत घटा बहु घन की।
बानी सुनि सुनि पपीहनि की,
निशि जायैं क्युं बिरहनि की हो लाल ॥१॥
राजुल वालभ जपती, इकतारी नेमि सु ं करती।
धन सील रतन नै धरती, तिम विरह करि तनु तपती हो लाल।
सखी री भादु मैं भर बरसाला, खलकै परनाल नै खाला।
बिजुरी चमकत विकराला,
जादु विनु मोहि जंजाला हो लाल। रा० २।
सखी री आसू सब आसा धरीया, निरमल जल सु ं सर भरीया।
रात्यौं शशि किरण पसरीया,
पिउ विनु क्यों जात है घरीया हो लाल।३।

नेमि राजिमती स्तवन

राजुल कहै सजनी सुनो रे लाल
रजनी केम विहाय हे सहेली।
अरज करी आणौ इहा रे लाल,
साहिबियौ समझाय हे सहेली ॥१॥
मोहन नेमि मिलाय दे रे लाल,
नेह नवौ न खमाय हे सहेली।
दिन पिण जाता दोहिलौ रे लाल,
जमवारो किम जाय हे सहेली ॥ २ मोहन ॥
इक खिण खिण प्रीतम पखे रे लाल,
वरस समान विहाय हे सहेली।
पाणी के विरहै पड्या रे लाल,
मछली जेम मुरझाय हे सहेली ॥ ३ मो० ॥
चकवी निस पिउ सुं चहै रे लाल,
त्युं मुझ चित्त तलफाय हे सहेली।
कोडि विरख तज कोइली रे लाल,
आंबा डाल उम्हाय हे सहेली ॥ ४ मो० ॥
अधिकौ विरहौ अंग मे रे लाल,
ते किम दूरे थाय हे सहेली।
जमवारौ जलमे वसै रे लाल,
चकमवि अगन उल्हाय हे सहेली ॥ ५ मो० ॥
कंत विणा कामिनी तणा रे लाल,
भूषण दुषण थाय हे सहेली।

फल फूलै ढाली थकी रे लाल,
छाव छदाम बिकाय हे सहेली ॥ ६ मो० ॥
ऊंची अधिक चढाय नै रे लाल,
नाखी धरि असकाय हे सहेली ।
प्रीतम क्युं मुझ परिहरी रे लाल,
अवगुण एक बताय हे सहेली ॥७ मो०॥
मुगति कामिणी कामण कीया रे लाल,
तौ मुझ नै तजी न्याय हे सहेली ।
सिव नारी देखण सही रे लाल,
आप गइ उम्हाय हे सहेली ॥ ८ मो० ॥
मुगति माहे बेहु मिल्या रे लाल,
विलसैं सुख वरदाय हे सहेली ।
प्रणमैं पंडित धरमसी रे लाल,
नमता नव निधि थाय हे सहेली ॥ ९ मो० ॥

—❀—

सिंधी भाषामय पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—अमल कमल एहनी ।

अज्जु सफल अवतार असाड़ा, दिट्ठा पारस देव ।
वुट्ठा मेह, अमियदा, तुट्ठा साहिब सत मेव ॥ १ ॥
सयाने साइ असाड़ा वे, अरि हा पियारे पास जिणंदा वे ।आ०।
अरजू हूदा तैडै अग्गै, अखदा हा इक गल्ल ।
सुख दैदा है सभनि कुं चोखीय तुसाड़ी चल्ल । स० २ ।

नंदरे नींगर दे ज्यु अम्मा, त्यु मैंडै तुं साम,
जौलु अन्दर जेदे हैं, नहीं भुल्ला तेडा नाम । स० ३ ।
सच्ची एक तुसाडी सेवा, दूजी गल्ल न दिल्ल,
आस पूरी हुण दास दी, करंदा हो काहे ढिल्ल ।स०४।
देव अवर दी सेव करंदै, दिट्ठा मैं दोजग्ग ।
हुण उण उज्जड ना भमू, मन मान्या तैड़ा मग्ग ।स० ५।
रज्या होइ सु कित्थुं जाणैं, भुक्खादा दिल दुक्ख ।
नाही देंदा न्याय तुं, सिवपुरदा मैंनु सुक्ख ।स० ६।
नव निधि सिद्धि तुसाडैं नामैं, दौलति हदा दीह,
विजयहरष सुख सपजै, धरे ध्यान सदा ध्रमसीह । स० ७ ।

—❀—

पार्श्वनाथ स्तवन

नैणा धन लेखु देखूं, देखुं मुख अति नीकौ,
जीहा धन जाणु गावु, गावुं जस जिनजी कौ ।
धन धन मुझ सामी, तुं त्रिभुवन सिरि टीकौ ।। १ ।।
चित सूधैं करि हु नित सुणिवा, चाहूं तुझ उपदेस अमी कौ ।।२।।
देवल देवल देव घणा ही दीसें, तुझ सम जस न कही कौ ।।३।।
पुन्यें करि प्रभु साहिब पायो मोई, पायौ मे राज पृथी कौ ।।४।।
कीजैं मया मुझ सेवक कीजै साचौ, कीजौ मत अवर हथीकौ ।५।
रूप अनूपम तेज विराजै तेसौ, सूरिज कौ न ससी कौ ।।६।।
पास जिणेसर सहु मनवंछित पूरैं, साहिब श्री 'ध्रमसी' कौ ।।७।।

—०—

लोद्रवा पार्श्व जिन स्तवन ।

महिमा मोटी महियलै, प्रगट चिंतामणी पासो रे ।
सफलौ नाम करें सदा, आपै वछित आसौ रे ॥ १ ॥
अधिक सफल दिन आज नै. भेट्यौ श्री भगवतो रे ।
कहीजैं जीभै केतला, एहना सुजस अनतो रे ॥ २ ॥
मोटौ जेसलमेर ए, मेर ज्यू महीयलि मोहे रे ।
तीरथ लौद्रपुरो तिहा, शुभ नदनवन सोहे रे ॥ ३ ॥
दिन दिन दीपै देहरा जिहा श्री पास जिणदो रे ।
साथ ले सुधरम सभा, आयौ जाणे इन्दो रे ॥ ४ ॥
सुन्दर त्रिगढा मम विचे, वृक्ष अशोक विराजै रे ।
सागी जाणे सरग नौ, कलपवृक्ष हित काजै रे ॥ ५ ॥
सहस्रफणा विहु साम नौ, सौहै रूप सवायो रे ।
थिर जस ते कीधो थिरू, वित दस क्षेत्रे वायो रे ॥ ६ ॥
सतरेसे गुणत्रीस (१७२६) मे, मिगसर मास मझारो रे ।
यात्रा करी जिनवर तनी, धर्म शील चित्त धारो रे ॥ ७ ॥

—:❀:—

लोद्रवा पार्श्व स्तवन ।

लुलि लुलि वदो हो तीरथ लोद्रवो, अधिकी आसति आणि ।
सजन जन जिनवर नी पामीजैं जातरा, पुण्य तणै परमाणि ।१।
शकादिक दूषण छोडो सहु, समकित धारो रे सार । स० ।
अरचौ भाव धरी अरिहत नै, पामौ जिम भवपार ॥ स० । २॥

नयणे पाच अनुत्तर निरखेवा हुवै मन माहे जो हुंस । स० ।
तौ एहिज तीरथ भेटो तुम्हे रचना तिण हिज रूंस ॥ स० । ३ ।
धन जेसलगढ जिहा धर्मात्मा सघनायक थिरूसाह । स० ।
जिण प्रासाद कराया जिनतणा, आणी अधिक उमाह ॥ ४ ॥
सुन्दर सहसफणे करि सामली, दीपै मूरति दोइ । स० ।
मेघ घटा नै देखी मोर ज्यु. हरखित मुझ मन होइ ॥स० । ५ ॥
पास सदा चितामणि नीं परं, आपै वंछित आस ॥ स० ॥
नाम गुणैं करी साचौं नीपनौ, प्रगट चिंतामणी पास ।स० । ६ ।
सतरैसे त्रीसें मिगसर सुदे, बारस बहु संघ साथ ।
वाचक विजयहरष हरषे करी, प्रणम्या पारसनाथ । स० । ७ ॥

—०—

लोद्रवा पार्श्व स्तवन
राग—सोरठ

पूजौ पास जी प्रभु परता पूरै, चितनी चिंता चूरै ।
सहसफणा शोभंत सनूरैं, दरसण थी दुख दूरैं ॥ १ ॥
सुणता कानें कीरति सारी, परसिद्ध लोद्रपुरा री ।
जिन मूरति हिव नयण जुहारी, साचा गुण सुखकारी ॥ २ ॥
नीलकमल सम मूरति निरखी, सहसफणा वे सरिखी ।
पास चिंतामणि साचा परखी, हिव सेवो मन हरखी ॥ ३ ॥
सुन्दर तिलको तोरण सोहे, मंडप पिण मन मोहे ।
ऊंची धज आकाश आरोहै, कहौ मुझ समवड को है ॥ ४ ॥

च्यार प्रासाद चिहुं दिशि राजै, विच मे एक विराजैं ।
कोरणी झीणी केम कहाजे, पेख्या मन पतियाजैं ॥ ५ ॥

रचना पाच अणुत्तर रयणे, गमविण ऊ ची गयणे ।
विधि साभलता जे गुरू वयणे, निरखी तेहिज नयणे ॥ ६ ॥

अष्टापद जे सुणता आगी, सो विधि दीठी सागी ।
त्रिगडो देखि मिथ्यामति त्यागी, जिन धर्म महिमा जागी ।७।

जिन प्रतिमा जिन हीज सरूपी, पौतै जिनज प्ररूपी ।
सेवे ते शुद्ध समकित रूपी, अज्ञानी ए उथूपी ॥ ८ ॥

अधिकै भावैं यात्री आवै, गुण जिनवर ना गावै ।
रागे वहु विधि पूज रचावै, प्रभु सानिध सुख पावै ॥ ६ ॥

गावते गीत मन गमती, राग धरम नें रमती ।
नर नारी नी टोली नमती, भावधरी च्यैं भमती ॥ १० ॥

प्रशोभा जेसलमेर सदाइ, श्री खरतर सुखदाई ।
करणी जिर्णोद्धार कराइ, संघपति थिरू सवाई ॥ ११ ॥

कलशः—सवत गुण युग तुरग धरणी चैत्र वदि छठि दीस ए ।
श्रीसघ श्री जिनचन्द सानिध, सफल यात्रा जगीस ए ॥
भु पास नामै आस पामैं, जपे जे जस जीह ए ।
गुरू विजयहरप सुसीस पाठक, कहै श्री धर्मसींह ए ॥ १२ ॥

—※—

लोद्रवापार्श्व स्तवन

विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली—एहनी

धन धन सहु तीरथ माहि धुरै, परसिद्ध घणी श्री लोद्रपुरै ।
भले भावे आवे यात्र घणा, सुखदायक सेवो सहसफणा ॥ १ ॥
केवल जिम दूर थकी दीसै, हीयडौ जिन देखण नै हींसै ।
वाखाणै सहु विश्वा विसै, यात्रा कीधी ए जगदीसै ॥ २ ॥
त्रेवीसम श्री जिनराज तणी, फलदायक प्रतिमा सहसफणी ।
घन स्याम घटा जिम शोभ घणी, वाह वाह अंगी छवि अंग वणी ३
चउ जिणहर चउगइ दुख चूरै, पंचम पंचम गति सुख पूरै ।
अष्टापद त्रिगढे शोभ इसी, कुण इण समओपम कहुंअ किसी ॥४॥
केसरि चंदन घनसार करी, धोतीय अछोती अंग धरी ।
पूज्यां मिथ्यामति जाय-परी, शुभ पामे समकित रतन सिरी ।५।
प्रणम्यां सहु पीड़ा दुरि पुलै, छल छिद्र उपद्रव को न छलै ।
दुख दोहग दालिद दूर दलैं, मन वंछित लीला आइ मिलै ॥६॥
जेसलगढ गुरु गच्छपति जाणि, तिहा आया श्री संघ मुलताणी ।
संघ तिण सु श्री जिनचन्दसूरैं, प्रणम्या प्रभु पास नवल नूरै ।७।
सतरै चम्मालै चैत्र सुदे, महिमा मोटी तिथि तीज सुदै ।
खरतर गुरु गच्छ सोभाग खरै, पाठक धर्मसी कहे एण परे ।८॥

—:०:—

गौडी पार्श्व स्तवन

राग—मलूहार

मूरति मन नी मोहनी सखि सुन्दर अति सुखदाय।
नयन चपल है निरखिवा, सखी भ्रमर ज्यु कमल लोभाय रे॥
दीठा हिज आवे दाय रे, कीधी तकसीर न काय रे।
जोता सगला दुख जाय रे, थिर मन ना वछित थाय रे॥ १॥

मुनें प्यारो लागे पास जी॥

कुण वीजा नी हर करै सखी, प्रभु ए समरथ पामि।
हाथ रतन आयौ हिवै सखी, काच तणों स्यो काम रे।
नित समरू एहनो नाम रे, सहु वाते समरथ स्वाम रे।
हिव पुगी हिया नी हाम रे, औहिज मुझ आतमरामरे।२। मुं०

स्वामि कल्पतरू सारिखौ सखी, वीजा बावल बोर।
मनवछित दायक मिल्यो सखी, न करु अवर निहोर रे॥
ढिल बाध्यो इण विण डोर रे, मेहा नै चाहे मोर रे।
चंदा नै जेम चकोर रे, जिन सु मन लागो जोर रे॥३॥ मुनै०

कमल कमल चढती कला सखी, सोहे रूप सुरंग।
एहनै रूपनी ओपमा सखी, आवि न सकै अग रे।
उलसै मिलवा नै अंग रे, सही छोडण न करू सग रे।
एहवौ मन मे उच्छरग रे, अविहड मुझ प्रीति अभग रे।४।मुनै०

हुंस घणी मिलवा हुंती सखी मन माहि नितमेव रे।
ते साहिव मिलीया तरैं सखी वहु हित पग गहुं वेव रे॥

हरख्यो मुझ हिवडो हेवए, साहिब नी न तजु सेव रे ।
दिल सुध मुझ एहिज देवए, टलिस्यु नहीं ए लही टेवरे ।५। मुनें०

इण मन मोहन ऊपरै सखि हुंवारी वार हजार ।
देस विदेशे दिल्ल मे सखी साभरिस्यै सौ वार रे ।।
इक इण हिज सुं इकतार रे, हीयो नो अतर हार रे ।
कदे ही नहिं लोपिस कार रे, वात सी कहियै वार वार रे ।६ मु०
गाजै नित गौड़ी धणी सखि अकल सरूप अबीह ।
भवना भय गय भाजिवा सखी सादूलो ए सींह रे ।।
लोपै कुण एहनी लीह रे, जपतां जस सफली जीह रे ।
ग्यै विजयहरप निसदीह रे, धरि हेत कहै धर्मसीह रे । ७ मुनै०।

पार्श्व जिन स्तवन

ढाल—धणरा ढोला रो

त्रिभुवन माहे ताहरौ हो,
सुजस कहै सहु कोइ । जिन रा राजा ।
देव न कोइ दूसर हो,
होड़ जे ताहरी होइ । जिन रा राजा ।
सुनिजर कीजे हो सुजान, सेवक कीजै
दीजै दिन दिन वछित दान मन रा मान्या ।। १ ।। आकणी
देवा मांहे दीपतौ हो, तु परता शुद्ध पास ।
सोहे तारा श्रेणि में हो, एकज चन्द आकाश ।। २ ।। जि० सु०।।

पाम्यौ में तुमने प्रभु हो, सेवुं अवर न साम।
सूरिज उगै साहिवा हो, केहो दीपक काम ॥ ३ ॥ जि० सु० ॥
सेवक नै तु सासता हो, द्यै छै वछित देव
तौ सेवे छै ते भणी हो' नर नारी नितमेव ॥ ४ ॥ जि० सु० ॥
चूकौ हु तुझ चाकरी हो, इतरा दिवस अयाण।
गुनहौ तेह रखे गिणो हो, मोटा होइ महिराण ॥ ५ ॥ जि० सु० ॥
मो उपरि पिण करि मया हो, आपौ सुक्ख अछेह।
सगले रूखे सारिखा हो, महियल वरसै मेह ॥ ६ ॥ जि० सु०।
त्रिकरण शुद्ध इण ताहरौ हो, एकज छै आधार।
करज्यो तुम धर्मसी कहै हो, अवसर नौ उपगार ॥ ७ ॥ जि०सु०

श्री फलोधी पार्श्व स्तवन

सुगुण सुज्ञानी स्वामि नै जी, स्युं कहियइ समझाइ।
पण प्रभु सुं विनती पखैं जी, नेट ए काम न थाइ ॥ १ ॥
परम प्रभु सुण फलवधिपुर स्वामि।
साहिब हीयड़ै मुझ सही जी, नित ही तुम्हारौ नाम ॥ २ ॥
आवंता सहीया अम्हे जी, भर तावड़ त्रिष भूख।
तुम्ह दरसण दीठो तरै जी, दूर गया सहु दुख ॥ ३ ॥
मन मोहन तुम्ह सुं मिल्या जी, उपजै सुख मुझ अग।
आवै मन माहे इसी जी, सही न छोड़ु सग ॥ ४ ॥
परदेसे पिण प्रीतड़ी जी, अधिकी दिन दिन एह।
मन तुम पासे मोहियो जी, दूर रहै छै देह ॥ ५ ।

अधिक उपाय करूं अछुं जी, भेटण श्री भगवंत ।
जोग जुडै नही जुगति सु जी, खरीग रहै मन खंत ॥ ६ ॥
अमनै जाणी आपणो जी, मेलो दे महाराज ।
तुम मिलिया विण अमतणा जी, किम करि फलिस्यै काज ॥७॥
पाय तुम्हारा परसीये जी, जोलति हुं तिण जीह ।
विजयहरष वछित फलै जी, ध्यान धरे धर्मसीह ॥ ८ ॥

—:०:—

गौडी पार्श्व स्तवन

आज भलै दिन उगौ जी, अधिके धरम उदै ।
प्रगट मनोरथ पूगो जी अधिकै धरम उदै ।
पास जी नो दरसण पायो जी अधिकै धरम उदै ॥ १ ॥
एहवै पाचम आरै जी अधिकै० त्रेवीसम जिन तारै जी । अ० ।
देव इसौ नहीं दूजो जी अधिकै० पास जिनेसर पूजो जी ॥ २ ॥
गुण गौडी ना गावोजी अ०, नरक निगोदै नावो जी अ० ।
भावना मन शुद्ध भावौ जी अ०, पंचम गति सुख
पावो जी अ० ॥ ३ ॥
छाक मिथ्यामति छोड़ो जी अ०, जिनवर सुं हित जोडो जी अ० ।
जिन प्रतिमा जिन जेही जी अ०, कहो इहा शका
केही जी अ० ॥४॥
सुन्दर सूरति सोहै जी अ०, मूरति जन मन मोहै जी अ० ।
सुख विजयहरष सवाया जी अ०, गुण धर्मसी मुनि
गायाजी अ० ॥५॥

—:ॐ:—

श्रीपार्श्व स्तवन

राग—खभायती

आज नै अम्हारै मन आसा फलीया ।
नयणे पार्श्व जिनेश्वर निरख्या, हरख्या मन हुइ रंग रलिया ॥१॥
त्रेवीसम जिन त्रिभुवन तारण, मनमोहन साहिब मिलिया ।
मो मन जिनगुण लागे मीठा, जिमै दूधै साकर मिलिया ॥ २ ॥
विहसत मूरति नयण विराजै, कोमल कमल तणी कलिया ।
दरसण दीठे पाइ दौलति, दुख दोहग दूरै दलीया ॥ ३ ॥
समकित दायक लाधो साहिब, मुह माग्या पासा ढलीया ।
धरमसींह कहै धरमी जन नै, सुख थायै जस साभलीया ॥ ४ ॥

—:०:—

गौडो पार्श्व स्तवन

ढाल—सु बरदेरा गीत री ।

आणी आणी अधिक उमाह भवियण भावौ हो
भावन श्री भगवतनी रे ।
लीजै नर भव लाह, कीरति कहीजै हो
एक मना अरिहत नी रे ॥ १ ॥
मन थी दुविधा मेट अड़िग आणीजै हो,
अधिकी मन में आसता रे ।
नामै एहने नेट पातक पुलायै हो,
थायइ शिव सुख शासता रे ॥२॥

राचौ समकित रंग साचौ नें सदाइ हो
सेवो जिन त्रेवीसमौ रे।
माचौ मत मद संग, काचौ नै कहीजै हो
काया घट ए कारमो रे ॥ ३ ॥
किणहिक पुण्य प्रकार प्रगट पाम्यौ हो,
नरभव पंचेन्द्री पणो रे।
आरिज कुल अवतार तिम वली लाधो हो,
शासन तीर्थंकर तणो रे ॥ ४ ॥
इण भव जिणवर एक अवर न सेवु हो
आसत मन माहे इसी रे।
विजय हरप सुविवेक, धरि वहुभावै हो
गावैं गुण इस धरमसी रे ॥ ५ ॥

—:ॐ:—

श्री गौडी पार्श्व गीत

गीत सपखरौ जाति

जगि जागें पास गौडी लोक दोडी दोडी आवै जात।
कोडी लाख देखो देव जोडी नावै कोइ।
सारिखा घणा ही नाम तिणें काम सरे न कौ।
जैन मोटी आरिखा सौं पारिखाले कोइ ॥ १ ॥
विकट्टे प्रगट्टे थट्टे निपट्टे उवट्टे वट्टे सकट्टे
निकट्टे दुखा चूरणैं समाथ।

आपे आप हाथो हाथ ईह्ना अथग्ग आथ,
नामथी करै निहाल अनाथां रो नाथ ॥ २ ॥
एहौ एक देव पास, पूरवें उलास आस,
तेज कौ प्रकास त्रास जास त्रिभुवन्न ।
पास साम पास साम नामचै प्रणाम पामें,
माम काम ठाम ठाम माणै सुक्ख मन्न ॥ ३ ॥
ओपियौ इखाग वंश आससेण अग जात,
वामा विखियात मात जात आवै वृन्द ।
एकीह अवीह सीह लोपें कुण लीह
एहौ जाप धरै धर्मसीह गौडीचौ जिणद ॥ ४ ॥

—:❀:—

जैसलमेर पार्श्व स्तवन

ढाल—दादेरे दरबार चापो मोह्य रह्यो

उगौ धन दिन आज सफलौ जन्म सही री
सफल फल्या सहु काज, जिनवर यात्रा लही री ॥ १ ॥
जगगुरू पास जिणद, भेट्यौ भाव धरी री ।
इण ससार समद, तारण तरण तरी री ॥ २ ॥
जिनवरजी ने जाप, परहा पाप पुलै री ।
उगै सूरिज आप, किम अधार कलै री ॥ ३ ॥
भयभजण भगवंत, जेसलमेर जयौ री ।
उपगारी अरिहत, दरिसण दुक्ख गयौ री ॥ ४ ॥

द्रव्यत भावत दोइ, पूजा विविध परै री ।
हित करि करता होइ, समकित शुद्ध तरै री ॥ ५ ॥
हेत धरी मन माहि, मूरत जेह नमै री ।
लाधो नर भव लाह, भूला अवर भमै री ॥ ६ ॥
सानिध प्रभु सुविलास, लीला अधिक लहै री ।
विजयहरप जसवास, कवि 'धर्मसीह' कहै री ॥ ७ ॥

—:*:—

श्री मगसी पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—श्रादरजीव क्षमा गुण०

भवियण भाव धरी नै भेटो, मगसीपुर महाराज जी ।
जेहनो मन सुद्ध नाम जपता, सहीय मिले सिवसाज जी ।भ० ।१।
त्रिभुवन माहे ए जिन तारण, वारण दुख वन वन्हिजी
आपण कर जे जिनवर अरचै, धरणी ते नर धन्न जी । भ० । २ ।
पाये अवर सुरा ने पाड्या, मदन महामणिमत्थजी ।
तिण ने पिण जिण खिण मे जीत्या, सहु मे ए समरत्थ जी ।भ०।३।
सोवन सिंहासण ऊपरि सोहे, श्याम वरण तनु मारजी ।
गुहिर हेम गिरू परि गाजंतो, जाणे करि जलधार जी । भ० ।४ ।
अवर देव सेवा तजि अलगी, पूजो नित प्रति पास जी ।
भव दल सगला दूरै भांजो, विलसौ मुक्ति विलास जी ।भ०।५।
आखै दिन सुर गुर गुण गावै, आवै नहीं तोइ अंत जी ।
कर भरि नीर समुद्र थी काढ्या, जलनिधि ओछ न जत जी ।भ०६।
नवनिधि थायै प्रभु ने नामै, विजयहरष विलसंत जी ।
धर्मसीह नित आज्ञा धारइ, अमल मनै एकंत जी । भ० । ७ ।

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—नणदल री

सहियर हे सहियर आवौ मिलो हे उतावली,
सुन्दर करि सिणगार । स० ।
जिनवर देव जुहारिवा, आज सफल अवतार । स० ॥ १ ॥
मनडो जिनवर मोहीयो ए ।

पहिलो देइ प्रदिक्षणा, त्रिकरण शुद्ध त्रिणवार ।
गुण जिनवर ना गाइयै, आणी हर्ष अपार ॥ २ ॥

मूरति अति रलियामणी, निरखण चाहे नैंण ।
जेह करावै जातरा, साचा ते हिज सैण ॥ ३ ॥

सुखदायक मुख मोहतौ, कुंडल वेऊ कान ।
भाल विसाल मुगट भलौ, दिन दिन वधते वान ॥ ४ ॥

जिम जिम मूरति जोइये, मन तिम तिम मोहाय ।
प्रभु दरसण दीठा पछी, दूजौ नावें दाय ॥ ५ ॥

प्रीति करी इक पास सु, रहियौ मो मन राच ।
पाच रतन नें परिहरी, कहौ कुण झालै काच ॥ ६ ॥

धन धन ते नर धरणीयै, जेहनी सफली जीह ।
जस-कहै पास जिणन्द नौ, सुह भावे धर्मसीह ॥ ७ ॥

—:ॐ:—

श्री सखेश्वर पार्श्व स्तवन

ढाल—विलसैं रिद्धि समृद्धि मिली

महिमा मोटी त्रिभुवन माहे, आवैं यात्रा जग उमाहै।
कल्पतरू फलियो हितकामी, सुखदायक सखेश्वर स्वामी ।१।

धुरि वन्दइ पूजइ ध्यान धरै, कर जोड़ी सेवा जेह करै।
गुण गावै तेह सुगति गामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ।२।

विपमा दुख वैरी जाय विलैं, महिला जिम कमला आइ मिलैं।
जप जाप जपो अन्तरयामी, सुखदायक सखेश्वर स्वामी ।३।

जदुसेन जरा मूर्छित जाणी, सज कीध पखाल तणौं पाणी।
ठावा जस एहवा ठाम ठामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ।।४।।

काम कुम्भ चिंतामणि कल्पलता, छाजैं ए उपमा काज छता।
पिण इण सम काइन आसामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ।।५।।

सतरैसे सतट्ठि पोस सुदी, सातम श्री पाटण संघ मुदी।
परतिख प्रभु नी यात्रा पामी, सुखदायक संखेश्वर स्वामी ।।६।।

धन जिनसुखसूरि धर्म शील रस्तइ, सुविवेक कियो वेलजीवस्तइ।
जिनराज जुहार्या जस नामी, सुखदायक सखेश्वर स्वामी ।।७।।

—:०:—

श्री पार्श्व स्तवन

सुणि अरदासा सुगण निवासा अमची पूरउ आसा राजि ॥
देखि उदासा अपणा दासा, दीजैं कछुक दिलासा राजि ॥ १ ॥
चाढी चटकी भव मइ भटकी, नाच्यौ हुं विधि नटकी राजि ।
हिव मन हटकी आपसौं अटकी, लागौ तुम्ह पाय लटकी ॥२॥
तइ अम्ह टाली मुगति सभाली, प्रीति अम्है हिज पाली राजि ।
एक हथाली बागी ताली, बात अचभा वाली राज ॥ ३ ॥
तु उपगारी पास तुहारी, सेवा सहु में सारी राज ।
तत्त विचारी शुध मन धारी, श्री धर्मसी सुखकारी राज ॥ ४ ॥

श्री पार्श्व स्तवन

राग—सारग वृदावनी

नित नमियै पारसनाथ जी ।
मनमोहन ए रतन चिंतामणि, हिव आयो छै हाथ जी ॥ १ ॥
सेवो स्वामि सदा मन सूधें, आपै वछित आथ जी ।
पुण्य उदै करि ए प्रभु पायौ, सिवपुर मारग साथ जी ॥ २ ॥
महियल माहि अधिक जसु महिमा, सेवै सघ सनाथ जी ।
ध्यावौ एक मना कहै धर्मसी, एह अनाथा नाथ जी ॥ ३ ॥

पार्श्वनाथ वधावा गीत

पहिलै वधावै जिणवर देव जुहारया,
सफलौ हो सफलौ जन्म हुऔ सही ।
बीजे वधावे समकित रतन सुलाधो,
दिल में हो संकादिक दूषण नहीं जी ॥ १ ॥

अगणी वधावइ श्रावक पदवी पाइ,
देसैं हो देसविरति धर्म आदरूं जी।
चौथइ वधावै हो [1]चारित लाधो,
तिणथी हो तिणथी भव सागर तरूं जी ॥ २ ॥
मंगल पहिलौ अरिहंत मानुं,
बिजौ हो वीजो हो सिद्ध मंगल वली जी।
तीजइ मंगल साधनी सेवा,
चउथे हो धर्म कह्यौ जे केवली जी ॥ ३ ॥
जिन शासन वरतौ जयवन्तौ,
भावित हो भावित वधावा मंगल भाखिया जी।
च्यार लोगुत्तम एहिज चावा,
सूत्रे हो सूत्रे हो सरणा एहिज साखिया जी ॥ ४ ॥
पारसनाथ[2] तणै परसादै माहरै,
हो माहरै हो जैन धर्म मुदै जी।
मन शुद्ध श्री धर्मसी कहै माहरइ,
आज्यो हो आज्यो हो ए भव भव उदै जी ॥ ५ ॥
इति श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवन । उपदेशे गेयंच ॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

नैणा धन लेखु देखुं देखुं मुख अति नीको।
जीहा धन जाणुं गावुं गावु जस जिनजी को ॥
धन धन मुझ स्वामी तुं त्रिभुवन सिर टीको ॥ १ ॥ नैणा०

१ होणो चरित्रचोखो २ जिणंद

चित्त शुद्धे करि हुं नित सुणिवा चाहु,
तुझ उपदेश अमी को ॥ २ ॥ नै०
देवल देवल देव घणा ही दीसे,
तुम सम जस न कही को ॥ ३ ॥ नै०
पुण्यै करि प्रभु साहिब पायो,
सोइ पायो मे राज पृथ्वी को ॥ ४ ॥ नै०
कीजै मया मुझ सेवक वीजै साचो,
कीजो मत अवर हथी को ॥ ५ ॥ नै०
रूप अनूपम तेज विराजै तैसो,
सूरिज को न ससी को ॥ ६ ॥ नै०
पास जिनेसर सहु मन वंछित पूरै,
साहिब श्री धर्मसी कौ ॥ ७ ॥ न०

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

महिमा मोटी महियलै हो, परगट जिनवर पास ।
सुरनर नित सेवा करै हो, आणीय अधिक उलास ॥ १ ॥
जगनायक जिनवर गुण जपौ हो, जसु जपतां दुख जाय ।
थिरै घरि नवनिधि थाय ॥ २ ॥ ज०
मन मोहन मूरति भली हो, सब ही काज सुहाय ।
चरण कमल सुख चाहतौ हो, मुझ मन भमर मोहाय ॥३॥ ज०
सिर उपर मुकट सुहामणो हो, कुण्डल दोनू कान ।
झिगमि (ग) तेजे झलकता हो, सूरिज तेज समान ॥ ४ ॥ ज०

चोखा चोवा चंदना हो, घसि केसर घनसार।
अद्भुत मृगमद अरगजे हो, अरचता सुख अपार ॥ ५ ॥ ज०
नित ही नाटक नव नवा हो, दो दो दमकै मृदंग।
झमकित झांझरि झालरी हो, मोहत मन सुख चंग ॥ ६ ॥ ज०
तत नक ताथेइ ताथेइ तटक दे तोडत तान।
फदक दे अति भली देत है फेरी, गावत विचि विचि ग्यान ७ ज०
पूजा यु करता प्रभुजी की, सहीय मिलै सुख साज।
दस दिस माहे वहु जस दीपै, परभवि सिवपुर राज ॥ ८ ॥ ज०
पूरण वंछित पास जी हो, पुहवी माहे प्रधान।
वाचक विजयहरप सुख वाधै, धरमसी धरत ही ध्यान ॥९॥ज०

श्रीआबू तीर्थ स्तवन

आबू आज्यो रे आबू आज्यो २ आबू आज्यो वहिला थाज्यो।
मानव नौ भव सफल करौ तो, यात्रा काजे जाज्यो।
वामानंदन वंदन वहिला, अचलगढै पिण आज्यो ॥ १ ॥
हा रे म्हारा सयणा साचा वयण सुणेज्यो, अधिको तीरथ आबू,
सहु पातक मल साबू, भल भल २ देवल जोज्यो।
देवल जोज्यो हरखित होज्यो, धुरि पातक मल धोज्यो।
सहु सुखदायक तीरथ नायक, ज्योवा लायक ज्योज्यो ॥ २ ॥
हा रे सयणा नयणा सफल करेज्यो,
दूरथी देवल दीसै, हीयडौ तिम तिम हींसै।
लुलि लुलि लुलि लुलि सीस नमाज्यो,

सीस नमाज्यो गुण गवराज्यो वलि श्रीफल वधराज्यो ।
धन धन वेला धन ए घडीयां, धन अवतार धराज्यो ॥ ३ ॥

हां रे सयणा छवि गिरवर नी छाजे ।
काइ लूवा आवें लहकै, केतक कपक महकै ।
मह मह मह मह परिमल लेज्यो,
परमल लेज्यो दुख दलेज्यो, देहरै भमती देज्यौ ।
तोरण धोरण चितनी चोरण कोरण अनुमोदेज्यो ॥ ४ ॥

हां रे सयणा विमलवसी वादेजो ।
केसर भरीय कचोली, माहे मृगमद चोली ।
घन घन घन घनसार घुलाज्यो घुलाज्यो,
भाव भिलाज्यो आसातना टलाज्यो ।
नव नव रगी अंगी चगी अंगी अंगि रचाज्यो ॥ ५ ॥

हा रे सयणा खेला पात्र नचाज्यो
सरिखै वेस समेला, भमती रमता भेला ।
थिग मिग थिगथिग थेइ थैइ, थिग मिग
थेइ २ तत नंक ताथेई ॥
शिव मग सन्मुख थाज्यौ, धप मप दों दो,
भर हर भौं भों मादल भेर वजाज्यो ॥ ६ ॥

हा रे सयणा अचलगढे अरचाज्यो ।
चारे विंव उत्त गा, सोवन रूप सुचगा ।
झलहल झिगमिग ज्योति सराज्यो,
ज्योति सराज्यो, भाव भराज्यो ।
यात्रा सफल कराज्यो, विजयहर्ष सुख साता वाछो,
शुभ 'धर्मसीख' धराज्यो ॥ ७ ॥

श्री महावीर जिन स्तवन

वीर जिणेसर वंदियै, इण सम नहीं कोइ और, म्हारा लाल।
परता पूरण परगडौ, साचौ प्रभु साचौर म्हा० ॥ १ ॥

आज इणै पंचम अरै, सासण एहनो सार म्हा० ।
जिन धरम वरते जगत में, ए एहनो उपगार म्हा०॥ २ ॥

गौतम सुधरम गणधरू, शिष्य एहना श्रीकार म्हा० ।
सूत्र सिद्धान्त जे उपदिस्या, नित सुणता निस्तार म्हा०॥ ३ ॥

अतुलित वली ए अवतर्यो, जिण सुर कीधा जेर म्हा० ।
संका मेटी शक्रनी, मही कंपायौ मेर म्हा०॥ ४ ॥

अठ वरसी वालक इणैं, महुकम एकंण मुट्ठि म्हा० ।
रामति आमल की रम्या, देव हराव्यो दुट्ठि म्हा०॥ ५ ॥

लेसालै ले आवता, अधिकाइ करी एण म्हा० ।
ऊतर आप्या इन्द्र ने, जौड़ौ व्याकरण जेण ॥ ६ ॥ म्हा०

वरस त्रीसज गृह वसी, ले लिखमी नो लाह म्हा० ।
आपो आपै आदर्यो, चारित चित्तनी चाह म्हा०॥ ७ ॥

तप जिण सहु निरजल तप्या, वार वरस धुरि मुन म्हा० ।
तिण मे पारण दिन तिकै, ऊठसै मै इक उन म्हा०॥ ८ ॥

सूलपाणि चडकोशियौ, गौसाला गुणहीन म्हा० ।
तिण तीना ने इण कीया, उपसम समकित लीण म्हा०॥ ९ ॥

झूठौ ही जे झगडीयौ, जम्माइ जम्माल म्हा० ।
तार्यो पनर भवे तिको, प्रभु सहुना प्रतिपाल म्हा०॥ १० ॥
पामी केवल थापीया, गणधर जेण इग्यार म्हा० ।
सहस चउद शिष्य साधु ते, साध्वी छतीस हजार म्हा०॥ ११ ॥
पु हता जिणवर सिवपुरे, ल्यै आठे गुण लाह म्हा० ।
जिन प्रतिमा जिनवर जिसी, अरचौ अधिक उछाह म्हा०॥१२॥
भावै जिन गुण भावना, गावइ वलि गुणगान म्हा० ।
धन ते कहै श्री धर्मसी, पामै सुख परधान म्हा०॥ १३ ॥

श्री राडद्रह महावीर स्तवन

राड़धूड़ महावीर विराजै, भय सगला दूरें भाजे रे । रा० ।
सहु विधि सुख सपति साजैं, नित सेवक काज निवाजैरे।१। रा०
सासन एहनो इण आरै, वरतै सुधरम विचारै रे। रा० ।
सुन्दर मूरति अतिसारी, नित नमण करे नर नारी रे। २। रा०
देवल वलि निर्मल दीपै, जसु तेज तरणी से जीपें रे। रा०
सुरतरु ए फल्यो समीपै, पातक दुख पास न छीपै रे। ३। रा०
धन धन जे धर्मसी ध्यावै, प्रभु सानिध सहु सुख पावैरे।
शुभ भाव धरी जे सेवै, दिन दिन.मन वंछित देवे रे। ४। रा०
सितरै वर्षे सुखदाइ, पुण्ये प्रभु यात्रा पाइ रे।
श्री जिनसुखसूरि सदाइ, श्री संघ धर्मशील सवाई रे।५। रा०

श्री महावीर जन्म गीत

सफल थाल वागा थिया धवल मगल सयल
तुरत त्रिभुवन हुआ हरष त्यारा।
धनद कोठार भडार भरिया धने,
जनमियो देव व्रधमान ज्यारा।१।
वार तिण मेरगिरि सिहर न्ववरावियौ,
भला सुर असुरपति हुआ मेला।
सुद्रव वरषा हुई लोक हरष्या सहु,
वाह जिनवीर री जनम वेला।२।
मिहर जगि ऊगतें पूगतें मनोरथ,
जुगति जाचक लहै दान जाचा।
मंडिया महोछव सिधारथ मौहले,
सुपन त्रिसला सुतण किया साचा।३।
करण उपगार ससार तारण कलू
आप अवतार जगदीस आयौ।
धनो धन जैन धर्म सीम धारण धणी,
जगतगुर भले महावीर जायौ।४।

सतरह भेदो पूजा स्तवन

भाव भले भगवंत री, पूजा सतर प्रकार।
परसिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठै अधिकार।१।
करि पींछी मुखकोश करि, विमल कलश भरि नीर।
पूजा न्हावण करौ प्रथम, सहु सुख करण सरीर॥२॥

केसर चदन कुमकुमै, अंगी रचो अनूप।
करि नव अगे नव तिलक, पूजा वीय प्ररूप ॥ ३ ॥
वसन युगल उज्जल विमल, आरोपें जिन अंग।
लाभ ज्ञान दरसण लहै, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ ४ ॥
करपूरैं कसतूरियै, विविध सुगन्ध वणाय।
अरिहंत अंगै अरचतां, चौगइ दुख चूराय ॥ ५ ॥
मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार।
प्रभु पूजाए पंचमी, पंचमगति दातार ॥ ६ ॥
छट्ठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुष्पमाल।
गुण गुथी थापौ गले, जेम टलै दुख जाल ॥ ७ ॥
केतक कपक केवड़ा, सौभे तेम सुगात।
चाढो जिम चढता हुवै, सातमीयें सुख सात ॥ ८ ॥
अंगै सेल्हारस अगर, पूरौ मुखै कपूर।
अरिहंत पूजा आठमी, करम आठ कर दूर ॥ ९ ॥
मोहन धज धरि मस्तकै, सूहव गीत समूज।
दीजै तिन प्रदिक्षणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १० ॥
प्रभु सिर मुगट धरौ प्रगट, आभरण सुघट अनेक।
वाहै सोहै वहुरखा, विधि दशमी सुविवेक ॥ ११ ॥
फूलहरौ अति फाबतौ, फूदे लहकै फूल।
महकै परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १२ ॥
पुहप सुरभि पाचे वरण, वरषा करण विशेप।
अधो वध मुख ऊरधे, द्वादशमी विधि देख ॥ १३ ॥

चित चोखे चोखे करी, अठ मगल आलेह ।
अरिहत प्रतिमा आगलै, तेरम पूजा तेह ॥ १४ ॥
गंधवती मृगमद अगर, सेल्हारस घनसारु ।
धरि प्रभु आगलि धूपणो, चवदम अरचा चारु ॥ १५ ॥
कठ भलइ आलाप करि, गावौ प्रभु गुण गीत ।
भावौ अधिकी भावना, पनरम पूजा प्रीत ॥ १६ ॥
कर जोडि नाटक करै, सजि सुन्दरि सिणगार ।
भव नाटक ते नवि भमै, सोलम पूजा सार ॥ १७ ॥
तत घन शुषि रे आन धें, वाजित्र चौविध वाय ।
भगत भली भगवंतरी, सतरम ए सुखदाय ॥ १८ ॥
जुदी जुदी विध जाणिवा, सख्या पिण समझाय ।
दोहे इक इक दाखवी, इम धर्मसी उवझाय ॥ १९ ॥

बीकानेर चैत्य परिपाटी स्तवन

चैत्य प्रवाडे चौवीसटै, करता दरिसण सहु दुख कटै ।
घणा महाजन मिलिया घेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ १ ॥
शक्रस्तव पाचे सुविचार, जुगते जिनवर देव जुहार ।
भावै वावै भुंगल भेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ २ ॥
नित नित वीजै देहरै नमो, वासपूज्य जिनवर वारमो ।
अलग टलै अन्नान अंधेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ ३ ॥
तीजो देवल तिणहीज तीर, वंदो जिन चौवीसम वीर ।
जिण सहु सुरवर कीधा जेर, वदो जिनवर बीकानेर ॥ ४ ॥

भाडैसाह करायौ भलौ, तीरथ ए सहु मैं सिर तिलौ।
मोटी ओपम राजे मेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ ५ ॥
सुमतिनाथ जिण पंचम सार, चौमुख २ जिन च्यार च्यार।
ऊपरि ऊपरि सुजस उचेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ ६ ॥
नमि आगे तिहा थी नमिनाथ, इकवीसम आपै सिव आथि।
हालौ जीव जयणाए हेर, वन्दो जिनवर बीकानेर ॥ ७ ॥
वलता देवगृहे सुविधान, मन सुध वदु श्री वर्द्धमान।
फिरतां शुद्ध प्रदिक्षणा फेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ ८ ॥
आदिसर प्रासाद अनूप, राजैं मूरति सुन्दर रूप।
चिहुं दिसि बिंब घणा चौपखेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ ६ ॥
अजितनाथ वीजौ अरिहंत, भय भंजन भेट्यौ भगवंत।
खाट्यौ समकित पाप खखेर, वदो जिनवर बीकानेर ॥ १० ॥
परसिद्ध ए आठे प्रासाद, प्रणम्या जिनवर तजी प्रमाद।
श्री धर्मसी कहैं साम्भ सवेर, वंदो जिनवर बीकानेर ॥ ११ ॥

तीर्थ कर स्तुति-सवैया

नमो नितमेव सजौ शुभ सेव, जयो जिनदेव सदा सरसै।
दुति देह दसैं, अति ही उलसै, दुख दूर नसै जिनकै दरसै ॥
असुरेस सुरेशा अशेष नरेशा, सबै तिण वंदन कुं तरसे।
धर्मसींह कहै सुख सोऊ लहै, जोऊ आदि जिणंद नमै हरसै ।१।

सवैया तेवीसा

तू उपगार करै जु अपार अनाथ अधार सबै सुखकंदा ।
जिते जगदेव करै तुझ सेव जिनेसर नाभि नरेसर नन्दा ॥
देख मुख नूर मिटैं दुख दूर नसै अंधकार ज्युं देखि दिणंदा ।
श्री धर्मसीह कहै निसदीह उदौ करि संघ कौ आदि जिणंदा ।२।

दान दियो जिण आपणी देह कौ, लीनो परावत जीव लुकाइ ।
आवत ही अचिरा उदरैं सब देस मे शाति जिणें वरताइ ॥
पाल्यौ छ खंड को राज जिणें जिनराज भयौ पदवी दु पाइ ।
सेवहु भाव भलै धर्ममी कहै शांति जिणंद सबै सुखदाइ ॥ ३ ॥

अगट्टा विकटा उमटाति घटा सघटा विछुटात छटा घन की ।
इक ताल मैं ताल रु खाल प्रणाल वहै इक ताल उतालनि की ॥
चिहुं ओर चकोर सजोर सु भोर करै निसि सोर पहोरनि की ।
विनती करै राजमती पिउ सुं अब वात कहा धर्म शीलन की ॥४॥

ताल कंसाल मृदंग वजावत, गावत किन्नर कोकिल कूजा ।
ताथेइ ताथेइ थेइ भलै हित, नाचत है नर नार समूजा ॥
कुंडल कान झिगामग ज्योति, सु दीपत चंद दिनंदही दूजा ।
यौं धर्मसीह कहै धन दीह, बनी मेरे पास जिणंद की पूजा ॥

जानत बाल गुपाल सबै जसु, देस विदेस प्रसिद्ध पडूरै,
नाम ते कामित पामत हैं नित, देखत जात सबै दुख पूरैं ।
मोहन रूप अनूप विराजित, सोभत सुन्दर देह सनूरैं,
ध्यान धरौं हित सु धर्मसी कहै, पारसनाथ सदा सुख पूरै ॥

जाकौ परता पूर देखे दुख जाइ दूर,
हाजरा हजूर जगि जागैं प्रभु पास जू।
मूरति विराजै नित चतुर के मोहे चित्त,
पेखै वधै नैननि की अधिक पियास जू॥
कीरति सुनी है कान, दीनौ कहा लु कै दान,
धरिके तुम्हारौ ध्यान आव लख पास जू।
कहत है धर्मसीह गहत ही ताकौ नाम,
लहत अनंत सुख तूटै दुख पास जू॥

चौवीस जिन गणधरादि सख्या छप्पय

वंदो जिन चौवीस चवदसें बावन गणधर।
साधु अट्ठावीस लाख सहस अडतीस सुखंकर॥
साध्वी लाख चम्माल सहस छयालिस चउसय।
श्रावक पचपन लाख सहस अडताल समुच्चय॥
श्राविका कोडि पच लाख सहु,
अधिक अठावीस सहस अख।
परिवार इतो संघ ने प्रगट,
श्रीधर्मसी कहै करहु सुख॥

सनत्कुमार सज्झाय

ढाल –त्यागी वैरागी मेघा जिन सगझाया,

अथवा उडरे आबाकोइल मोरी एहनी

साचा सुग्यानी ध्यानी सनतकुमारा,
कारिमी काया माया कुण अहंकारा । सा०
इण महामुनिना ए अधिकारा, नित साभलतां ह्वै निसतारा ।१
एण भरतक्षेत्र चउथा आरा, हथणाउर सुरपुर अणुहारा ।सा० ।
आससेण सहदेवी कुखि अवतारा, भोगवै चक्रवर्ति
पदवी भारा । सा० । २
विधि विधि ऋद्धि तणा विस्तारा, पालै राज छखंड पडारा ।सा०।
एकदा इन्द्र प्रशंसै अपारा, ए अतिसुन्दर रूप उदारा । सा० । ३।
तिहा विजै विजयंत देवअतारा,
इन्द्र वचन आणंअदेखारा । सा०।
विप्र नो वेश रचीं तिणवारा, देव दोआवै देखणदीदारा ।सा०।४।
पइसण देवैंनहि प्रतिहारा, आपन्हवण करै अग उघारा ।सा० ।
अम्हे दरसणआया अलगारा, विचिरोकण ना नही
व्यवहारा । सा० । ५
मुजरो कीधौ गेहमझारा, कुण इणआगै देवकुमारा । ता० ।६
दीपइरूपजाणे दिनकारा, सक्रवचन ते साच संभारा ।सा० ।६
इम सुणि नृप आणे अहकारा, सभा विराजैभला सजि
शृंगारा ।सा०।

वलिआवैं देखैं दरबारा, पिण शिरधुण्यौ केण प्रकारा ।सा।०।७
विप्र पूछयते कहय विचारा, एतुम्ह विणस्यौ रूप अबारा ।सा०।
धिग ए तनु अभिमान धिकारा, नरनीकाय तिका नाछारा । ८।
अदृश हुआ सुरते अचंभारा, सहु देखतां लोक सभारा । सा० ।
विणट्ठी कायारौग विकारा, चक्रवरति रा पिण नहि चारा ।६।
अशुचि अपावन अथिर संसारा, गरब करै ते मूढ गमारा ।सा०।
भरिया तजि कोठार भंडारा, आप चक्रीहुआ अणगारा ।सा।१०
दिल वहु हेत सुनदा दारा, पूठइ विलपै ले परिवारा । सा० ।
लगि छम्मास फिरीतसुलारा, ललच्यौ नहि तोईचित्त लगारा ११
अरस विरस मुनिलयैं आहारा, उपज्या साते रोग अपारा ।सा०।
कडू ज्वर सासकास करारा, स्वरभग अखियाउदर विथारा ।१२।
सातसैं वरस सह्या असातारा, इंद्र वखाण्यौ वले दृढ आचारा ।सा०।
सुरकहै वेसकरे सथुआरा, साधु समाधिकरूतुम्हसारा ।सा०।१३
मुनि कहै अतरग करम आम्हारा, तिहाकोईजोर न चलैं तुम्हारा ।सा०।
परचें थूक लगाइ पोतारा, अगुलीकीध सोवन आकारा ।सा।१४
भरिऔ मुनिवर लब्धिभडारा, वन वन एहचलैं खगधारा ।सा०।
सुर परसंसि गयौ श्रीकारा, आऊ त्रिण लखवरष आधारा ।१५
समेतशिखरैं मास सथारा, सरगतीजै गया सनतकुमारा ।सा०।
विजयहरष गुरु सुगुर विचारा, वंदे श्रीधरमसीह वारोवारा।१६

मेतार्थ मुनि स्वाध्याय

राजग्रही में गोचरी, विहरतौ शुद्ध आहार ।
सोनार नै घर संचर्यो, सुमति गुप्तिइ रे साचवतौ सार ।१।
सुज्ञानी साधु धन मेतारिजं धीर ।
सजि समता रे तजि ममता सरीर ।सु०।धन०।२।
सोना तणा जव तिण घड़ी, तिण घड़ी, कीध तैयार ।
सोनार तिण साधुनइ बहिरावा, गयो गेह मझार ।सु०।३।
पूठा थकी कुंच पखियइ तिहा, चुग्या सहु जव तेण ।
सोनार आइ संभालता, कह्यौ माहरा रे जव लीधा केण ।सु०।४।
नर कोइ बीजौ इहा नहीं, सहु लिया जव इण साध ।
तिण रीस भरियै तेहनौ, सीस वीटयौ रे लेइ नीले वाध ।सु०।५।
जाणियौ मन मे तिहा यती, जौ कहुं गिलिया क्रुंच ।
तौ एह हणिस्यै तेह नै, साधु बोल्यो रे नहीं इणसंच ।सु०।६।
अति घणी वेदन ऊछली, सूकतै वाधूइ सीस ।
पीड थी दृग छिटकी पड्या, दया पाली रे तोइ बिस्वा वीस ।७।
भली अनित्य अशरणभावना, धरि चित्त चढ़ते ध्यान ।
कर्म चूरि अतगड़ केवलि, थइ पहुंतौ रे मुनि शिवथान ।सु०।८।
अणगार एहवा उपशमी, प्रणमियैं तेहना पाय ।
सुख विजयहरष हुवै सदा, इम भाखइ रे धर्मसी उवझाय ।सु०।६

—:※:—

दश श्रावक सज्झाय

सूधै मन प्रणमौ दश श्रावक मोटी ऋद्धि बारैं व्रत धार ।
वीर जिणंदइ एह वखाण्या, सातमे अंग तणैं अधिकार ।सू०।१।
वाणीय गाम नगर तिहा आणंद, बारह कौडि सोनईया सार ।
दस गौ सहस तणो इक गोकुल, एहवा गौकुल जेहनै च्यार ।सू०।२।
कोडि अढ़ार सोवन छ गोकुल, चंपापुरि कामदेव जगीस ।
तीजौ चुलणीप्रिया बनारसी, आठ गोकुल धन कोडि चौवीस ।३।
सुरादेव वाणारसी नयरइ, चुलशतक आलभीया सार ।
कंपिल्ले नयरैं कुंडकोलिक, छ व्रज कोडि अढ़ार अढ़ार ।सू०।४
पोलासुपुरि सद्दालपुत्र सत्तम, तीन कोडि धन गोकुल एक ।
आठमौ महाशतक राजग्रही, कोडि चौवीस व्रजआठ विवेक ।५।
नवमो नदणीप्रिया सावत्थी, दशमौ लेतीया पिया तिण ठाम ।
बार बार कोडि धन बिहुनै, च्यार च्यार गोकुल अभिराम ।६।
व्रत पाली अणशण करि पहुंता, पहिलै देवलोकैं परधान ।
च्यार च्यार पल्योपम आयुष, धर्मसीह धरै धर्म ध्यान ।सू०।७

—:❀:—

श्री गुरुदेव स्तवनादि संग्रह

श्री गौतम स्वामी स्तवन

प्रहसम आलस तजि परो, चोखो चित्त करो रे, गावो एकणी रंग।
गौतम गुण भणो रे ॥ आंकणी ॥
सेवो मन शुद्धे करी, भावे भरी रे, आणंद होवे अंग ॥गौ०१॥

नामे नित नवनिध मिलैं संकट टलै रे, दालिद्र नासे दूर।
ध्यान धर्या धन है घणा,
न रहे मणा रे, पामे सुख भरपूर ॥ गौ०२ ॥

कामधेनु कल्पतरु, चिंतामणि वरु रे, नाम में तीन रतन्न।
लब्ध अठावीस जेहनें,
गुण गेह नें रे, ध्यावे ते धन धन्न ॥ गौ०३ ॥

जिण दिनकर किरणा ग्रही, मन गहगही रे, चढ्यौ अष्टापद सोइ।
जिणवर विंव जुहारिया ,
दुख वारियारे, च्यार आठ दस दोइ ॥ गौ०४ ॥

प्रतिबोध्या तापस वली, मन नी रली रे, पनरेसें नें तीन।
एकणि पात्रे पारणो,
भव-तारणउ रे, लब्धि अंगूठ अखीण ॥ गौ०५ ॥

जे एहवा मुनिवर जपै, तसु दुख खपै रे, तूटै सगला कर्म ।
लीला अधिक लहै सदा,
सुख संपदा रे, भाजे भव नौ भर्म ॥ गौ०६ ॥
आठ सिद्धि हुइ आंगणै, घरि धन घणौं रे, विजयहरष जशवास ।
धरमसीह मुनिवर इम कहै,
ते सुख लहै रे, एह भणै जे उल्हास ॥ गौ०७ ॥

श्री जबूस्वामी स्तवन

छोडो ना जी २ कचन नै कामिनी छौडौ ना जी ।
सुणि जंबु स्वामी छोडो ना जी । आणि हां ।
सुधरम स्वामी तणि सुणि वाणी, इमदिक्षा मन आणी ।
तरुणी परणी तुरत तजौ ते, तोड़ो मति अति ताणी ॥छो० १ ॥

दायज मे सोनइया दीधी, नवला कोड़ि निनाणु ।
परिहरि नै पाछै पछतास्यौ, तुम सु स्यु अति ताणु ।छो० २ ।

प्रीतम कहै सुण देवानुप्रिये सुख थोड़ा दुख बहुला ।
मधु बिन्दु दृष्टाते मानी, सग तजु छु सगला ॥ छो० ३ ॥

सुन्दर आठे श्वसुरा सासु, मातु पिता हित माथै ।
प्रभवो पचसया प्रतिबोध्यो, संयम लै सहु साथै ॥ छो० ॥ ४ ॥

सुधरम शीश हुवा ए सहु, सुधरम शील आचारी ।
सुत्र प्ररूप्या शिव पद पहुंच्या, आज जिके उपकारी ॥छो० ५॥

वडली जिनदत्तसूरि (यात्रा) स्तवन

यात्रा ए वडली जास्या, गुरुदेव तणा गुण गास्या हो ।
जिहा जिनवर मूरति राजइ, वलि जिनदत्तसूरि विराजैं हो ।१।

पाटण अणहलपुर पासइ, एह कीजै यात्रा उल्हासइ हो ।
सुणि तीरथ महिमा सारी, आवइ भावइ नर नारी हो ॥२॥

पूज्या सहु इच्छा पूरइ, दुख दालिद नासै दूरै हो ।
जिण चौसठ योगिनी जीती, वरतइ ए बार वदीती हो ॥३॥

वीर बावन पिण वसि कीधा, जगगुरू एहवा जस लीधा हो ।
साकिणी डाकिणी उपशामइ, न पडै विजली जसु नामै हो ॥४॥

घर पुर वलि वाटइ घाटै, दुस्मण भय दूरै दाटै हो ।
खरतर गुरु इम जस खाटइ, वरतै जे सुधरम वाटै हो ॥५॥

पारिख गुलाल पुन्याई, जेहनइ सुत यात्र कराइ हो ।
श्रीपूज जिनसुखसूरि साथइ, लाभ लीधौ लालचंद नाथइ हो ।६।

सतरइ सतसठ्ठ वरीसइ, मिगसर वदि दुतीया दीसइ हो ।
सहु संघ मनोरथ साध्या, इम कहै धर्मसीह उपाध्या हो ॥७॥

—✿—

जिनदत्तसूरि सवैया

चावन वीर किये अपने वश, चौसट्ठि योगिनी पाय लगाइ।
डाइण साइणि व्यंतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ॥
वीज तटक्क भटक्क कट्टक, अट्टक रहै पै खट्टक न काइ।
कहै धर्मसीह लंघे कुण लीह, दीयैजिनदत्त की एक दुहाइ॥१॥

१ श्री जिनकुशलसूरि (देरावर यात्रा) स्तवन

दादो देरावर दीपै, जसु सेवक सुजसै जीपै हो।
सदगुरु सुखदाई।
श्रीजिनकुशलसूरिन्द, कलिजुग माहे सुरतरु कंदो हो॥१॥
महिमा इण जग माहे, आवै वहु यात्र उछाहे हो।
परतिख परता पूरैं, चित्तनी सहु चिंता चूरे हो॥२॥
विपमी वेला वाटै, करता समरण दुख काटै हो।
छाजहडा कुल छाजैं, गुरु महिमा अधिकी गाजैं हो॥३॥
परसिद्ध जिणचंद पाटै, खरतरगुरु शोभा खाटै हो।
सानिध करण सदाइ, वड नामी गुरु वरदाई हो॥४॥
थुंभ घणा ठाम ठामै, पाय पूजै ते सुख पामै हो।
थिर देरावर थानै, मुनिवर सहु आसति मानै हो॥५॥
मन मोटै मुलताणी, आदर यात्रा मन आणी हो।
राखी राखेचे रेख, सघ कीधो तिण सुविशेष हो॥६॥

जेसलगढ गच्छराज, जिणचंदसूरि गुणे जिराज हो।
वदण संघ तिहा आवै, चित्त साते क्षेत्रै वावै हो ॥७॥
संघ आदर समजं, आया यात्रा श्रीपूज हो।
मोटो संघ मुलताणी, हित भरोदी हाजीखाणी हो ॥८॥
जलालपुरे जस लीयो, सीतपुर उच वंछित सीधो हो।
ए संघ यात्रा आया, श्रीपूज श्रीसंघ सवाया हो ॥९॥
सतरेसे पैंतालीसैं, माह सुदि तीज सुजगीसै हो।
यात्रा करी जयकारी, श्री धर्मसी कहै सुखकारी हो ॥१०॥

(२)

कुशल करण जिन कुशल जी, दादोजी परसिद्ध देव रे लाल।
परगट परता पूरवै, शुद्ध मन करतां सेव रे लाल ॥१॥
पृथ्वी माहे परगड़ो, सिवीयाणो गढ सुखकार रे लाल।
जेलागर मत्री जेहां, नामे जयतश्री नारि रे लाल ॥२॥
तेरे सैत्रीसैं समै, जायौ शुभ दिन जयकार रे लाल।
सैंतालैं सयम लीयौ, सहु अथिर गिण्यौ संसार रे लाल ॥३॥
सदगुरु जिनचंदसूरिजी, सघले गुणे देखि सुघाट रे लाल।
शुभ महोरत सत्योत्तरे, पाटण में दीधो पाट रे लाल ॥४॥
गिरुवो खरतर गच्छ धणी, जिण शासन में जसवास रे लाल।
देरावर पुर दीपतौ, निव्यासीयें स्वर्ग निवास रे लाल ॥५॥

सकट माहे समरता, दादोजी करें दुख दूर रे लाल ।
बेडी राखी बूडती, परसिद्ध ए विरुद पडूर रे लाल ॥६॥
सेवता सुरतरु समो, दिन दिन दौलति दातार रे लाल ।
विजयहर्ष वंछित दीयै, वंदै धर्मसी वारंवार रे लाल ॥७॥

(३)

कुशल गुरु नामे नवनिधि पामै,
ध्यावै जेह सूधै मन सदगुरु, दिन दिन शुभ परिणामै ॥१॥
भर डुक्कर अटवी वलि वाटै, वैरी जूथ घणामे ।
कुशल खेम कुशल परसादै, ते पहुंचे निज ठामै ॥२॥
परता पूरण संकट चूरण, चावौ चौरासी गच्छा मैं ।
धर्मसीह कहै ध्याया धावैं, करिवा सानिध कामै ॥३॥

(४)

दौलति दाता द्यौ सुख साता, सहुजन मन्न सुहाता राज ।
जे दिन राता तुझ गुण गाता, ते रहै राता माता राज ॥१॥
दादा दादा जग जस वादा, मोह्या सहु नर मादा राज ।
टलइ अल्हादा सहु विषवादा, कुशल कुशल परसादा राज ॥२॥
प्रवहण तार्या कष्ट निवार्या, अटवी माहि उवार्या राज ।
विरुद संभार्या धर्मसी धार्या, सेवक काज सुधार्या राज ॥३॥

(५)

प्रेम मन धारि नित पहुर परभात रै,
विविध जसवास गुण रास वादौ।
अमल अखीयात विख्यात एणै इला,
दीपतौ देव जग मांहि दादौ ॥१॥
घाट रिपु थाट जलवाट ओघट घणै,
हणै सहु आपदा हुइ हजूरै।
सूरि सिरदार द्यै सकल सुख सेवकां,
पूर नित कुशल जिनकुशल पूरै ॥२
अधिक घण झाड उझाड अवगाहता,
लसकरा तसकरा पड्या लारै।
धींग गच्छराज रो ध्यान मन ध्यावता,
विकट संकट सहु निकट वारै ॥३॥
चडकती भाजती बूडती वेडीया,
पार उतार जिण विरुद पायौ।
तूस सेवक तणा दूख भाजै तुरत,
धरमसी कुशल गुरु नाम ध्यायौ ॥४॥

—:०:—

सवैया

(६)

राजैं थुभ ठौर ठौर ऐसो देव नाहीं और,
दादो दादो नाम तें जगत यश गायो है।
आपणें ही भाव आय पूजै लख लोक पाय,
प्यासनि कू राण माफि पानी आन पायो है॥
वाट घाट शत्रु थाट हाट पुर पाटण में,
देह गेह नेह सौं कुशल वरतायौ है।
धर्मसींह ध्यान धरैं सेवका कुशल करै,
साचो श्री कुशल गुरु नाम यो कहायो है॥१॥

(७) कुशल सूरि छप्पय

सरब शोभ गुण सकल, साधुपति आपै साता।
सिरवंता सिरि सिखर, सील शुभ सीख विख्याता॥
सुद्ध चित्त सुखकार, सूरि जिनकुशलसूर द्युति।
सेवहि सेवक कोड़ि, सेव मत वात शैल पति॥
सोभंति अधिक सोभा जगति, सौम्यरूप सौजन्यवर।
संघ नै सुख संपति दीयण, सदा सेव धर्मसी सधर॥

(८)

श्री जिन कुशल सूरीश्वरु गावो गच्छराया।
शुद्ध चित्त नित समरंता सुख होय सवाया। श्री १॥

सेवै कुण सुर अवर कु, परिहरि प्रभु पाया।
आलिंगे कुण आक कुं, छंडि सुरतरु छाया ॥२॥
मन शुद्धे जपतां मिले, मन वंछित माया।
तेणि धर्मवर्द्धन धर्यो, गुण जिण ही गाया ॥३॥

(६)

कुशल करो जिन कुशल जी दुख दूर निवारौ।
द्यौ मन वछित दिन दिनैं, विनती अवधारौ ॥कु० १॥
तो समरथ साहिब छतें, दास दीन तुम्हारौ।
शोभा न वधै स्यामीया, एह वात विचारौ ॥२॥
भेट्या में हिव तुम्ह भणी, थयौ सफल जमारौ।
धर्मवर्द्धन कहे माहरा, मन वछित सारो ॥३॥

श्रीजिनचन्दसूरि गीत

जाति—सपखरो

आज खरै उदै मुदं सारा गच्छ माहि
साहि पातिसाहि मे सराह वाह वाह।
जाग्यौ जैन चंद सागी, सोभागी रागी जैन धर्म,
वैरागी पुण्याइ जागी अधिकै उछाह ॥१॥
रूडा रूडा उपदेश दे दे वड़ा वड़ा भूप
कीधा, ध्रम्म रूप, खड़ा तडा सैवै पाय।

वाणि रा किलोल लोल वखाणै इलौल आँणि,
सूत्र रा अरत्थ सो गरत्थ ये वताय ॥२॥
सूरि मंत्र साधना सवाइ पाइ अधिकाइ
आसति अगम्म आइ साची हाथ सिद्धि।
साचो जन्त तत्तसार औहटी विषमवार,
वार तीन च्यार पाई पारिखा प्रसिद्ध ॥३॥
उजाडैं पहाडे भाडे आया चोर धाडै आडै,
राख्यौ साथ ओट जाणे कीध लोह कोट।
जास वयण सिद्धि योग सेवका रा रोग सोग,
वायै ज्यु वातूल तेम जायैं चढी चोट ॥४॥
साधी पंचनद्द जेण लाधी सिद्ध जैनचंद्र,
जैनसिंघ जैनराज रतन अबीह।
ओपै एण पाट धम्मवाट साधा गज्ज घाट,
पूज मोटे पुन्न धन्न धन्न धर्मसीह ॥५॥

नं०—२ जाति कडखो

पुण्य परकास परभात प्रगट्यौ प्रगट,
भेटता भरम भर तिमिर भाजै।
देखि खरतर सुगुरु एम दाखै दुनी,
रवि तणै तेज तुझ भाल राजै ॥१॥
अधिक ऊच्छाह सोइ दिवस उगो इला,
दुरित अधार सहु दूरि डोलैं।

(५) रसाउला

चावौ गच्छ चउरासियै, भट्टारक वडभाग।
गणधर श्री जिणचद गुरु, एओ सोभ अथाग ॥१॥

ए अत्थग्गरा, पूजरै पग्गरा,
यात्र चीजग्गरा, आवै उमंगरा।
साधरै संगरा, अग उपागरा,
सूत्र सुचंगरा, भेद अभङ्ग रा।
गंग तरंग रा, राग नै रगरा,
पापनै पुण्य रा, दाखवैं दिन्न रा।
संसै आसन्न रा, मेटियैं मन रा,
गम्म आगम्म रा, ज्ञान रै गम्म रा।
आखवैं तत्त आगम्म रा,
धोरी श्री जिन ध्रम्म रा।
पूजतां पाय गुरु प्रम्म रा,
जायैं पाप जनम्म रा ॥१॥

(६) सवैया

चाकुं दूजैं पछि दूज वंदत है कोऊ एक,
याकौ नित ही नरिंद वदत अशेष हैं।
चाकी तो निशा की वेर, अथिर सी जोति होत,
याकै ज्ञान कौ उदोत भानु सौं सुपेख हैं।

वाकै सव सोल कला, सो भी दिन रैन छीन,
याकै तो छतीस दून, दून रूप रेख हे।
धर्मसी सुवुद्धि धार गुणसौं विचार यार,
चंदसु तो जिणचद केते ही विशेष हैं ॥१॥
जैंसे राजहसनिसौं राजै मानसर राज,
जैसै विंध भूधर विराजैं गजराज सौं।
जैसैं सुर राजि सुं जु सोभ सुरराज साजैं,
जैसैं सिंधुराज राजैं सिन्धुनि के साज सौं॥
जैसे तार हरनि के वृन्द सौं विराजैं चंद,
जैसे गिरराज राजै नद वन राज सौं
जैसे धर्मशील सौं विराजै गच्छराज तैसे,
राजैं जिनचदसूरि सघ के समाज सौं ॥२॥

तैसो ही अनूप रूप भावैं आइ वदै भूप,
चातुरी वचन कला पूरी पडिताइ है।
तैसो ही अडिग ध्यान आगम अगम ज्ञान,
साचो मूरि मंत्र को विधान सुखदाइ है॥
तैंसी है अमल बुद्धि, साची है वचन सिद्धि,
तैसों गुण जान तैसी सोभा हू सवाइ है।
और ठौर गुण एक तो मे सब ही विवेक,
ऐसी जिनचन्दसूरि तेरी अधिकाइ है॥३॥
जिणचंद यतीश्वर वदन को,
नर नारि नरेसर आवत है।

सुकवि गच्छराज नैं निरखि उपम सजैं,
तरणि जिम ताहरो वखत तोलैं ॥२॥
धर्म शोभा सकल तेज वरते धरा,
हारि नाठौ तमस हेक हिलकैं।
सूरि जिणचंद संपेखि सगला कहै,
किरणधर जेम तुझ भाग किलकैं ॥३॥
प्रगट परताप जिनरतन रो पाटवी,
सकल सुख देण कवि कहै धर्मसीह।
भालियल तेज किरणाल जिम झालता,
दलिद मेटैं करै दौलति दीह ॥४॥

नं०—२

दे दैंकार करणं धर्म दाखैं,
अधिकौ आणिंद दैं अधिकार।
नाम न ल्यै जिणचद न ना रो,
नाठौ तिण रूसे नाकार ॥१॥
सुवे सात प्रियां रे साह्यो,
गिणि पूरवलौ वस गिनौ।
पूज तठैं पिण धरता पगला,
न सकै रहि तिण ठाम न नौ ॥२॥
राजैं नगर जिणें गच्छराजा,
दे दैंकार घणा तिण देस।

न नौं कोइ मुखैं न लगावै,
परहौं नासि गयौ परदेस ॥३॥
धरि हिव अरज रतन पाटोधर,
साच कहै धर्मसीह सही।
माग्यो देसि आफरती मुंनैं,
ना कारौ तुझ पासि नहीं ॥४॥

नं० (४)

चढ जिम सूरि जिणचंद्र चढती कला,
सोम आकार सुखकार सोहै।
अधिक आणंद उद्योतकारी इला,
महीयले मानवा मन्न मोहै ॥१॥
आय नर राय जसु पाय लागै अडिग,
देखता दलिद्र दुख जाय दूरै।
प्रगट जसु पुहवी परताप जागै प्रबल,
पवर गच्छराज सुखसाज पूरै ॥२॥
धरत धर्मवाट मुनि थाट सोभा धरा,
रतन रै पाट गहगाट राजैं।
जुग्गपरधान जंगम्म तीरथ जगै,
दौलति दिल्ल चढतै वाजैं ॥३॥
सकल गुण धार सिरदार सोभा सधर,
सबल सौभाग संसार सारै।
धरमवर्द्धन धरैं नाम धन धन रा,
अभिनवौ कल्पतरु एण आरैं ॥४॥

वर मादल ताल कंसाल बजावत,
के गुरुके गुण गावत है ॥
बहु मोतीय तन्दुल थाल भरे,
नित सूहव नारि वधावत है ।
धर्मसीह कहै गच्छराज कुं वंदत,
पुण्य उदै सुख पावत है ॥४॥

(७) सवैया

छाजति छवि चंदा मुख सुख कंदा
अमल अमंदा अरविंदा ।
भाजति भय भुंदा शोभ सुरिंदा,
फेटत फंदा दुख दंदा ॥
दुति जाणि दिणंदा, सेवहि वृंदा,
हाजर वंदा राजिन्दा ।
कहै धर्म कविंदा अति आणंदा,
जगति जतिंदा जिणचंदा ॥१॥
शोभत सुखदानी श्री गुरुवाणी,
सकल सुहानी सुनि प्राणी ।
कलि कमल कृपाणी, सिव सहिनाणी,
गुणिजन जाणी हित आणी ॥
बुधजनहि वखाणी ग्रन्थ लिखाणी,
रस कर सानी दुख हानी ।
धर्मसीह सुजानी पुण्यप्रधानी,
कुशल कल्याणी महिमानी ॥२॥

(८) गहुली

धन धन दिन आज नो लेखै, वलि हरख्या सघ विशेषैं ।
अंग उलट धरिय अशेषै ॥ १ ॥
पाटोधर पाटीयै पधारौ, अम्हची विनती अवधारौ ॥आ०॥
चौपड़ा गणधर कुलचन्द, सहसकरण सुपीयारदे नंद ।
खरतर गच्छ अधिक आणद ॥ २ ॥ पाटो० ॥
सदगुरु जिनरतनसूरिद, पाट थप्यौ अभिनव इंद ।
चढती कला श्री जिणचद ॥ ३ ॥ पाटो० ॥

हियडौ नयणा अति हर्षे, दुख जाय परा सहु दरसै ।
तुम्ह देखण नै सहु तरसै ॥ ४ ॥ पाटो० ॥

सुणता उपदेश तुम्हारौ, अति हरख्यौ चित्त अम्हारौ ।
तुम्ह दरसण मोहनगारौ ॥ ५ ॥ पाटो० ॥

पूज वदन नी मन रलीया, सहु कोइ श्रावक मिलीया ।
दरसण दीठा दुख टलीया ॥ ६ ॥ पाटौ० ॥

पूज मूरति मोहन वेल, वलि वाणि सुधारस रेल ॥
पूज चालै गजगति गेल ॥ ७॥ पाटो० ॥

मिल मिल सब सूहव आवें, गीत मगल गहुंली गावै ।
वलि तंदुल मोती वधावै ॥ ८ ॥ पाटो० ॥

पूज प्रतपो अधिक पुन्याइ, नित विजयहरष सुखदाइ ।
धर्मसी कहै शोभ सवाई ॥ ९ ॥ पाटो० ॥

(६) गुरु गीत

राजै खरतरगच्छ राजवी, नित नित हो नवलं नूर । रा० ।
जिणचंदसूरीसर जग जयौ, उलसतं हो पुण्य नैं अकूर ॥१॥
विद्याधर वड वखतावरु, महियलमें हो महिमा महिमाय ।
राउ राणा मोटा राजीया, पुहवीपति हो लागै जसु पाय ॥रा०२
सहु कु सुखदायक मुख सोहै, देखता हो दुख जायें दूर ॥ रा० ॥
जसु मूरति अति सोहामणी, सोहे सोहे हो श्रीजिनचदसूर ॥रा०३
चावा जगि गणधर चोपड़ा,
वरदाइ हो जसु वंश विख्यात ॥रा०॥
सुत सोहे सहसासाह नौ,
मतिवंती हो सुपियारदे मात ॥रा० ४॥
श्रीजिनरतनसूरीसरु,
जोग जाणी हो जसु दीधौ पाट ।
जसु जस जागै इण जगत मे,
गावइ गावइ हो गीता रा गहगाट ॥५॥
गुरु छाजे छतीसे गुणै,
भट्टारक हो जगि मोटै भाग ।
शुद्ध क्रिया नित साचवै,
सगला मे हो जेहनो सोभाग ॥ ६ ॥
श्रीयुगप्रधान यतीश्वरु,
देखता हो हुवै सफलौ दीह ।
नित विजयहरप वंछित दीयै,
धरि भावै हो गावै धरमसीह ॥७॥

(१०) जिनचंदसूरि गीत

साधु आचार सुविचार सखरी सुमति,
छतीसे गुणे करि जागीयौ वडी छति।
साधियौ सूर मन्त्र ग्रही देवा सकति,
साधुपति साधुपति साधुपति साधुपति ॥१॥
धींग धोरी वहै रतन रे पाट धुर,
पाउ धारै तिकै गिणा धन देसपुर।
सुदृष्टि जिणरी हुवै जाणि परसन्न सुर,
चद गुरु चद गुरु चद्र गुरु चद गुरु ॥ २ ॥
तत्त सिद्धान्त रा तेम व्याकरण तरक,
गात्र जिण रो सदा ज्ञान सुधैं गरक।
उदै गच्छ खरतरै आज ऊगौ अरक,
भट्टारक भट्टारक भट्टारक भट्टारक ॥ ३ ॥
सूरि जिणचद श्रीपूज शोभा सधर,
बडा जिनदत्त जिणकुशल जसु दियै धर।
श्री धर्मसी कहै सुजस सगले सखर,
जतीसर जतीसर जतीसर ॥ ४ ॥

न० ११

थिया केइ दिवस मन कोड़ करता यकां,
पुण्य करि आज अभिलाप पूगौ।
पूज जिणचंद रा चरण युग पेखता,
आज सूरज सही भलौ ऊगौ ॥१॥

धन्न धरती जठे पूज पगला धरै,
सहू इस साभरै देस सारै।
इपि गच्छराज धन आज हुआ अम्हे,
धन्न वलि तरणि जग किरण धारै ॥२॥

वाणि वाखाण री जाण अमृत वदै,
प्रेम मन धारि परवीण पीवें।
गोत्र गणधार गुणधार भेट्यो गुहिर,
दीपियौ भलौ रवि जगत दीवैं ॥३॥

रतन पटधार वडवार वरतो रिधू,
विधू धरि मेर ध्रु जाव वरतें।
धरो चिर आउ गच्छराउ धर्मशील धर,
पुहवी किरणाल जा प्रगट परतें ॥४॥

जिन चंद सूरि दोहा

वारू सरव विवेक, इतरौ जाणौ आपथी।
अम्ह नैं दीजे एक, रितु परिमाणै रतन उत ॥ १ ॥

(१) जिनसुखसूरिपद महोत्सव

ढाल—चरण करण धर मुनिवर

उदय थयो धन धन आज नो, प्रगट्यौ पुण्य अंकूरो जी।
वध्या आचारिज चढती कला, नामै जिनसुखसूरोजी ॥१॥
सूरत सहरै जिणचदसूरि जी, आप्यौ आपणो पाटो जी।
महोत्सव गाजै वाजै माडिया, गीतां रां गहगाटौ जी ॥२॥

पारिख साह भला पुण्यातमा, सामीदास सूरदासो जी ।
पदठवणो कीधौ मन प्रेमसु, वित्त खरच्या सुविलासो जी ।३।
रूडी विधि कीधा रातीजुगा, साहमीवच्छल सारो जी ।
पटकूले कीधी पहिरावणी, सहु संघने श्रीकारो जी ।।४।।
संवत् सतरै बासठ समै, उच्छव बहु आसाढो जी ।
सुदि इग्यारस पद महोत्सव सज्यौ, चंदकला जस चाढो जी ।५
साहिलेचा बहुरा जगि सलहीयै, पींचा नख परसंसो जी ।
मात पिता रूपचंद सरूपदे, तेहने कुल अवतंसोजी ।। ६ ।।
प्रतपो एह घणा जुग गच्छपति, श्रीजिनसुखसूरिंदो जी ।
श्रीधर्मसी कहै श्रीसंघने सदा, अधिक करौ आणंदो जी ।। ७ ।।

(२) कवित्त

सकल गुण जाण वाखाण मुख सरसती,
कलाधर अवर नर मींढ केहौ ।
खरें आचार सुविचार जस खरतरे,
जैनसुखसूरि जिनचंद जेहौ ।। १ ।।
सुगुरू निज सूरिमंत्र हाथसु सुंपीयौ,
दीपीयौ दशो दिश सुजस दावौ ।
कमल चढ़ती कला देखि सहु को कहै,
चंद पाट दूसरौ चंद चावौ ।। २ ।।
अगम आगम तरक शास्त्र जाणइ अर्थ,
छात्रधर छहुं छक गुणे छाजइ ।

तरंण रिखराज जेहाज जिम तारवा,
रतनहर राजहर रीति राजइ ॥ ३ ॥
वडी छति मति उगति जुगति रहणी वडी,
महिपति वड वडा वयण मोहे।
भलें धर्मशील सौभाग्य ल्यें भल भला,
सूरिवर सिहर सुखसूरिं सोहे ॥ ४ ॥

(३) जिनसुखसूरि छप्पय

सकल साख्र सिद्धात भेद विधि विधि रा भाखैं।
अवल धरम उपदेश, दुरस दृष्टाते दाखैं॥
वडि पहुंचि व्याकरण तास समवड कुण तोले।
जोडै तरक जुगति वहुत शुद्ध संस्कृत वोले॥
खरतरे सदा दीसैं खरी, प्रसिद्धि भली पुन्य पूर री।
इकवीस चौक गच्छ मे अधिक, सोभा जिनसुखसूरि री ।१।

(४) जिनसुखसूरि अमृतध्वनि

खरतरगच्छ जाणे खलक, सयल गुणे सुसमृद्ध।
शोभा जिनसुखसूरि री, सहु विधि धरा प्रसिद्ध।
चाल—धरा प्रसिद्ध द्धज जस वद्ध,
ध्यान लवद्ध द्धिपणा सुद्ध धीमा वुद्धि,
धुनि धन रुद्ध द्धूण विरुद्ध,
द्धेपन धंध द्धीरज सिद्ध द्धोरी सुद्ध,
द्धौत विरुद्ध द्धंसि कुवुद्धि,
द्धूवत परिद्ध द्धारण निद्ध द्धन गुरू वुद्ध,

द्ध र पद दिद्ध द्धरि हथ सिद्ध,
द्धी गुण गृद्ध द्धरि ततछद्ध द्धाम सुलद्ध,
द्धरणी मद्ध द्धाक प्रसिद्ध,
धूम सी किद्ध ध्वनि अमृत सुविशेष ॥ १ ॥ खरतर०

—:०:—

(५) जिनसुखसूरि चद्रावला

सहु धरमा सिर सेहरौ रे, श्री जिन धरम सुजाण,
खरतर गच्छ सोभा खरी रे, भट्टारकीया कुलभाण ।
कुलभाण रे जाँण वारू किरिया धर्म वखाण,
पूज विराजइ पुण्य प्रमाण, जिनसुखसूरि अखडित आण ॥१॥
श्री गच्छनायकजी रे, प्रतपौ वहु जुग पाट,
खाटउ जस खरौजी, वरतौ सुधरम वाट । दाटौ दुख परौजी २
साहलेचा वहुरा सही रे, पुहवी गोत्र प्रसिद्ध ।
रतनादे रूपचद नउ रे, सुत ए गुणे समृद्धरे ।
सुत ए गुणे समृद्ध सार, आणी मन वइराग अपार
संयम जिण लीधौ सुखकार, अधिकै भाव भलइ आचार ॥ ३॥
श्रीजिणचंदसूरिंद जी रे, सैं हथ दीधौ पाट ।
महोछव सूरेत मंडिया रे, गीता रा गहगाट ।
गीता रा गहगाट रे खास, दीपइ पारिख सामीदास ।
पढठवणो कीधौ परकास, विलस्या वित्त लीधौ जसवास ।४।
महिमा मोटी महियलै रे, हुआ हरष उच्छाह ।
वचन कला वखाण नी रे, वाखाणैं सहु वाह वाह ।

वाखाणैं सहु वाह वाह रे लेख, आगम भणिया शास्त्र अशेप,
श्री जिन धर्मशील सुविशेप, राजैं श्रीपूज चढती रेख, जी
गच्छना० ॥ ५ ॥

(६) सवैया

गुरू जिणचंद सूरि आप हाथ पाट दीनो,
कीनो है महोछव पुर सूरत सनूर जू।
विलस्यौ वित्त वाह वाह चौरासी गच्छे सराह,
देखैं तें विशेपैं सुख होत दुख दूर जू।
उदैं को अंकुर किधुं पुण्य ही को पूर किधुं,
सूरिमित्र साधना की सकति हजूर जू।
इंद्रभूति अवतारी साचो धर्मशील धारी,
सवही कु सुखकारी जैनसुखसूर जू ॥ १ ॥

(७) द्रुपद राग—रामकली (रामगिरी)

जिनसुखसूरि सुज्ञानी, सेवो भवि जिनसुखसूरि सुज्ञानी।
सब गुण लायक श्री गच्छनायक, सुखदायक सुविधानी ॥ १ ॥
चवद विद्या सहु विधि चतुराई, प्रकृति भली पहिचानी।
श्री जिनचंद सुगुरू पद संप्यौ, वरषत अमृत वानी ॥२॥ सेवो०॥
वखत वडै गुरू तखत विराजत, महिमा सब जगि मानी।
शुद्ध क्रिया धर्मशील सु मारग, सब ही वात सयानी ॥३॥ से०॥

(८) द्रुपद—धन्याश्री

गावौ गावौ री गच्छनायक के गुण गावौ।
श्री खरतर गच्छ अधिकी सोभा, चौरासी गच्छ चावोरी । ग०१

धन धन श्री जिनचंद पटोधर, दीपै चढ़तो दावौ।
सकल कला जिनसुखसूरीसर, पग वद्या सुख पावौ ।गच्छ०।२।
वाणी सूत्र सिद्धान्त वखाणे, विधि सु वंदि वधावौ।
ए गुरू श्री 'धर्मशील' आचारी, सहु में सुजस सुहावौ गच्छ०।।३।।

(६) भास गीत गहु ली

ढाल—मोरो मन मोह्यौ पूज वादण सौं

भलो दिण उगौ आज आणंद सौं, गुरू वाद्या लाधो ज्ञान ।।
सुणिस्या उपदेस सुहामणा, धरिस्या साचउ धर्म ध्यान ।भलो०१
नित करस्या समकित निरमलौ, निरमल जिम गगा नीर ।भलो०
तजस्यां संगति निगुणा तणी, सुगणा सु करिस्यां सीर ।भलो०२।
मिल आवौ सहिया मलपती, सुन्दर करि शुभ सिणगार ।भलो०
गुण गावौ श्री गुरूदेव ना, औ सफल करौ अवतार । भलो०
भगवत गणधरै भाखिया, सहु सूत्र सुणावइ सार । भलो०
जिन थी शुभ मारग जाणियै, एहवौ जे करै उपगार । भलो०।४
जयणा करियै जीवा तणी, जतने भरिये पग जोई । भलो०
वड़का रौ वलि कीजै विनय, मन कपट न करिस्यौ कोई ।।५।।
खाटै जस अधिकउ खरतरा, जिण शासन शोभ सुजाण ।भलो०
करणी सखरी पुन्य री करै, भला श्रावक कुल रा भाण ।भ०।।६।।
वरतै दिन दिन हि वधामणा, सहु सुजस करै संसार । भलो०
धर्म हेत उपाध्या धरमसी, श्री सघ सदा सुखकार । भ० ।।७।।

—:&:—

गुरु गहुंली

(२०) ढाल—चैत्रणी आगै थी कही । ए०

सिणगार सार वणाइ सुन्दर, चुंनडी ओढी सुचंग।
घर हाथ थाल विसाल ले, आवी अति उछरंग।
सहु मिली सहिया गुण गावौ गहुंली गीत ॥ १ ॥
सुगुरू वधावौ सु रीति, पुन्यैं धरि बहु प्रीति ॥ सहु० ॥२॥
कस्तुरि केशर कुंकमा, करि रोल भरीय कचोल।
मन रंग माडै माडणा, अधिकै भाव इलोल ॥ सहु ॥३॥
चौकुण चिहु दिशि च्यार चौकी, चौकोर फूलड़ी चंग।
कलीए हसता कमल ज्यूं, सौहे अति ही सुरंग ॥ सहु० ॥४॥
साथीयो सुन्दर विचैं सोहै, मोहै सगला मन्न।
संसार इम सफलौ करै, धन अम्मकादे धन्न ॥ सहु० ॥५॥
चोखा अंखडित लेइ चोखा॰ माहि मोती मेलि।
सुहव वधावै सुगुरु नै, वधती मोहनवेलि ॥ सहु० ॥६॥
नमती करंती निमछना, लुलि लुलि लागै पाय।
सुख विजयहरप लहै सदा, धरमसी कहै धरि भाव ॥सहु० ॥७॥

—:o:—

(२१) सुगुरु व्याख्यानगीत

ढाल—धर्म जागरीया नी०

सरस वखाण सुगुरु तणो, मन भवियण ना मोहै रे।
सुणिवानैं तरसै सहु, सकल गुणे करि सोहै रे ॥ सरस० ॥ ए।
राग सिधत तणै रसै, भेद भलीपर भाखै रे।
मिसरी दूध मिल्या थका, चतुर भली पर चाखै रे ॥सरस०॥२॥

प्रकृति जुदी पुण्य पाप नी, बेतालीस बयासी रे।
सुगुरू कहै समझाय नै, भगवते जे भाखी रे ॥ सरस० ॥३॥
दस दृष्टान्ते दोहिलो, श्रावक नौ कुल सारू रे।
संगति वलि सदगुरू तणी, पामी पुण्य प्रकारू रे ॥ सरस०॥४॥
धरम नरम मन जे धरै, भरम करम ना भाजै रे।
चरम जिणंद कहैं ते चढ़ै, परम मुगति गढ पाजै रे ॥सरस०॥५॥
वाणि विविध विचार सु, प्राणी नै परकासै रे।
जाणी नैं करिस्यै जिकै, वरस्यै मुगति विलासै रे ॥ सरस०॥६॥
इण भवि सुख अधिका लहै, विजयहरप जसवासो रे।
धरम करौ धर्मसी कहै, इण उपदेश उलासो रे ॥ सरस० ॥७॥

(१२) छप्पय—क का बारहखडी पर

करण अधिक कल्याण, काज साधन शुभ कामित।
किलक भाल किरणाल, कीध जिण निर्मल कीरत ॥
कुल दीपक वलि कुशल, कूर नहिं मन दृग कूरम।
केवल धर्म केलवण, कैहणिया कैतल भ्रम ॥
कोश गुण रतन को इण समौ, कौटिक गण कौमुदीयवर।
कज सम मुख कंठ कोकिला, कःहु जिनसुख जन सुखकःर।

—०—

श्री जिनभक्तिसूरि गीतम्

ढाल—आषाढै भैरू आवै ए देसी।

'जिनभक्ति' जतीसर वंदो, चढती कला दीपति चंदो रे। जि०।
खरतर गच्छ नायक राजै, छत्रीस गुणे करि छाजै रे।१। जि०।
श्री 'जिनसुख सूरि' सनाथैं, दीधौ पद अपणें हाथे रे। जि०।
श्री 'रिणीपुर' संघ सवायौ, महोछव कीधौ मन भायौ रे।२।
'सेठिया' वंसै सुखदाई, श्री जिन धर्म सोभ सवाई रे। जि०।
'हरिचंद' पिता धर्मधीरौ, 'हरिसुखदे' उदरै हीरौ रे।३। जि०।
लघुवय जिण चारित लीधौ, सद्गुरु नै सुप्रसन्न कीधौ रे। जि०
विद्या जसु हुइ वरदाइ, पुण्ये गुरु पदवी पाई रे।४। जि०।
प्रगटयौ जश देस प्रदेसै, वरते आज्ञा सुविसेसैं रे। जि०।
वाटै सहु देस वधाइ, खरतर गच्छपति सुखदाई। ५। जि०।
संवत 'सतरै उगुण्यासी, जेष्ठ वदि त्रीज' पुण्य प्रकासी रे। जि०
सहु सुजस रिणी संघ साध्या, इम कहै 'धर्मसी' उपाध्या रे।६।

॥ श्रावक करणी ॥

ढाल—हिवराणी पदमावती

श्री जिन शाशन सेहरौ, वदु जिनवीर।
देशविरति धर्म उपदिस्यौ, वरे श्रावक वीर ॥१॥
श्रावक नी करणी सुणौ, सद्गुरु कहै सार।
जे आदरता जीवड़ौ, पामै भव पार ॥ २ श्रा. ॥

पाछली रात प्रभात रौ, तजि ऊंघ अज्ञांन ।
वे घड़ी एकात वैसि नै, ध्यावे धर्म ध्यान ॥३॥ श्रा ॥
उतम कुल हुं उपनौ, पूरवलैं पुन्न ।
जतन करी जिन धर्म नै, राखैं जेम रतन्न ॥४॥ श्रा. ॥
धुरि समकित साचौ धरै, नित गुणे नवकार ।
आदर पर उपकार सुं, वरतें विवहार ॥५॥ श्रा. ॥
करि न सकै तोही करै, मनोरथ मन माहि ।
वृत वारै धारै वली, चारित नी चाहि ॥६॥ श्रा
देव जुहारी दिन उदय, गुरु वदि सुज्ञान ।
सांभलि उपदेश सूत्रनौ, गिणे धन दिन ज्ञान ॥७॥ श्रा.॥
वादि कहै देज्यो वलि, भात पाणी लाभ ।
भोजन कीजै भाव सौं, पात्रा पड़िलाभ ॥ श्रा. ॥८॥
पच्चखाण पूगे पारता, कहे तीन नौकार ।
घर सारू थोड़ौ घणौ, करे पुण्य प्रकार ॥ श्रा. ॥९॥
पाणी छाणे प्रेम सुं, दिन मे दोई वार ।
जीवाणी पण जतन सु, राखैं सुविचार ॥ श्रा. ॥१०॥
पीसण खाडण लीपणै, राधण रधाण ।
छै कूटो छःकायनौ, जयणा करे जाण ॥ श्रा. ॥११॥
चक्की चूल्हे चद्रूया, तिम घृत नै तेल ।
ऊघाड़ा राख्या ईया, वधै पापनी वेल ॥ श्रा. ॥१२॥
बावीस अभक्ष जे वोलिया, तजें परहा तेह ।
चवदे नेम चितारता, इण लाभ अछेह ॥ श्रा. ॥१३॥

साहमीवच्छल साचवे, साधुनी करे सेव ।
आखड़ी व्रत पचखाण री, टाले नहीं टेव ॥ श्रा. ॥१४॥
कूडा कथन रखे करो, सुंस कूड़ी साख ।
थापण मोसो मत करे, रिद्धि पारकी राख ॥ श्रा. ॥१५॥
सात्रू साजी सहित ना, विप ना व्यापार ।
पाप विणज टाले परां, जिम होइ जैंवार ॥ श्रा. ॥१६॥
व्यापार शुद्ध करे वली, निम होइ प्रतीति ।
पाप किया ते पड़िक्कमे, अतिचार अनीति ॥ श्रा. ॥१७॥
पांच तिथे टाले परो, अधिको आरम्भ ।
परहरे निन्दा पारकी, दिल न धरे दम्भ ॥ श्रा. ॥१८॥
पोता री परणी प्रिया, राखे तिण सुं रंग ।
शील धरे न करे सही, पर स्त्री प्रसग ॥ श्रा ॥१६॥
जूवा प्रमुख कह्याजिके, साते कुव्यसन्न ।
सेवैं न कोई सर्वथा, धरमी ते धन्न ॥ श्रा. ॥ २० ॥
पोसा परवे पाखिए, करे मन नैं कोड़ि ।
गुण गाए गुरुदेव ना, हरखे होडा होडि ॥ श्रा. ॥२१॥
सूड़ने दाणवइ गास जो, खड़ो खेत्र अखंड ।
उपदेश न दिये एहवा, दोप अनरथ दड ॥ श्रा ॥२२॥
रात्रिभोजन नादरे, इण दोप अपार ।
सेजै रात्रिं सूवता, वलि करे चौविहार ॥ श्रा. ॥२३॥
जो सूंता कोइ जीवनै, जोखो हुय जाय ।
तो पचखाण सहु तणो, करे मन वच काय ॥ श्रा.॥२४॥
सहु श्रावक नित साचव, एतो कुल आचार ।
धन ते कहे श्री धर्मशी, सुख लहे श्रीकार ॥ श्रा. ।२५।

—:※:०:※:—

शास्त्रीय विचार स्तवन संग्रह

४५ आगम सख्या गर्मित वीर जिन स्तवनम्

देवा ना पिण जेह छै देव, सहु देविंद करै जसु सेव ।
ते नमु श्रीदेवाधिज देव, वचन सुणौ तेहना नितमेव ।।१।।

द्यै सहु नैं सुख ए जगदीस, वाणी तेहनी विश्वावीस ।
प्ररूप्या आगम पैतालीस, सख्या नाम कहुं सुजगीस ।।२।।

श्री आचाराग पहिलौ अंग, सहस अढी ए सूत्र सुचग ।
सुयगडाग बीजौ श्रीकार (सुविचार), सख्या इकवीससे सुविचार ३

तीजौ ठाणा अग सुपतिट्ठ, सूत्रेसइत्रीससै सतसट्ठि ।
चौथो समवायाग सुजाण, सोलेसै सतसठ श्लोक प्रमाण ।।४।।

पचम भगवती सूत्र सुधन्न, पनर सहस सतसैवावन्न ।
ज्ञाता धर्म कथा अग छट्ठ, ह्विवणा पच हजारे दिट्ठ ।।५।।

सत्तम उपवासग दसासार, बोल्या अठसै ऊपरि बार ।
अट्ठम अतगड सूत्र कहेउ, श्लोक सख्या आठसै ने नेऊ ।।६।।

नवमौ अग अणुत्तर उववाय, इकसौ बाणु मानकहाय ।
प्रश्नव्याकरण दसमौ परकास, एक सहस दोयसै पचास ।।७।।

सूत्र विपाके इग्यारम अग श्लोक बारसै सोलै सग ।
अंग इग्यार सूत्र मिले थाय, पैंत्रीस सहस दोइ सै प्राय ।।८।।

ढाल —सफल ससार नो ॥

वार उपागमे प्रथम उववाइया, पनरसइ सूत्र परिमाण पिणपाइया।
रायपसेणिया वीय उपाग मैं, दोइहज्जार अठहोत्तर मन गमें।९।
त्रीय उपाग जीवाभिगम जाणियै, च्यार हजार सौ
सात परिमाणियै।
चउथ श्रीपनवणा उवंगरकासियै, सात हजार सयसात
सत्यासियै ॥१०॥
पाचमौ जंवूपन्नति सुविसालए, चउसहस एकसौ वलिय छैंतालए।
चंदपन्नतिया छट्ठ वावीस सैं, सत्तम सूरपन्नति संख्या इसै।११।
अट्ठम नाम निरयावली कप्पिया, नवम उवंग इमकप्पवडसिया।
पुप्फिया दशम इग्यार पुफचूलीया, एम वन्नीदशा वारम
अनुकूलिया ॥१२॥
अट्ठम आदिथी उवंग पाचे मिली, शतक इग्यार संख्या इसी
साभली ।
वार उपांगनो मेल भेलौ वसै, सहस पच्चीस नैं वलि
सया सातसैं ॥ १३ ॥
मूल सूत्र सौ सवा तेण मिलतौ कह्यौ, विशेषआवश्यक सहस
पाचे लह्यौ ।
दूसरौ मूलसूत्र सातसै दाखियै, दशवियकालिक भव्यजन
भाखियै ॥ १४ ॥
पाखियसूत्र नैं मूलसूत्र तीसरौ, तीनसैसाठि संख्या
मता वीसरौ ।

उत्तराध्ययन दोइ सहस सुविचार ए, मूल सूत्रसहु सवाआठ
हजारए ॥ १५ ॥
सूत्र नंदी सरस जाणियै सातसै, अनुयोगद्वार उगणीससौ
मन वसै ।
एतलै ए थया सूत्र गुणत्रीसए, जे वचै नित्य व्याख्यान
सुजगीसए ॥ १६ ॥

ढाल—तदुल राशि विमलगिरि थापी

छ छेदे महानिसीथ निशीथ, पाच सहस गिणिजै इवीथ ।
वृहत्कलप वीजौ वाखाण, च्यारसै चिहुतर संख्या जाण ॥१७॥
व्यवहार सूत्र छ सै सुविचार, दशाश्रुत स्कंध शत अट्ठार ।
पचकल्प ते पचम छेद, सवा इग्यारसै सख्या वेद ॥१८॥
छठौ जीतकल्प इण नाम, इकसौ पाच छ कह्या आम ।
दसे पइन्ना हिव इम दाखै, सूत्ररुची ते हीये राखै ॥१९॥
चउसट्ठि गाह तणो चौसरणौ, धरमी जन नै मनमे धरणौ ।
वीजौ आउर पच्चक्खाण, चउरासी गाथा परिमाण ॥२०॥
तीजौ महा पचखाण कहीस, गाथा इकसौ नइ चौत्रीस ।
चोथौ भत्त परिण्णा चाह, इकसौ नै इकहोत्तर गाह ॥२१॥
पंचम पयन्नो तंदुलवेयाली, च्यारसै गाह भली तिहा भाली ।
छट्ठो चन्दाविज्झा गाह, इकसौनै छिहुतरि अवगाह ॥२२॥
गणविज्झा ए सत्तम गणियै, भाव भलै सौ गाथा भणियै ।
मरणसमाहि अट्ठम पयन्न, गाहा जिहा छस्सै छप्पन्न ॥२३॥

देवेंद स्थुय नवमौ होइ, दाखौ तिहा गाथा सय दोइ ॥
दशम सथारपयन्न सवासौ, दसे सतावीससै परकासौ ॥२४॥
अंग इग्यार नै उपाग बार, मूल सूत्र चउ नदि अणुयोगद्वार ।
छ छेद दश पयन्ना मेलीस, ए सूत्र आगम पैंतालीस ॥२५॥
सूत्र पैंतालीस आगम सख्या, सहस अठ्यौत्तर सातमें काक्षा ।
आज ऊनाधिक प्रायै एह, तंत तौ केवलि जाणै तेह ॥२६॥
सूत्र निजुत्ति चुर्णि नै टीका, एहना बहु विस्तार अजीका ।
छलख गुणचालीस सहस्सा, पाचसै छत्तीस जाण रहस्सा ।२७।
कलसः—इमइणै भरतै आज वरतै, भव्य जीव जिके सही ।
आसता आणी तत्व जाणी, वीर वाणी सरदही ॥
त्रिहुतरै जेसलमेर नगरै, विजयहर्ष विशेष ए ।
धरमसी पाठक तवन कीधौ. दुरस पुस्तक देख ए ॥२८॥

२४ जिन गणधर साधु साध्वी संख्या गर्भित स्तवन

आदीसर पहलो अरिहंत, गणधर चौरासी गुणवत ।
प्रणमु सहस चौरासी साध, साध्वी त्रिणलाख गुणे अगाध ।१।
अजितनाथ वीजो मन आणु, प्रणमीजै गणधर पंचाणु ।
साहू इकलख वंदौ भवियां, त्रिण लख वीस सहस साधवीयां ।२
हिव संभव जिन तीजो होय, गणधर एकसो नै वलि दोय ।
दुइ लख साहु साहुणी सार, तीन लाख छतीस हजार ।३।
अभिनंदन चोथो जिनराय, गणधर एकसौ सोल कहाय ।
तीन लाख मुनि संख्या भाख, आर्या तीस सहस छः लाख ।४।

ढाल—चौपईनी

पाचम सुविधि जिनेसर सेव, सौ गणधर ध्यावो नित मेव ।
तीस सहस तीन लाख मुनीस, साध्वी पचलख सहसे तीस ।५।

पद्मप्रभु प्रणमु परभात, गणधर जेहने एक सो सात ।
त्रिण लक्ष तीस सहस अणगार, साहुणी चउलख वीस हजार ।६।

श्री सुपास जिणवर सातमौ, नित गणधर पंचाणुं नमो ।
लाख तीन मुनि सूत्रे साख, साध्वी तीन सहस चौ लाख ।७।

अठ्ठम जिन चदप्रभु नाम, गणधर त्र्याणु गुण गण धाम ।
लाख अढ़ी मुनि वदो भवी, चौलख सहस असी साधवी ।८।

ढाल २ हेम घड़्यो रतने जड़्यो खुपो, एहनी ।

नवमो सुवधि अठ्यासी गणधर मुनि लख दोइ ।
साधवी त्रिण लाख वीस हजारे अधिकी होइ ।
सीतल दसम इठ्यासी गणधर मुनि लख एक ।
साहुणी पिण इक लख हीज अधिकी छए विवेक । ६ ।

सहस चौरासी मुनि इग्यारम श्रेयास सार ।
छिहुतर गणधर साहुणी इग लख तीन हजार ।
वासुपुज्य जिन बारम जसु छासठि गणधार ।
इक लख साहुणि बहुतर सहस कह्या अणगार । १० ।

साहु अडसठ सहस, सतावन गणधर जाण,
तेरम विमल अज्जा लख उपर आठसें आण ।

चवदम सामि अनत पचास कह्या गणराय,
छासठ साधने वासठ साधवी सहसे मिलाय । ११ ।

पनरम धरम तयालीस गणि चौसठ हजार,
साहु साहुणी वासठ सहस अनें सय चार ।
वासठ सहस जतीस छतीस गणाधिप सति ।
सोलम अज्जा इगसठि सहस छसै वलि तंत । १२ ।

ढाल ३ पुरदर नी ।

साठ सहस मुनि पेंतीस गणधर सतरम कुंथु ।
साध्वी साठ हजार ने छसै वोली ग्रन्थ ।
तेत्रीस गणधर अट्ठारम अरि पूरे आस ।
साध्वी साठ हजारे साहु सहस पंचास । १३ ।

मल्लिनाथ उगणीसम साहु सहस चालीस ।
साहुणी सहस पंचावन, गणधर अट्ठावीस ।
वीसम मुनिसुव्रत जसु साधु तीस हजार ।
सहस पचासे साध्वी गणधर जास अढ़ार । १४ ।

इकवीसम नमिनाथ नमु सतरे गणईस ।
वीस सहस मुनि साध्वी सहसे इगतालीस ।
नेमिनाथ वावीसम साहु सहस अठार ।
साध्वी सहस चालीसे गणधर जास इग्यार । १५ ।

सोल सहस साहु तेवीसम पास जिणेस ।
दश गणधर साहुणी अठतीस हजार गिणेस ।

चौवीसम वर्द्धमान नमुं गणधार इग्यार ।
चवदे सहस जतीस, साहुणी छतीस हजार । १६ ।
चौवीस जिनना चौदहसे बावन गणधर एम ।
साहु अठावीस लाख सहस अडतालीस तेम ।
साधवी लाख चमालीस सहस छयालीस सार ।
च्यार से उपरि छए धडै ए संख्याधार । १७ ।
किणहीक सूत्रें ओछा अधिका कह्या अणगार ।
तेपिण चौवीसा ना पूरा नहिं अधिकार ।
श्री आवश्यक सूत्रें पूरा सहु सुविचार ।
तिणथी संख्या जाणी वंदु वारंवार । १८ ।

कलसः

इम संतरे से तेपने वरसें दीप परब सुदीसए ।
श्री नगर वीकानेर अधिका विजयहर्ष जगीसए ।
धर्मध्यान मन धरि कहे पाठक धरमसी नितमेवए ।
चौवीस जिन धन राज जेहने ध्याइयें धर्म देवए । १९ ।

चौवीस जिन अंतर काल, देहायु स्तवन

पचपरमेष्टि मन शुद्ध प्रणमीकरी,
धरमहित आगम अर्थ हीयडे धरी ।
कहिस चौवीस जिन जिन तणो आतरो,
आउ थित देह परिमाण मत पातरो ।१।
प्रथमही सुखम सुखमा आरो जाणए,
च्यार कोडा कोडि सागर परिमाणए ।

कोस त्रिण्ह देह त्रिणपल्ल आयु धारए,
तीय दिनैं तूअर परमाण आहारए ।१।
त्रिण कोडा कोडि सागर सुखम बीय अरो,
देह दो कोस दोई पल्ल आयु धरो ।
बोर परिमाण आहार बीजे दिनैं,
युगलीया मानवी एह कहिया जिणैं ।२।
दोइ कोडाकोडि सुखम दुःखमा कह्यो,
कोस इक काय इक पल्ल आयु लह्यो ।
आमलासान आहार लैं दिन प्रतैं,
काल कर जुगलीया पोहचैं सुरगतैं ।४।

ढाल वीर जिरोसरनी ।

तिण तीजे अरैं तीन वरस साढा अठ मास,
शेष रह्या श्री आदिदेव पहुंता सिववास ।
चौरासी पुव्वलाख वर्ष पाल्यो जिण आयु,
पाचसैं धनुप प्रमाण काय राजे जगराय । ५ ।
आदि थकी पंचास कोड लख सागर हेव,
हुयो अजित जिणेसरु ए बीजो जिण देव ।
साढी च्यारसैं धनुप देह दीपैं गुणगेह,
वहुतर पूर्व लाख वर्ष आउखो एह । ६ ।
अजित थकी त्रीस कोड लाख सागर गया जाम,
तीजो तीर्थंकर हुवो ए संभव शुभ नाम ।

च्यार सै धनुप सरीर मान धार्यों जिणधीर,
साठ पूर्व लख वर्प आयु पाल्यो वड़ वीर । ७ ।

संभव थी दस कोड लाख सागर परमाणे,
चोथो अभिनदन जिणद महिमा जग जाणे ।

ऊंच पणे जसु देह धनुप तीनसे पंचास,
आयु पचास पूर्व लख वर्प पाल्यो सुखवास । ८ ।

हिव नव कोडिय लाख जलधि पूरा जव वीता,
पचम जिणवर सुमतिनाथ हुवा सुमति वदीता ।

तीनसै धनुप सरीर तास शुभ वर्ण सुवास,
चालीस पूरव लाख वर्प आऊखो जास । ६ ।

सागर नेऊ कोडि सहस हिव वीता जाम,
पद्मप्रभु छठो जिणेसरु ए हुओ गुण धाम ।

अढाईसे धनुष मान काया अभिराम,
तीस पूर्व लख आयु पालि पहुता सिवठाम । १० ।

ढाल —त्रेकर जोडी ताम, एहनी

हिव नव सहस क्रोडे सागर हुआ सही,
श्री सुपास जिणेसर सातमो ए ।

दुइ सैं धनुपा देह वीस पूरव लख,
आयुथिति नितही नमो ए । ११ ।

हुआ सागर हेव नवसौं कोडीय, दौढसे धनुप देही धरु ए ।

दस पूर्व लख आयु आठम जिनवर, श्रीचन्द्रप्रभु सुखकरु ए ।१२।

सुविधिनाथ सुखकार नवमो जिनवर नेऊ कोडि सागरे ए।
आउ पूर्व लख दोइ, सो धनुषा तनु पाल्यो जिण पूरी परैं ए १३
नीरधि हिव नव कोडि सुवधि जिणेसथी,
शीतल दशमो जिन सही ए।
एक पूर्व लख आव धनुप नेऊ धर काया ऊंच पणै कहीए। १४।
सौ निध छासठ लाख छावीस सहस वरस
ऊणै इक कोडि सागरु ए।
तिण अवसर श्रेयास अंग धनुप असी
वरस चौरासीलख धरुए। १५।
जिनवर बारम जाण, चोपन सागरैं वासुपूज्य जिण वंदीये ए।
सत्तरि धनुप सरीर, अति सुख आउखो,
वहुत्तर लाख वर्ष लिये ए। १६।

ढाल —इण पुर कवल कोइ न लेसी, एहनी

तिण जिन थी हिव सायर तीस, विमलनाथ तेरम जिन ईस।
साठ धनुप काया सु प्रमाण, वर्ष साठ लख आयु वखाण। १७।
हिव नव सायर केरैं अन्त, चवदम जिनवर थयो अनत।
पूरी काया धनुप पचास, तीन वर्ष लख आयुप तास। १८।
एह थकी चिहु सागर आगै, पनरम धर्म जिणेसर जागैं।
पैंतालीस धनुष्य जसु देह, आउप दस लख वर्ष धरेह। १९।
पल्ल त्रिभाग विना त्रिक सागर, सोलम शांतिजिणंद सुखाकर।
चालीस धनुप प्रमाणे काय, एक लाख वरसा नौ आय। २०।

एण थकी पल्योपम आधै, समरू सतरम कूंथु समोधै ।
पामी देह धनुप पैंतीस, आयु पचाणु सहस वरीस । २१ ।
वर्ष एक कोडि सहस विहीन, चोथो भाग पल्योपम कीन ।
त्रीस धनु अरि जिन अट्ठारम, आयु वर्ष चौरासी हजारम ।२२।
वर्ष हुआ इक कोडि हजार, उगणीसम मल्लि जिन अवतार,
तनु पचवीस धनुप नो तास, पचपन सहस वर्ष भववास ।२३।
बोल्या हिव वछर पूरा चोपन लाख,
सामी मुनिसुव्रत हुआ सूत्रे साख ।
वन्दो वीसम जिन वीस धनुप तनु मान,
तीस सहसे वर्षे पाल्यो आयु प्रधान । २४ ।
हिव पट् लख वर्षे हुआ श्री नमिनाथ,
तनु पनरैं धनुप मित सेवो सिवपुर साथ ।
दस सहस वर्ष जिण पाल्यो आयु पडूर,
इकवीसम जिनवर अरचो सुख अकूर । २५ ।
पंच लाखे पूरे वीते वर्षे वद,
वावीसम वहु गुण नेमीसर जिण इन्द ।
यादव कुल जगचक्ष दीपें दस धणु देह,
आयु थिति पाली एक सहस वरषेह ।२६।
हिव सहस त्र्यासी सात शतक पचास,
वर्षे त्रेवीसम परगट जिणवर पास ।
नव हाथ प्रमाणे अंग सुरग सुरेह,
पूरो जिण पाल्यो आयु सो वरसेह । २७ ।

इण थकी अढीसे वर्ष श्री महावीर,
बहुतर वर्षायुष साते हाथ सरीर।
इम सहु बेतालीस सहस वर्ष उणेह,
इक कोडि कोडि सागर आदि थी एह ।२८।
कलसः—इम अरें तीजे आदि जिणवर, अवर चोथे गमए।
चौवीस जिणवर चितचोखे प्रणमीये बहु प्रेमए।
पुररिणी सतरैंसे पचीसैं प्रगट पर्व पजूसणैं,
वाचक्क विजयहर्ष सानिध धर्मसी मुनि इम भणे ।२६।

६८ भेद अल्पबहुत्व विचार गर्भित स्तवन

वीर जिणेसर वंदिये, उपगारी अरिहंत।
आगम ए जिण उपदिस्या, एओ ज्ञान अनत ॥१॥
भला अठाणु भेदसों, बोल्या अलप बहुत्त।
जिणमें भमियो जीवड़ो, ते सहु वात तहत्ति ॥२॥

ढाल . सफल ससारनी।

सहु थकी अलप नर गर्भज जाणिये (१)
एहनी नारि सख्यात गुण आणिये (२)
अगनि असंख्यात गुण पज्जत बादरा, (३)
एहथी गुण असंख्यात अनुत्तर सुरा (४) ॥३॥
उपरिम (५) मध्य (६) अधत्रिक त्रिक (७) देवता,
अच्युत (८) आरण (६) प्राणत (१०) आनता (११)
एह संख्यात गुण जाणिज्यो अनुक्रमा।
सातमीनरक (१२) असंख्यात गुणइमतमा(१३)।४।

हिव सहस्रार (१४) शुक्र (१५) पंचम नेरया (१६)
लांतक (१७) चतुर्थीनर्क (१८) ब्रह्मदेवया (१६)
तीय, पृथ्वीय (२०) माहेन्द्र (२१) असखगुणा,
सनतकुमार (२२) बीयनिरय अनुक्रम वणा (२३)
ठाम चौवीसमी मनुष्य समूर्च्छिमा, (२४)
देवईशान असंख गुण निभ्रमा (२५) । ६ ।
देवी ईशानरी (२६) सुधर्मसुरजिके (२७)
तेहनी, त्रीय संख्यात गुणीयै तिके (२८) । ६ ।
भवणवइदेव असंख्यात (२६) देवी संख्या वहु (३०)
प्रथमनारकि असखेय गुणीया सबहु (३१)
बोल वतीसमें खेचर पचेन्द्रिया,
तिरिय असंख्यात गुणा(३२) सख्य एहनीत्रिया(३३)।७।

ढाल तिण अवसर कोइ मागध आयो पुरदर पास ।

थलचर तिरिय पुरप(३४) त्री(३५) जलचरिमिथुन (३६-३७) लहेस,
व्यतर देवनें (३८) देवीय (३६) ज्योतिपी युगम(४० ।४१)कहेस ।
खचरतिरी(४२)थलचर(४३)जलचरय(४४)नपु सक जेह ।
अनुक्रमैं एह इग्यार संख्यात गुणा करि लेह ॥ ८ ॥
वलि परजापति चोरिन्दी संख्यात गुणेह (४५)
पज्जत सन्नि पचेन्द्रि विशेपे अधिका तेह (४६)
पज्जवइन्द्रि (४७) पज्जतेइन्द्रि विशेष (४८) विशेष
अडतासीस ए बोल कह्या अनुक्रम गिण देख ।६।

पंचेन्द्रि अपज्जत असखगुणा ए जाण (४९)
चोरिन्द्रि तेइन्द्रि (५१) वेइन्द्रि (५२) अपज विशेप वखाण।
प्रत्येक वनस्पतिय(५३)निगोद(५४)पृथ्वी(५५) अप(५६)वाय(५७)
वादर परजापत पाच असख गुणाय ॥१०॥
हिवअपज्जत्ता वादर अग्नि अठावनेवोल (५८)
एहवा हीज वनस्पति असंखगुणी इणतोल (५९)
वलिय निगोद(६०)पुढ़वी(६१)अप(६२)वाय(६३) एच्यारे जाण।
वादर अपजत्ता असंख्यात गुणा परिमाण ।११।
इहांथी सुक्ष्मअपज्जत अगनि असंख गुणेह (६४)
भू (६५) जल(६६)पवन (६७) इसाज विशेप धरेह ।
अड़सट्ठिमो इहा सूक्ष्स पज्जत तेउ गिणेस (६८)
पुढवी (६९) अप्प ने (७०) वायु (७१) पज्जता सुक्ष्म विशेप ।१२।

ढाल—वेकर जोडी ताम रहनी ।

वहुतरमे हिव वोल सूक्ष्म अपज्जत, जीव निगोदे जाणिवाए, (७२)
असंख्यात गुण एहएहथी पज्जत संख्याते गुण आणवाए (७३)।१३।
अनतगुणा अधिकार इहाथी आगले भव्य अनंत गुणा सहीए(७४)
ए विहुतरमो समकित नहीं लहै, मोक्ष कदे लहिस्ये नहीए ।१४।
समकित पतितने(७५)सिद्ध(७६)अनंतागुणा,एलेखवल्यौ अनुक्रमेए।
वादर रूप पज्जत वनस्पतितणा(७७) जीव अनंत गुणा भमैए।१५।

सामान्यरूपे सर्ववादर पज्जत, जीव विशेपाधिक कहौए, (७८)
वणवादर अपज्जत असखगुणा इहा, ठाम गुण्यासीमें लह्योए।१६।
अपज्जत वादर जीव (८०) वलि बादरसहु,
(८१) अधिका अधिक विशेषथीए।

सुहम अपज्ज वणस्स असंख्यगुणा इम, सुण वयासी सासौ नथीए१७
अपज्जत सुहम विशेप(८३)सूक्ष्मपज्जती वनस्पतिअसखीगुणैए(८४)
इण चौरासी बोल इहाथी आगले सर्व विशेषाधिक पणैए। १८।
सुक्ष्म पज्जत्ता जाण (८५) सूखम सहु गिणौ (८६) भव्य सत्यासी
में भणौए (८७)। जाणौ जीवनिगोद (८८) वलियवनस्पती (८९)
एकेन्द्रि अधिकागिणौ ए (९०)। १९।

जाणौ तृयचजाति (९१) इक्याणु इहां मिथ्यादृष्टिबाणमोए (९२)
अविरत जीव अवशेप (९३)·सकसाइ सहु, (९४) चावौ भेद
चौराणु मो ए। २०।

मानोहिव छद्मस्थ (९५) सर्व सयोगीय (९६) भववासी भणियै
सहुए(९७)। जीवजिता सहु जाणं एह अठाणु मो, बोल विवेककरो
वहुए (९८) । २१।

कलस :—

इम वीर वाणी सुणो प्राणी सूत्र पन्नवणा थकी।
ए भेद आण्या जिणे जाण्या तियै सिद्ध वधू तकी।
सुख विजयहर्ष विशेप श्रीसंघ धर्म शील भला धरे।
जेसाणगढ में तवन जोड़्यो सवत सतरे वहुत्तरै। २२।

इति अल्पवहुत्व-विचार-गर्भित श्रीमहावीर स्तवनम्

चौवीस दण्डक स्तवन

ढाल—आदर जीव क्षमा गुण आदर

पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी।
तारण तरण विरुद तुझ साभलि, आयो हुं धरि आस जी।१।पू०
इण ससार समुद्र अथागें, भमियो भवजल माहि जी।
गिलगिचिया जिम आयो गिड़तौ, साहिब हाथे साहिजी।२।पू०
तुं ज्ञानी तो पिण तुझ आगै, वीतग कहिये वात जी।
चौवीसे दंडके हुं फिरीयो, वरणुं तेह विख्यात जी॥ ३ ॥ पू०
साते नरक तणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी।
पाच थावर नें त्रिणि विकलेंद्रि, उगणीस गिणती आण जी। ४।
पंचेंद्रि तिरजच नै मानव, एह थया इकवीस जी।
विंतर जोतिषी नै वैमानिक, इम दडक चौवीस जी॥५॥पू०
पंचिंद्री तिरजंच अने नर, परजापता जे होइ जी।
ए चउविह देवा माहे ऊपजै, इम देवै गति दोइ जी॥ ६ ॥ पू०
असख्यात आउखें नर तिरि, निसचै देवज थाय जी।
निज आऊखा सम कि ओछे, पिण अधिकै नवि जाय जी॥७॥
भवणपती कै विंतर ताईं, संमूरछिम तिरजंच जी।
सरग आठमें ताइ पहुचे, गरभज सुकृत सच जी॥ ८ ॥ पू०
आऊ संख्याते जें गरभज, नर तिरजंच विवेक जी।
बादर पृथिवी ते वलि पाणी, वनसपती परतेक जी॥ ९ ॥ ०पू

परजापते इण पाचे ठामे, आवी उपजै देव जी।
इण पाचा माहें पिण आगे, अधिकाई कहुं हेव जी ॥ १० ॥ पू०
तीजा सरग थकी मांडी सुर, एकेंद्रि नवि थाय जी।
अठम थी ऊपरला सगला, मानव माहि ज जाय जी ॥ ११ ॥

ढाल—आज निहेजो दीसे नाहलो

नरक तणी गति आगति इणपरें, जीव भमें संसार।
दोइ गति ने दोइ आगति जाणिये, वलिय विशेष विचार ॥१२॥
संख्यातैं आऊ परजापता, पंचेंद्री तिरजच।
तिमहिज मनुष्य वे हिज ए, नरकमे जाये पाप प्रपच ॥ १३ ॥
प्रथम नरक लगि जाइ असन्नीयौ, गोह नकुल तिम बीय
गृध्र प्रमुख पंखी त्रीजी लगै, सींह प्रमुख चौथीय ॥ १४ ॥
पाचमी नरके सीमा सापनी, छट्ठी लगि स्त्री जाय।
सातमीयें माणस के माछला, उपजे गरभज आय ॥ १५ ॥
नरक थकी आवें बिहुं दंडके, तिरजच कै नर थाय।
ते पिण गरभज तें परजापता, संख्याती जसु आय ॥ १६ ॥
नारकिया नै नरक थी नीसरया, जेफल प्रापति होय।
उत्कृष्टे भांगे करते कहु, पिण निश्चै नहीं कोय ॥ १७ ॥
प्रथम नरक थी उवटि चक्रवृति हुवै, बीजी हरि बलदेव।
त्रीजी लगि तीरथंकर पद लहै, चौथी केवल एव ॥ १८ ॥
पंचम नरक नो सरवविरति लहै, छट्ठी देसविरत्ति।
सत्तम नरक थी समकित हिज लहै, न हुवै अधिक निमित्त १६

ढाल—करम परीक्षा करण कुमर चल्योरे।

मानव गति विण सुगति हुवै नहीं रे, एहनौ इम अधिकार।
आऊ संख्यातें नर सहु दडके रे, आवी लहै अवतार ॥ २० ॥

तेऊ वाऊ दंडक वे तजी रे, वीजा जे वावीस ।
तिहा थी आया थावे मानवी रे, सुख दुख पुण्य सरीस ।२१।
नर तिरजंच असंखी आउखे रे, सातमी नरक ना तेम ।
तिहा थी मरि ने मनुप हुवे नहीं रे, अरिहंत भाख्यौ एम ।२२।
वासुदेव वलदेव तथा वली रे, चक्रवरति अरिहंत ।
सरग नरक ना आया ए हुवै रे, नर तिरि थी न हुवंत ।।२३।।
चौविह देव थकी चवि ऊपजें रे, चक्रवरति वलदेव ।
वासुदेव तीर्थंकर ते हुवै रे, वैमानिक थी वेव ।।२४।।

ढाल—हेम घड्यो रतने जड्यो खु पो,

हिव तिरजंच तणी गति आगति कहय अशेष ।
जीव भम्यो इण परि भव माहे करम विशेष ।।
आउ संख्याती जे नर नै तिरजंच विचार ।
ते सगला तिरजंचा माहे लहे अवतार ।।२५।।
जिण तिरजंचा माहें आवे नारक देव ।
तेह कह्यौ पहिली तिण कारण न कहुं हेव ।।
पंचेंद्रि तिरजच संख्याते आऊखे जेह ।
तेह मरी चिहुंगति माहे जावै इहां न संदेह ।।२६।।
थावर पाच त्रिणें विकलिंदी आठे कहावे ।
तिहा थी आऊ संख्याती नर तिरजंच में आवैं ।।
विकल मरी लहे सरवविरति पिण मोख न पावे ।
तेउ वाउ थी आयौ तेह नै समकित नावै ।।२७।
नारक वरजी ने सगलाई जीव संसारै ।
पृथिवी आऊ वनसपति माहे लहै अवतारै ।।

ए तीनें उवटी इहाथी आवै दस ठामें ।
थावर विकल तिरी नर माहे उतपति पामै ॥२७॥
पृथिवीकाय आदे देई दश दडक एह ।
तेऊ वाऊ माहे आवी ऊपजै तेह ॥
मनुप विना नव माहे तेऊ वाऊ वे जावै ।
विकलिंदी ते दश माहि जावै पूठा ही आवै ॥२८॥
एम अनादि तणौ मिथ्याती जीव एकत ।
वनसपति माहे तिहा रहियो काल अनंत ॥
पुढवी पाणी अगनि अनै चौथो वलि वाय ।
कालचक्र असंख्याता ताई जीव रहाय ॥२९॥
वेइंदी तेरिंदीने चोरेन्दी मझारें ।
संख्याता वरसा लगि रहियौ करम प्रकारै ॥
सात आठ भव लगता नर तिरजच मे रहियौ ।
हिव मानव भव लहिनै साधनो वेष में गहियौ ॥३०॥
रागद्वेष छूटै नहीं किम ह्वै छूटक बार ।
पिण छै मन सुध माहरै तु हिज एक आधार ॥
तारणतरण मैं त्रिकरण शुद्धै अरिहंत लाधौ ।
हिव ससार घणो भमिवौतौ पुदगल आधौ ॥३१॥
तूं मन वछित पूरण आपद चूरण सामी ।
ताहरी सेव लही तौ मै हिव नव निधि पामी ॥
अवर न कोई इच्छु इण भवि तूंहिज देव ।
सूधें मन इक ताहरीं होज्यो भव भव सेव ॥३२॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसलमेर महिमा दिण दिणै ।
सवत्त सत्तरै उगणतीसै दिवस दीवाली तणै ॥
गुण विमलचद समान वाचक विजयहरप सुशीस ए ।
श्री पासना गुण एम गावै धरमसी सुजगीस ए ॥३३॥

श्री समवशरण विचार स्तवनम्

॥ दोहा ॥

श्री जिन शासन सेहरौ, जग गुरू पास जिणिंद ।
प्रणमै जेहना पद कमल, आवी चौसठि इंद ॥ १ ॥
तीर्थंकर आवै तिहा, त्रिगढौ करय तयार ।
समकित करणी साचवै, एह कहुं अधिकार ॥ २ ॥
करै प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी ह्वै मूक ।
सूर्य देखि हरखै सहू, घणै अंधारै घूक ॥ ३ ॥

ढाल (१) वीर वखाणी राणी चेलणा जी

आप अरिहंत भले आविया जी, गावै अपछरह गंधर्व ।
समवशरण रचे सुरवरा जी, सखेपे ते कहुं सर्व । आ० ॥ ४ ॥
भवनपती इन्द्र वीसे मिल्या जी, सोल दू वितर सार ।
जोइस दु दस विमाणी जुड्या जी, चउसठ्ठि इन्द्र सुविचार ।५।
पवन सुर पुंजी परमारजी जी, भूमि योजन सम भाउ ।
मेघकुमार रचि मेघनै जी, करय सुगंध छड़काउ । आ० ॥ ६ ॥
अगर कपूर शुभ धूपणा जी, करय श्री अगनिकुमार ।
वाणवितर हिव वेग सु जी, रचय मणि पीठिका सार ॥ ७ ॥
पुह्प पंच वरण ऊरध मुखे जी, वरपए जाणु परिमाण ।
भवणवइ देव त्रिगढो भलो जी, करय ते सुणहु सुजाण ॥ ८ ॥
रचय गढ प्रथम रूपा तणौ जी, सोवन कांगुरे सार ।
रवि शशि रयण कोसीसके जी, कनक कौ बीय प्राकार ॥ ६ ॥

रतन गढ रतन रै कांगुरैं जी, रचय वेमाण सुर राज ।
भलो त्रीजो गढ भीतरे जी, तिहा विराजै जिनराज ॥आ१० ॥
भींति ऊंची धणु पाचसैं जी, सवा तेत्रीस विसतार ।
धनुष सैं तेर गढ अतरौ जी, प्रोलि पचास धनु च्यार ॥ ११ ॥
दश पंच पच त्रिहुं गढ तणी जी, पावड़ी वीस हजार ।
थाक श्रम नहिंय चढता थका जी, एक कर उच्च विस्तार ॥१२॥
पंच धणु सहस प्रृथ्वी थकी जी, उच्च रहै त्रिगढ आकास ।
तेह तलि सहु यथास्थित वसे जी, नगर आराम आवास ॥१३॥
तोरण त्रिक चिहुं दिसि तिहा जी, नीलमणि मोर निरमाण ।
दुसय धणु मध्य मणिपीठिका जी, उच्च जिण देह परिमाण ।१४।
च्यार आसण तिहा चिहु दिसि जी, मोतीए झाक झमाल ।
सम विचें कूण ईसाणमे जी, देवछंदौ सुविशाल ॥आ० ॥१५॥
देव दुंदुभि नाद उपदिसें जी, जिण गुण गावसी जेह ।
अम्ह जिम आइ सहु ऊपरै जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥

ढाल (२) सफल संसार नी

पुव्व दिसि आसणे आइ बेसैं पहू, सुरकृत चौमुख रूप देखै सहू ।
दीपै अशोक तरु बार गुण देहे थी,
देखि हरखै सहु मोर जिम मेह थी ॥ १७ ॥
मोतिया जाल त्रिण छत्र सुविसाल ए,
रूप चिहुं दिसै चामर ढाल ए ।
योजन गामिणी वाणि जिणवर तणी,
भगवंत उपदिशै बार परषद भणी ॥ १८ ॥

प्रदिक्षणा रूप थी अगनि कूणे करी,
गणधर साधवी तिम विमाणी सुरी।
ज्योतिपी भुवणिनी वितरी त्री पणै,
नैऋत कूण जिण वाणि ऊभी सुणै ॥ १६ ॥
त्रिहुं तणा पति वायु कूण में जाण ए,
सुर विमाणीय नर नारि ईसाण ए।
वार परिषद मद मच्छर छोड़ ए,
भूख तृप वीसरैं सुणैं कर जोड़ ए ॥ २० ॥
पूठि भामंडल तेज परकास ए,
जोयण सहस धज ऊंच आकास ए।
झलहलै तेज धर्मचक्र गगने सही,
महक सहु वारणै धूप धाणा मही ॥ २१ ॥
वाहण वहिल सहि धरिय पहिलै गढै,
होइ पगचार नर नारि ऊंचा चढै।
जिण तणी वाणि सुणि जीव तिरजंच ए,
वैर तजि वीय गढ रहै सुख संच ए ॥ २२ ॥
पुण्यवंत पुरुप ते परिषद वारमै,
सुणै जिण वाणि धन गिणय अवतार मैं।
चौवहि देव जिणदेव सेवा रसे,
मणिमयी माहिली प्रोलि माहे वसै ॥ २३ ॥
चिहुं दिसि वाटुली वावि चौ जाणियै,
विदिसि चौकूणी दोइ दोइ वाखाणीयें।

आवि जिहां वावि जल अमृत जेम ए,
स्नान पानै वपू निरमल हेम ए ॥ २४ ॥
जय विजया अपराजि जयंतिया,
मध्य कंचणगढै प्रोलि वसंतिया ।
तुंबुर पुरुष पट्टंग अर्चिमाल ए,
रजत गढ प्रोलि ना एह रखपाल ए ॥ २५ ॥
पहिल त्रिगढौ न हुअ जिण पुर ग्राम ए,
देव महर्धिक रचैं तिण ठाम ए ।
करण वार वार कारण नहिं कोइ ए,
आठ प्रातिहारज ते सही होइ ए ॥ २६ ॥
जिन समवशरण नी ऋद्धि दीठी जीए,
तेह धन धन्न अवतार पायो तिए ।
पास अरदास सुणि वंछित पूरज्यो,
हिव मुझ ताहरौ शुद्ध दरसण हुज्यो ॥ २७ ॥

॥ कलश ॥

इम समवशरणै रिद्धि वरणै सहू जिणवर सारिखी ।
सरदहै ते लहै शुद्ध समकित परम जिनध्रम पारिखी ॥
प्रकरण सिद्धंत गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए ।
संस्तव्यौ पास जिणद पाठक धरमवरधन धार ए ॥ २८ ॥

—:※:—

चौदह गुणस्थानक स्तवन

ढाल—थभणपुर श्री, एहनी

सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदु मन सुध वारो वार,
आणी भाव अपार।
चवदै गुणथानक सुविचार, कहिसु सूत्र अरथ मन धार,
पावै जिण भव पार ॥१॥

प्रथम मिथ्यात कह्यौ गुणठाणौ, बीजौ सासादन मन आणौ,
तीजो मिश्र वखाणो।
चौथो अविरति नाम कहाणौ, देशविरति पंचम परमाणौ,
छट्ठौ प्रमत पिछाणौ ॥२॥

अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अठम अपूरव करणकहीजै,
अनिवृत्ति नाम नवम्म।
सूषम लौभ दशम सुविचार, उपशातमोह नाम इग्यार,
खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥

तेरम सयोगी गुणधाम, चवदम थयौ अयौगी नाम,
वरणु प्रथम विचार।
कुगुरु कुदेव कुधर्म वखाणै, ते लक्षण मिथ्या गुण ठाणैं,
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

ढाल—२ सफल ससारनी

जेह एकात नय पक्ष थापी रहै,
प्रथम एकात मिथ्यामती ते कहै।
ग्रंथ ऊथापि थापै कुमति आपणी,
कहै विपरीत मिथ्यामती ते भणी ॥ ५ ॥
शैव जिनदेव गुरु सहु नमै सारिखा,
तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा।
सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणै,
संशयी नाम मिथ्यात चौथो भणै ॥ ६ ॥
समझि नहिं काइ निज धध रातो रहैं,
एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै।
एह अनादि अनंत अभव्य नै,
कहय अनादि थिति अंत सु भव्य नै ॥७॥
जेम नर खीर घृत खड जिमनै वमैं,
सरस रस पाइ वलि स्वाद केंहवौ गमे।
चउथ पचम छठै ठाण चढि नै पड़ै,
किणही कषाय वसि आइ पहिलै अड़ै ॥८॥
रहै विचै एक समयादि पट आवली,
सहिय सासादनें थिति इसी साभली।
हिव इहा मिश्र गुणठाण त्रीजो कहै,
जेह उत्कृष्ट अंतरमहूरत लहै ॥ ६ ॥

ढाल—३ वेकर जोडी ताम एहनी

पहिला च्यार कषाय शम करि समकिती,
कैंतों सादि मिथ्यामती ए।
ए वे हिज लहै मिश्र सत्य असत्य जिहा
सरदहणा वेहुं छती ए ॥ १० ॥
मिश्र गुणालय माहि मरण लहै नहीं
आउ वंध न पडै नवै ए।
कैंतो लहि मिथ्यात के समकित लही,
मति सरिखी गति परिभवै ए ॥ ११ ॥
च्यार अप्रत्याख्यान उदय करी लहै,
व्रत विण सुध समकित पणौ ए।
ते अविरत गुणठाण तेत्रीस सागर,
साधिक थिति एहनी भणौ ए॥ १२ ॥
दया उपशम संवेग निरवेद आसता, समकित गुण पाचे धरै ए।
सहु जिन वचन प्रमाण जिनशासन तणी,
अधिक अधिक उन्नति करै ए ॥ १३ ॥
केइक समकित पाय पुदगल अरध ता, उत्कृष्टा भव मे रहै ए।
केइक भेदी गंठि अंतरमहूरतै, चढतै गुण शिवपद लहै ए ॥१४॥
च्यार कषाय प्रथम्म त्रिणवली मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए।
साते परकृति जास परही उपशमै,
ते उपशम समकित धनी ए ॥ १५ ॥

जिण साते क्षय कीध ते नर क्षायिकी,
तिणहिज भव शिव अनुसरै ए।
आगलि बांध्यो आय तौ ते तिहां थकी,
तीजै चौथे भव तरें ए॥ १६॥

ढाल—४ इण पुर कबल कोई न लेसी

पंचम देश विरति गुणथान, प्रगटै चौकड़ी प्रत्याख्यान।
जेण तजै बावीस अभक्ष्य, पाम्यौ श्रावकपणौ प्रत्यक्ष ॥१७॥
गुण इकवीस तिके पिणधारै, साचा बारै व्रत संभारै।
पूजादिक षट कारिज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै॥१८॥
आरत रौद्रध्यान ह्वै मंद, आयौ मध्य धरम आनंद।
आठ वरस ऊणी पुव कोडि, पचम गुणठाणै थिति जोड़ि ॥१६॥
हिव आगै साते गुणथान, इक इक अतरमहूरत मान।
पांच प्रमाद वसै जिण ठाम, तेण प्रमत्त छठ्ठौ गुण धाम ॥२०॥
थिवरकलप जिनकलप आचार, साथै षट आवश्यक सार।
उद्यत चौथा च्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥२१॥
सूधौ राखै चित्त समाधै, धर्म ध्यान एकान्त आराधै।
जिहा प्रमाद क्रिया विधि नासै, अपरमत्त सत्तम गुण भासै।२२।

ढाल—५ नदि जमुना के तीर, एहनी

पहलै अंशै अट्ठम गुणठाणा तणै, आरंभै दोइ श्रेणि सखेपै ते भणै।
उपशम श्रेणि चढै जे नर ह्वै उपशमी,
क्षपक श्रेणि क्षायक्त प्रकृति दशक्षय गमी।२३।

जिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहै,
अट्ठम नाम अपूर्व करण तिणै कहै ।
शुक्लध्यान नौ पहिलो पायो आदरै,
निर्मल मन परिणाम अछिग ध्याने धरै ।२४।
हिव अनिवृत्ति करण नवमो गुण जाणियै
जिहा भावथिर रूप निवृति न आणीयै ।
क्रोध मान नै माया सजलणा हणै,
उदय नहीं जिहां वेद अवेद पणो तिणै ।२५।
तिहा रहै सूषम लोभ काइक शिव अभिलषै,
ते सूखमसपराय दशम पंडित दखै ।
शातमोह इण नाम इग्यारम गुण कहै,
मोह प्रकृति जिणठाम सहु उपशम लहै ।२६।
श्रेणि चढ्यौ जौ काल करै किणही परै,
तो थाये अहमिंद्र अवरगति नादरै ।
च्यार वार समश्रेणि लहै ससार में,
एक भवैं दोइ वार अधिक न हुवै किमैं ।२७।
चढि इग्यारम सीम शमी पहिलै पड़ै,
मोह उदय उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल रड़ै ।
खिपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणौ नहीं,
दशम थकी बारम्म चढै ध्याने रही ।२८।

ढाल—६ इक दिन कोई मागध आयो पुरदर पास

खीणमोह नामैं गुणठाणौ बारम जाण,
मोह खपायै नैड़ो आयौ केवलनाण।
प्रगटपणै जिहा चारित अमल यथा आख्यात,
हिव आगै तेरम गुणथान तणी कहै वात ।२६।
घातीया चौकड़ीक्षय गई रहीय अघाती एम,
प्रकृति पच्यासी जेहनी जूना कप्पड़ जेम।
दरसण ज्ञान वीरिज सुख चारित पाच अनंत,
केवलनाण प्रगट थयौ विचरैं श्री भगवंत ।३०।
देखैं लोक अलोकनी छानी परगट वात,
महिमावंत अढारह दूषण रहित विख्यात।
आठे वरसे ऊण कही इक पूरव कोड़ि,
उत्कृष्टी तेरम गुणथान तणी थिति जोड़ि ।३१।
रकि शैलेसी करण निरुंध्या मन वच काय,
तेण अयोगीअंत समै सहु करम खपाय।
पाचे लघु अक्षर ऊचरतां जेहनौ मान,
पंचमगति पामै सुखसु चवदम गुणथान ।३२।
तीजै बारमै तेरमै माहे न मरै कोई,
पहिलौ बीजौ चौथौ परभव साथै होइ।
नारक देव नी गति में लाभै पहिला च्यार,
धुरला पंच तिरिय्र मे मणुए सर्व विचार ।३३।

॥ कलश ॥

इम नगर बाहड़मेर मंडण, सुमति जिन सुपसाउलै।
गुणठाण चवद विचार वरण्यो, भेदि आगम नै भलै॥
संवत सतरै उगुणत्रीसै, श्रावण वदि एकादशी।
वाचक्क विजयहरक्ख सानिधि, कहै इम मुनि धरमसी॥३४॥

चौरासी आशातना स्तवन

ढाल—विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ।

जय जय जिण पास जगत्र धणी, शोभा ताहरी संसार सुणी ।
आयो हुं पिण धरि आस घणी, करिवा सेवा तुम्ह चरण तणी १
धन जन जे न पड़ै जंजालै, उपयोग सु वेसि जिन आलै ।
आसातन चौरासी टालै, शाश्वत सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥
जे नाखें सलेषम जिनहर में, कलहड करें गाली जूअ रमै ।
धनुषादि कला सीखण ढुकै, कुरलौ तंबोल भखै थूकै ॥ ३ ॥
सरै वाय वडी लघु नीति तणी, संज्ञा कंगुलिया दोप सुणी ।
नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदी नी नांखै चावड़िया ।४।
दांतण नै षमन पियैं कावौ, खावइ धाणी फूली खावौ ।
सूवे वीसामणि विसरामै, अजगज पसु नइ दामण दामे ॥ ५ ॥
सिर नासा कान दशन आंखैं, नख गाल वपुस ना मल नाखै ।
मिलणौ लेखौ करइ मंतरणौ, विहचण अपणौ करि धन धरणौ ।६।
वैसे पग ऊपरि पग चडिया, थापै छाणा छड़े ढुंढणिया ।
सुकवइ कप्पड़ कप्पड़ वड़िया, नासीय छिपइ नृपभय पड़िया ॥७॥
शोके रोवै विकथाज कहै, इहा संख्या वेतालीस लहैं ।
हथियार घड़ैं नै पशु वांधै, तापै नाणौ परिखैं राधइ ॥ ८ ॥
भांजी निसही जिनगृह पैसइ, धरि छत्र नें मडप में वइसें ।
हथियार धरै पहिरै पनही, चांवर वीजै मन ठाम नहीं ॥ ६ ॥
तनु तेल सचित फल फूल लिये, भूषण तजि आप कुरूप थियै ।
दरसणथी सिर अंजलि न धरइ, इग साडें उतरासंग करै ॥१०॥

छोगो सिरपेच मउड़ जोड़ै, दड़िए रमै नइ वहसें होड़ैं।
सयणा सुं जुहार करै मुजरौ, करे भाड चेष्टा कहै वचन बुरौ ११
धरें धरणुं झगड़ै उल्लंठी, सिर गुंथै बाधैं पालठी।
पसारइ पग पहिरइ चाखड़िया, पग झटकि दिरावै दुड़बडियां १२
करदम लूहै मैथुन मंडै, जूंआ वलि अइठि तिहा छंडै।
ऊघाड़ै गूझ कर वइदां, काढै व्यापार तणी कंदा ॥ १३ ॥
जिनहर परनाल नौ नीर धरइ, अंघोलै पीवा ठाम भरै।
दूपण जिण भवण मे ए दाख्या, देव वंदण भाष्य में जे भाख्या १४
सुज्ञानी श्रावक सगति छता, आसातन टालें वार सता।
परमाद वसै काइ थायै, आलोया दोष सहू जायै ॥ १५ ॥
तंबोल नै भोजन पान जुआ, मल मूत्र शयन स्त्री भोग हुआ।
थूकण पनही ए जघन दसे, वरज्या जिन मंदिर माहि वसै ।१६।
द्रव्यत नै भावित दोइ पूजा, एहना हिज भेद कह्या दूजा।
सेवा प्रभु नी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥

॥ कलश ॥

इम भव्य प्राणी भाव आणी, विवेकी शुभ वातना।
जिन बिंव अरचइ परी वरजइ चौरासी आसातना ॥
ते गोत्र तीर्थंकर ज अरजें नमइ जेहनइ केवली।
उवझाय श्री ध्रमसीह वंदै जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥

अट्ठावीस लब्धि स्तवन

॥ दोहा ॥

प्रणम् प्रथम जिणेसरू, शुद्ध मनैं सुखकार,
लवधि अट्ठावीस जिण कही, आगम नैं अधिकार ॥१॥
प्रश्नव्याकरणै प्रगट, भगवति सूत्र मझार,
पन्नवणा आवश्यकै, वाम्भ लवधि विचार ॥२॥
अमल तपैं करि ऊपनैं, लवधां अट्ठावीस,
ए हिव परगट अरथ सुं, सामलिज्यो सुजगीस ॥३॥

ढाल १ सकल संसार नी ।

अनुक्रमे हेव अधिकार गाथा तणै,
लवधि ना नाम परिणाम सरिखा भणै ।
रोग सहु जाय जसु अंग फरस्या सही,
प्रथम ते नाम छै लवधि आमोसही ॥४॥
जास मलमूत्र औषध समा जाणियै,
बीय विप्पोसही लवधि वखाणियें ।
श्लेषमा औषध सारिखो जेहनौ,
त्रीजी खेलोसही नाम छै तेहनौ ॥५॥
देहना मैल थी कोढ दूरे हवै,
चौथी जल्लोसही नाम तेहनो चवै ।
केस नख रोम सहु अग फरसें लही,
रहै नहीं रोग सव्वोसही ते कही ॥६॥

एक इन्द्रिय करी पाच इन्द्रियतणा,
भेद जाणै तिका नाम संभिन्नणा ।
वस्तु रूपी सहु जाणियै जिण करी,
सातमी लबधि ते अवधिज्ञाने धरी ॥७॥

ढाल २ आव्यौ तिहा नरहर, एहनी

हिव आगुल अढीये ऊणो माणुप खित्त,
संगन्या पंचेंद्री तिहा जे वसय विचित्त,
तसु मन नौ चिंतित जाणै थूल प्रकार,
ते ऋजुमति नामै अट्ठम लबधि विचार ॥८॥
संपूरण मानुप खेत्रैं सज्ञावंत,
पंचेन्द्रिय जे छै तसु मन वाता तत ।
सूषम परिजायें जाणै सहु परिणाम,
ए नवमी कहियै विपुलमती शुभ नाम ॥९॥
जिण लबधि परमाणै ऊडी जाय आकास,
ते जंघा विद्याचारण लबधि प्रकास ।
जसु वचन सरापे खिण में खेरू थाय,
ए लबधि इग्यारमी आसी विस कहवाय ॥१०॥
सहु सूखम बादर देखै लोक अलोक,
ते केवल लबधी बारमीयें सहु थोक ।
गणधर पद लहियै तेरम लबधि प्रमाण,
चवदम लबधें करि चवदह पूरव जाण ॥ ११ ॥

तीर्थंकर पदवी पामै पनरम लद्धि,
सोलम सुखकारी चक्रवर्त्ति पद रिद्धि ।
वलदेव तणौ पद लहीयें सतरम सार,
अड्डारम आखा वासुदेव विसतार ॥ १२ ॥
मिश्री घृत खीरें मिल्या जेह सवाद,
एहवी लहै वाणी उगणीसम परसाद ।
भणियौ नवि भूलै सूत्र अरथ सुविचार,
ते कुठ्ठग वुद्धी वीसम लवधि विचार ॥ १३ ॥
एकें पद भणियै आवै पद लख कोड़ि,
इकवीसम लवधी पायाणुसारणी जोड़ि ।
एकें अरथें करि ऊपजै अरथ अनेक,
वावीसमी कहियै वीज वुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥

ढाल (३) कपूर हुवै अति ऊजलो रे

सोलह देश तणी सही रे, दाहक सकति वखाण ।
तेह लवधि तेवीसमी रे, तेज्यो लेश्या जाण ॥ १५ ॥
चतुर नर सुणिज्यो ए सुविचार, आगम नै अधिकार ।च०।
चवद पूरवधर मुनिवरु रे, ऊपजतां संदेह ।
रूप नवौ रचि मोकलै रे, लवधि आहारक ऐह । च० ॥ १६ ॥
तेजो लेश्या अगनि में रे, उपशमिवा जलधार ।
मोटी लवधि पचीसमी रे, शीतल लेश्या सार । च० ॥ १७ ॥

जेण सकति सु विकुरवे रे, विविध प्रकारे रूप ।
सद्गुर कहै छावीसमी रे, वैक्रिय लवधि अनूप ।च०॥१८॥

एकणि पात्रे आदमी रे, जीमीवै केई लाख ।
तेह अखीण महाणसी रे, सत्तावीसम साख ॥च०॥१६॥

चूरे सेन चक्रीसनी रे, सघादिक नै काम
तेह पुलाक लवधि कही रे, अट्ठावीसम नाम ॥च०॥२०॥

तेज शीत लेश्या विन्हे रे, तेम पुलाक विचार ।
भगवती सूत्र मे भाखियौ रे, ए त्रिहुं नो अधिकार ॥च०॥२१॥

चक्रवर्ति वलदेव नी रे, वासुदेव त्रिण एह ।
आवश्यक सूत्रे अछै रे, नहीय इहा सदेह ॥च०॥२२॥

पन्नवणा आहार गी रे, कलपसूत्र गणधार ।
तीन तीन इक मिली रे, वारू आठ विचार ॥च०॥२३॥

प्रश्नव्याकरणे कही रे, बाकी लवधा वीस ।
साभलता सुख ऊपजें रे, दौलति ह्वै निसदीस ॥च०॥२४॥

॥ कलश ॥

सवत्त सतरे सं छवीसै मेर तेरसि दिन भलैं ।
श्री नगर सुखकर लूणकणसर आदि जिण सुपसाउलैं
वाचनाचरिज सुगुरू सानिधि विजयहरष विलास ए
कहै धर्मवर्द्धन तवन भणता प्रगट ज्ञान प्रकास ए ॥२५॥

—:o:—

आलोयणा स्तवन

ढाल (१) सफल ससार नी

ए धन शासन वीर जिनवर तणौ,
जास परसाद उपगार थायै घणौ ।
सूत्र सिद्धात गुरमुख थकी साभली,
लहिय समकित्त ने विरति लहियै वली ॥१॥
धर्म नो ध्यान धरि तप जप खप करै,
जिण थकी जीव संसार सागर तरै ।
दोप लागा गुरू मुखहि आलोईयै,
जीव निर्मल हुवै वस्त्र जिम धोईयै ॥२॥
दोप लागै तिकौ च्यार परकार ना,
धुर थकी नाम ने अरथ ते धारणा ।
किणहि कारण वसै पाप जे कीजीयै,
प्रथम ते नाम संकप्प कहीजियै ॥३॥
कीजीयै जेह कंदर्प्प प्रमुखे करी,
दोष ते बीय परमाद सन्ना धरी ।
कूदता गरवता होई हिंसा जिहा,
दर्प्प इण नाम करि दोष तीजौ तिहा ॥४॥
विणसता जीव नै गिनर न करै जिको,
चौथौ उट्टीआ दोष ऊपजै तिको ।
अनुक्रमै च्यार ए अधिक इक एकथी,
दोप धरि प्रायचित लेइ विवेकथी ॥५॥

ढाल (२) अन्य दिवस को० एहनी

पाटी कमली नवकरवाली पोथी जोइ,
ज्ञान ना उपग्रण तणीय आसातन कीधी होइ।
जघन्य थी पुरमढ एकासण आंबिल उपवास,
अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥६॥

एजो खंडित थाये अथवा किहा ही गमाइ,
तौ वलि नव्या कराया दोप सहू मिट जाइ ।
थापना अण पड़िलेह्या पुरमढ तो तपधार,
खिरता एकासण ते गमता चौथ विचार ॥७॥

दर्शन ना अतिचार तिहा परमड्ड जघन्न,
एकासण आबिल अट्ठिम चिहुं भेदे मन्न ।
आसातन गुरुदेवनी साहमी सु अप्रीति,
जघन्य एकासण थी आलोयण चढती रीति ॥ ८ ॥

अनंतकाय आरभ विनास्या चौथ प्रसिद्ध,
बि ति चौरिन्द्री त्रसाया एकासण थी वृद्धि ।
बहु वि ति चौरिंदीय हण्या बि ति चौ उपवास,
सकल्पादि चिहु विधि दुगुणा दुगुण प्रकास ॥ ६ ॥

उद्देही कुलियावड़ा कीडीनगरा भग,
बहु जलोया मूक्या दस दस उपवास प्रसंग ।
वमन विरेचन कृमि पातन आंबिल इक एक,
जीवाणी ढोलंता दो उपवास विवेक ॥ १० ॥

संकप्पादिक एक पंचिंद्री उपद्रव होइ,
दोइ त्रिण आठ दसे उपवास आलोयण जोइ ।
वहु पंचिंदि उपद्रव षट अठ नें दस वीस,
चिहुं परकारे चढती आलोयण सुणि सीस ॥ ११ ॥

पंचेन्द्री ने दीधै लकड़ी प्रमुख प्रहार,
एकासण आँबिल उपवास ने छठ्ठ विचार ।
साध समक्षै लोक समक्षै राज समक्ष,
कूड़ौ आल दीया दुइ चौ षट चौथ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥

दस उपवास दडाया तेम मराया वीस,
इक लख असीय सहस नवकार गुणौ तजि रीस ।
पख चौमास लगि इक त्रिणदस उपवास,
अधिकौ क्रोध करंतो आलोयण नहिं तास ॥ १३ ॥

सूआवड़ि ना दोष कीया वलि थापण मोस,
वोल्या वलि उत्सूत्र कीया गुरु ऊपर रोस ।
करीय दुवालस वार हजार गुणै नवकार,
मिच्छादुक्कड़ देई आलावौ वार वार ॥ १४ ॥

ढाल (३) बेकर जोडी ताम, एहनी

विण कीधा पचखाण विण दीधां वांदणा,
पड़िकमणै विधि पातरै ए ।
अणोझा नै असिझाय तिहा अवधे भण्या,
इक इक आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥

गठसी नें एकत्त निव्वी आविल,
भंगे आलोयण इमै ए।
एक पाच षट आठ नवकरवालीय,
गुण नवकार अनुक्रमै ए ॥ १६ ॥
उपवास भंग उपवास आविल ऊपरा,
अधिकौ दंड वखाणीयै ए।
पाचमि आठमि आदि भंग किया वलि,
फिर ग्रहे पातक हाणीयै ए ॥ १७ ॥
ऊखल मूसल आगि चूल्हौ घरटीय,
दीधै अठ्ठिम तप करै ए।
मागी सूई दीध कातरणी छुरी.
आविल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥
जीव करावै जुद्ध रात्रि भोजन,
जल तरणै खेलण जूऔ ए।
पाप तणौ उपदेस परद्रोह चीतव्या,
उपवास इक इक जूजूऔ ए ॥ १९ ॥
पनरै करमादान नियम करी भंग,
मद्य मास माखण भख्या ए।
आलोयण उपवास सकपादिक,
चिहु भेदे चढता लिख्या ए ॥ २० ॥
वोल्या मिरपावाद अदत्तादान त्युं,
जघन्य एकासण जाणियै ए।
अति उत्कृष्टी एण जाणि आलोयणा,
उपवास दस दस आणियै ए ॥ २१ ॥

ढाल (४) सुगुण सनेही मेरे लाला, एहनी

चौथे व्रत भागें अतिचार, जघन्ये छठ आलोयण धार ।
मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टें गुणि लख नवकार ॥ २२ ॥
परिग्रह विरमण दोष प्रसग, तीन गुण वृत साहे भंग ।
च्यार शिक्षावृत रे अतिचारै, आविल त्रिण प्रत्येके धारे ।२३।
शील तणी नव वाड़ि कहाय, तिहा जौ लागौ दोप जणाय ।
त्रिय नै फरस हुआ अविवेकै, इक आविल कीजें प्रत्येके ॥२४॥
साध अनै श्रावक पोपीध, एकेन्द्री संघट्टै कीध ।
वीसर भोल सचित जल पीध, दंड एकासण अंविल दीध ।२५।
विण धोये विण लूह्यै पात्रै, एकासण तिम पुरिमढ मात्रै ।
गई मुहपोती आविल सारौ, तिम ओघै अट्ठिम अवधारौ ।२६।
च्यार आगार छ छीडी राखै, वृत पचखाण करै पट साखैं ।
दोषे मिच्छादुक्कड़ दाखै, आलोयण तेह नै अभिलाषै ॥२७॥
आलोयण ना अति विस्तार, पूरा कहता नावै पार ।
तौ पिण संखेपे ततसार• निर्मल मन करतां निसतार ॥ २८ ॥
धन श्री वीर जिणेसर सामी, जसु आगम वचनें विधि पामी ।
जीत कलप ठाणा अंग आदि, वलिय परंपर गुरु परसादि ।२६।

॥ कलश ॥

इम जेह धरमी चित्त विरमी पाप आप आलोइ नै
एकांत पूछै गुरू बतावै सकति वय तसु जोइ नै
विधि एह करसी तेह तरसी धरमवत तणै धुरै
ए तवन श्री ध्रमसीह कीधौ चौपनें फलवधिपुरै ॥ ३० ॥

—o—

वीस विहरमान जिनस्तवनम्

वदु मन सुध वइरत माण जिणेसर वीस,
दीप अढी में दीपै जयवंता जगदीस,
केवलज्ञान ने धारै तारै करि उपगार,
किण किण ठामै कुण कुण जिन कहिस्यु सुविचार ।१।
पैतालीस लख योजन मानुष क्षेत्र प्रमाण,
वलयाकारै आधै पुष्कर सीमा जाण,
दोइ समुद्रे सोहे दीप अढाई सार,
तिण मे पनरै कर्माभूमि नो अधिकार ।२।
पहिलौ जबूद्वीप समइ विचि थाल आकार,
लावउ पिहलउ इक लख जोइण नें विस्तार,
मोटो तेहनै मध्य सुदरसण नामै मेर,
तिण थी दस विदिसानी गिणती च्यारे फेर ॥३॥
मेरु थकी दक्षिण दिशि एह भरत शुभ क्षेत्र,
पाचसै छवीस जोयण छकला तेहनो वेत्र,
उत्तर खड मे एहवो इरवइ खेत कहाय,
इण विहुं करमाभूमि अरा छए फिरता जाय ॥४॥
तेत्रीस सहस छसय चौरासी जोयण जाण,
च्यार कलाए महाविदेह विपंभ वखाण,
भरत थी चौगुणो इक एक विजय तणो परिमाण
एहवी विजय बत्तीस विराजै जेहनै ठाण ॥५॥

मेरु विचै करि पूरव पच्छिम दोइ विभाग,
सोलह सोलह विजय तिहा विचरै वीतग राग,
सासतै चौथे आरै तारै श्री अरिहत,
एहवै महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥६॥

पूरव विदेह विजय पुखलावती आठमी ठाम,
पुडरीकणी नगरी तिहा श्री सीमंधर स्वाम,
वप्र विजय पच्चीसमी विजयापुर नौ नाम,
पच्छिम विदेह बीजौ युगमंधर कीजै प्रणाम ॥७॥

तिम हिज नवमी वच्छ विजय वलि पूरव विदेह,
नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमुं धरि नेह,
नलिनावर्त्त चउवीसमी पछिम विदेह वखाण,
वीतशोका नयरी तिहा चौथौ सुबाहु सुजाण ॥८॥

ए च्यारेई जिणवर जंबूद्वीप मझार,
महाविदेह सुदर्शन मेरु तणै परकार,
एहवौ जबूद्वीप महागढ जेम गिरिंद,
खाई रूपै दोइ लख जोयण लवण समद ॥९॥

ढाल २ दीवाली दिन आवीयउ, एहनी

दीपइ बीजउ दीप ए, धन धन धातकी खड।
पिहुलौ चिहु लख जोयणे, मडल रूपै मंड ॥१०॥दी०॥

पूरव पच्छिम धातकी, खड गिणीजै दोइ।
विजय मेरु पूरव दिसै, पच्छिम अचलमेरु जोइ ॥११॥दी०॥

दोइ भरत दोइ ईरवैं, दोइ वलि महाविदेह ।
करमभूमि षट छै इहां, इणहीज नामै एह ॥१२॥दी०॥
दीप इक इक मेरु नै आसरैं, करमभूमि तीन तीन ।
निज निज मेरु थी माडिनै, लेखो चिहुंदिसि लीन ॥१३॥दी०॥
श्रीसुजात जिण पाचमौ, छट्ठउ स्वयंप्रभु ईस ।
ऋपभानन जिन सातमौ, समरीजै निसि दीस ॥१४॥दी०॥
अनंतवीरिज जिण आठमौ, एच्यारे जिनराय ।
पूरव धातकीखंड में, महाविदेह रहाय ॥१५॥दी०॥
पहिला चिहुं जिण नी परइ, विजय नगर दिसि ठाण ।
तिणहीज नामें अनुक्रमै, विजय मेरु अहिनाण ॥१६॥दी०॥
नवमौ शूरप्रभ नमूं, दशमो देव विशाल ।
इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण प्रणमुं त्रिकाल ॥१७॥दी०॥
बारमौ चंद्रानन जिन, पच्छिम धातकी माहि ।
विचरै च्यारे जिणवरा अचल मेर उच्छाह ॥१८॥दी०॥
एहवौ धातकीखंड ए, परिदखिणा परकार ।
अठ लख जोयण वीटीयौ, समुद्र कालोदधि सार ॥१९॥दी०॥

ढाल (३)

कालोदधि नै पैलै पार ए, वीट्यउ चूड़ी जेम विचार ए ।
सोलै लख जोयण विस्तार ए, दीप पुक्खरवर अति सुखकार ए ॥
सुखकार पुष्कर दीप तीजौ, तेहनै आधै वगे ।
विचि पड्यो परव्रत मानुषोत्तर, मनुषक्षेत्र तिहा लगे ॥

तिण आध करि अठ लाख जोयण, अरध पुष्कर एम ए ।
तिहा करमभूमि छए कहीजै, धातकीखंड जेम ए ॥२०॥
आधै पुष्कर में पूरव दिसै, मदर नामै मेरु तिहा वसै ।
पच्छिम विज्जूमाली मेरु ए, इहां किण इतरौ नामै फेर ए ॥
फेर ए इतरौ इहा नामै, अवर ठामै को नहीं ।
इक एक मेरैं तीन तीने, करमभूमि तिहा कही ॥
तिम भरत ईरवतइ विदेहे, नाम सिरखें हेत ए ।
तिणहीज नामै विजय सगली, सासता ध्रम खेत ए ॥२१॥
घातकी खंडै तिम पुष्कर सही, इण क्षेत्रां नो मान कह्यौ नहीं ।
दुगुणा दुगुणै अति विस्तार ए, शास्त्र थकी लेज्यो सुविचार ए ॥
सुविचार वाकी तेह सगलौ नगर तिमहिज मन गमै ।
पूरवै पच्छिम जेह जिणदिसि, तेह तिमहिज अनुक्रमे ॥
श्री चंद्रवाहु भुजंग ईसर, नेमि च्यार तिथंकरा ।
पूरवै पुष्कर अरध माहे, सरव जीव सुखकरा ॥२२॥
वइरसेन वंदू जिन सतरमो· श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो ।
देवजसा उगणीसमौ देव ए, जसोरिद्धि वीसम जिन सेव ए ॥
जिन सेव च्यारे अर्ध पुष्कर, माहि पच्छिम भाग ए ।
तिहा मेर विज्जूमाल चिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए ॥
चउरासी पूरव लाख वरसा, आउ इक इक जिन तणौ ।
पाचसै धनुप शरीर सोहै, सोवन वर्ण सोहामणौ ॥ २३ ॥
काल जघन्ये इम जिण वीस ए, हिव उत्कृष्टै भेद कहीस ए ।
इकसौ सित्तरि तिहां जिणवर कहै, पाचे भरते जिण पाचे लहै ।

जिण लहे पाचे, तेम पाचे ईरवै मिलि दश हुआ ।
इक इक विदेह बतीस विजया, तिहा पिण जिण जुजुआ ।।
एक सौ सित्तरि एम जिणवर, कोड़ि नव वलि केवली ।
नव कोड़ि सहसे अवर मुनिवर, वंदिये नित ते वली ।। २४ ।।

इहा भरते ईरवते आज ए, पचम आरै नहिं जिनराज ए ।
धन धन पाचे महाविदेह ए, विचरै वीसे जिन गुण गेह ए ।।
गुण गेह दोष अढार वर्जित, अतिशया चौतीस ए ।
चउसट्ठि इद नरिंद सेवित, नमू ते निस दीस ए ।।
तिहा आज तारण तरण विचरइ, केवली दोइ कोड़ि ए ।
दुइ सहस कोड़ि सुसाधु वीजा, नमु वेकर जोड़ि ए ।। २५ ।।

॥ कलश ॥

इम अढी दीपे पनर करमा-भूमि क्षेत्र प्रमाण ए ।
सिद्धात प्रकरण साखि भाख्या वीस वइहरमाण ए ।।
श्रीनगर जेसलमेर सवत सतर उगणतीसै समै ।
सुख विजयहरप जिणिंद सानिधि नेह धरि ध्रमसी नमैं ।। २६ ।।

अष्ट भय निवारण श्री गौड़ी पार्श्वनाथ छंद

॥ दोहा ॥

सरस वचन दे सरसती, एह अरज अवधार ।
पारथिया पहिड़ै नहीं, उत्तम ए आचार ॥ १ ॥
हित करिजे मोसु हिवै, देजे वैण दुरस्स ।
कवियण पिण सुणि नै कहै, सखरौ वणु सरस्स ॥२॥
गुण गरूऔ गौड़ी धणी, पारसनाथ प्रगट्ट ।
मन सूधै मोटा तणा, गुण गाता गहगट्ट ॥ ३ ॥

छंद–नाराच

प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध ऋद्धि वृद्धि पूर ए,
कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वद्धते सनूर ए,
विजोग सोग रोग विग्घ अग्घ सिग्घ घायकं.
प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायक, ४
गुमान मोड़ि हत्थ जोड़ि देव कोडि वग्ग ए,
अनूप भूप चुप धारि आइ पाइ लग्ग ए,
पहू वहू सुकित्ति नित्त सव्व सोभ लायकं, प्र० ५
कुबोह लोह कोह द्रोह मोह माण वज्जियं,
अनंत कात शात दात रूप मैण लज्जियं,
असेस शुद्ध तत्त जुत्त सोभ ए अमायकं, प्र० ६

विसाल भाल सुव्विसाल अद्धचंद छज्जियं,
रउद्द थी रिसाइ जाणि एथि आइ रज्जियं,
सुनैण कंज गंध काज भौंहि भौंर रायकं प्र० ७

कपूर पूर कस्सतूर कुंकुमा सुरग ए,
अरग्गजा अथग्ग में रहै गरक्क अग ए,
अछेह दुत्ति गेह देह सव्वही सुहायकं, प्र० ८

मृदंग दौंदौं दौं दप्प मप्प वज्ज ए,
नफेरि भेर झलरी निसाण मेघ गज्ज ए,
तटक्क तान थेइ थेइ लक्ख सुक्ख दायकं, प्र० ९

अष्ट भय नाम दोहा

करि केहरि दव क्रुद्ध अहि, राडि समुद्दह रोग।
अति बंधण भय अठ टलै, सामि नाम सयोग।१०।

छद भुजगी

छहुं रित्तु छाक्यौ झुकंतौ झकोला,
लपक्के विलग्गी अली मालि लोला,
वलेटैं वलाका वली सुंडि दौला,
झरै निज्झरा जेम मदैं कपोला, ११

पहू चालतौ जाणि पाहाड़ तोला,
झलक्कै डलक्कावतो लाल डोला,
इसौ दूठ पूठै पडंता अकोला,
जपता करैं नाचि नी मात चोला, १२

इति हस्तिभय

महा सद्द सीह अबीहं उदंड,
भरै फाल आफालतौ पुच्छ झुंडं,
डगैं फाडि डाचौ वड वज्र मुंडं,
महातिक्ख नक्खं रखै गोप चडं ॥ १३ ॥
फुरक्कावतौ मुच्छि फाडत तुंडं,
ललक्कंत लोला विकट्टं विहंड ।
धणी पास चौ नाम ध्यान धरंड,
टलै स्याल ज्यु सीह होए अहंडं ॥ १४ ॥

इति सिंह भय

जले जंगला में जटा जूट जाला,
घणा झाड़ ऊजाड़ में लग्ग झाला ।
चहू मृग्ग वग्ग पसू पंखि वाला,
वलंता कमेडा चिड़ा जंतु माला ॥ १५ ॥
धुखे धूम लग्गे कीया नग्ग काला,
झलो झाल रुंखे टल्या नाहि टोला ।
वड़ सकटे एण आया विचाला,
प्रभु नाम नीरैं वुझै तत्तकाला ॥ १६ ॥

इति अग्नि-भय

कलु काल रूपी महा विक्करालं,
फणा टोप रोपैं महाकोप जालं ।

वलक्के वलंतौ चलंतौ करालं,
जिणै फूंकि सूकैं तरू माल डालं ॥ १७ ॥
हला हाल सलोलियं विक्ख लालं,
रहै लाल लोचन्न दो जीह वाल ।
धरता प्रभू नाम रिदै विचालं,
सही साप होवै जिसी फूल मालं ॥ १८ ॥

इति सर्प्प. भय

भिड़ैं भूप भूपे अधिक्के अटक्के,
खला हाड तूटै खडग्गा खटक्के ।
परा हैवरा पाडि नाखै पटक्के,
धुरा सिंधुरां कधरा भू धटक्के ॥ १६ ॥
पडै प्राण संधाण बाणे बटक्के,
हुकें केइ हाथाल रोसैं हटक्के ।
झला झाल गोलेहु नाले भटक्के,
तुटैं तुड मुडा प्रचंडा तटक्के ॥ २० ॥
छछोहा सलोहा पडंधा छिटक्के,
भुक्कैं सूर झभेडि नाखैं भटक्के ।
प्रभु नाम लेता इसे ही अटक्के,
कदे बाल बाको न होवैं कटक्के ॥ २१ ॥

॥ इति युद्ध भय ॥

जतन्ने घणे केइ बैसे जिहाजैं,
अथग्गे जले आइ कुव्वाइ वाजैं ।

घटा टोप मेघा गडड्ड त गाजैं,
हुबक्कै तरंगा विरंगाहु वाजैं ॥ २२ ॥
छिचा पिच्च लागी घडी ताल भाजैं,
अहो कोइ राखै अठै अम्ह काजैं ।
इसे सकटैं जे जपैं जैनराजे,
सही पार पामै तिके सुक्ख साजैं ॥ २३ ॥

इति जल भय

गड गुवड गोलक हीय होड़ी,
हरस्स खसं उध्रसं गांठि फोडी ।
टलै गोढ थी कोढ अड्डार रोडी,
महाताप सताप आतंक कोड़ी ॥ २४ ॥
न होवैं कदे कायमैं काय खोडी,
सहु आधि व्याधं सही जाइ छोडी ।
जिणंदं नमैं मन्न मे मान मोड़ी,
लहै सो सदा सुक्ख संपत्ति जोड़ी ॥ २५ ॥

इति रोग भय

अमूछा मलेछा वली मन्न खोटा,
जिया चक्खु चुंचा छुल्या गाल गोटा ।
वली पाघ वाकी लपेट्या लंगोटा,
सहेटा गह्या सब्बला हाथ सोटा ॥ २६ ॥

दीयै कोरडा देह् दोला दचोटा,
वदै बोल वाका झंझै मंत झोटा।
पड्या बदिखानै महा दुक्ख मोटा,
प्रभू नाम थी वेग थायै विछोटा ॥ २७ ॥

इति बदि भय

नमता जिणेशं सदा मन्न रागं,
सहीअे महा दुट्ठ भैं अट्ठ भागै।
रली लोक लक्ख लुली पाय लागं,
दिसो दिस्स मांहे जसू जस्स जागै ॥ २८ ॥

॥ कलश ॥

परतख जिणवर पास आस उल्लासह अप्पण
विविध जास गुण वास दासचा दालिद कप्पण
चैंण दैण जसु चरण ईति अति भीति निवारण
लील लाछि लख्ख गान विमलकीरत्ति वधारण
दिण इद जेम दीपत दुति, विमलचद मुवख छवि वरण
दौलत्ति विजयहरपा दीयण, धरमसीह ध्याने धरण ॥२९॥

॥ इति अष्ट भय निवारण श्री गौडी पार्श्वनाथ छद ॥

—:❀:—

श्री जिनचंद्रसूरि अमृतध्वनि

रतन पाट प्रतपै रतन जाणइ सकल जुगत्त
गच्छनायक जिणचंद गुरु सोभन तप जप सत्त ।१।

चालि—

तौ तप जप सत्त तेम तपत्त तेज वखत्त तरणि तखत्त तृणसम वित्त
त्तजि मदि चित्त त्तुरत चरित्त त्तहि किय
हित्त त्तिनि गुपत्त त्तिदुय सुमत्त
त्तेवडि नत्त त्तजित मिछत्त त्तत्त सिद्धत त्तारितजंत त्तरक जुगत्त
त्तरजित धुत्त त्ततु दीपत्त त्तुल रतिपत्ति त्तासन मत्त अमत दुरित्त
त्तिभुवन कित्त त्तवत कवित्त त्तसु अमृतध्वनि ध्रमसी कहै सार
१ रतन०

इति श्री वर्त्तमान गुरु स्तवना रूप ५७ तत्तो मंड करी नइ
महा अमृतध्वनि जाणिवी ॥

उपकार ध्रुपद
राग—वृंदावनी सारंग

करणी पर उपगार की
सब करणी मे अधिकी वरणी, तरणी यह संसार की । क० ।१।
कीनें गुण ऊपरि गुन करिवौ, वात सुतौ व्यवहार की ।
पिण विनु स्वारथ करण भलाई, अपनें जीउ उद्धार की ।क०।२।
सुकृती पात्र कुपात्र न सोचें, धरै उपमा जलधार की ।
साची कहिय सुगुरु ध्रम सीमा, सब शास्त्रनि कैं सार की ।क०।३।

सप्ताक्षरी कवित—

गिही केकि के अगिह केकि के गिह गिहि कुक्कहि ।
केकि को क ख ग घूक हहा हूहू खगहु क्कहि ।
के गहि गह गहि कोह खें गगा है खग खगाहि ।
के कुग्गह गह गहे अग अग्घै अगि अग्गहि ।
के हक्क अहक्क अगाह गहै गेह खेह कंकह गुहा ।
कहि कुक्ख खूह खुह अग्गि की कहुं केही अक्कह कहा ?
अकुह विसर्जनीया ना कंठ इणे हीज साते अक्षरे कवित्त छै
पेट नाट ऊपरा कह्यौ छै ।

गूढ रूप आशीर्वाद सवैया

धोरी के धनी के नीके हार कौ अहार सुत,
ताही के नगर गयौ जाके दस सीस है ।
सबे लोक जाके सुत ताके नाम ताकी सुता
वाजी मुख भूपन वैठी निसि दीस है ॥
राजा लावै रैंत लार ताकी साखा की सिंगार
आगे धाई धरी देखि उपजी जगीस हैं ।
साह की धुजावे रैन तिन्हें पूछ्यौ जोऊ वेन
ताकी नाम चातुरी सा मेरी भी आसीस है ॥१॥

मुखतें इक बोल कह्यौ न गिणे कोऊ धूनि चके तो गुणी गहरो ।
हलके कहै बात न पावत न्याउ जबाब के जोर खडो बहरौ ॥

निसि मौन सो बैठो तकै कैहै ऊघत सूनौ ही सोर करैं सहरौ ।
न लहै गुण के कोउ कहै ध्रमसी जगि आज लबारिन को पहुरौ ।१।

समस्या—दोहरा हमारे देस छोहरा करतु है ।

सवैया इक्तीसा

एक एक तैं विसेप पंडित वसैं असेप,
रात दिन ज्ञान ही की वात कुं धरतु है ।
वैदक गणक ग्रंथ जानैं ग्रह गणन पंथ,
और ठौर के प्रवीण पाइनि परतु है ।
करत कवित सार काव्य की कला अपार,
श्लोक सब लोकनि के मन कु हरतु है ।
कहै ध्रमसीह भैया पंडिताई कहु कैसी,
दोहरा हमारे देस छोहरा करतु है ॥ १ ॥

समस्या—नैन के झरोखे वीच झाखता सो कौन है ।

हरिसो सकेत करी राधिके विलोके मग,
ऐसे आई वैठी सखी एक ही विछौन है ।
राधे वोली सुनि खेल मोसु नैन वाद जोवै,
अनिमेष दो मैं हारी साई दासी हौन है ॥
एतैं सखी पीछैं हरैं हरैं आए हरी अति ही,
अति ही निकट ह्वै कैं तकै गहि मौन है ।
वोली सखी राधे सुनि मोसु कहि साच वाच,
नैन के झरोखे वीचि झाखता सो कौन है ॥१॥

सवैया सर्वतोमुख—गोमूत्रिका बध

अति	सत	गुणी	नर	चित्त	भणी	सुख	दैण	सदा	जिण	चद	जती	
मति	वत	मुणी	सर	कित्त	घणी	मुख	वैन	मुदा	घन	दद	हती	
प्रति	पत	धनी	पर	हित्त	जनी	सुख	चैन	बिदा	जन	वृद	पती	
छति	वत	मुनी	दर	भित्त	हनी	दुख	रैंन	छिदा	दिन	इद	दुती	।१।

नारी कुञ्जर जाति सवैया[1]

शोभत घणी जु अति देह की वणी है दुति,
सूरिज समान जसु तेज भा वदाय जू
भूपति नमैं है नित नाम कौ प्रताप पहु,
देखत तही ही दुख नाहि है कदाय जू।
पूरण बडेई गुरा सेव के करे थै सुख,
वदत तही ही वहुलोक समुदाय जू।
देत है वहूत सुख देव सुगुरुहि नित,
दोऊ कौ नमैं है ध्रमसीह यौं सदाय जू।

अन्तर्लापिका

आदर कारण कौन भूप कहा रोपि रहैं क्रम
न रहै निश्चल कौन कौन त्रिय नयने ऊपम
करै विप्र कहा वृत्ति स्वामि वच को न उथापै
कौन नाम समुदाय कौन तिय पुरुपइं व्यापै
वसती विहीन कहियै कहा सवहि कहा राखत जतन
धरिजै अखंड ध्रमसी कहै 'धरम एक जग मे रतन' १

—:०:—

[1] यह पूरा पढने से "इकतीसा सवैया" है, वड़े अक्षरो को छोड़ देने से "सवैया तेवीसा" हो जायगा।

शीलरास

ढाल—हु बलिहारी जादवा, ए देशी

शील रतन जतने धरो, खंडी ने मत[1] आणो खोड कि ।
भूषण निरदूषण भलौ, होइ[2] नहीं कोइ इयै री जोड[3] कि ।१।शी.
शील रचे मन शुद्ध सू, परहा तेह पखाले पाप कि ।
कुल नैं पिण निरमल करै, ओलखीयौ तिण आपो आप कि ।२।
सुकृत तिणै वलि संचीयौ, सहु जग मे पामै सोभाग कि ।
दुरगति दुख दूरें दलै, अइओ एहना विरूद अथाग कि ।३। शी०
मुशकल करमे मोहनी, बार व्रता मा दुष्कर बंभ कि ।
करणे जीह मन त्रिकरणे, दमणा ए दोहिला[4] निरदंभ कि ।४।शी.
पर त्रिय संगत पाडुई, सत्तम व्यसन कहीजै सोइ कि ।
ऊंडी मति आलोचज्यो, हाणि घरे पर[5] हासौ होइ कि ।५। शी.
मेरू जिता[6] दुःख मानियै, सुख तौ मधु ना बिंदु समान कि ।
सुरगुरू विद्या (धर) सारिखा, मानिस तौ बैंसीस विमान कि ६
मत विपयारस माचज्यौ, वाचेज्यौ एहवा गुरू वैंण कि ।
दूह्वी नै हित दाखवै, साचा तेह कहीजै सैण कि ।।७।। शी.
विपय तणा फल विप समा, ए बेऊ नही सम अधिकार कि ।
विप इक वेला दुख दीयै, विषय अनंती वार विचार कि ।।८।।
पुन्यै नरभव पामियौ, भरम्या विपय म राचौ भोल कि ।
काग ऊडावण कारणै, नाखौ मत थे रतन निटोल कि ।९। शी.

---

१ मन, २ हुवै, ३ होडि, ४ होए, ५ वलि, ६ जिहा ।

कनक तणौ देहरौ दसी, कंचण नी वलि आपै कोड कि ।
कष्ट-तनी किरिया, ह्वै नहीं सील तणी ते होड कि ॥१०॥ शी.
पालै शील भली परै, टालै दूपण परहा तेम कि ।
वखाणे सहू को वली, हेक रतन नै जडीयौ हेम कि ॥११॥ शी
निरमल नयणैं निरखीयैं, वयण वदै नहीं मयण विकार कि ।
सुर सेवा करै सयण ज्युं, शील रयण थी अधिकौ सार कि १२
सोहै मनुप सुशीलीयौ, कुसीलीया री शोभन काइ कि ।
कोइ रीस मता करै, सीख भली साची कहिवाइ[1] कि ।१३। शी.
ललना सुं लुवधो थकौ, लोपि गमावै लज्जा लीक कि ।
जायै धन पिण जूजूऔ, नीर रहै नहि फूटी नीक कि ।१४। शी.
पुरप भला स्त्री पापिणी, पापी पुरप नैं स्त्री पुन्यवत कि ।
मत[2] एकात म धारिज्यो, परणामे सहु फेर पडंत कि ।१५। शी.
कष्टै धन भेलौ करै, झगड़ा झाटा करि करि झूठ कि ।
खरचै नहीं धरम खेत मे, मानवंती नैं दे भर मूठ कि ।१६। शी
की कम्म करंडे कूकरी,[3] मुख नौ झरते मास मसूढ कि ।
मगन हुवै ते म्वाद मैं, माहिली हानि न जाणै मूढ कि ।१७। शी
अवगुण कोइ न अटकलै, मेल करावे तिण सु मेल कि ।
गुरूजन स्युं धारै गुसौ, अवसर नाखै ते अवहेल कि ।१८। शी
महिला रइ मगति मिल्याँ, मूखम जीव मरइ नव लाख कि ।
भगवतइ इम भाखीयौ मूत्र सिद्धाते लाभै साख कि ।१९। शी.

---

१ सुखदाइ, २ मन, ३ हाड कस सूरडै कूकर ।

भरीयै रू तसु भुंगली, तातै सूए रे दृष्टांत कि।
हिंसा जीवा री हुवै, एहवा विषय कह्या अरिहंत कि ।२०। शी.
त्यागी विपय तणा तिके, ज्ञानी तेह गिणीजै गान कि।
अथिर गिणीजै आउखौ, वरतै जेहवो संध्या वान कि ।२१। शी.
जेहवी चंचल वीजली, पीपल नौ वलि पाकौ पान कि।
ठार रो तेह न ठाहरै, वैश्या नौ जिम नेह विधान कि ॥२२॥
कीजै मद ते कारिमा, जल अंजलि नौ देखत जाय कि।
करवत वहती काठ मैं, दीसैं इण विध आयु रदाय कि ।२३। शी.
सुखदाई संसार मैं, साचो नहीं कोइ धर्म समान कि।
एहना भेद अनेक छै, पिण सहु माहे शील प्रधान कि ।२४। शी
ज्वलन हुवै जल जेहवौ, सरप हुवै फूलमाल समान कि।
मीह हुवै मृग सारिखौ, सीलैं सहु वाता आसान कि ।२५। शी
भूठो गय ते हय जिसौ, हालाहल ते अमृत होइ कि।
जोरावर अरि मित्र ज्यूं, कष्ट करै नहीं सीलै कोय कि ।२६। शी.
परिसिद्ध नाम प्रभात नौ, ल्यै सहु कोइ मन सुध लोक कि।
पभणुं केय परम्परा, वलि शास्त्रा थी केइ विलोक कि ।२७। शी.
आदिसर नी अंगजा, ब्राह्मी शीलवती वाह वाह कि।
मुन्दर रूप सपेखि नें, चक्री भरत धरी चित चाह कि ।२८। शी.
साठि सहस वरसा लगै, तप आंबिल करी तोड़ी काय कि।
शील पाल्यौ तिण सुन्दरी, कीरति आज लगैं कहिवाय कि ।२९
शुकल किसन पख दंपती, शील अडिग नी एकण सेज कि।
सहस चौरासी साधु थी, आदिसर परसास्या एज कि ।३०। शी

वहु जम चदनवालिका. लघु हिज वय जिण चारित्र लीध कि।
साधवी महम छतीस में, कीरती वीर जिणेसर कीध कि ॥३१॥
भीना चीर सुकायवा, गईय गुफा मे राजुल रंग कि।
रहनेमे काउसंग रह्यौ, अवलोकी कह्यौ सुन्दर अंग कि ॥३२॥
अकुम (ना) वसि गज आणीयौ, दीधो राजमती उपदेश कि।
निपट प्रसंस्या नेमजी. लाभै नहीं दूषण लवलेस कि ।३३। शी.
चीर दुर्योधन खाचीया. पाचाली सु करीय उपाय कि।
सौ अट्रोत्तर साडला. प्रगट्या नवनव शील पसाय कि ।३४।शी.
देव उपाडी द्रौपदी, आणी धातकीखंड आवास कि।
पद्मोत्तर नृप प्रारथी, छेडे मत मुझने छ मास कि ॥३५॥
कीधी वाहर किसन जी, पद्मोत्तर पिण लाग्यो पाय कि।
पाचे पाडव नी प्रिया. पाम्यो वंछित शील पसाय कि ॥३६॥
चित चौखे रामचंद्रनी. कौशल्या माता सुखकार कि।
कष्ट टल्या वंछित फल्या, सतीया में सील सिरदार कि ॥३७॥
रावण रै कब्जै रही. सीता रो किम रहियो सील कि।
लोक वोक के लागुआ, ए परपूठ करै अवहील कि ॥ ३८ ॥ शी.
पावक कुण्ड माहे पड़ी, जल शीतल मे न्हाई जेम कि।
सहु कहै धन धन ए सती, हुई निकलंक जाणे हेम कि ।३९। शी.
हाथी जेहनें अपहरी जिण वन मे खामी जीवराशि कि।
वेउ सुत नृप वूझिव्या, साधवी पद्मावती सु प्रकाश कि ।४०।
साते चेडा नी सुता, शिवा सुज्येष्टा जेष्टा सार कि।
पद्मावती प्रभावती, चेलणा मृगावतीय चितारि कि ।४१। शी.

मृगावती मुझ नै मिलै, चढि आयौ नृप चडप्रद्योत कि ।
हिकमति करि हारावीयौ, पाल्यौ नै उदयनै पोत कि ।४२।शी.
सुलसा सखरी श्राविका, निंदे पूरव करम निदान कि ।
सीलै सुर सानिध करै, सु पै आणि जीवत सतान कि ।४३। शी०
एक जती री आखि मे, तृण जीभें करि काढ्यौ तेह कि ।
मेटी पीड़ा मुनि तणी, सतीय सुभद्रा धर्म सनेह कि ।४४। शी०
कूडौ ही लोके कह्यौ, आलिंगन इण दीधउ अक कि ।
चालणीयें जल[1] सींचता, कीधी शीलै ए निकलक कि ।।५।।शी०
देसवटौ जूए दीयौ, नीकलीयौ स्त्रीय सु नलराय कि ।
सूती दवदती तजी, शीले पग पग कीधी सहाय कि ।।४६।। शी०
अति गरवी ने अविरति, जिण तिण सु जोडावै जुद्ध कि ।
तिणहिज भेव नारद तिरै, शील तणौ एक गुण मन शुद्ध कि ४७
कुमरी मल्ली धन कही, जिण वूझवीया पट राजान कि ।
पाल्यौ शील भली परै, सूत्र ज्ञाता में वरण समान कि ।४८।शी०
सुघरणी श्री कुंभरायनी, मल्ली कुमरी तणी ए मात कि ।
शील प्रभाव प्रभावती, वरतै सतीया माहि विख्यात कि ।।४६।।
दूपण अभया नै दीयौ, कहै राजा द्यौ सूली कील कि ।
सिहासन कीधौ सुरै, सेठ सुदरसण धन्य सुशील कि ।५०। शी०
अरि (ना) कटक ते अटकीया, एहनो वल कोइ अगम अथाहकि ।
शील मत्रै मंत्रीसरै, साचौ कहीयें सील सन्नाह कि ।५१। शी०
साची सत्यभामा सती, रुक्मणी पिण तिम चढती रेख कि ।
सलहौ मलयासुन्दरी, शील रतन राख्यौ सुविशेप कि ।।५२।।

---

[1] आलना ।

सुरसुन्दरी ने श्रीमती, गुणसुन्दरी पिण अधिकी ज्ञान कि ।
नित नित मयणरेहा नमुं, धरिजै अंजनासुन्दरी ध्यान कि ५३

दूपण संख राज दियौ, कर वध्या दीठा केयूर कि ।
कलावती कर कापीया, निरख्या तो वल ने ए नूर कि ।५४ शी०

मयणा श्रीस्थूलिभद्र नी, जखा जखदिन्ना सु प्रमाण कि ।
भूआ भूअदिन्ना वलि, सयणा वयणा रयणा जाण कि ।।५५।।

कोश्या केर नाटक किया, मुनि थूलिभद्र रह्यो ज्यूं मेर कि ।
आया गुरू ऊभा हुआ, दुक्करकारक कह्यो दो वेर कि ।।५६।।

एह अदेखौ आणि नै, सीह गुफावासी ते साध कि ।
चूकौ भटके चौमास मै, आवी नें खाम्यो अपराध कि ।५७।

आतल नें पिण औहटे, वलि संवाहे काठी वाग कि ।
तारै आपणपौ तिको, सहु माहे पामे सौभाग कि । ५८ । शी०

शील खंड्यौ तिण स्युं कीयौ, दावानल गुण वन नै दीध कि ।
कूट्यौ पडहौ कुजस नौ, कुल मै मसि नौ टीलो कीध कि ।५६।

पाणी दीधौ पुण्य नैं, सहु आपद नैं दीध सकेत कि ।
दुख लियो काइ उदीर नै, चतुर हुवै तौ तु चित चेत कि ६०।

शिवपुर द्वारैं तिण सही, भोगल दीधी काठी भीड कि ।
सहु देख तेहनै सामट्ठा, नित आवै जिम पखी नीड कि ।।६१।।

अवगुण कुण कुण आखीयै, खड्या शील पडे दुख खाण कि ।
पाले तेह पुण्यात्मा, विलसै सहु सुख ए जिण वाणि कि ।।६२।।

जिन शासन धन जाणियै, आगर धरम रतन नौ एह कि ।
ब्रह्मचारी हुआ वड वडा, त्रिकरण शुद्ध प्रणमीजै तेह कि ।६३।

वरतै बीकानेर मे विजयहरप जसु लील विलास कि ।
वुरि ध्यायौ धर्म ध्यान नौ, श्री धर्मसीह रच्यौ शीलरास कि ।६४

इति श्री शीलरास सम्पूर्णम् । सवत् १७७७ वर्षे
मिती फागुण सुदि २ दिने श्री विक्रमपुर मध्ये
पडित सुखरत्नेनलिपी कृत ।

(पत्र ३ जयचदजी भंडार)

—:o:—

श्रीमती चौढालिया

दोहा

खीर खाड मिलीया खरा, घृत विण न वर्ण वात,
तिम इहा चार प्रकार मे, वरणु शील विख्यात, १
शीले सुर सानिध करै, शीले लील विलास,
शीले दुरगति दुख टलै, शीले पामै शिव वास, २
ते ऊपर सुणजो सहू, श्रीमति ना दृष्टात,
शील राख्यो जतने करी, ते हिवै सुणजो तंत, ३

ढाल (१) चौपई

इणहिज दखण भरत मझार, अग-देश आरज आचार,
धण कण कचण रीध अपार, वसतपुरि अलका अवतार, १
प्रबल तेज प्रताप पडूर, शत्रुदलन तिहा राजा सूर,
तिण राजा रे जीव समान, मतिसागर मुहतो प्रधान, २
सार पुरि नि करै सभाल, चंद्रधवल नामै कोटवाल,
चतुरा जासु एकज चित्त, सुन्दरदत्त नामे प्रोहित, ३
बहु व्यापार घणो बाजार, गढ मढ मदिर प्रौल प्राकार
उत्तम जन तिहा वसे अनेक, वसतपुरि नगरी सुविवेक, ४
हिव सुन्दरदत्त प्रोहित तणो, श्रीदत्त मित्र अछे हित घणो,
तेहने नार अछै श्रीमती, शील गुणे करि सीता सती, ५

सेठ जरै परदेशे जाय, प्रोहित नै घर दीयो भोलाय,
जेहवो राखै हेत सदीव, देह दोय जाणै इक जीव, ६
एक दिन श्रीदत्त सेठ विचार, परदेशे चाल्यो व्यापार,
तेड़ी प्रोहित ने कहै तेह, तुम सारु छै माहरो गेह, ७
घर की घणी भोलावण दीध, सेठ तिहा थी कीधी सीध,
प्रोहित आवै करै सभाल, को न सकै कर वाको वाल, ८
सुखे रहे नारि श्रीमति, पालै शील सदा शुभमति,
प्रोहित दीठी रूप अमोल, कहिवा लागो एहवा बोल, ९
हुं प्रोहित माहरो कायदो, मोसु मिल ज्यु हुवै फायदो,
तुम प्रीतम जे माहरो मित्त, तु हिवै कोइ न मेलै चित्त, १०
श्रीमति उत्तर आप्यो सही, तमने एहवो करवो नही,
मोटा ते इम न करै मूल, सा (य) र थिकी कीम उडै धूड, ११
दिवी भोलावण तुम नै घणी, प्रदेशे चाल्यौ मुझ धणी,
घर हुंती किम उठै धाड, चीभडला किम खायै वाड़, १२
प्रोहित कहै मुझ वचन उवेख, धेठि होइ सहि करै द्वेप,
हिवे ताहरौ घर जातो देख, इण बात मे मीन न मेख, १३
दूहा—श्रीमति मने जाण्यो सही, खिणि टालु एक वार,
पहिलै पोहरै आवजो, रात गया ततकाल, १
सतोष्यो प्रोहित वचन, निज घर बैठो आय,
शील राखण नं श्रीमती, एहवौ करै उपाय २

ढाल २—अलबेला नी

कह्यो जाय कोटवाल नै रे लाल तूं छै पुर रुखवाल सुविवेकी रे
प्रोहित की मत पातकी रे लाल जोरे करैय जंजाल सु० १

सीले निर्मल श्रीमती रे लाल करि बुध वल प्रचंड सु०
जोयजोये इण भात सु रे लाल राखे सील सुचग सु० २
कहै कोटवाल चिंता किसी रे लाल ए नाखिस अवहेल सु०
प्रोहित रहसी पाधरो रे लाल पिण तु मोसु मन मेल सु० ३
सती कहै छै बातड़ी रे लाल नहि छै ताह नै लाग सु०
पाणी थी किम प्रगटै रे लाल ऊनी वलती आग सु० ४
मोसु ताण मती करो रे लाल कह्यो इम कोटवाल सु०
सती कहै तमे आवजो रे लाल बीजे पहुर विचाल सु० ५
तिहा थी आवि उतावली रे लाल कहै मुता नै एम सु०
राजा धुर धर थानके रे लाल कह्यो अन्याय हुवै केम सु० ६
कोटवाल कुमारगी रे लाल हु नांखिसु उखेड़ सु०
रूपे मोह्यो मुंतो कहे रे लाल तु मुझ ने घर तेड़ सु० ७
सू बोलो छो कहै सती रे लाल सगला सरिया काज सु०
अमृत थी विप ऊपजै रे लाल आयो कलजुग आज सु० ८
मुतो कहै बोलो मती रे लाल सो वाता एक वात सु०
तीजे पहुरे पधारजो रे लाल इम कहि गई असहात सु० ९
आवी राजा ने कहै रे लाल मुता मे नहि माम सु०
कहै छै तुझ घर आवसु रे लाल सु कीजे हिवै साम सु० १०
राजा रूपे रीझियो रे लाल रागे कहे इण रीत सु०
मुंतो सु मुझ आगलै रे लाल मुझ नै कर तु मीत सु० ११
भूप भणी कहै सती रे लाल,धरती खावा धाय सु०
तुमे छो प्रजा ना पिता रे लाल एह करो किम अन्याय सु० १२

राजा हुवै सहुनो धणी रे लाल मत तुं वचन उथाप सु०
चउथे पहुरै रातनै रे लाल आविजो थे आप सु० १३
करि सकेत जुदा जुदा रे लाल आवि आपनै गेह सु०
शील राखण नें श्रीमती रे लाल जोयजो करस्यै जेह सु० १४

दूहा

सती कहै ते वारता, पाडोसण नै तेड़,
च्यार नगर ना थंभ ते, मु'के नहीं मुझ केड़, १
कूड़ो कागल ले करि, रोती देती राड़,
तूं आए निशि पाछली, कूटे मुझ किमाड़ २
इम सिखावी तेहनै, मोटी सझी मंजूस,
च्यार भखारी तेह में, कोइ मति जाण्यो कूड़ ६
इण अवसर संझ्या थई, आथम्यो जब सूर,
नेह सहित नि (स) ज थयो, तो प्रोहित नवले नूर, ४

ढाल (३)—नवकार री

वस्त्र आभरण अमोल तंबोल सजाई चूर,
हरखि आयो सति घरे हसतो ऊभो हजूर ॥१॥
कूडै मन आदर करै तेह सजाई लीध,
दासी ने सनकारि सिखावी सगलो सिधो दीध,
भोजन पान सजाई करता वेला कीध,
वाधी रात पड़ी छै आकुल थाओ म सीध ॥२॥
बीजे पहोरे आयो आय वजायो बार,
हुं कोटवाल उघाड़ किमाड़ म लावो वार।

प्रोहित कहै जाण्यो छै एणै मुझ विकार,
तो आयो इण वेला कीजे कवण विचार ॥३॥

सतीय भणी कहै प्रोहित माहरा बाप नो सूंस,
तुम उपगार गिणीस छिपाय तुं मुझ नै तिण मंजूस,
तिण मजूस मे एक भखारै घाल्यो ठूस,
सबलौ तालो दीधो सरव रही मन हूंस ॥४॥

हिवै कोटवाल नैं माहे लीधो दीधो बहुमान,
नवी सजाई करवा माडी भोजन पान।
फिरता विरता आधी रात गमाई ग्यान,
तीजे पहुरै वारै वोल्यो प्रधान ॥५॥

साद ते अटकलीयो हलफलियो कोटवाल,
मुझ ने जाणि मुंहते कुड करी ततकाल।
हिवै किहा जाऊ केथी थाइ वोली वाल,
वैसि रहो भखार नी वीच मंजूस विचाल ॥६॥

तिहा वलि तालो दीधो लीधो मुंहतो माहि,
अधिक भगत करै पिण ऊपरले मन उच्छाह।
जिम तिम रात गमावै वात घणी आगाह,
वारणै राजा वोल्यो चउथे पहुरै चाह ॥७॥

मंत्री जाण्यो इण वेला नृप आयो आप,
मुझ करतूत तिहां थी वाणी पूरो पाप।
मुझ संताड़ि हिवै नहिं वीजी काइ टाप,
तीजै घर घालि दीयो तालो टाल सताप ॥८॥

ऊपरलै मन हुंतै माहे बुलायो राय,
पग धोवावै पाणी ल्यावै ज्युं निशि जाय।
इण अवसर आफलती रोती बारणै आय,
पाड़ोसणीं कीमाड़ ने कूटै करि हाय हाय ॥९॥
कूकै पाडोसण हलफली खोल किमाड
ताहरा पति ना कागल माहे मोटी धाड़
राजा कहै सु कीजै पहिली मुझ नै छिपाय
चौथे भखारै घाल्यो तालो दीध जड़ाय ॥१०॥
आसै पासै लोक मिल्या तेह निसुणी कूक
कूड़ै चित्त सती पण रोवै प्रीय गयो मुझ मूक
जड़ीया पेई मा च्यार जणा जाणे मामै चूक
काइ आया हिवै केम निकलस्या रहिस्या मूक ॥११॥

दूहा

इतरै सूरज ऊगीयो, प्रगट थयो परभात,
सेठ तणी सभलावणी, करती सगले वात, ॥१॥
आरण कारण करण ने, सगला मिल्या सब कोय;
मुंओ सेठ अपूतीयो, सुणीयो राणी सोय, ॥२॥
माल करावो खालसै, राजा ने कहो जाय,
भूपत किहा लाभै नहीं, जोयो सगले ठाय, ॥३॥
राजा मुंहतो नहिं घरे, तिम प्रोहित कोटवाल,
किण हिक मोटा कामवश, गया होसे ततकाल ॥४॥

राणी जाण्यौ हुं हिज हिवै, मंगावी ल्युं माल,
मूंक्या प्यादा आपका, साथे देई हमाल ॥५॥
सेठाणी कहै माहरै, सघलै घर रो सार,
बीजो काइ जाणुं नहीं, इण मंजूष मझार, ॥६॥
हमाले आणी हिवै, मोटि निउं मंजूस,
राणी जाणै सार ते, ल्युं वहिलेरो लूस ॥७॥

ढाल (४)—धरम आराधीयए, ए देशी

तालो खोलावै तिसै ए, ऊभी राणी आप,
पहिला प्रोहित प्रगट्यो ए, वहिलो गयो संताप, ।१।
हिवै इचरज थयो ए, जोयजो करम संजोग,
विपयारस वाह्या थका ए, विगड़ै दोनुं लोग, ।२।
कहै राणी तें सुंकीयौ ए, हसिवा लागी हेव,
प्रोहित कहै हसजो पछे ए, देखो वीजा देव, ।३।
जितरै बीजे बारणै ए, नीकलियो कोटवाल,
राणी कहै ओ काइ ए, करवी थी संभाल, ।४।
म्हा विण चोकी कुण करै ए, कहै कोटवाल निदान,
ततखिण तीजा ठाम थी ए, प्रगट थयो परधान ।५।
हस राणी कहै स्युं हुवो ए, दफतर थारै हाथ,
मु तो कहै मनै आवणा ए, राजा जी के पास, ।६।
तालो चौथो खोलता ए, पोते प्रगट्यो राय,
माथै ओढै ओढणा ए, लोका माहे लजाय ।७।

मांहो मांहे मीटे मिल्या ए, मान महातम खोय,
पछाताप ते अति करै ए, हुणहार जिम होय ।८।
भूपति प्रमुख सको भणै ए, श्रीमति नै साबास,
वैरी घाव वखाणीये ए, राख्यो शील सुवास, ।६।
तेड़ी राजा तेहनें ए, सखरो दे सतकार,
श्रीमती तु मोटी सती ए, नाम थकी निस्तार ।१०।
वसत्र आभ्रण दीया घणा ए, वहनी नाम बोलाय,
पोते नृप पगे लागने ए, निज अपराध खमाय ।११।
गाजै वाजै हर्प सु ए, पहोंचावै नृप गेह,
सहु लोक मे जस थयो ए, धन धन श्रीमति एह ।१२।
नगरी माहि बहु हुवो ए, जिण धरम नो उद्योत ।
सुध शील पाल्यो थका ए, श्रीमति पर वाधै ज्योत ।१३।
कितरो काल गया थका ए, आयो तसु भरतार,
शील प्रसादे सुख लह्यो ए, वरत्या जय जयकार ।१४।
अन्य दिवस गुरु आविया ए, धरमघोप अणगार,
श्रीमती संजम लींयो ए, जाणी अथिर ससार, ।१५।
व्रतधारी श्रावक हुवा ए, राजादिक बहु लोग,
पुन्न तणे परसाद थी ए, थाये सगला थोक, ।१६।
सूध साधवी श्रीमती ए, सुर पद पाम्यो सार,
महाविदेह में सीझसी ए, एक लहसि अवतार ।१७।
सीले सुख सदा लहै ए, सीले जस सोभाग,
धरम थकी कहै धरमसी ए, सफल फलै तसु आस ।१८।

इति श्रीमती चौढालिया सम्पूर्ण

[स्वामी नरोत्तमदास जी के सग्रह से]

श्री दशार्णभद्र राजर्षि चौपई

वीर जिणेसर वद ने, प्रणमूं गौतम पाय,
एहनो सासन आज ए, सहु जीवा सुख थाय ।१।
विधि सु करता वंदना, धरता मन सुद्ध ध्यान,
लहिये सुख इह लोक ना, परभव मुक्ति प्रधान ।२।
वादंता श्री वीर ने, मन थी छोड्यो मद,
इन्द्र प्रशंस्यो आपथी, भलो दसारणभद ।३।
मदहरसूत शिवधरम मे, पेखी तिण प्रस्ताव,
दसार्णभद्र कीध दृढ, भगवत ऊपरि भाव ।४।
भाति भाति दीठी भली, गुण अवगुण ह्वै ज्ञान,
भली वस्तु सहु को भजे, निरखी तजे निदान ।५।

ढाल (१)—कपूरहुवे अति उजलो रे, ए देशी

सम्बन्ध ए तुम्हे साभलो रे, कारण मूल कहाव,
अधिक दशार्ण आदर्यो रे, भगवंत ऊपरि भाव ।१।
सुगुण नर ए सुणिज्यो अधिकार
साभलिता थासी सही रे, आगें लाभ अपार, सु०।२।
देश सहु मे दीपतो रे, वारू देश वैराट,
सहू को लोक सुखी सदा रे, वरतें निज कुल वाट, ।३।
मोटो एक तिण देश मे रे, गिणजे धनपुर गाम,
धन धाने धीणे करि रे, ठावो निरभय ठाम । स० ।४।

मदहर सुत मणिहारीयो रे, वसे तिहा सुखवास,
सखरो आप सुमारगी रे, त्रिया कुशीला तास । स०।५।
कोइ क तिहा कणवारीयो रे, मनरो तिण सु मेलि,
आवै छानो अवसरे रे, करिवा तिण थी केलि ।स० ।६।
उणही ग्रामे एकदा रे, मोटे चोहटें माहि,
नाटिकीया नाचै नवा रे, आवें लोक उमाहि ।स०।७।
किणही नाटिकीये कीयो रे, नारी रूप नवल्ल,
भाति भाति खेलें भलो रे, अदभुत कला अवल्ल ।स०।८।
तेहवें ते मदहर त्रिया रे, देखण आवी दौड़ि,
नटवी रूप निहाल ने रे, ठिक न रह्यो दिल ठोड़ि ।६।
उण रा साथी आगलें रे, तेह त्रीया कहें ताम,
मुझ घर आवी जो मिलें रे, द्यु तुहने सो दाम ।१०।
तुरत बात मानी तिणें रे, नाटिक परो निवेड़ि,
नाटिकीयो तिण नारिने रे, आयो करिवा केड़ि ।११।
त्रिया रूप नटवो तिको रे, आगण ऊभो आय,
मदहर त्रिय माहे लीयो रे, बहु आदर बोलाय ।स०१२।
पग हाथ प्रमुख पखालिवा रे, निरमल दीधो नीर,
पुरसें भोजन युगति स रे, खाडि घिरत नें खीर ।१३।
जीमण बैठो जेतलै रे, नटुवो वेसे नारि,
तिण वेला कणवारियो रे, बोल्यो घरि-ने बार ।स०१४।
नारि कहे नट नारि नें रे, कर मति चिंता काइ,
तूं छिप वैसि तिला तणे रे, मोटे कोठें माहि ।सु० १५।

ते आघो बैठो तिहां रे, अंधारी दिसि आई।
फू फू फू तिल फूकि ने रे, खूणै बैठो खाय। मु० १६।

दूहा

आसंगायत आवियौ, तेहवें तेह तलार।
पायस भोजन पेखि ने, जिमवा करे जिवार।१।
जीमण वैठो जुगति सु, सखरी खीर सवाद।
बोल्यो ग्रहपति बारणे, साभलियो तिणसाद।२।
हलफलियो ऊठ्यो हिवें, अटकल कोप उपाय।
करें वीनति कणवारीयो, छानों मुझ छिपाय। ३।
तिल घर मे बैसो तुम्हे, पिण ओलै हिज पास।
आघा मत पैसौ उहा, विषधर नो छै वास। ४।
ते छिपायो बैठो तिसें, आयो धणीय उमाह।
आखर वीहे अंगना, निवलो तोही नाह। ५।
भर्यो थाल दीठो भलो, खीर घृत नें खाड।
पूछै पति कहो किम किया, मोसु कपट म मांड।६।

ढाल (२)—कुमरी बोलावैं कुदडो ए देसी

कहे त्रिया वाता केलवी, आठिम नो दिन आजो रे।
शिव पारवती पूजिवा, करी खीर तिण काजो रे क०।१
जैति करी नें जीमिवा, हुं वैठी थी एहो रे।
जितरे हीय आया तुम्हे, मैं कहिवो सत्यमेवो रे।क० २

पति कहै हुं परि गाम थी, आयो भूखो आमो रे।
पहिली जीमल्युं तूं पछे, धाई बैठी धामो रे। क० ३
किम जीमिस त्रिया कहे, सुचि कीधो नहिं स्नानो रे।
करतो भोजन ते कहै, तुम्ह स्नाने अम्ह स्नानो रे। क० ४
तिण अवसर तिल घर तणै, मधि बैठो हुइ मूकौ रे।
नट ते रूपे नारि नें, फाकै तिल दे फूंको रे क०। ५
विम्मासै कणवारियो, सरप कह्यो थो सोयो रे।
किहा इक फूकारा करै, हिव केही गति होयो रे। क० ६
जौ अंधारें झाटसी, करसी कुण कणवारो रे।
इण दिसि वाघ उठी नदी, पड़ियो एह प्रकारो रे। क०७
नर उठी नासौ जिसे, लखियो नटवी लागो रे।
ते पिण उठ नाठी तिहा, भला गया बिहुं भागो रे। क०८
धोखे पड़ियो घर धणी, सोचे केहो सरूपो रे।
नर नारी कुण नीकल्या, अदभुत रूप अनूपो रें। क० ६
प्रिय नै पनें परचावण, प्रीया बोली होठे बुद्धो रे।
मैं पाल्यो थो जीमता, स्नान किया विण सद्धो रे। क०१०
जीम्यो अणन्हायो जरै, सखरी न करी सेवो रे।
शिव पारवती सलकिया दोयु परतिख देवो रे। क०
पहिला वडेरा पूजता, सेवा करता सारो रे।
पेट पूज्या सहु पूजिया, ए थारो आचारो रे। क० १२
कूक्या बाहर का नहीं, हुंपिण रही हरायो रे।
वैसि रहें ज्यु बापड़ो, ढोली ढोल वजायो रे। क० ।१३

दूहा

मल्हहर कहै सुण माननी, हु मूरख मतिहीन।
अणसमझयो उतावलै, कारिज भूंडो कीन। १।

हिवै जो अधिकी नूंहि तो, विधि काईक वताय।
गया देव पाछा गृहे, आवै केण उपाय। २।

त्रिया कहै सुणि नाह तु, जो परदेशे जाय।
खरै न्याय धन खाट नें, ल्यावै तुं हित लाय। ३।

विधि वलि बाकुल करी, वलि पूजीजे धरि प्रेम।
शिव पारवती तो सही, आवै पूठा एम। ४।

केलवी कह्यो कुसीलणी, साच गिणै पति सुद्ध।
देखो भोलो ढिल्ल रो, धवलो तितरो दूध। ५।

ढाल (३) सेवा बाहिरौ कहीयै कौ सेवक ए देशी

मानव युं भमे मिथ्यामति मोह्यौ, जे हित अहित न जाणै।
अणहूंता इ देवा ऊपर, आसत अधिकी आणै। १ मा०

दिन तिणहीज चल्यौ परदेशे, ले आऊं धन लाहो।
माहरा रूस्या देव मनाउ, ए मन मे उमाहौ। मा० २

करतो पंथ दिने कितरेकें, देश दशारण दीठो।
वारू सरस ईख रा वाटक, माहि हुवै गुल मीठो। मा० ३

रोजगार काजै तिहा रहियौ, काम कितो एक कीधो,
खेत धणी तिण हेम खुशी सु, दस गदीयाणा दीधौ, ४ मा०

खाचाताण मिली ए खरची, काम सरै नहिं कोई,
भमतो तिहा थी वलि भोगवतो, सुख दुख लीया सोई ; ५ मा०
इक दिन इक अटवी मे ऊभो, छवि सखरी तरु छाया,
वाडी चढि राय दशारण, उणहिज वडि तलि आया, ६ मा०
पूछयो भूपे कुण परदेशी, इण ठामे क्यु आयो,
तिण अपणा घर देव त्रियानो, सहु विरतंत सुणायो, ७
मदहर सुत हुं छु मणिहारो, धन नें कारण धाउं,
अरथ खाट नें पूजी अरची, माहरा देव मनावु, ८
पूजिस हु शिव नें पारवती, सो दिन सफलो थासी,
माया भावै तितरी मेलो, आखर साथ न आसी, ९
सहसबुद्धी नृप सुणि समझावै, परमारथ सहु पायो ;
सरल चित्त दीसे तु सखरो, पिण बाहर वहकायो, १०
घर मे केई घाल्या घरणी, नाठा ते नर नारि,
शिव पारवती घर थी सिलक्या, कामण दीधी गारी, ११
परहो तुझ काढ्यो परदेशे, कुलटा इतरो कीधो,
समझावी इम राय दशारण, डेरो पुर मे दीधो, १२
सखरे महिले राख्यो सुखियौ, सखरी भगति सजाई,
स्वारथ विण जे करणी सेवा, भला तणीय भलाई, १३
दिल में चिंते राय दशारण, अहो एहनी अधिकाई,
अछता देव तिहा ही ऊपर, साची भगति सदाई, १४
मो सरिखौ नाहिं कोई मूरख, मोहे रहियौ माची,
साचा देव तिथंकर सरिखा, सेवा न करू साची, १५

जयवंता श्री वीर जिणेसर, इण ठामे जो आवै ,
तो काइक अधिकाई कीजे, भावना इम नृप भावै , १६

दूहा

इण अवसर तिहा आविया, जगगुरु वीर जिणेश ।
तरता बीजा ने तारता, देता ध्रम उपदेश । १
परसिद्ध श्री गौतम प्रमुख, गणधर साथ इग्यार ।
साथे साध भला सही, जेहनै चवद हजार । २
चौ विधि देव मिली रच्यो, समवशरण श्रीकार ।
स्वामि बैठा सिंहासणे, बैठी परषद बार । ३
जेण दसारण राय ने, दीध वधाई दोड़ ।
आभरण वगस्या अंगना, माथै राख्यो मौड़ । ४
हिवै घणो हिज हरखियो, भूप दशारणभद्र ।
छोले इल्लोले छिले, साचो जाणि समुद्र । ५
सबला आडंबर सजे, वादु इम व्रधमान ।
किणही वांद्या नहिं कदे, इम धारे अभिमान । ६

ढाल (४) यतिनी देशी

अभिमान इसौ मन आणै, प्रभु आया पुण्य प्रमाणै ।
महिमा करूं सबल मंडाणे, वाह वाह सकोइ वखाणै ।१
तेड्या कोटंबक तास, आखै हिव भूपति आस ।
[illegible] बजावो सारा, नोबत नीसाण नगारा ।।२।।

शुचि कीजे स्नान संपाड़ा, सहु पहिरै नवि नवि साड़ा ।
हीर चीर पाटंवर हेम, पहिरौ सहु भूपण प्रेम ॥३॥
हिव आणि सिणगारो हाथी, साम्हेलौ मोहें तिण साथी ।
गुड़डत कलाहिण गाजै, रोलम्ब कपोले राजे ॥४॥
काजल किलकें तनु काला, सवला परचण्ड सु डाला ।
सिंदूर्‍या सीस सलूकै, जलधर में बीज झवूकै ॥५॥
ऊपर सोहै अंबाड़ी, फूली जाणै फूलवाड़ी ।
ऊंचा परवत अणुहारा, आण्या गज सहस अठारा ॥६॥
घणा मोला ऊचा घोड़ा, हर हीसै होडा होडा ।
तेजी ऊछलै त्राडता, उचास भणी आपड़ता ॥७॥
मुंह पतलै पूठे मोटा, छछोहा ने कानें छोटा ।
सोने री साखत कसीया, राजी हुवै चढता रसिया ॥८॥
सालहोत्र सुलक्षण साख, लेखा हय चौवीस लाख ।
सोल सहस घणै सनमान, राजें साथै राजान ॥९॥
सुखपाल सहस श्रीकार, रथ तौ इकवीस हजार ।
सातसै अन्तेउर सार, सहु सज्ज हुआ सिणगार ॥१०॥
कहा पायक तेत्रीस कोड़ि, कर सेवा वे कर जोड़ि ।
छत्र चामर सोभा छाजै, रवि तेज दसारण राजे ॥११॥
वड़ी रिधि तणै विसतारै, पुर वाहिर हिव पधारै ।
आवै धरता आणंद, जिहा त्रिगड़ै श्री वीर जिणद ॥१२॥

॥ दूहा ॥

अबाड़ी थी उतर्‍या, महिपति अधिकें मान ।
मदहर सुत पिण साथ ले, वंद्या श्री व्रधमान ॥१॥

ढाल—(६) आज निहेजो दीसइ नाहलो—ए देशी

कोई मन मे गरव रखे करो, सुज्ञानी हुं सोई ।
जो करो तोही दसारणभद्र ज्यु, करिज्यो तुम्हे सहु कोई । १को०

सबलो राज दशारण देश नो, तुरत ज तजीयो तेह ।
पाए लागी ने इंद्र प्रशंसीयो, अधिको मुनिवर एह । २

उत्तराध्ययन अध्ययन अठारमे, सूत्र टीका सुविचार ।
रिषमंडल वलि प्रकरण थी, रच्यो ए विस्तर अधिकार । ३

मिथ्यामत जिम साभलता टलै, साचो सरस संबंध ।
समकित कारण सुबुधि साभलो, बोल्यो सगवट बंध । ४

संवत सतरै वरस सतावनै, मेडतै नगर मझार ।
चौमासे गणधर जिणचंद जी, सुजस कहै ससार । ५

भट्टारकीया खरतर गच्छ भला, शाखा जिनभद्रसूरि ।
वाचक विजयहरष वखतावरू, परसिध पुण्य पडूर । ६

तेहनै शिष्ये ए मुनिवर तव्यो, श्री पाठक ध्रमसीह ।
श्री जिनधरम तिको श्रीसंघ नै, द्यौ सुख दोलति लीह । ७

इति श्रीदशारणभद्र राजर्षि चतुःपदी समाप्ताः

संवत् १८६१ मिती आसाढ कृष्ण १ रवि

महिपुर लि० उद्योतविजै—

—:०:—

श्रीवीरभक्तामरः

राज्यर्द्धि वृद्धिभयनाद् भवने पितृभ्यां,
श्री 'वर्धमान' इति नाम कृतं कृतिभ्याम् ।
यस्याद्य शासनमिदं वरिवर्त्ति भूमा—
वालम्बनं भवजले पतता जनानाम् ॥ १ ॥
श्री 'आर्यभिः' प्रणमतिस्म भवे तृतीये
गर्भस्थितं तु मघवाऽस्तुत सप्तविंशे ।
यं श्रेणिकादिकनृपा अपि तुष्टुवुश्च
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥
(युग्मम्)

अथ तृतीयकाव्ये श्रीभगवतो महावीरस्वामिनो बलाधिक्यमाह—

वीर ! त्वया विदधताऽऽमलिकीं सुलीला,
वालाकृतिश्छलकृदारुरुहे सुरो यः ।
तालायमानवपुपं त्वदृते तमुच्च-
मन्यः क इच्छति जनः सहसाग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

हिव अति हरख्यो मदहरो, देख निरंजन देव ।
मिथ्यामति मेटी करे, श्री जिनवर नी सेव ॥२॥
इन्द्र हिवै आवै इहा, सवल आडंवर साज ।
नृप प्रतिबोधण जिन नमण, एक पथ दोइ काज ॥३॥

ढाल (५) इण अवसर कोइ मागध आयो पुरन्दर पास, ए देशी

सोधरमै देवलोके शक्र महासुर राज,
दीठौ राय दशारण वदण नै सजै साज ।
करणी एह करै ते धन जिन वदन काज,
पिण अहंकार उतारनै हु प्रतिवोधू आज ॥१॥

सुरपति हुकम इरापति देव धरी ऊछाह,
चौसठि सहस्स वड़ा गजराज विकुर्वे चाह,
इक इक गज रै मुख सुखकारी पाचसै वार,
मुख मुख आठ दंतूशल रच्या श्रीकार ॥२॥

इक इक दंते पंते वारू अठ अठ वावि,
वावी वावी आठ आठ कमल सुगंध धर भाव
कमले कमले लख लख पाखडिया परसिध,
पाखडीए पाखडीए नाटक वत्रीस वद्ध ॥३॥

वलि प्रति कमले मध्य प्रासाद वतस विमान,
राजै तिहां अग्रमहिषी आठे शक्र राजान,
एह अचभै रूप अनूप वण्या असमान
देख दसारण राजा आप तज्यो अभिमान ॥४॥

जग में धन धन जिन शासन धन वीर जिणंद,
आवै जेहनै वंदण काजै एहवा इंद,
मैं अग्यान कीयौ अभिमान महा मतिमंद,
मुझ रिद्धि अंतर जेहवौ कूप समंद ॥५॥

अहो अहो इन्द्र आगे कीया केई धरम अनूप,
लाधी वैक्रिय लबधि रचै मन मान्या रूप,
धरम करू हिव हु पिण ते निश्चै मन धारि,
वीर सु आवि करी नृप वीनति तु प्रभु तारि ।६।

प्रतिबूधौ मदहर सुत पिण नृप संगति पाइ,
मलयाचल संगे तरु वीजा पिण महकाय,
कीधो लोच तिहा हिज सोची वात न काय,
देई विहुं ने दीक्षा शिष्य किया जिनराय ।७।

तुरित त्यागी वड वैरागी मोह न माय,
जे करणी तें कीधी ते मैं कीनि न जाय,
तें अहंकार पोतारो साच कीयो सुखदाय,
पोतें इन्द्र प्रशंसा करि करि लागो पाय ।८।

सहु रिधि सबर शक्र पहूंतो सरग मझार,
वीर जिणेसर तिहा थीं कीध अनेथ विहार,
राय दशारण मदहर साधु भला ध्रमसील,
सहु सुख पाया पायो केवल मोख सलील ।६।

ढाल—(६) आज निहेजो दीसइ नाहलो—ए देशी

कोई मन मे गरव रखे करो, सुज्ञानी हवै सोई।
जो करो तोही दसारणभद्र ज्युं, करिज्यो तुम्हे सहु कोई। १को०

सवलो राज दशारण देश नो, तुरत ज तजीयो तेह।
पाए लागी ने इंद्र प्रशंसीयो, अधिको मुनिवर एह। २

उत्तराध्ययन अध्ययन अठारमे, सूत्र टीका सुविचार।
रिषमडल वलि प्रकरण थी, रच्यो ए विस्तर अधिकार। ३

मिथ्यामत जिम साभलता टलै, साचो सरस संवंध।
समकित कारण सुबुधि साभलो, त्रोल्यो सगवट वंध। ४

संवत सतरै वरस सतावनै, मेडतै नगर मझार।
चौमासे गणधर जिणचद जी, सुजस कहै ससार। ५

भट्टारकीया खरतर गच्छ भला, शाखा जिनभद्रसूरि।
वाचक विजयहरप वखतावरू, परसिध पुण्य पडूर। ६

तेहनै शिष्ये ए मुनिवर तव्यो, श्री पाठक ध्रमसीह।
श्री जिनधरम तिकौ श्रीसघ नै, द्यौ सुख दोलति लीह। ७

इति श्रीदशारणभद्र राजर्पि चतुःपदी समाप्ताः
संवत् १८६१ मिती आसाढ कृष्ण १ रवि
महिपुर लि० उद्योतविजै—

—:०:—

श्रीवीरभक्तामरः

राज्यर्द्धि वृद्धिभवनाद् भवने पितृभ्या,
श्री 'वर्धमान' इति नाम कृतं कृतिभ्याम्।
यस्याद्य शासनमिदं वरिवर्त्ति भूमा—
वालम्बनं भवजले पतता जनानाम् ॥ १ ॥

श्री 'आर्षभिः' प्रणमतिस्म भवे तृतीये
गर्भस्थितं तु मघवाऽस्तुत सप्तविंशे।
यं श्रेणिकादिकनृपा अपि तुष्टुवुश्च
स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥
(युग्मम्)

अथ तृतीयकाव्ये श्रीभगवतो महावीरस्वामिनो बलाधिक्यमाह—

वीर! त्वया विदधताऽऽमलिकीं सुलीला,
वालाकृतिश्छलकृदारुरुहे सुरो यः।
तालायमानवपुषं त्वद्दते तमुच्च-
मन्यः क इच्छति जनः सहसाग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थकाव्येन श्रीभगवतो विद्याधिक्यमाह—

शक्रेण पृष्टमखिलं त्वमुवक्थ[1] यत् तद्
जैनेन्द्रसंज्ञकमिहाजनि शब्दशास्त्रम् ।
तस्यापि पारमुपयाति न कोऽपि बुध्या,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

उपदेशाधिक्यमाह—

धर्मस्य वृद्धिकरणाय जिन ! त्वदीया,
प्रादुर्भवत्यमलसद्गुणदायिनी गौः ।
पीयूषपोषणपरा वरकामधेनु-
र्नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ? ॥५॥

कर्मक्षये भगवतो नाम्नो माहात्म्यमाह—

छिद्येत कर्मनिचयो भविना यदाशु
त्वन्नामधाम किल कारणमीश ! तत्र ।
कण्ठे पिकस्य कफजालमुपैति नाशं
तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

भगवता मिथ्यात्वं हतं तदन्यदेवेषु स्थितमित्याह—

देवार्यदेव ! भवता कुमतं हतं तत्—
मिथ्यात्ववस्तु सततं शतशः सुरेषु ।
संतिष्ठतेऽतिमलिनं गिरिगह्वरेषु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

---

[1] वक्थ इति पाठान्तरम् ।

भगवतो नाम्न आधिक्यमाह—

त्वन्नाम 'वीर' इति देव सुरे परस्मिन्
केनापि यद्यपि धृत न तथापि शोभाम् ।
प्राप्नोत्यमुत्र मलिने किमृजीपपृष्ठे,
मुक्ताफलद्यु तिमुपैति ननूदविन्दुः ? ॥ ८ ॥

भगवतो ज्ञानोत्पत्तिविशेषमाह—

ज्ञाने जिनेन्द्र ! तव केवल नाम्नि जाते
लोकेषु कोमलमनासि भृशं जहर्षुः ।
प्रद्योतने समुदिते हि भवन्ति किं नो,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥६॥

सेवके उपकारविशेषमाह—

वादाय देव ! समियाय य इन्द्रभूति—
स्तस्मै प्रधानपदवीं प्रददे स्वकीयाम् ।
धन्यः स एव भुवि तस्य यशोऽपि लोके
भूत्याऽऽश्रित य इह नाऽऽत्मसमं करोति ॥१०॥

भगवतो वचनमाधुर्यमाह—

गोक्षीर सत्सितसिताधिकमृ (मि) ष्टमिष्ट-
माकर्ण्य ते वच इहेप्सति को[1] परस्य ।
पीयूषकं शशिमयूखविभ विहाय
क्षारं जल जलनिधे रसितु क इच्छेत् ?॥११॥

---

१ 'नो' इत्यन्य पाठ

भगवतोरूपाधिक्यमाह—

अङ्गुष्ठमेकमणुभिर्मणिजैः सुरेन्द्रा
निर्माय चेत्तव पदस्य पुरो धरेयुः।
पूष्णोऽग्र उल्मुकमिवेश स दृश्यते वै
यत्तो समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

भगवद्दर्शने मिथ्यात्वं नोद्घटतीत्याह—

उज्जावटीति तमसि प्रचुरप्रचारं
मिथ्यात्विना मतमहो न तु दर्शने ते।
काकारिचक्षुरिव वा न हि चित्रमत्र
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

कषायभङ्गे भगवतो बलवत्त्वमाह—

वन्या द्विपा इव सदैव कषायवर्गा
भञ्जन्ति नूतनतरूनिव सर्वजन्तून्।
सिंहातिरेकतरस हि विना भवन्तं
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्? ॥१४॥

उपसर्गसहने भगवतो दृढता दर्शयन्नाह—

द्विट् 'सङ्गमे' न महतामुपसर्गकाणा
या विंशतिस्तु समृजे जिन! नक्तमेकम्।
चित्तं चचाल न तया तव झञ्झया तु
किं मन्दराद्रि शिखरं चलितं कदाचित्? ॥१५॥

भगवानपूर्वदीपोऽस्तीत्याह—

निःस्नेह ! निर्दश ! निरञ्जन ! निःस्वभाव !
निष्कृष्णवर्त्म ! निरमत्र ! निरङ्कुशेश !
नित्यद्य ते ! गतसमीरसमीरणात्र
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ।१६।

अथ सूर्यादप्यतिशयवान् भगवानित्याह—

विस्तारको निजगवा तमसः प्रहर्त्ता,
मार्गस्य दर्शक इहासि च सूर्य एव ।
स्थाने च दुर्दिनहतेः करणाद् विजाने
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ।१७।

अथ चन्द्रादपि त्वद्यशोऽधिकमित्याह—

प्रह्लादकृन् कुवलयस्य कलानिधानं
पूर्णश्रियं च विदधञ्च यशस्त्वदीयम
वर्वर्त्ति लोकवहुकोक सुखकरत्वाद्-
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥१८॥

भगवता (यत्) सांवत्सरिकं दानं दत्तं तदाह—

यद् देहिनां जिनवराब्दिकभूरिदाने—
दौःस्थ्य हृत हि भवता किमु तत्र चित्रम् ?
दुर्भिक्षकष्टदलनान् क्रियते सदोप-
कार्यं कियज्जलधरै र्जलभारनम्रैः ? ॥१९॥

भगवच्चरणदर्शने फलाधिक्यमाह—

याद्दक् सुखं भवति ते चरणेऽत्र दृष्टे
तादृक् परमुं वदनेऽपि न देह भाजाम् ।
प्राप्ते यथा सुरमणौ भवति प्रमोदो
नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

भक्तो भगवत्सेवा प्रार्थयन्नाह—

एवं प्रसीद जिन ! येन सदा भवेऽत्र
त्वच्छासनं लगति मे सुमनोहरं च ।
त्वत्सेवको भवति यः स जनो मदीयं
कश्चन मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

जिनस्य भामण्डलम्—

भामण्डलं जिन ! चतुर्मुखदिक्चतुष्के
तुल्यं चकासदवलोक्य सभा व्यमृक्षन् ।
सूर्यं समा अपि दिशो जनयन्ति किं वा
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥

लोकैर्यः शिवः शिव इति ध्यायते स भगवानेवेत्याह—

शम्भुर्गिरीश इह दिग्वसनः स्वयम्भू-
र्मृत्युञ्जयस्त्वमसि नाथ महादिदेव : ।
तेनाम्बिका निजकलत्रमकारि तन् त्वन्—
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥ २३ ॥

सर्वशास्त्राध्ययनादपि सम्यक्त्वमधिकमिति दर्शयन्नाह—

जानन्ति यद्यपि चतुर्दश चारु विद्या
देशोनपूर्वदशकं च पठन्ति सार्थम्।
सम्यक्त्वमीश न धृतं तव नैव तेषां
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥

पुरुषोत्तमोऽयं वीर एवेत्याह—

नृणा गणाः गुण चणाः पतयोऽपि तेषां
ये ये सुराः सुरवराः सुखदास्तकेऽपि।
कृत्वाऽञ्जलिं जिन! चग्क्रिति ते स्तुतिं तद्
व्यक्त त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥

संसारसागरशोपकाय प्रणाम :—

रोगा भखा वहुमहामकराः कषाया—
श्चिन्तैव यत्र वडवाग्निरसातमम्भः।
वार्धिर्भवः सर इव त्वयका कृतस्तन्
तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥२६॥

भगवद्दर्शनालाभे विडम्बना—

यद् यस्य तस्य च जनस्य हि पारवश्य—
मावश्यकं जिन! मया वरिवस्ययाऽऽप्तम्।
तन् तर्कयामि वहुमोहतया मया त्वं
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

स्तनन्धयस्य भगवतो रूपस्वरूपमाह—

रम्येन्द्रनीलरुचि देवभृतो जनन्याः
पार्श्वं श्रितस्य धयतश्च पयोधर ते ।
रूपं रराज नवकाञ्चनरुक् तमोन्नं
विम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥२८॥

प्रभोर्जन्म—

इक्ष्वाकुनामनि कुले विमले विशाले
सद्रत्नराजिनि विराजत उद्भवस्ते ।
दोषापहारकरणः प्रकटप्रकाश—
स्तुङ्गोदयाद्रि शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

नाथस्य जन्माभिषेकः—

स्नानोदकैर्जिन (र्जनि) महे सुरराजिमुक्तै-
र्गात्रे पतद्भिरपि नूनमनेजमानम् ।
दृष्ट्वा भवन्तममराः प्रशशंसुरीश-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

वप्रत्रयविचारः—

ये त्रिप्रदक्षिणतया प्रभजन्ति वीरं
ते स्युर्नरा अहमिवाद्भुतकान्तिभाजः ।
वप्रत्रयं वददिति प्रविभाति तेऽत्र
प्रख्यापयन् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

भगवत्संस्मरणे सुरसान्निध्यमाह—

कान्तारवर्त्मनि नराः पतिताः कदाचिद्
दैवात् क्षुधा च तृपया परिपीडिताङ्गाः।
ये त्वा स्मरन्ति च गृहाणि सरासि भूरि-
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥

भगवच्चित्तस्थिरतामाह—

संनिश्चला जिन! यथा तव चित्तवृत्तिः
कस्यापि नैवमपरस्य तपस्विनोऽपि।
यादृक् सदा जिनपते! स्थिरता ध्रुवस्य
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ?॥३३॥

अथ भगवद्दर्शने जन्मवैरिणामपि विरोधो न भवतीत्याह—

ओत्वाखवोऽहिगरुडाः पुनरेणसिंहा-
अन्येऽङ्गिनोऽपि च मिथो जनिवैरबन्धाः।
तिष्ठन्ति ते समवसृत्यविरोधिनं त्वा
दृष्ट्वा भय भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३४।

भगवच्चरणशरणगतं न कोऽपि पराभवतीत्याह—

यस्ते प्रणश्य चमरोऽहितले प्रविष्ट-
स्त हन्तुमीश न शशाक भिदुश्च शक्रः।
तद युक्तमेव विबुधाः प्रवदन्ति कोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचल सश्रितं ते ॥३५॥

भगवन्नामतोऽति (पि) भयं न भवतीत्याह—

पूर्वं त्वया सदुपकारपरेण तेजो-
लेश्या हृता जिन विधाय सुशीतलेश्याम् ।
अद्यापि युक्तमिदमीश ! तथा भयाग्निं
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥३६॥

भगवन्नामतः सर्पभयमपि विलीयत इत्याह—

ऊर्ध्वस्य ते विलमुखे वचनं निशम्य
यच्चण्डकौशिकफणी शमतामवाप ।
तन् साम्प्रतं तमपि नो स्पृशतीह नाग—
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥

भगवद्विहारे ईतयो न भवन्तीत्याह—

तुर्यारके विचरसिस्म हि यत्र देशे
तत्र त्वदागमत ईतिकुलं ननाश ।
अद्यापि तद्भयमहर्मणिधामरूपान्
त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥

भगवत्पादसेवाफलम्—

निर्विग्रहाः सुगतयः शुभमानसाशाः
सच्छुक्लपक्षविभवाश्चरणेषु रक्ताः ।
रम्याणि मौक्तिकफलानि च साधुहंसा
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥

भगवद्वचनश्रद्धानान् कामितप्राप्तिर्भवतीत्याह—

संसारकाननपरिभ्रमणश्रमेण,
क्लान्ताः कदापि दधते वचन कृत ते ।
ते नाम कामितपदे जिन देह भाज—
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥

भगवद्रूपं दृष्ट्वा सुरूपा अपि स्वरूपमदं मुञ्चन्तीत्याह—

सर्वेन्द्रियैः पटुतरं चतुरस्रशोभ
त्वां सत्प्रशस्यमिह दृश्यतरं प्रदृश्य
तेऽपि त्यजन्ति निजरूपमदं विभो ! ये
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥

निर्वन्धनं जिन ध्यायन्तो निर्वन्धना भवन्तीत्याह—

छित्वा दृढानि जिन ! कर्मनिबन्धनानि
सिद्धस्त्वमापिथ च सिद्धपद प्रसिद्धम् ।
एवं तवानुकरणं दधते तकेऽपि
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥ ४२ ॥

भगवत्स्तोत्राध्ययनान् सर्वोपद्रवनाशो भवतीत्याह—

न व्याधिराधिरतुलोऽपि न मारिरारं,
नो विड्वरोऽ शुभतरो न दरो ज्वरोऽपि ।
व्यालोऽनलोऽपि न हि तस्य करोति कष्टं
यस्तावक स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥

भगवत्स्तवोमौक्तिकहारः कण्ठे धार्य इत्याह—

त्वत्स्तोत्रमौक्तिकलता सुगुणा सुवर्णा
त्वन्नामधामसहिता रहिता च दोषैः।
कण्ठे य ईश! कुरुते धृत 'धर्मवृद्धि'—
स्त 'मानतुङ्ग'मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

अथ प्रशस्तिः—

रसगुणमुनिभूमेऽब्देऽत्र भक्तामरस्थैः
चरमचरमपादैः पूरयन्सत्समस्याः।
सुगुरु 'विजयहर्ष' वाचकास्तद्विनेय—
श्चरमजिननुतिं ज्ञो 'धर्मसिंहो' व्यधत्त ॥ ४५ ॥

—:o:—

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

सरस्वत्यष्टकम्

प्राग्वाग्देवि जगज्जनोपकृतये, वर्णान् द्विपञ्चाशतम्,
या वाप्सी निजभक्तदारकमुखे, केदारके बीजवन् ।
तेभ्यो ग्रन्थ-गुलुञ्छकाः शुभफला, भूता प्रभूतास्तकान् ,
सैवाद्याऽपि परःशतान् गणयसे स्त्रक्स्फोरणाछद्मतः ॥१॥

यैर्ध्यातेति प्रात प्रातर्म्मातुर्म्मात र्वाग्मात--
र्विद्याजातः सश्रीसातस्तेपा जातः प्रख्यातः ।
एता भ्रातर्भक्त्युध्रातः स्नेहस्नातः स्वाख्यातः
सेवस्वातश्चितृष्णातः शास्त्रेषु स्यान्निष्णातः ॥२॥

शिक्षाछन्दश्च कल्पः सुकलितगणितं, शब्दशास्त्रं निरुक्ति—
र्वेदाश्चत्वार इष्टा भुवि विततमते धर्मशास्त्रं पुराणं ।
मीमांसाऽऽन्वीक्षिकीति त्वयि निचितभृतास्ताःषडष्टाऽपिविद्या-
स्तत्त्वंविद्यानिपद्या किमु किमसिधिया सत्रशाला विशाला ॥३॥

सुवृत्तरूपःसकलः सुवर्णः प्रीणन् समाशा अमृतप्रसूर्गीः
तमःप्रहर्त्ता च शुभेषु तारके हस्ते विधुःकिं किमु पुस्तकस्ते ॥४॥

पदार्थसार्थदुर्घटार्थचित्समर्थनक्षमा,
सुयुक्तिमौक्तिकैकशुक्तिरत्नमूर्त्तिमत्प्रभा ।
प्रशस्तहस्तपुस्तका समस्त शास्त्रपारदा,
सता सका कलिदका सदा ददातु सारदा ॥५॥

मंद्रैं मध्यैश्च तारैः क्रमततिभिरुरः कण्ठमूर्द्धप्रचारैः,
सप्तस्वर्य्या प्रयुक्तैः सरगमपधनेत्याख्यया‌ऽन्योन्यमुक्तैः ।
क्कन्धेन्यस्य प्रवालं कललितकलं कच्छपीं वादयंती,
रम्यास्या सुप्रसन्ना वितरतु वितते भारती[1] भारती[2] मे ॥६॥

भातो भातः श्रवणयुगले कुंडले मण्डले वै,
चान्द्रार्कीये स्वतः उत ततो निःसृतौ पुष्पदन्तौ ।
श्रावं श्रावं वचनरचना मेदुरीभूय चास्याः,
संसेवेते चरणकमलं राजहंसाभिधातः ॥ ७ ॥

अमित नमितकृष्टे तद्धिया सन्निकृष्टे,
श्रुतसुरि शुभदृष्टे सद्रसाना सुवृष्टे ।
जगदुपकृतिसृष्टे सज्जनानामभीष्टे,
तव सफलपरीष्टे को गुणान्वक्तुमीष्टे ॥ ८ ॥

सतेत्थमष्टकेन नष्टकष्टकेन चष्टके
सतां गुणर्द्धि गर्द्धनः सदैव धर्म्मवर्द्धनः ।
सखे सुबुद्धिवृद्धिसिद्धिरीप्स्यते यदा सती,
नमस्यतामुण्स्य सावधश्य मों सरस्वती ॥ ९ ॥

—o—

इतिश्रीसरस्वत्यष्टकं विद्यार्थपूर्त्तौ त्रिविष्टपविष्टरं

:—❀—:

१ सरस्वती । २ भा च रतिश्चेति भारतो कान्ति सुख च ददातुइत्यर्थ ।

श्रीजिनकुशलसूरीणामष्टकम्

—:०:—

यो नप्तृनिव सेवकानपि सदा वर्भर्त्ति कुर्वन् मुदं,
विच्छिदन् वियदं ददच्छुभपदं संपादयन् संपदं ।
मन्यन्ते हि यकं पितामहतया विश्वेऽत्र विश्वे जनाः,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तु विद्याचणः ।१।

येऽरण्येषु पिपासवः प्रपतिता दध्युर्गुरुं मानसे,
नानागत्यवितत्यमेघमतुलं वः पाययामास यः ।
योऽद्याप्येष उदन्यतो वहुजनान् कं धापयेद्ध्यानतः,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तु विद्याचणः ।२।

लोलोल्लोलति भिंगला कुलतमे सिन्धावगाधे भृशं,
मज्जन्त प्रविलोक्य सेवकगण सत्रा वहित्रेण वै ।
यस्तूणति मतीतरत्सकुशलदं दोर्भ्यां गृहीत्वा दृढं,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तु विद्याचणः ।३।

वारीशोत्तारणे रणे प्रहरणे नागे नगे पन्नगे,
झंझाया विकटे झषे झषकुटे घट्टेऽरघट्टे वटे ।
ध्यानाद्यस्य मनागपीह लभते नो ईतिभीती नरः,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तु विद्याचणः ।४।

त्व चेदेनमनेनस सकृदपि स्नेहादसेविष्यथाः,
रामे वेत्य रमा मनोरमतमा त्वा पर्युपासिष्यत ।

इत्यादिश्य वयस्यमिभ्यमनुजा यस्याङ्घ्रिमर्च्चन्त्यहो ।
सोऽय वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तु विद्याचणः ।५।

धन्या 'जैतसिरी' प्रसू जनयिता मन्त्री च 'जेलागरो'
यस्मै जन्म ददौ ददौ यतिगुणान् श्रीजैनचन्द्रो गुरुः ।
व्युत्पन्नाय तु सूरिमंत्रसहित सौव पद दत्तवान्,
सोऽय वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तु विद्याचणः ॥६॥

श्रेयः श्रेयस ओजसा शुभयशा यःस्वर्गमध्यासितो,
नेदीयानिव हर्षयत्यनुदिनं भक्तान् दवीयानपि ।
यो लोके कमलाकरान् रविरिव प्रौढ प्रतापोद्यतः,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तु विद्याचणः ॥७॥

दद्यादद्य धनीयते वहुधनं स्त्रीकाम्यते सुस्त्रियंः,
यो भक्ताय जिगीषते च विजय सुत्ये सुतान् दासते ।
यत्कीर्त्तिः प्रसरीसरीति सततं कौ कौमुदीव स्फुटं,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चकर्तु विद्याचणः ॥८॥

सत्काव्याष्टकमष्टधीगुणयुतो दः पूतरूपो पटुः,
सच्चेता उपवैणव ह्यहरहर्यः सप्तकृत्वः पठेत् ।
तस्मै श्री विजयादिहर्षगुरुता सद्धर्मलीलोदयो,
दादाति प्रसूरेप जैनकुशलः साक्षादिव स्वद्रुमः ॥९॥

इति श्रीजिनकुशलसूरीणामष्टकम्

—०—

चतुर्विंशतिजिनस्तवनम्

—:❀:—

(इन्द्रवज्राछन्दः)

स्वस्तिश्रिये श्री ऋषभादि देवं, निर्दंभदेवं जिनदेवदेवं,
चारुप्रकाशं किल मारुदेवं, स्तौमीह सम्पत्तिलतैकदेव ।।१।।

(तोटकछन्दः)

अमरासुर पुस्पशुपक्षिकृत-मदवारनिवारक ईश जितः,
भवता मदनोऽपि मदौघयुतः प्रवदन्तिबुधा अजितं हि ततः ।।२।।

(वशस्थ)

लसद्यशः पूरितसद्दिशं भवंत एतमर्च्चन्तु जनाश्च शंभवं ।
जिनं सदिक्ष्वाकु कुलाब्जसंभवं, स्फुरत्तपोधाम वितीर्णसभव ।३।

(द्रुतविलम्बित)

जिनमहं प्रणमाम्यभिनन्दनं,
सुभगसंवरभूपतिनन्दनम् ।
सकलसद्गुणपादपनन्दनं,
जिनवरं जनलोचननन्दनम् ।।४।।

(तोटकं)

त्रिजगत्पतिरेषजिनः सुमति—
वितनोतु मतिं किल मे सुमतिः ।
शुभबोधपयोधिरनेकनुतिः,
क्रमणद्युतिरंजितदेवपतिः ।।५।।

(इन्द्रवज्रा)

पद्मप्रभोऽर्हन् वरपद्मलोचनः,
पद्माननश्चाश्रितपद्मलाञ्छनः ।
सच्चित्तपद्मामलपद्मलाञ्छनः,
पद्माकरः स्याच्छिवपद्मलाञ्छनः ॥६॥

(भुजङ्गप्रयात)

भजन्ता प्रभुं चित्प्रदं श्रीसुपार्श्वं,
भवन्तो नरा नूनमानन्दपार्श्वं ।
जिनं तप्तहेमस्फुरत्कान्तिपार्श्वं,
सता सातदं दम्भवल्ल्यग्रपार्श्वं ॥७॥

(वसन्ततिलका)

चन्द्रप्रभं जिन वदन्ति यके मनुष्या—
त्वा सेवकेन्दुसदृशीकरणान्न दक्षाः
भो चन्द्रसेवितपदाब्ज परंमयोक्तः,
स्वामिन्वत स्तवभकार-उकारयुक्तः ॥८॥

(तोटकं)

विबुधा प्रणुवन्ति जिनं सुविधिं,
विविधप्रकटीकृतधर्मविधि ।
शिवमार्गविधानत एव विधिं,
गुणनीरनिधिं शिवदायिविधिं ॥९॥

(प्रमाणिका)

विभु भजस्व शीतलं, सदक्षशास्त्रशीतलं ?
दराम्भिवारिशीतलं, जिनं विभिन्नशीतलं ॥१०॥

(विद्युन्माला)

अर्हन्तं मूर्ध्ना श्रेयांस, वन्देऽहं देवश्रेयांसं ।
श्रेयः सत्कासारे हंस, हिंसं नोध्वान्तौघे हंसं ॥११॥

(मधुमाधवी)

त्वां प्राप्य सर्वभुवनत्रयवासिपूज्य—
मन्यात्क इच्छति सुराञ्जिन वासुपूज्य ।
किं कोऽपि कल्पतरुमीहितदं विहाय,
ह्युच्छूलपर्णिन इहेसति सत्सुखाय ? ॥१२॥

(द्रुतविलम्बित)

विमलनाथमशेषगुणाकरं, विमलकीर्तिधरं च भजेवरं ।
विमलचन्द्रमुखं जिननायकं, विजयहर्षयशःसुखदायकं ॥१३॥

(स्रग्धरा)

कीदृक्संसार एषः प्रमितिकृतितया कीदृशः सिद्धिजीवः,
कीदृक्षो राजशब्दः सुरनरनिचये जिष्णुनामाऽपि कीदृक्
बाह्यार्थो वर्णबंधा द्विधिहरिगिरिशप्रस्तुतश्चारुधर्मा
धर्माद्यः सर्वदर्शी स हि विशदगुणःपातु चातुर्दशीवः ॥१४॥

(मन्दाक्रान्ता)

यः सर्वेषामभित सुखदो यं सदेच्छन्ति सर्वे,
तुल्यं येनान्यदिह न हि च प्राणिनां यः पितेव ।

तस्यापि स्वाम्यसि जिनपते धर्मनाथाभिधान,—
न्मन्ये तेनाहमिति हि भवच्छदृशो नास्ति कोऽपि ॥१५॥

(शार्दूलविक्रीडितं)

शान्तिः शान्तिमनाः स नाहितकरः सेवन्ति शान्तिं बुधा—
स्तायन्ते मम शान्तिना सुमतयस्तस्मै नमः शान्तये ।
शान्तेः कान्तिधरो परो न हि सुरः शान्तेरहं सेवकः,
शान्तौ तिष्ठति मन्मनश्चसततं शान्ते ! सुसातं कुरु ॥१६॥

(स्रग्विणी)

चिन्मयं मद्रदं कुंथुतीर्थङ्कर विश्वविश्वेशमीडे मुदा शङ्कर ।
दुष्टकर्मौघघूकांवकाहस्करं, पुण्यकृत्पुण्यसद्रत्न-रत्नाकरं ॥१७॥

(वसन्ततिलका)

नाम्नीह यद्यरजिनस्य सदा श्रुते च,
नश्यन्ति लग्वरिजना हि किमत्र चित्रम् ।
आकर्णिते वत निनादभरे मृगारे—
स्तिष्ठन्ति किं मृगगणा वलिनोऽपि बाढ़ ॥१८

(मालिनी)

द्विजपतिदलभालं मल्लिनाथं सुभालं
प्रहतविषयजालं छिन्नदुःखाब्जनालं ।
अमितसुगुणशालं प्राप्तनिर्वाणशालं,
भविक-पिक-रसालं स्तौमि नित्यं त्रिकालं ॥१९॥

(सिंहोद्धता)

राकेन्दुकान्तिमुनिसुव्रत वै त्वदास्यं,
दृष्ट्वा हि दृग्विकचपद्‌ममनोहरं च।
संभावयन्ति मनसीति शुभा मनुष्याः,
सद्राजतेऽब्जयुगलं विधुमध्यभागे ॥ २० ॥

(द्रुतविलम्बितं)

नमत भव्यजनाः सततं नमिं, नमित निर्जरमद्‌भुतकामदं।
मदनपञ्जरभञ्जनद्विद्विजं, द्विजपतिप्रवराननमीश्वरं ॥ २१ ॥

(मन्दाक्रान्ता)

यस्त्वं नित्यं किल रमयसे मुक्तिसीमन्तिनीञ्च,
तस्याः सङ्गं क्षणमपि समुन्मुञ्चसि त्वं न नेमे।
सत्त्व सर्वैं सुरनृ भुजगैः कथ्यसे योगिनाथ,
स्तेपा वाक्यं वत जिन कथं त्वां च संजाघटीति ॥२२॥

(कामक्रीडा)

वामापुत्रं तेजोमित्रं दुःखौघागे मातङ्गं, -
सच्छ्रीकोप चेतस्तोप शोभावल्ली सारङ्गम्।
दत्तानन्दं विद्यावृन्दं प्राण्याशाया कल्पागं,
नित्योत्साह वन्दे चाहं श्रीपार्श्वेशं पुण्यागम् ॥२३॥

(पञ्चचामर)

प्रवादिसर्वगर्वपर्वप्रभङ्ग भूरिरुट्,
सुपर्वनाथ हैतिमीतिभीतिवार-चारकम्।

जिनेश-वर्द्धमान वर्द्धमान शासनं वरं,
नमामि मामकीनमानसाम्बुजन्मषट्पदम् ॥२४॥

(कलशः)

इत्थं संवदुरोजदृष्टिनगभूसङ्ख्ये च दीपालिका—
घस्रे गुम्फित एष सातभरदस्तीर्थङ्कराणां स्तवः ।
सद्विद्याविजयादिहर्षकमलाकल्याण शोभाभरं,
तन्याद्वो बहुधर्मवर्द्धनवता सन्मानसाना सदा ॥२५॥

इति चतुर्विंशतिजिनस्तवनं पृथक्काव्यजातिमयम् ।

अथ व्याकरण सञ्ज्ञा शब्द रचनामयं

श्रीमहावीर जिनबृहत् स्तवनम्

यस्तीर्थराजस्त्रिशलात्मजातः सिद्धार्थभूपो भुवि यस्य तातः,
वितन्यते व्याकरणस्य शब्दैस्तत्कीर्तिरेवात्र यथामुदब्दैः ॥१॥

यो लेख शालाऽध्ययनाय वीरो,
विनीयमानः प्रयतः पितृभ्याम् ।
इन्द्रेण पृष्टं सममुत्ततार,
सर्वैस्ततः शाब्दिक एष ऊचे ॥ २ ॥

ततः परं यः परिणीयपत्नीं,
संभुज्य सर्वानपि कामभोगान् ।

गृहात्परिव्रज्य चरित्रलोल्या—,
न्मन्ये विसस्मार स शव्दविद्याम् ॥ ३ ॥

स तत्र संज्ञाविधिना समानैः,
सहाऽपि सन्ध्यक्षरता विधित्सन् ।
ये नामिनस्तेषु गुणञ्च वृद्धि—
मवाधपूर्वं युगपच्चिकीर्षन् ॥ ४ ॥

धित्सन् हसत्वं न हि निःस्वरेषु,
तथान्त्ययोर्वै रसयो र्विसर्गम् ।
नाम्नः शत त्र्युत्तरमन्त्रयुञ्जन्,
विभक्तिभिस्तस्य च नाशमाशु ॥ ५ ॥

लिङ्गत्रयोच्छेदमपि प्रकुर्वन्,
न युष्मदस्मत्स्वपरापरत्वं ।
अत्रोपसर्गा व्यय कारकं च,
स्त्रीप्रत्ययं तत्र मनागपीच्छन् ॥ ६ ॥

वर्णस्य लोपं न तथा विकारं,
न वर्णनाशं च वदन्निरुक्तं ।
कदापि नो विग्रहकारकेषु,
प्रकल्पयन्नेव विकल्पभावम् ॥ ७ ॥

वर्णा विशुद्धार्थविभक्तयो ये,
तेषा समास न समीहमानः ।
सुखाऽव्ययीभावपदं यदत्र
लिप्सुः सदा तत्पुरुषप्रधानः ॥ ८ ॥

द्वन्द्वं बहुव्रीहिपरिग्रहादि—
रूपं विरूपं च न कर्म धारयन् ।
शत्रावशत्रावपि न द्विगुत्वं,
यद्यद्वदंस्तद्धितमेव लोके ॥ ६ ॥

नित्यं यथाख्यातक्रियाकृतो ये,
तान्सोपसर्गान्न चिकीर्षमाणाः ।
विभूत्र भावं विजहत्र कर्म,
न कर्मकर्त्तृत्वमुशंस्तथोक्त्या ॥ १० ॥

(अष्टभिः कुलकम्)

विराजतेऽयं किल कामकुम्भः,
स्वामिंस्तव प्राज्ययशः समूहः ।
नो चेत्कथं पूरयतीह नित्यं,
वाढं कवीना मन ईप्सितञ्च ॥ ११ ॥

सतः सदैवाभिनयं नयन्ती,
सरागरंगाय रभागरंगे ।
दिशं दिशं चारुदृशं दिशन्ती,
नर्न्नर्त्ति कीर्तिस्तव नर्त्तकी च ॥ १२ ॥

स्विदयमाद्रियते सुगुणै सखे,
स्विदयमाद्रियते सुगुणानिति ।
सुगुणमैक्ष्य हि वीर जिनाधिपं,
बुधजना विमृशन्ति भृशं मिथः ॥ १३ ॥

राजानः स्वैर्ललाटैरहरहरमिता यान्स्पृशन्ति प्रणामात्,
ते राजतो नखास्ते जगति जिनविभो तान्यपि द्योतयन्ति।
स्वामिस्तस्मादमीपा प्रवरमिह महाराज नामास्ति सत्तन्—
मन्त्येऽन्ये नखायामपि दधति महाराज संज्ञा मृषा सा ॥ १४

यावल्लसन्तौ दिविपुष्पदन्तौ यावद् ध्रुवस्तावदसौ स्तवश्च,
कुर्यात्प्रकर्षं विजयादिहर्षं सद्युक्तिलीलः शुभधर्मशीलः ॥ १५ ॥

—

(१) समसंस्कृतमयं पार्श्वनाथ लघुस्तवनम्

संसारवारिनिधितारकतारकाभ,
डिंडीरहीरसमसत्तमवोधिलाभ।
आतंकपंकदलनातुलवारिवाह,
वामेयदेव जयभिन्न भवोरुदाह ॥ १ ॥

जानामि कामित करं तव नाम देव,
तेनाऽऽगतोऽहमिह पादसरोरुहे ते।
मा माऽवहीलय गुणालय सदयालो,
संतो भवन्ति निपुणाहि परोपकारे ॥ २ ॥

मोहारिभूमिरुहभंगमतंगजाय,
संछिन्नतुंगसमनोज मनोजवाय।
मायाविवादिकुवलालिन वारुणाय,
भूयो नमो भवतु ते जिननायकाय ॥ ३ ॥

वामाङ्गज दरभरागगज भजन्ते,
ते जन्तवो नव-नवोदयता लभन्ते
भूमीरुहो हि समयामलयं वसन्तो,
गच्छन्ति किंन शुभचन्दनता समेऽपि ॥ ४ ॥
इत्थ सदैव समसस्कृतशब्द शोभ,
यः पापठीति मनुजः स्तवनं यशोभवे ।
स त्रीयते विजयहर्पसुख सलीलः,
पार्श्वेशितु स्मरणतः शुभधर्मशीलः ॥ ५ ॥ ॥

——:०:०——

(२) पार्श्वजिनलघुस्तवनम्

विश्वेश्वराय भवभीति निवारणाय
सताप-पादप निवारण वारणाय ।
सत्यक्तमाय सजलावुदनीलकाय,
तुभ्य नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ १ ॥
सम्मोहमारुतसुरेशधराधराय ।
मुक्त्यङ्गनाप्रणयपुञ्जकृतादराय ।
दुःकर्मकाष्ट-भरकाननपावकाय,
तुभ्यं नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ २ ॥
सज्जन्तु वाञ्छितसुदानसुरद्रुमाय,
कंदर्पसर्पहरणे गरुडोपमाय ।

योगीश्वराय शिवशालिवने शुकाय,
तुभ्यं नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ ३ ॥

दारिद्रय-रेणु भर-संहरणाम्बुदाय,
सम्पत्ति-सिद्धि सुयशः सुखबोधदाय ।
आजन्मदुःखगणपङ्कवलावकाय,
तुभ्यं नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ ४ ॥

देवाऽसुरप्रणतपाद सरोरुहाय,
कुन्देन्दुमण्डलसमुज्ज्वलचिद्गृहाय ।
निःसंख्यदुःखदगदक्षय कारकाय,
तुभ्यं नमोऽस्तु सतत जिननायकाय ॥ ५॥

पूर्णक्षपारमण शुभ्रकलाकलाय
सत्कीर्ति संभृतदिगीश्वरमण्डलाय ।
लीलाऽऽलयाय विकचाम्बुरुहाम्बकाय,
तुभ्य नमोऽस्तु सततं जिननायकाय ॥ ६ ॥

(कलश)

इत्थं विश्वयमश्वसेननरराड्-वशाब्जवस्त्राधिपं,
सद्वामोदर शुक्तिमौक्तिकनिभ कल्काग भङ्गद्विपम् ।
श्रीपार्श्वं विजयादिहर्ष सहिताः स्युः सस्तुवन्तो नराः,
पार्श्वेश वहुधर्मवर्द्धनधनं चिद्रत्नरत्नाकराः ॥७

———

(३) श्रीपार्श्वजिनवृहत्स्तवनम्

वाञ्छितदानसुरद्रुम तुभ्यं,
नम ए कुरु सौख्यानि लसन्ति ।
जय जय जगतिपतेः ॥ १ ॥

नव नव नवनमहर्निशममलं,
यश ए तव कवयो गायन्ति ।
जय जय जगतिपतेः ॥ २ ॥

इक्ष्वाकुकुल-कमलाकरवर
भास्कर ए अश्वसेनवंश-वतस
जय जय जगतिपतेः ॥ ३ ॥

वामामातृवासोदरमानस
सर ए तत्र मनोरमहँस,
जय जय जगतिपतेः ॥ ४ ॥

धन्यतरं तदहो अहस्त्रिभुवन
मह ए तव शुभ-उद्भव आस,
जय जय जगतिपते, ॥ ५ ॥

ववृधे प्रियमनोरथ इव सुखमिव
दिव ए वर राज्यं विललास,
जय जय जगतिपतेः ॥ ६ ॥

ज्वलदहियुगल वहुहित मन्त्र—
दानत ए इन्द्रपदं नयसिस्म
जय जय जगतिपतेः ॥ ७ ॥

नमीकृतशक्रव्रज राज्य—
रज ए त्व तूर्ण त्यजसि स्म
जय जय जगतिपते ॥ ८ ॥

मोहलता दलन द्विप वहुलं
तप ए चारुतरं च चकर्प
जय जय जगतिपतेः ॥ ९ ॥

लब्ध्वा केवलसंपदः शिवपद
सद ए त्वं श्रीपार्श्व वभर्थ,
जय जय जगतिपतेः ॥ १० ॥

सौख्यं वहुभिरवाप्यत तव—
नामत ए कामितदायक देव
जय जय जगतिपतेः ॥ ११ ॥

श्रीधर्मवर्द्धन पेहत तव मत—
रत ए त्वं प्रभुरेधि सदैव
जय जय जगतिपतेः ॥ १२ ॥

श्रीपार्श्वजिनवृहत्स्तवन संस्कृतमयं तालमध्ये गेय ।

(४) चतुरक्षर-पार्श्वस्तवनम्

(कन्या छन्द)

भो भो भव्याः कीर्त्तिस्तव्याः
नव्या नव्या, जैनी श्रव्या ॥ १ ॥
प्रत्यूपेनः, श्रीपार्श्वेनः
यो ज्ञानेन, प्रज्ञन्नेव ॥ २ ॥
ध्वस्तद्वंद्व, सम्यक्सधं
त्यक्त्वाध्यध्वं, तं वंदध्व ॥ ३ ॥
यः श्रीकाश्या, वाणारस्या
पुर्य्यामस्या, स्वश्रेयस्या ॥ ४ ॥
अश्वात्सेनः, श्रीभूपेन
ईतिस्तेन, स्तद्राज्येन ॥ ५ ॥
तत्स्त्रीमुख्या, वामाभिख्या
तस्याःकुक्ष्याः, पुत्रो न्युष्यान् ॥ ६ ॥
चेतोऽन्तर्वै, न्यस्तोऽखर्वैः
ग्लायद्गर्वै-र्देवैः सर्वैः ॥ ७ ॥
पुण्यप्राज्यं, भुक्त्वा राज्यं
तत्साम्राज्यं, ज्ञात्वा त्याज्यं ॥ ८ ॥
यः संसारं, त्यक्त्वा भारं
साध्वाचारं, चक्रे सारं ॥ ९ ॥

अन्यापोह, ध्यात्वा सोऽहं
श्रेण्यारोह, क्षिप्त्वा मोहं ॥ १० ॥
तत्राचल्यं, हत्वा शल्यं
प्रापत्कल्यं, यः कैवल्यं ॥ ११ ॥
द्वे आयात-स्तत्सेवातः
श्रीर्विधातः, सातत्रातः ॥ १२ ॥
तद्व्याख्यानं, तस्य ध्यानं
तत्त्वज्ञानं, भूयात्ख्यान ॥ १३ ॥
अन्याऽनीह, स्तद्भक्तीहः,
धर्मात्सीह-स्तं स्तौतीह ॥ १४ ॥

इति श्री चतुरक्षरायाप्रतिष्ठयाजातौ कन्यानाम छंदोवृहनूस्तवनं

(५) पार्श्वलघुस्तवनम्

(द्रुतविलम्बितछन्दः)

प्रवरपार्श्वजिनेश्वर पत्कजे,
भयहरे भविभावुकदे भजे ।
य इमके न कदापि नरस्त्यजे—
त्तमिह सद्रमणीवरमासजेत् ॥ १ ॥
उदितमेतदहः सफल नशं,
सफलना च नयामि तथा दृशं ।
जिनप दर्शनतो भव एप मे—
सफल एव गुणाः सफलाः समे ॥ २ ॥

जरिद्दपीति विलोक्य सना जिनं
 मम मनोऽत्र शिखीव घनाघनं ।
मिलति वै यदि वाञ्छितदायक—
 स्तमनुसृत्य न वष्टि सुखाय कः ॥ ३ ॥
लघुवया अपि यः सवयाः सता
 निजगुणैः प्रबभूव तनूभृता ।
अहियुगाय यकोज्ज्वलते ददे
 सुरपद स जिनो भवतां मुदे ॥ ४ ॥
शमदमादिगुणैरति सुन्दर—
 स्तव जिनेश विराजति सवरः ।
परिभृतो मणिभिः सुयशाश्वणः
 क्षितितले किमु भाति न रोहणः ॥ ५ ॥
तव यशश्च गुणान्निगमं पदं,
 वचनतो मनसस्तनुतो मुदः ।
वदति वेत्ति च विंदति वंदते,
 विधिरयं जिन यस्य स नन्दति ॥ ६ ॥
गुणघनो भुवि पार्श्वजिनेश्वरः
 सम इहाऽस्ति न येन परः सुरः ।
जित इनो महसा यशसा शशी
 नमति तं सततं मुनिधर्मसी : ॥ ७ ॥

इति छेकानुप्रासपादान्त-द्रुतविलम्वित छन्दोमयं
पार्श्वजिनलघु-स्तवनम्

(६) श्रीपार्श्वलघुस्तवनम्

भजेऽश्वसेन-नन्दनं मुहुर्विधाय वन्दनं,
न रागिणो हि के नरा इने जिने सुदृग्धराः ॥१॥
सता विपश्चिता मता सदेव सुप्रसादता,
विधेहि पार्श्वदेवते मयि क्रमाब्जयो रते ॥२॥
अभीष्ट युष्मया मया प्रवृत्य ते त्वदाज्ञया,
न दह्यते कृपोदयाद्विभो ममोद्यता अयाः ॥३॥
चरीकरीति ते यशः प्रसर्सरीति तद्यशः,
वरीवरीति ते पदं स वर्व्वरीति ते पदं ॥४॥
समस्तदुःखनाशनं विभो तवानुशासनं,
तदस्तु मे पुनर्धनं सुजैनधर्मवर्द्धनं ॥५॥

श्री ऋषभदेव स्तवनम्

जय वृषभ वृषभवृपविहितसेव, सेवकवाञ्छितफलफलद देव ।
देवादेवार्चितपादपद्म, पद्माननपूरितभूरिपद्म ॥१॥
पद्माङ्कजमदगजगजविपक्ष, पक्षीकृतजगदुपकारलक्ष ।
लक्षितसमलोकालोकभाव, भावितसूनृतसुगुणस्वभाव ॥२॥
भावारितमोभरतरणिरूप, रूपस्थित रूपातीत-रूप ।
रूपित सद् यज्ञसुधर्मशील, शीलित शाश्वतशिवसौख्यलील ॥३॥

नवग्रही-न्यायपरीक्षा

सख्ये सत्यपि दहना द्रक्षति यन्नं विचक्षणा त्र्यथा ।
ग्रहराजो ग्रहराजौ हिमाशुमंगारकादर्वाक् ॥१॥
शीताद्विभ्यति सर्वे शीतार्त्तिर्भवति दुःसहा सततम् ।
अङ्गारकमुष्णाशुं तत्तिष्ठत्यन्तरा हिमरुक् ॥२॥
यत्रायाति कुपुत्रो जनयति वैरं हि जनकपुत्राणाम् ।
यद्विग्रह गृहालौ सोऽयं सोमस्य सौम्यस्य ॥३॥
निवसति यद्यपि दैवाद् ज्ञः क्रूराक्रूरयो द्वर्योर्मध्ये ।
सत्प्रकृतेरनुभावाद्यः सौम्यः सौम्य एव स्यात् ॥४॥
गुरुरधिकः सर्वगुणै गुरुसेवा नैव निःफला भवति ।
समया गुरु वसन्तौ ग्रहावुभौ बुधकवी जातौ ॥५॥
तारुण्ये सति शुक्रे बोभूयन्तेऽसमे शुभा कामाः ।
त्तदभावे तदभावाच्छुक्रबल को न कामयते ॥६॥
उच्चपदादिस्थित्या पितुरुक्त्याचलति वैपरीताद्यः ।
सत्याभिधो बुधोक्त्या सन्दो मत्या पुनर्गत्या ॥७॥
पर्व्वण्यमृत पेन्तु तुदति सुधाशुं विधुंतुदः साक्षात् ।
लब्ध्वास्वादो लोके शीर्षे छिन्नेऽपि न हि तिष्ठेत् ॥८॥
स्वस्वामिनं विनाऽपि हि निजशक्त्या कार्यसिद्धिमातनुते ।
किं नो कवन्धरूपः केतुः स्तुत्यो ग्रहश्रेणौ ॥९॥
श्रेष्ठा सुवर्णरचिता नवग्रही मुद्रिका सुधर्ममतिः ।
प्रीत्या परीक्षमाणाः परीक्षते तत्त्वरत्नानि ॥१०॥

शान्तिनाथस्तवनम्

स्तुवन्तु तं जिनं सदोपकारतालताघनं,
स्वदेहदानतो यको ररक्ष रक्तलोचनम् ।
प्रसूदरस्थितेन सच्छुनंयुता प्रयुञ्जिता,
त्वरा निजाःप्रजाव्रजा रुजा विवर्जिताःकृताः १

अवाप्य येन जन्म चक्रवर्तिता प्रवर्तिता,
जगत्प्रभुत्वमाप्य कीर्त्तिनर्त्तिकी च नर्त्तिता ।
अभीष्टदा दिवस्तरुर्घटो मणि खगोऽप्यमी,
अनुत्वका तकास्तु सेवते सना सना भ्रमी ॥ २ ॥

स्वकीयसेवकाय यः सुखं ददाति सत्वरं,
ततो मुदा तमाचिरेयमाचिरेयमीश्वरं ।
नमो नमोऽस्तु ते त्वया समो न कोऽप्यहो प्रभुः
सुधर्मशीलने भवेभवेस्त्वमेव मे विभुः ॥ ३ ॥

—:※:—

(७) श्रीगौडीपार्श्वनाथस्तवनम्

प्रणमति यः श्रीगौडीपार्श्वं, पद्मा तस्य न मुञ्चति पार्श्वं,
सुगुणजनं सुषमेव । कीर्तिस्फूर्तिरहो ईदृक्षाः यस्य—
जगति जागर्त्ति समक्षा, नंनंमीह तमेव ॥ १ ॥

सद्भक्त्या भक्तलोका जिनवरंभवतो यत्र यत्र स्मरन्ति,
साक्षात्तोषां समेषां वरमिह हि मुहुर्वाञ्छितं त्वं विधत्से।
यात्रामायान्ति तत्रो कति कति च मया प्रत्ययाश्चात्र दृष्टा,
दृष्ट्वा मे चित्तवृत्तिस्तत इत इत आः कामये नान्य देवम् ॥ २ ॥

(प्राकृतचित्राक्षराछन्दः)

विविह सुविहिलच्छीवल्लिसंताणमेहं,
सुगुणरयणगेहं पत्तसप्पुण्णरेहं।
दलियदुरियदाहं लद्धससिद्धिलाहं,
जलहिमिव अगाहं वंदिमो पासनाहं ॥ ३ ॥

(मागधी)

शुलपुलनलवलुचिलविनिलमिदपलमानन्द,
सकलशुभाशुभशेविदपदशलशीलुहद्द।
कलुनाशागल कुलकमलालिदिनेशलदेव,
चलनशलोजमहं पनमामि निलंतलमेव ॥ ४ ॥

(सौरसेनी)

दुहदटिनीदारनदरनपोय, दुरिदोहहुदासन-अदुलदोय।
सपूरिदजगदीजंदुकाम पूरयमह वंछिद पाससामि ॥ ५ ॥

(पैसाची)

तुहताहतचानलनासवनं, सुहतानसुकोत्रितगीतगुनं।
धरनीसकनीस नत सतत, नम पानजिनं सुसुहं ततत ॥ ६ ॥

(चूलिकापैसाची)

मतनमतसरवनवनदहनपावकं,
सिद्धिसुभजुवतिसिंगारवरजावकं ।
जो हु तुह चलनजुकमचते सततं
चकति सव्वे चना पास पनमंति ते ॥ ७ ॥

(अपभ्र सिका)

तुहु राउल-राउलह सामि हु राउल रकह,
हिणसु दुहाइ सुहाइ कुणु सुमइ मा अवहीरह ।
पिक्खइ जुगु अजुग्गु ठाणु वरसतउ किं घणु,
पत्तउ पइ जइ होसु दुहियसा तुह अवहीरणु ॥८॥

(समसस्कृत)

सज्जन्तु कामितविधाननिधानरूपं,
चित्ते धरामि तव नाम सुगेयरूपं ।
इच्छामि कान्त मिदमेव भवे भवेऽह,
वामाङ्गजेह गुणगेह सुपूरितेहं ॥९॥
इम अरज अम्हारी ता हि पक्षीकुरु त्व,
गिणइज हित कीधु तस्य सत्यं गुरुत्वं ।
हिव मुझ सुख आपो, सा तवैवास्ति शोभा,
तुझ विण कहि स्वामी कस्य नो सन्ति लोभाः ॥१०॥
स्वभाषा संस्कृतीया तदनु प्रकृतिजा मागधी शौरसेनी,
पैशाची द्वय गरुपाऽनुसृतविधिरपभ्रंसिकासूत्रवाक्यैः ।

पड्भिर्वाग्भी रसैर्वा स्तुति सुरमवती-निर्मिता पार्श्वभर्त्तुः,
श्रीधर्माद्वर्द्धनेनामितसुकृतवता ह्लादसुस्वादवास्तान् ॥११॥

इतिश्रीगौडीपार्श्वनाथस्य स्तवन पट्भाण समसस्कृतादि

चातुर्म्मय श्रेयः क्रियान्

(८) श्रीपार्श्वाधीशितु बृहत्स्तवनम्

सर्वश्रिया ते जिनराज राजतः,
श्लोकोऽति शुल्को गिरिराज-राजतः ।
अर्घप्रदानैरपि राजराजतः—
त्वत्कोऽतिरेको भुवि राजराजतः ॥१॥

स्मरणं कुरुते सदा यक—
स्तव तस्मै सुखवासदायकः ।
त्वमसि प्रभवे सदायकः
प्रणमन्नेश भवेत्सदायकः ॥२॥

शुभदृक् तव नाथ सेवक,
नयते वाञ्छितमेव सेवकं ।
विबुधै विहितैकसेवकं,
त्वदृते वश्मि हि मानसे वकं ॥३॥

तव ये चरणेऽत्रनामिनः

स्युरहो ते तु कदापि नामिनः ।
मणिमाप्य मुनीश नाकिनः,
किमु चित्र हि भवन्ति नाकिनः ॥४॥

जिनपार्श्वसुनाम तावकं,
शरण यः श्रयते न तावक ।
न पराभवितुं हि कोऽपि त,
प्रभविष्णुः क्षितिपोऽपि कोपितं ॥५॥

परिहृत्य वसुस्त्रियौ वने,
निवसन्तीश यके हि यौवने ।
हृदि यैर्निहितं न नाम ते,
विदधीरन्सहितं न नाम ते ॥ ६ ॥

गमित नरजन्म देवनै—
र्हृदि मे तेन कदापि देव नैः ।
तदहं परवश्यतां गतः,
परसेवा च मया कृतागतः ॥ ७ ॥

शुभवता भवता सुकृता कृताः,
कतिचिदूर्ध्व जगत्प्रभुताङ्कृताः ।
कतिचिदीश महोदयतायता,
मम विधौ विहिता लसता सता ॥ ८ ॥

मम सदा नतनिर्जरवारके,
त्वयि विभौ सति पापनिवारके ।

इह जिनाधिपदुःपमवारके,
किल मया किमऽदायि न वारके ॥ ६ ॥

राका भवानिव भवानिह भात्यतोऽपि,
श्रेष्ठाः स्तुवन्ति शुभवन्तमहो भवन्तं ।
छिन्नार्त्तिरात्तभवता भवतापकर्त्री,
तस्मै सदाऽत्र भवते भवते नमः स्तात् ॥ १० ॥

देवोऽधिकः प्रभवतो भवतो न कोऽपि,
सेवाज जिष्णु-भवतो भवतोऽतिरस्या ।
सद्भक्तिरा भवति यैं भंवति प्रक्लृप्ता,
प्रोप्तातया शिवफला जिनधर्मसीता ॥ ११ ॥

श्रीनेमिस्तवनम्

जिगाय यः प्राज्यतरस्मराजीं,
तत्याज तूर्णं रमणीञ्च राजीम् ।
राजेव योगीन्द्रगणे व्यराजीद्—
देयात्स नेमि र्बहुसौख्यराजीः ॥ १ ॥

निजकुलकुलरत्नं वाञ्छितार्थद्यु रत्न,
तमसि गगनरत्न चित्कला रात्रिरत्नम् ।
नमितसकलदेवः क्रोधदावैकदेवः,
प्रभवतु सुमुदे वः सतत नेमिदेवः ॥ २ ॥

(६) श्रीपार्श्वस्तोत्रं

(द्विहसं शालिनी छंद)

तवेश नामतस्त्वरा दरा भवन्ति गत्वराः,
प्रसृत्वरा रवेकरास्ततो यथा तमो भराः ॥१॥

अधोत्कराश्च नश्वरा धरेश्वराद्धि तस्कराः,
स्थिराः स्युरिन्दराभराः स्वमन्दिरान्न हीत्वराः ॥२॥

प्रभोः स्तवेषु तत्परा नरा जगत्सु जित्वराः,
तकेषु तत्परा दरा दरातयोऽपि किंकराः ॥३॥

विधीयता जिनेश्वराऽऽशु पार्श्वदृक्कृपापराः,
प्ररायतां तरा त्वरा ममापि धर्म्मशीलराः ॥ ४ ॥

—०—

पञ्चतीर्थ्याः पंचजिन स्तोत्रम्

(प्रमाणिकाछंदः)

योऽ चीचलद्दुश्च्यवनोरसि स्थितः
क्रमाङ्गुलीतः किल कर्णिकाचलं ।
स्वनाम चचुश्च चरिक्रियादयं,
स श्रीमहावीरजिनो महोदयम् ॥ १ ॥

अर्कः शुभोदर्कमतर्कितश्रिय,

जैवातृकः प्राति जयं यशः श्रियम् ।
भौमो भिनत्तीतिमनीतिजा भियं,
बुधो ददातीह बुधाञ्चिता धियम् ॥ २ ॥

गुरु गुरुं ज्ञानगुणं विधत्ते,
काव्यः कला काव्य कलाश्च दत्ते ।
शनिः शुभं राहुरय शिखीश,
नुः सेवितु र्यच्छति वीरमीशम् ॥ ३ ॥

एवं सेवा दधतः पञ्चजिनानां स्तवान्ग्रपञ्चयते ।
ते सौख्यानि लभन्ते भव्यश्रीधर्मशीलभृतः ॥ ४ ॥

अष्टमङ्गलानि

स्वस्तिकं चारुसिंहासनं कौस्तुभं,
कामकुम्भः सरावादिमंसंपुटं ।
मत्स्ययुगल सुखस्यार्पणं दर्पणं,
नंदिकावर्त्तकं मङ्गलान्यष्ट वै ॥ १ ॥

चतुर्दशस्वप्नाः

श्वेतेभो वृषभो हरिश्च कमला स्यात्पुष्पमालाद्वय,
पूर्णेन्दुश्च दिवाकरो ध्वजवरोऽभःपूर्णकुम्भःसरः ।

क्षीराब्धि र्द्विविधं विमानभवन सद्रत्नराशिर्महान्,
निर्धूमाग्निरिसे चतुर्दश शुभाः स्वप्ना मुदे सन्तु वः॥१॥

गीर्वाणसिन्धावहिमगिनो वहून्,
घ्नन्तं समालोक्य रुषा गरुत्मान् ।
जघान गगाम्बु-शुभप्रभावा,
चतुर्भुजीभूय बभूव तत्पतिः॥१॥

शीघ्रमागच्छ भो शिष्य, मम पादौ निपीडय,
परिचर्याप्रसादेन, त्वं प्रवीणो भविष्यसि॥१॥

(१०) श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रम्

प्रसर्सन्ति पार्श्वेश विश्वे यशस्ते,
विशस्ते तु धन्या पदाब्जस्पृशस्ते,
मदीयाऽपि लोला, स्तुतौ तेऽस्तु लोला,
विदोलायमाना भ्रमादत्त मा भून्॥१॥

बुधास्ते सपर्य्यातया चारुतर्य्या,
भवाब्धि प्रतीर्य्या भजान्सद्धिपुर्य्या ।

अह् तेऽनुभावं समारुह्य नावं,
तितीर्षु र्विभावंश्रितस्त्वा मुदाऽवं ॥२॥

न केनाऽपि केनाऽपि भोगादिना मे,
वशाया रिरंसा निनंसोस्त्वदं ह्री ।
विनेता तवेशास्मि नेतासि मे त्वं,
रमा धर्मशीलप्रमा देहि मह्यं (?) ॥३॥

इति श्रीपार्श्वस्य लघुस्तोत्रमद कोविदसद प्रशस्यं ।

श्री बीकानेरमध्ये श्रीआदीश्वरमूर्ति स्तोत्रं

प्राज्या चरीकर्त्ति सुखस्य पूर्तिं,
यका जरीहर्त्ति च दुष्टजूर्तिं ।
सद्भैश्च मोमूर्तिं सुभक्तमूर्तिं,
ता बीकपुर्य्या नमतादिमूर्त्ति ॥१॥
इष्टार्थपूर्त्तौ च घटी वरीयसी,
जाड्यार्त्तिहानावपटीपटीयसी,
गिरीसमेयं प्रतिमा गरीयसी,
स्थिरा स्थिरावद् भवतात्स्थवीयसी ॥२॥
एनाजिनेनागसमा शयद्वयं,

ललाट आधाय विधाय सङ्गयं ।
वयं च यूयं शुभधर्मशीला,
भजाम भव्या विलसामलीला ॥३॥

इति श्रीऋषभदेवस्तवनम्

समस्यामयं श्रीमहावीरस्तवनम्

श्रीमद्वीर तथा प्रसीद सततं मे स्यादियं भावना,
संसारं तु वरं च जीवितमथो त्वद्दर्शनात्के मन ।
भोगान् सर्वकुटुम्बकं क्रमतया जानामि पक्वेतर—
"जम्बूवज्जलबिन्दुवज्जलजवज्जंबालवज्जालवन्" ॥१॥
स्थाने तज्जिननूयसे बुधजनैस्त्वं दुष्टकष्टापहो,
भ्रान्त्या भुक्तविषं त्वगाधमुदक शत्रूच्छ्रितं शस्त्रकम् ।
दावाग्निः प्रबलो महाँश्च निगडस्त्वन्नामत स्यात्क्रमा—
ज्जम्बूवज्जलबिन्दुवज्जलजवज्जबालवज्जालवन् ॥२॥
सोऽपि त्वा प्रणनामय शिवमते श्रीशैवराजो मुनि—
र्येनामी लवणाम्बुधिप्रभृतयो दृष्टा हि सप्त क्रमात् ।
क्षीरोदोदधिभृद्घृतोदकइराभृच्चेक्षवा स्वादुव,
अम्भोधिर्जलधि पयोधिरुदधिर्वारानिधिर्वारिधि ॥३॥
ये त्वा श्रीजिन संश्रयन्ति हि जनास्ते स्युर्जिनाख्याधरा—
स्तद्युक्तं जलपर्यया इव विभा प्राप्ताऽधिरित्यक्षरं ।

पयाया स्युरुदन्वता बुधजन सगृह्यमाणा अमो,
अम्भोधिर्जलधि पयोधिरुदधिर्वारानिधिर्वारिधि ॥४॥

जिन भजतामिति झल्लरीयं, प्रवक्ति लोकानिव वाद्यमाना ।
बृहद्ध्वनेरर्थत एव टस्य, ठंठंठठंठंठठठठठः॥५॥

दान तपः शीलमशेषपुण्य, ज्ञानञ्च विज्ञानमपीह भावः ।
त्वच्छासनेनेश विना कृततत्, ठठठठठंठठठंठठंठः ॥६॥

जिनवचनमिद तेऽनन्तकृत्वोऽधिकारे,
प्रययुरणुनिगोदं ज्येष्ठपञ्चेन्द्रियाश्च ।
युगपदिह विपद्य स्यात्कदाचिन्न चित्र,
मशकगलकमध्ये हस्तियूथं प्रविष्टम् ॥७॥

मन इदमगुरुपं न्यायसिद्ध मदीयं,
मदमदनमतंगा यान्ति तन्मध्यदेश ।
अहमिह किमु कुर्य्यां देव साक्षादजय्यं,
मशकगलकमध्ये हस्तियूथं प्रविष्टम् ॥८॥

नवन नमनं महनं वचनं, कुरुते कुरुते कुरुते कुरुते ।
तव यः स यशः शिव मा च सुखं, लभते लभते लभते लभते ॥९॥

दीव्यद्दीधिति दिक् चतुष्कसदृशंभामण्डलप्रष्ठतः
कृत्वाऽऽसीनमहो चतुर्मुखविधुश्रेष्ठाऽऽस्य नंतु त्वकां ।
आयातः स्मयदा विमानसहितौ श्रीपुष्पदन्तौ तदा,
चन्द्राः पञ्च तथैव पञ्च रवयो दृष्टा जनै र्भूतले ॥१०॥

पुण्या ते प्रकृतिः प्रभो परसुरो वाढं मदाढ्यं सदा,
सद्रव्योऽपि निराश्रयोऽसि मदनानीकपरिन्नन् स्फुट ।

इष्टं मृष्टतरं च वर्णनमथो प्रस्तूयते ते क्रमाद्—
गंगावद्गजगण्डवद् गगनवद्गांगेयवद्गेयवन् ॥११॥

(कलशः)

इत्थं वांञ्छितदानदैवततरुर्यः शासनाधीश्वरः।
श्रीवीरः शिवतातिराततयशाः श्रीधर्मतो वर्द्धनैः,
नूतो नूतन नूतन द्यु तिमयः काव्यैसमस्यामयै—
र्ये ध्यायेयुरिमं जिनं जगतितेस्यु र्जन्तवः कन्तवः ॥१२॥

व्यस्त-समस्त मध्योत्तर प्रश्नमय काव्यम्

के पत्यौ सति भूपणोत्सवधराः ?, श्रेष्ठास्तु के प्राणिपु ?
सर्वत्रादरता लभेत भुवि कः ? के वन्दिना स्युर्गृहाः ?
का का भाग्यवता भवत्प्रतिपद ? के कांदशीकागिना ?
के धन्या निज संपदा विलसने ? "दानप्रकारादराः" ॥१॥
धान्याद्यर्थ उदूखले भवति का स्वार्च्या समेषा च का ?
कार्या नम्रजनै गुरौ लसति का शोभा च राज्ये तथा ?
सप्तास्यस्तरणे रथ वहति कः ? सर्व्वंसहा का स्मृता ?
कुग्रामे वसता सता भवति का ? "सुज्ञान नीवीक्षितिः" ॥२॥

रामे १८ऽर्था

त्वं संत्रोधय कामकेशवविधी-शानश्रियःस्वं मम,
दातृणा च हरौ सदाऽत्र भवताच्छीतापतौ सुन्दरि !

किं धातुत्रयमत्र कीति वद भो त्व वन्हिवीजं व्रज,
विश्रामेप्यविशंश्रिते मुहुरहो उक्तेऽपि किं मुह्यसे ॥१॥

—:०:—

गी वींणा तत्रिकैका वरचिवुकसृता सूचिका सद्रसाना,
कूपानां वाम्पनाशाश्रुतियुगलदृशामूर्द्धमूर्द्धा पुरश्रीः ।
तस्मिन् वासश्चकासञ्जिन तव सुयशो गाङ्गवाहस्तदित्थ,
सूच्यग्रे कूपपट्कंतदुपरि नगरं तत्र गङ्गा प्रवाहः ॥१॥

तिलमिव लघु चित्ता स्नेहयुक् तत्प्रदेशे,
निवसति किल हीनाङ्गीव तृष्णातिकृष्णाः ।

मयमिव मदनं सा मूतमे[१]ऽभूत्तदित्थं,
तिलतुषतटकोणे कीटिकोष्ट्र प्रसूता ॥२॥
तवेशाऽस्त्यमुं धर्मशीलोपदेशो,
भवाब्धि तितीर्षु र्भवेद्यो हितेन ।
रतिश्चारतिश्चातिनिन्द्रातिकृष्णा
समस्या समस्या समस्या समस्या ॥३॥
प्रवर्व्वर्त्ति[२] विश्वे जिनस्योपदेशो,
भवाब्धि तितीर्षु र्भवेद्यो हितेन ।
रतिश्चारतिश्चातिनिन्द्रा तितृष्णा,
समस्या समस्या समस्या समस्या ॥४॥

—:०:—

१ जात तदित्थ

अथ कतिचित्समस्यापदानि पूर्यन्ते

["दर्शे पूर्णकलं च पश्यति विधुं बन्ध्यासुतोऽन्धो दिवा" इति समस्यापदं श्रीमाल विहारीदासस्य पुरतो भट्टेन प्रदत्तं । यथा—]

प्राग् दुःकर्मवशान्मृतस्वजनकं कञ्चिद्गताक्षं शिशुं,
बन्ध्या काचिदपालयन् नृभिरतः प्राख्यायिबन्ध्यासुतः ।
मध्याह्ने शयितः स दर्शदिवसे पूर्णेन्दु मेक्षिष्ट तद्—
दर्शे पूर्णकलं च पश्यति विधुं बन्ध्यासुतोऽन्धो दिवा ॥१॥

["मंदान्दोलितकुण्डलस्तवकया तन्व्या विधूतं शिरः" इति समस्यापदं भट्टदत्तं पूर्य्यते]

भर्त्राऽऽवश्यककार्यतः प्रवसता प्रावाचि पत्न्याः पुरो,
मासान्ते त्वमहं च धामनि निजे द्रक्ष्याव इन्दुं नव ।
रुच्ये तावदसङ्गते सखिजनै र्द्रष्टुं विधुं प्रोक्तया,
मन्दान्दोलितकुण्डलस्तवकया तन्व्या विधूतं शिरः ॥१॥

अन्यच्च—

साधूना पुरतो मयाद्य विधिना धर्म्मः समाकर्णितः,
पत्युक्तं वचनं हिताच्च वनिता श्रुत्वाऽऽशुहृष्टा वर ।
त्वं चेन्मा वनिते वदेरथ तदा गृह्णामि साधु व्रतं,

मन्दान्दोलितकुण्डलस्तवकया नव्या विधूतं शिरः ॥२॥

["प्रथमकवलमध्ये मक्षिकासन्निपातः" इति समस्यापदं उपाध्यायविनयविजयैर्दत्त तत्पूरित पण्डितधर्म्मसीकेन]

परिणय जनताया याति यो भाग्यहीनः
स्वदनमनुजपङ्क्तौ रोपमाधाय तिष्ठन् ।
यदि कथमपि भोक्तु मस्थितस्तत्र जातः,
प्रथमकवलमध्ये मक्षिका सन्निपातः ॥१॥

उपसि कृपणनामाऽग्राहि जातं फल तद्—
द्रुतमजनि जनैः स्वैरादिरुद्वेगता च ।
कथमपि यदि जग्धिः प्रापि तत्रापि जातः,
प्रथमकवलमध्ये मक्षिकासन्निपातः ॥२॥

क्वचिदपि समये स्याच्चित्तभङ्गो जनस्य
तदुपरि विफलाःस्यु र्मिष्टसत्कारवाचः ।
परिणमयति किं वै शेषतत्काल भुक्तीः,
प्रथमकवलमध्ये मक्षिकासन्निपातः ॥३॥

यदि हि जननलग्न स्यादशुद्ध प्रमादात्,
तदुपरि न फलाय स्पष्टभावाधिकारः ।
किमुपरितनमुक्ति प्रापयेत्सत्फलत्वं,
प्रथमकवलमध्ये मक्षिकासन्निपातः ॥४॥

———

["विद्युत्काकेन भक्षिता" इति समस्यापदं राजसारै र्दत्तं यं धर्मसिंहेन पूर्य्यते]

आयान्तं नायकं वीक्ष्य, श्यामया श्यामवाससा ।
रुद्धा सीमं तरु-किंवा, विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ १ ॥

प्रेरितेन भृशं पत्या कस्तूरीचूर्णं मुष्टिना ।
छन्ना रदच्छदाभा किं विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ २ ॥

प्रसह्य खण्डिके क्षिप्ता सद्युति द्धरणीसुता । (?)
रक्षसा रावणेनाहो, विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ ३ ॥

आजग्मुषी छलं कर्त्तु, श्रीजिनदत्तसूरिणा ।
कृष्णामत्रेणरुद्धोत विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ ४ ॥

त्वत्खड्गखण्डितस्यारेः पेशीराजन्यदाऽपतत् ।
मद्वर्णद्वेषिनीयं वै, विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ ५ ॥

राजंस्त्वद्वैरिनारीभी रुदतीभिरधोमुखं ।
धौताञ्जनेन पत्राली, विद्युत्काकेन भक्षिता ॥ ६ ॥

(इति समस्यापट्कमहमदावादमध्ये पूरितं)

—:o:—

["मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः" इति व्यास-सतीदास-दत्तां समस्यापद पूर्य्यते-]

श्रीकृष्णोऽम्बुधितश्चतुर्दशभृश रत्नानि निर्वासय,
मासानेहसितत्रशक्तशफरः शुण्डाघटो निस्तृतः ।

म्वस्वभ्रू शवशादपूर्वलभनाद्धीतिप्रतीतेः क्रमा—
त्मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः ।१।
राजन्नाजिविधौ त्वया निजरिपुर्व्यापादितस्तच्छिरो.
लात्वोड्डीय जगाम गृध्र उत तद्भ्रष्टं च नद्या वहत् ।
वार्घट्टे किमिति स्त्रियस्तिमियुत तन्निश्चकपुस्तदा,
मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥२॥
वृक्षे क्षौद्रमसख्यमक्षिकमिहा रुक्षन् समीक्ष्य स्त्रियो,
द्रागुन्मूल्य सरिद्वियोद्रुममिलद् हुत्वामितद्रुंद्रुत ।
पीताब्धिश्च पपौ जलं स्थलतया गामजनाच्चित्रतो,
मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥३॥
कासाराम्भसि वारिणा निजघटान् बभ्रुः पुरस्य स्त्रिय—
स्तावत्राजलमध्यतो मदकलो हस्त्युन्ममज्ज स्फुटम् ।
भूस्यन्मीनमुदग्रवर्णमिमं ता वीक्ष्य चित्रं तदा,
मत्सी रोदिति मक्षिका च हसति ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥४॥

"मन्दोदरी किमुदरी बदरी किमेपा" इति समस्या पदं—

इष्टाशया वरदशाननजल्पनौघै,
रंतस्तमाः कुवलकण्टकता दधाना।
मायोपमात्रययुताऽपि क्रमाद्विभिन्ना,
मन्दोदरी किमुदरी बदरी किमेषा ॥ १ ॥

चारुश्रिया वहुविचारि सुगोत्रजेपु, सच्चारताचरणलक्षणवर्जितेषु ।
प्रश्नोत्तरे इयमुभे धरते समस्या, धन्वस्थलेपु च खलेषु चको
विशेपः ॥ १ ॥

"यष्टिरीष्टे न वैणवी" इति समस्यापदं

नमन गुणवानेव कुरुते न तु निर्गुणः ।
गुणं विना नतिं कर्तुं, यष्टि रीष्टे न वैणवी ॥ १ ॥
प्रतिभैव प्रभुर्युक्तिखण्डने स्यान्मतिस्तुना ।
क्षोदितु हि कुशीवक्ष्मा, यष्टि रीष्टे न वैणवी ॥ २ ॥

"शीर्षाणां सैव वन्ध्या मम नवतिरभूल्लोचनानामशीतिः"

इति समस्या—

चक्रे श्रीपार्श्वमौलौ शृणु युवति मया सत्फणानां सहस्रं,
तद्वीक्ष्येन्द्रः स्तुवन्सन् खशशिनवशिरास्युन्ममार्ज्ज स्ववस्त्रैः।
शच्यग्या नर्च्चखाक्ष्य कवि धुमितदृशोऽर्हन्प्रतस्थेऽघशेषा,
शीर्षाणा सैव वन्ध्या मम नवतिरभूल्लोचनानामशीतिः ॥ १ ॥

———०———

("नवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः" इति समस्यापदं श्रीजिन चन्द्रसूरिभट्टारकैः प्रदत्ता पञ्चकृत्वः पूरितम्)

सुषमाभिरनेकसूनृतैः प्रतिभाभिः सुनयश्च सद्गुणैः ।
जिनचन्द्रतुला करोति यो नवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः ।१।

प्रति घस्मयकैतवस्पृहाः करणान्यत्र च पञ्च तद्भिदे ।
प्रवणो यति यः परीक्ष्यते, न वलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः ।२।

उपकारपरोपकारिणु कनक कामिनिकाञ्च वर्ष्टिनो ।
संभवाब्धिपराङ्मुखः पुमानवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः॥३ ॥

कुरुते गुरुगर्हणाय को दृढमुष्टि त्वमल दधाति यः ।
अभियाय शुभात्र यस्य स नवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः ।४।

गदतः स्वजनेष्ट नाशतो जरसा मृत्युत एव दैवतः ।

शतशो भयमेवमुद्वहन्नवलक्ष्यो जनताक्षिभिर्विभीः ॥ ५ ॥

"तिलतुषतटकोणे कीटिकोष्ट्रं प्रसूता" इति समस्यापदम्

सखि दृशि समपप्तत्कीटिकैकोपतार

सुहृदवदत्पक्ष्मो दस्य निःसारयस्ताम् ।

अभिमुखमयबिम्वं वीक्ष्य दृक्स्थ तदाऽहो,

तिलतुपतटकोणे कीटिकोष्ट्र प्रसूता ॥ १ ॥

"विवेकः शाब्दिकेष्वयम्" इति समस्यापदम्--

उत्तमोऽहं सदा वर्त्ते मध्यमस्त्व प्रवर्त्तसे ।

परः सामान्य आवाभ्या विवेकः शाब्दिकेष्वयम् ॥ १ ॥

समासः क्रियते तेपा येपामन्वययोग्यता ।

व्यासता वहुरूपाणा, विवेकः शाब्दिकेष्वयम् ॥ २ ॥

सार्व्वधातुकतानित्य लकाराणा चतुष्टये ।

आर्द्धधातुकताषट्के, विवेकः शाब्दिकेष्वयम् ॥ ३ ॥

"हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः"

ज्वलत्कषायोऽपि तवोपदेशा–
द्भवेज्जनः शान्तिरसैकरूपः ।
किं नामृतासारत ईश हि स्यात्,–
हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः ॥ १ ॥

धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली में प्रयुक्त देशी सूची

(अमरकुमार) सुरसुन्दरी रास का अन्त्य भाग

[ढाल १२—इण पर भाव भगति मन आणी]

धरम शील जिण साचो धार्यो, वलि नवकार संमार्यो जी।
सुरसुन्दरिए सर्व समार्यो, निज आतम उधार्यो जी,
एक सदा जिन धर्म अराधो ॥६॥

'शीलतरंगणी' ग्रन्थ नी साखे, ए रास अति लाखै जी।
धन जे शील रतन नै राखै, भगवत इणपर भाखै जी ॥७॥

संवत सतरै वरस छत्तीसै, श्रावण पूनिम दीसै जी।
एह संबन्ध कह्यो सुजगीसै, सुणता सहु मन हीसै जी ॥८॥

गणधर गोत्रे गच्छपति गाजै, जिनचंद्रसूरि विराजै जी।
श्री वेनातट पुर सुख साजै, चौपी करी हित काजे जी ॥९॥

साखा जिनभद्रसूरि सवाई, खरतर गच्छ वरदाई जी।
पाठक साधुकीरति पुण्याई, साधुसुन्दर उवझाई जी ॥१०॥

विमलकीरति वाचक वड़ नामी, विमलचन्द यश कामी जी।
वाचक विजयहर्ष अनुगामी, धर्मवर्द्धन धर्म ध्यानी जी ॥११॥

उपदेश हिया में आणी, पुण्य करें जे प्राणी जी।
आवी लाछि मिलै आफाणी, साची सद्गुरु वाणी जी ॥१२॥

बारमी ढाल कही बहुरगे, चौथे खंड सुचंगे जी।
जिन धर्मशील तणै शुभ सगे, आनंद लील उमगे जी ॥१३॥

—oo—